स्पैन चयनिका १९७२ का सर्वोत्तम संग्रह

अनुक्रमणिका

अमेरिका की लोक कला

अमेरिका के जटिल एवं उद्योग-प्रधान समाज में लोक कला आज भी प्रारम्भिक काल की तरह समृद्ध है। सच तो यह है कि हाल के कुछ वर्षों में, लोक कलाओं एवं हर तरह के शिल्प की सराहना में रुचि फिर तेज़ी से बढ़ी है। यहां अमेरिकी लोक कला के कुछ नमूने प्रदर्शित हैं।
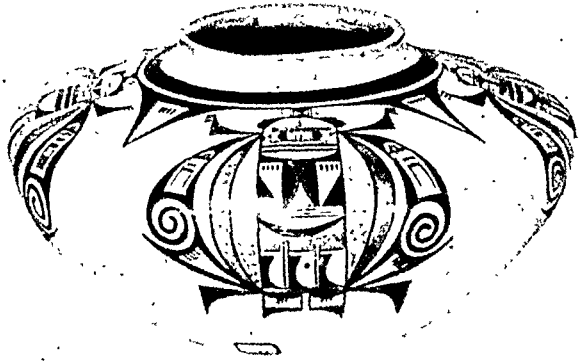
१५वीं सदी के नमूने के आधार पर होपी कलाकार द्वारा निर्मित विविध-रंगी कलश।

नीचे, नवाजो जनजाति की एक स्त्री और बालक कालीन बुनते हुए।
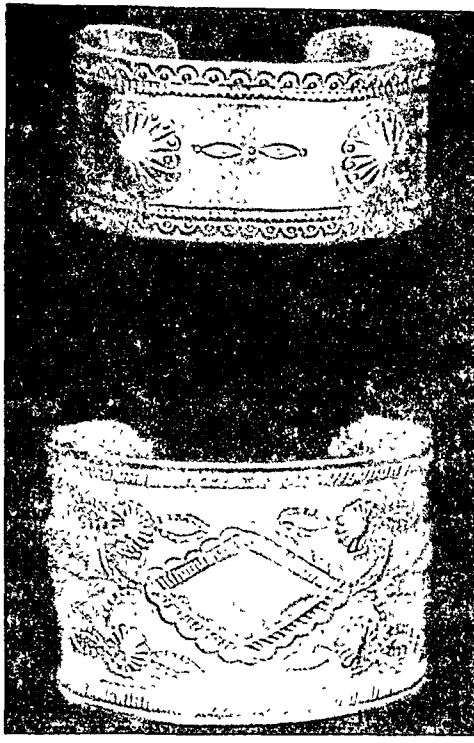
नवाजो कलाकारों की कृतियां : चांदी के वाजूबंद। इन पर ठप्पा लगाकर उभरी हुई डिजाइनें बनायी गयी हैं।

अमेरिकी इण्डियन प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कला में विशेष रूप से निष्णात थे।

संसार में सर्वत्र लोक कला के मूल तत्वों में अद्‌भुत समानता पायी जाती है : उनकी प्रत्यक्ष, सरल और निष्ठामय अभिव्यक्ति आडम्बर-विहीन और अकृत्रिम होती है। सीधे-सादे व्यक्तियों द्वारा सीधी-सादी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए विरचित, लोक कला की कृतियों की विषय-वस्तु में रूप-विन्यास और प्रदर्शन के बजाय, क्रियात्मकता को ही प्रधानता दी गयी है। किन्तु, वे मानव मन की गहराइयों में पैठे सौन्दर्य-बोध की भी तुष्टि करती हैं। इन कलाकृतियों की कल्पना विशुद्धत: मौलिक और निर्भीकतापूर्ण है। उनमें एक ऐसा अनोखा आकर्षण है, जिसका ललित कला की औपचारिक कृतियों में पूर्णतया अभाव होता है।

अमेरिकी जीवन के अनुभवों से एक ऐसी लोक कला का प्रादुर्भाव हुआ है, जो अत्यधिक जीवन्त और विविधतामयी है। यह विविधता अमेरिका में पाये जाने वाले जातीय समूहों की अनेकता को प्रतिविम्वित करती है। इन जातीय समूहों में, अमेरिका के प्रारम्भिक मूल-निवासी, अमेरिकी इण्डियन, और उनके जाति-भाई, अलास्का के एस्किमो; स्पेन से आकर दक्षिण-पश्चिमी इलाकों में बसे लोग; स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड से आकर ऐपलैचन पर्वत-क्षेत्र के दक्षिणी भाग में बसे लोगों के वंशज; और हवाई द्वीप के निवासी शामिल हैं। शताब्दियों से इन जातीय समूहों के शिल्पी अपने उपयोगी तत्वों को एक अनोखी शक्ल और सौन्दर्य देते आ रहे हैं।

प्रकृति के साथ सौहार्दपूर्ण सामंजस्य स्थापित करने में अमेरिकी इण्डियन को जो प्रवीणता प्राप्त है, उसकी बराबरी बहुत कम लोग कर सके हैं। उसने, मुख्यत:, धरती के साथ अपने मूलभूत सम्बन्धों के कारण, और प्रकृति के नियम-चक्रों को पराभूत या नियन्त्रित करने के बजाय उनके साथ तादात्म्य स्थापित करने की उत्कट इच्छा के फलस्वरूप, ही बाहरी प्रभावों का प्रतिरोध किया है। अस्तु, एक अर्थ में यह 'इंडियन कला' ही उत्तरी अमेरिका की सच्ची देशज कला है। और, वह आज तक अपने इसी आदिम रूप में सुरक्षित है।

अमेरिकी इण्डियनों की पांच सौ से अधिक जन-जातियों की परम्पराएं चीनी मिट्टी के बरतनों, टोकरीसाजी, बुनाई, चांदी की कला-कृतियों, मुखौटों और उत्सव के अवसरों पर उपयोग में आने वाली अन्यान्य वस्तुओं में प्रतिविम्वित हुई हैं। इनमें से कुछ कला-वस्तुएं तो कुशल शिल्प और प्राचीन लोक कथाओं की अनादि काल से चली आ रही परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि सब की सब जटिल रचना-शिल्प एवं चटकीले स्पन्दनशील रंगों के प्रति रेड इण्डियनों के सहज अनुराग को प्रतिविम्वित करती हैं।

यद्यपि पिछले पन्द्रह सौ वर्षों में, चीनी मिट्टी के बरतन बनाने की अमेरिकी इण्डियन-विधियों में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी उनके जीवन्त अलंकरण समय-समय पर बदलते एवं नया रूप धरते रहे हैं। खास-खास ग्रामों और क्षेत्रों में, अलंकरण की खास-खास स्थानीय शैलियों ने पात्रों एवं चषकों पर अपनी छाप छोड़ी है। इसीलिए, न्यू मैक्सिको और अरिजोना
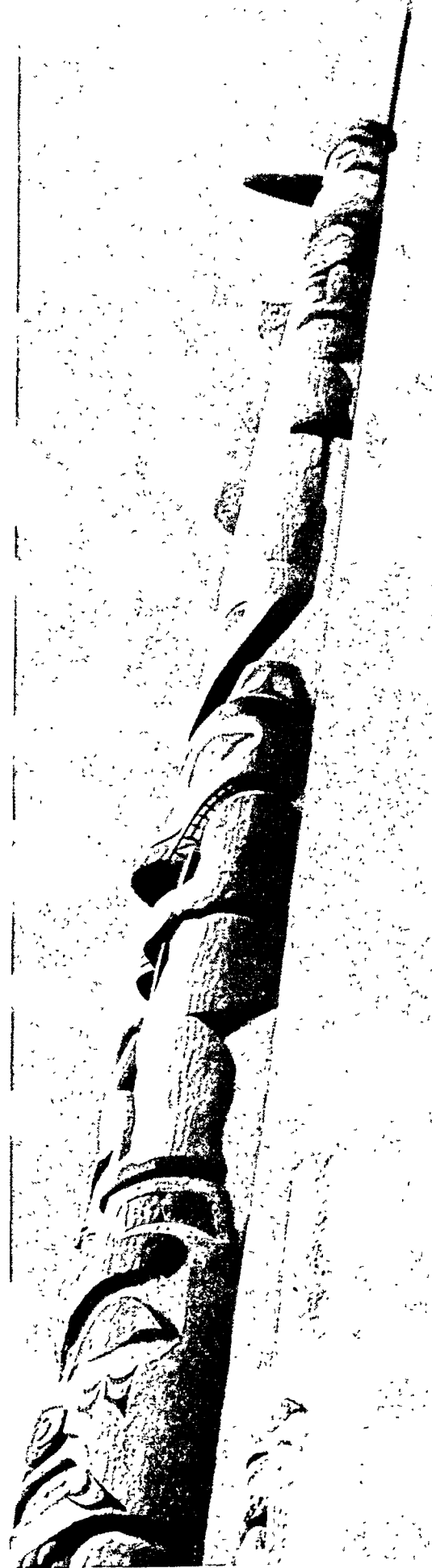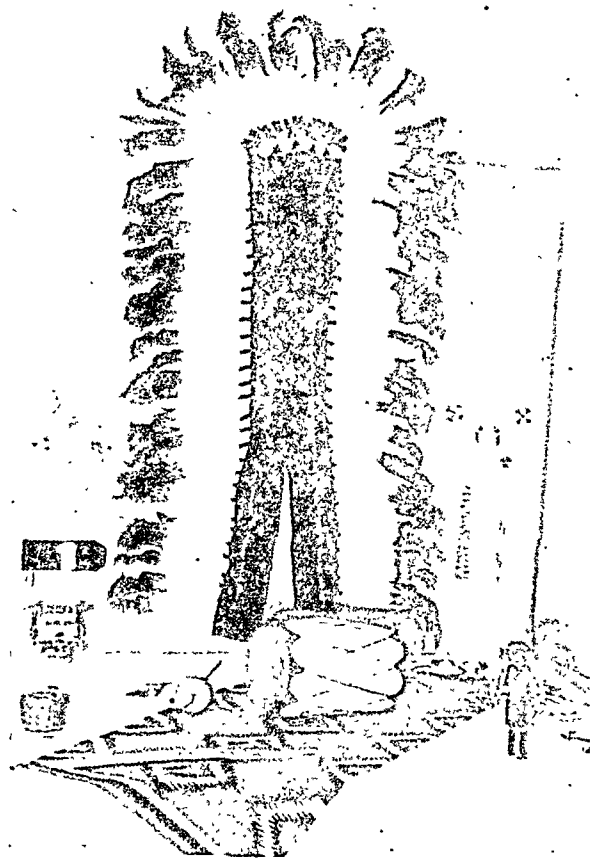
बायीं ओर, कलामा (वाशिंगटन) के रेड इण्डियनों द्वारा उत्कीर्ण टोटम स्तम्भों का आधुनिक संस्करण।

सबसे ऊपर, सोओ इण्डियन की कलाकृति, पंखदार युद्ध-शिरस्त्राण।

ऊपर, स्पेन से आकर बसे अमेरिकियों की कृतियां, 'साण्टो', या धार्मिक प्रतिमाएं : सेण्ट पीटर, गर्दभ, पक्षी, सेण्ट जूड, सेण्ट जोजेफ।

सबसे बढ़ कर, लोक कला की कृतियां व्यक्ति-वैशिष्ट्य की पुष्टि करती हैं।

के प्वैब्लो इण्डियनों की कृतियां आसानी से पहचानी जा सकती हैं। इन क्षेत्रों में चीनी मिट्टी के बरतन बहुतायत से बनाये जाते हैं।

बुनाई की कला का जन्म हाल ही में हुआ है। फिर भी, यह अमेरिकी इण्डियनों की समृद्ध परम्परा से पूर्ण है। उदाहरण के लिए, नवाजो लोगों की बुनाई कला की कुशलता विश्व-विख्यात है। अपने सौंदर्य एवं खरे रचना-शिल्प के कारण उनके धुस्सों, कम्बलों, कालीनों, आदि की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी है। आपको कभी दो नवाजो धुस्से या कालीन एक से नहीं मिलेंगे। प्रत्येक महिला बुनकर, बिना किसी पूर्व-कल्पना या खाके के, अपने करघे पर बैठती है। वह बुनाई करते-करते ही रूपों का सृजन और रंगों का चुनाव करती है। इन पर नवाजो महिला का पूरा अधिकार होता है। कताई, बुनाई, धुनाई, रंगाई, आदि की सारी प्रारम्भिक प्रक्रियाएं वही पूरी करती है।

नवाजो शिल्पियों ने चांदी की कलाकृतियों के निर्माण में भी एक अपूर्व कुशलता प्राप्त की थी। यह काम उन्हें पहले-पहल सन् १८५० के आसपास एक घुमक्कड मैक्सिकोवासी ने सिखाया था। बाद में, इस कला का होपी और जूनी जन-जातियों में भी प्रसार हुआ। उसके बाद तो यह कला उत्कृष्टता की ऊंचाइयों को छूने लगी। चांदी के काम में, जड़ाई के लिए फीरोजे के प्रयोग का प्रचलन हुआ और आज बहुत सारी कृतियों में दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र का यह लोकप्रिय नग जड़ा हुआ मिलता है। जहां नवाजो लोग चांदी की वृहद् आकृतियां पसंद करते हैं, वहां होपी लोगों की अभिकल्पनाओं में प्राचीन बरतनों पर पाये जाने वाले रूपों का अनुकरण किया गया है। जूनी जाति का शिल्प अत्यन्त बारीक है। प्रायः चांदी के जालीदार तले में नन्हें-नन्हें सैकड़ों फीरोजे सजाये जाते हैं।

अमेरिकी इण्डियन सैकड़ों वर्षों से टोकरियां बुनते आये हैं। वे सब तरह की घासों, सित-कुसुमों और 'शैतान के जबड़े' के नाम से विख्यात एक प्रकार की छीमी से टोकरीसाजी करते रहे हैं। दक्षिण अरिजोना की होपी और पापागो जन-जातियां इस कला की अविच्छिन्न परम्परा की प्रमुख वाहक रही हैं।

अमेरिकी इण्डियन कला इतनी विविधतामयी है कि उसकी चर्चा किसी एक लेख में पर्याप्त रूप में नहीं की जा सकती। पर यहां कुछ उदाहरण देना अप्रासंगिक न होगा। सोग्रो जाति के लड़ाई के टोप और मनकों जड़े मृगचर्म के जूते, ब्लैकफुट जाति के तम्बू, सोशोनी और इरोकुई जातियों की गुड़ियां, चेरोकी जाति के काष्ठ शिल्प तथा सेमीनोल लोगों के पैबन्द लगाने के काम अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात हैं।

अलास्का में रहने वाले अमेरिकी इण्डियनों ने भी अपने क्षेत्र की लोक कला को समृद्ध बनाने में योग प्रदान किया था। टोटम (गणचिन्ह) का निर्माण उनकी अपनी विशेषता थी। टोटम एक बेहद नक्काशीदार काष्ठस्तम्भ होता था। यह उस समय विशिष्ट परिवार या कबीले का प्रतीक होता था। बाद में, ये इण्डियन दक्षिण

बायें, ऊपर, अलास्का की लोक कलाकृतियों के नमूने : मुखौटे, फर की गुड़िया, हाथीदांत से निर्मित चिड़िया, टोकरियां।

ऊपर, ऐपलैचन क्षेत्र के पहाड़ी लोगों द्वारा सिला गया गद्दा।

सामने के पृष्ठ पर, अमेरिकी इण्डियनों की कलाकृतियां : नवाजो शैली का कालीन, ढोल और वादक छड़ी, टोटम स्तम्भ, नृत्य का झुनझुना, युद्ध का शिरस्त्राण, काचीना शैली की गुड़िया, आभूषण।

की ओर चले गये।

एस्किमो लोगों की जीव-जन्तुओं और मछली के शिकार पर आधारित संस्कृति उत्तरी ध्रुव-प्रदेश के बर्फीले क्षेत्रों के कष्टकर जीवन के सांचे में ढली है। स्वाभाविक आकृतियों में एस्किमो कलाकार की गहरी रुचि रही है। वह हाथी दांत, ह्वेल मछली की हड्डियों या पत्थरों में, 'आत्मा' के संदेश के अनुसार, रूप गढ़ता है। उसके मुखौटे कल्पना एवं चरित्र-चित्रण की विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन मुखौटों में उसकी परिहास-वृत्ति का अच्छा प्रस्फुटन हुआ है। ये मुखौटे वुल्वरीन (नेवले जैसा एक अमेरिकी जन्तु) की खाल से लेकर ह्वेल की हड्डी तक भिन्न-भिन्न सामग्रियों से बनाये जाते हैं।

गर्मियों में एस्किमो नारियां बेहरिंग सागर के किनारे-किनारे पैदा होने वाली घास एकत्र करती हैं। बाद में, लम्बी और कठोर सर्दियों में इन घासों से टोकरियां बुनी जाती हैं। वे फर और चमड़े से परिधान भी बनाती हैं, जबकि पुरुष वालरस (एक समुद्री जीव) की हड्डियों पर खुदाई करके अपने बच्चों के लिए खिलौने बनाते हैं।

कड़कड़ाती सर्दी वाले एस्किमो-प्रदेश के विपरीत, हवाई द्वीप की सुनहरी धूप वाली जलवायु सीपी, पत्थर, काष्ठ, दांत और हड्डी से बनायी गयी चटक रंगों वाली वस्तुओं में प्रतिबिम्बित होती है। उष्ण प्रदेशीय पक्षियों के शानदार परों से हवाई द्वीपसमूह के शिल्पी सुंदर चीजें बनाते हैं। इन द्वीपों में संगीत सदैव गूंजता रहता है। शायद इसीलिए उनकी अनेक कलाकृतियां संगीत-रचना एवं हूला नृत्य से सम्बद्ध होती हैं।

अमेरिका के प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र के लोगों की अपनी एक पृथक और विशिष्ट लोक कला-परम्परा है। इनमें प्रायः उनकी यूरोपीय पूर्वजों से प्राप्त परम्पराएं परिलक्षित होती हैं। इस सिलसिले में, न्यू मैक्सिको में पायी जाने वाली स्पेनी परम्परा की वस्तुओं का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें सूती कपड़े, काष्ठ और टीन से बनी वस्तुओं का समावेश है। पर इनसे भी महत्वपूर्ण है उनका धार्मिक खुदाई शिल्प। उनकी पवित्र और धार्मिक नक्काशीदार आकृतियां 'साण्टो' कहलाती हैं। उनका निर्माण पहले-पहल सन् १७७० के दशाब्द में किया गया था। ये प्रतिमाएं पवित्रता की प्रतीक थीं। इन्हें बिना सिखाये-पढ़ाये कारीगरों ने तैयार किया था। ये आज भी कारडोवा जैसे छोटे नगरों में बनायी जाती हैं।

स्पेन से आकर बसने वालों की भांति ही, ऐपलैचन पहाड़ियों के दक्षिणी भाग में शुरू-शुरू में आकर बसने वाले लोगों ने सभी चीजें—छोटे-बड़े कैबिन, फर्निचर, टोकरियां, वस्त्र और कृषि-औजार—हाथों से बनायी थीं। खिलौने और वाद्ययन्त्र बाद में बनाये गये। इस क्षेत्र में, उनके वंशज आज भी पाये जाते हैं। यह अमेरिका का वह सबसे बड़ा क्षेत्र है, जहां शिल्पकृतियां अपने पुराने रूप में ही पायी जाती हैं। यहां समकालीन प्रभावों को ग्रहण कर कुछ नयी चीजें भी बनायी गयी हैं। पर, कुल मिला कर, ऐपलैचया के खिलौने और अन्य चीजें प्रारम्भिक लोक कला का अच्छा दृष्टान्त प्रस्तुत करती हैं।

लोक कला संसार में सर्वत्र पुनर्जागरण के दौर से गुजर रही है। यह एक ऐसा आन्दोलन है, जो वर्तमान काल के प्रवाह के बिल्कुल विपरीत है। आजकल अकृत्रिम और लोक कलाकृतियों के प्रति हमारा आकर्षण क्यों बढ़ रहा है?

शायद इसलिए कि हमें लगता है कि लोक कला का अवसान अवश्यम्भावी है। जब कोई ग्रामीण कलाकार अपने लोगों को आनन्दित करने के बजाय, अपरिचितों के हाथों बेच कर लाभ कमाने के उद्देश्य से अपनी कलाकृतियों का सृजन करता है, तो उनकी गुणवत्ता गिर जाती है। लोक कला की कृतियां शायद इसलिए भी भाती हैं कि तकनीकी कुशलता के वर्तमान युग में उनकी सादगी हमें आत्म-संतोष देती और आश्वस्त करती है। यह भी हो सकता है कि घोर नियन्त्रण और सामूहिक उत्पादन के वर्तमान वातावरण में, हम घुटन-सी महसूस करने लगे हैं। और, शायद इसलिए भी कि सब बातों से परे, लोक कला की कृतियां व्यक्ति-वैशिष्टय की ही पुष्टि करती हैं। ■■
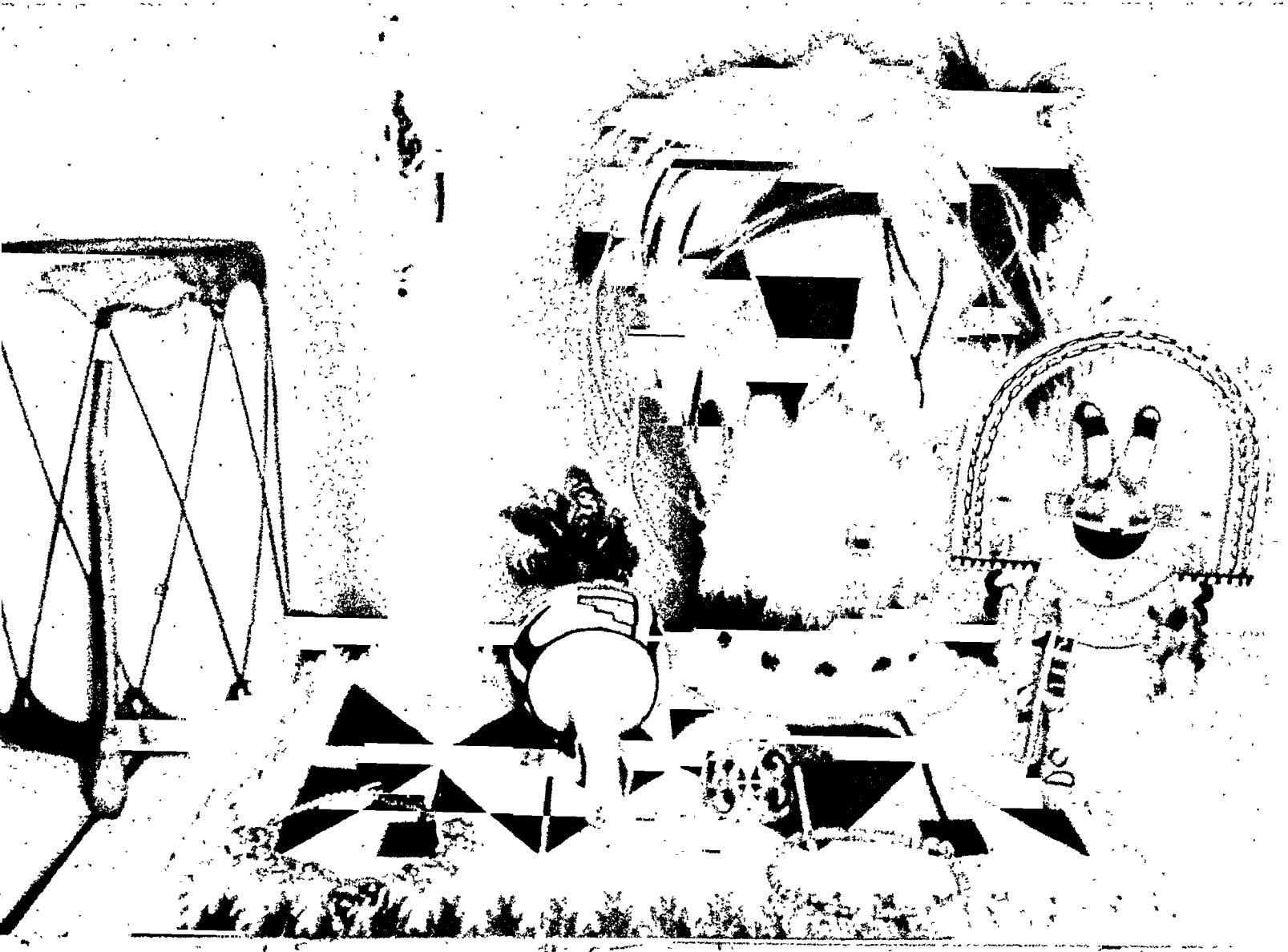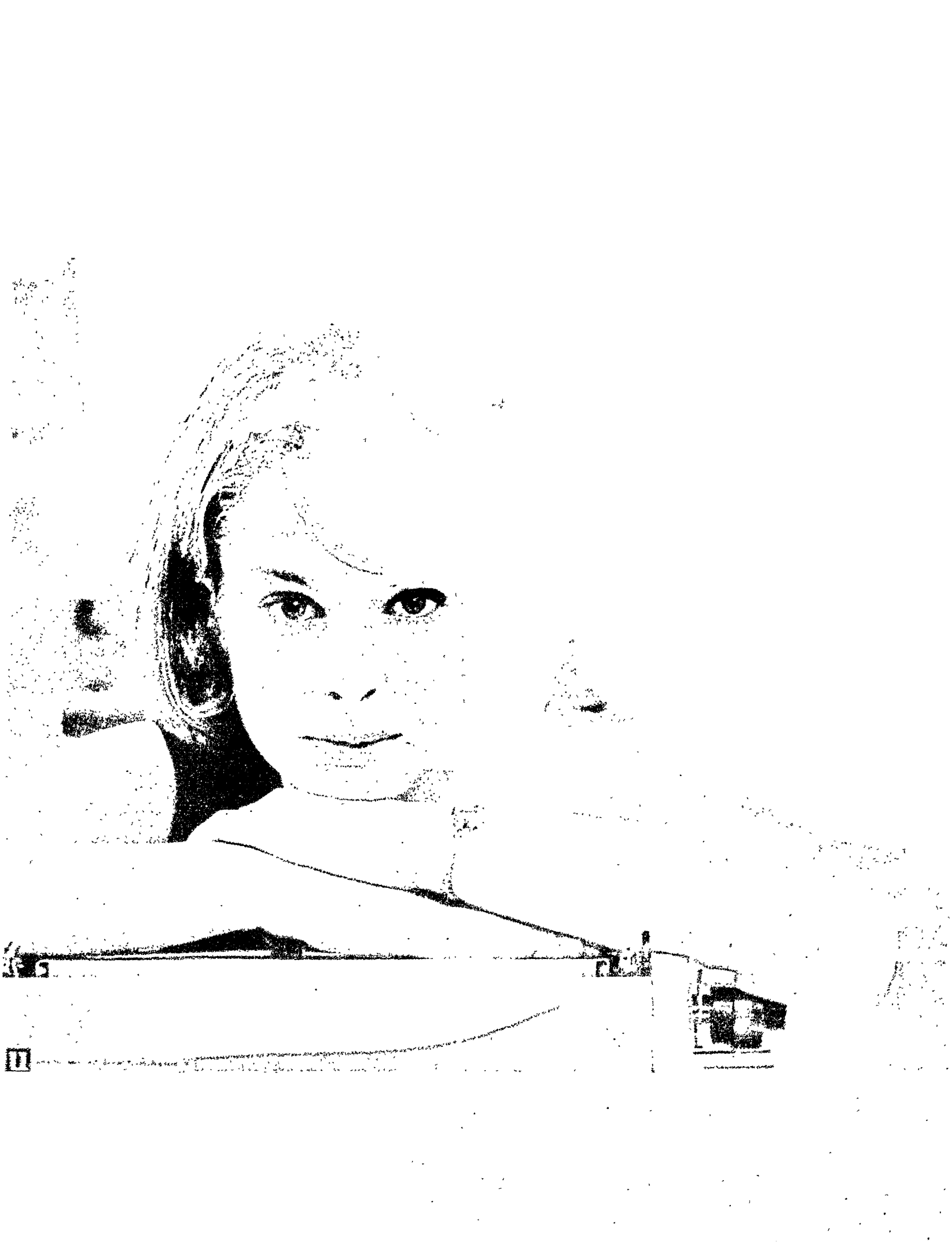
उद्यम का मानवीय पक्ष

मैक्स वेज़

आरोप लगाया जाता है कि अमेरिका में श्रमिक इतने मनुष्यत्वविहीन कर दिये जाते हैं कि वे उद्यम-व्यवस्था के पुर्ज़े मात्र बन कर रह जाते हैं। इस आरोप का खण्डन करते हुए, श्री मैक्स वेज़ ने प्रदर्शित किया है कि अमेरिकी उद्यम का स्वरूप सत्ता के व्यापकतर विकेन्द्रीकरण द्वारा आमूल परिवर्तित कर दिया गया है।

समय-समय पर मुझे पाठकों के पत्र मिलते रहते हैं, जिनमें उनके विचारों का आशय, वस्तुतः, यह होता है : "परमात्मा की कृपा से हमें एक ऐसा लेखक तो मिला, जिसकी दृष्टि में अमेरिका का भविष्य आशाप्रद और सुखद है।" उनके ये सद्भावनापूर्ण सन्देश मुझे उलझन में डाल देते और आक्रोश दिलाते हैं। किन्तु, मैं पाठकों पर नहीं, बल्कि स्वयं पर क्षुब्ध होता हूं। ऐसा लगता है कि मैं जो सोचता और अनुभव करता हूं, उसे साफ-साफ व्यक्त नहीं करता रहा हूं। यह सच है कि अमेरिका के भविष्य के बारे में मैं अतीव आशावादी हूं। यह भी सच है कि इस समाज की मुख्य अन्तर्वर्ती प्रवृत्तियां, विशेष रूप से पिछले २० वर्षों के दौरान, मुझे गलत कम, और सही अधिक, प्रतीत हुई हैं। फिर भी, अमेरिका की सम्भावनाएं मेरे हृदय में प्रसन्नता या विश्वास का संचार नहीं कर पातीं।

निस्सन्देह, मानवीय क्रिया-कलापों की प्रवृत्तियां भू-पिण्डों या हिमनदों की गतियों के समान नहीं होतीं। अमेरिका का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि अमेरिकी लोग, उनके नेता और विचारक इन प्रवृत्तियों द्वारा प्रस्तुत अवसरों और संकटों का किस प्रकार सामना करते हैं। हमारे निर्णय कितने सही हैं, यह अधिकांशतः इस बात पर निर्भर करेगा कि हम वर्तमान और आसन्न भूत को कितनी अच्छी तरह समझ पाते हैं।

आगामी वर्षों में, सार्वजनिक या निजी नीति के निर्माण में हमारी इस समझ-बूझ का बहुत महत्व रहेगा। नीति एक प्रकार की कार्य-प्रणाली है, जिसका उद्देश्य वहां से, जहां कोई है, वहां, जहां वह जाना चाहता है, पहुंचना है। परम्परागत विवेक के अनुसार, नीति-निर्माण की दिशा में पहला कदम लक्ष्यों की स्थापना है। यह प्रक्रिया अतीत काल में, जब राष्ट्र को यह पता होता था कि वह कहां खड़ा है, ठीक थी। किन्तु, आज, नीति के निर्माण में, लक्ष्य का निर्धारण 'दूसरा' कदम हो गया है। पहला कदम यह पता लगाना है कि हम हैं कहां।

यदि अमेरिका पिछले २० वर्षों के दौरान सचमुच उसी दिशा में चलता रहा है, जिसमें अधिकांश प्रेक्षक इसे जाता हुआ समझते हैं, तो अगले दो दशाब्दों में सम्भवतः यह 'किसी' वांछनीय लक्ष्य पर नहीं पहुंच सकता। 'यहां' से 'वहां' पहुंचने का कोई उपाय नहीं है।

उन मामलों में, जिन्हें उद्यम का मानवीय पक्ष कहा जाता है, गलतफहमी गम्भीरतम है। इस घिसे-पिटे, पुराने, विवाद के बारे में, कि अमेरिकी उद्यम-प्रणाली वस्तुओं के उत्पादन और वितरण की सबसे सक्षम विधि है या नहीं, हाल में कुछ अधिक सुनने को नहीं मिला है। और, सक्षमता के प्रश्न पर तो कोई प्रचण्ड मार्क्सवादी भी असंख्य डालर वाली इस अर्थ-व्यवस्था के साथ तर्क-वितर्क करने का साहस नहीं कर सकता।

अब तो इस प्रणाली पर आक्षेप एक अधिक ऊंचे धरातल—जीवन की उत्कृष्टता—पर चला गया है। यह नई कसौटी, अपने-आप में, पहले से बहुत अच्छी है। हमारी अर्थ-व्यवस्था जीवन-यापन के स्तर से बहुत ऊपर उठ चुकी है। इसलिए, अब हम मनोवैज्ञानिक, कलात्मक और नैतिक स्तरों पर अधिक ध्यान दे सकते हैं। लेकिन, हमारे लिए इस सम्बन्ध में आश्वस्त होना आवश्यक है कि हम अमेरिकी जीवन के विकृत रूपों द्वारा प्रस्तुत पहलुओं के बजाय, जो कुछ वस्तुतः हो रहा है, उसी पर ध्यान दे रहे हैं।

जो लोग अब इस उद्यम-प्रणाली की निन्दा करते हैं, उनका कहना है कि अमेरिकी समाज वस्तुओं का बाहुल्य उत्पन्न करने में तो सक्षम है, किन्तु लोगों को भ्रष्ट कर देता है। उनका कहना है कि श्रमिकों को इतना मनुष्यत्वविहीन कर दिया जाता है कि वे उद्यम-व्यवस्था के पुर्ज़े मात्र बन कर रह जाते हैं; उपभोक्ताओं को बेकार की चीजें, जिन्हें वे नहीं चाहते, खरीदने के लिए फुसलाया जा रहा है; व्यावसायिक प्रबन्धक अत्यधिक निरंकुश अधिकार पाकर भ्रष्ट हो रहे हैं; और केन्द्रित सत्ता में निहित भ्रष्टाचार राष्ट्र के राजनीतिक जीवन में फैलता जा रहा है।

इस आक्षेप की गम्भीरता को कम आंकना गलती होगी। विदेशों में बहुत से लोग अमेरिका के इसी रूप में विश्वास करने लगे हैं, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अमेरिका के नैतिक एवं राजनीतिक प्रभाव को क्षति पहुंच रही है। उद्यम-प्रणाली के मानवीय पक्ष के सम्बन्ध में दसियों लाख अमेरिकियों की धारणा भी, जिनमें सुशिक्षित और अत्यन्त प्रभावशाली लोग भी शामिल हैं, थोड़ी-बहुत ऐसी ही नकारात्मक है। इस धारणा की हतोत्साहित और कुण्ठित करने वाली व्यापकता भविष्य की अपेक्षाकृत अधिक कठिन चुनौतियों का सामना करने के लिए किये जाने वाले हमारे प्रयत्नों को पंगु कर सकती है।

उद्यम के मानवीय पक्ष पर किये गये आक्षेपों का निराकरण उतना आसान नहीं, जितना आसान उसकी उत्पादन-क्षमता पर किये गये आक्षेपों का खण्डन करना रहा है। हमारे पास वस्तुओं और सेवाओं के कुल उत्पादन का माप करने के लिए तो मापदण्ड उपलब्ध है, किन्तु स्वाधीनता, गरिमा और सत्ता के केन्द्रीकरण जैसी अमूर्त चीजों का मूल्यांकन करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। अभी तक हम सकल राष्ट्रीय उत्पादन की भांति सकल राष्ट्रीय स्वाधीनता का कोई सूचकांक तैयार करने में

यह लेख 'फार्चून' पत्रिका के सम्पादक-मण्डल के सदस्य, श्री मैक्स वेज, के एक भाषण पर आधारित है, जो उन्होंने ह्वाइट हाउस द्वारा 'भावी औद्योगिक संसार' विषय पर हाल में आयोजित एक सम्मेलन में दिया था।

समर्थ नहीं हुए हैं और हमारे लिए ऐसा कर पाना शायद सम्भव भी नहीं होगा।

इस प्रकार के मापदण्ड के अभाव में, हम किसी को भी यह कहने से रोक नहीं सकते कि अमेरिका के लोग एक ऐसी प्रणाली के दास बनते जा रहे हैं, जो मानव के रूप में उन्हें महत्व नहीं देती; जो अपने काम के लिए मुख्यत: मशीनों पर, और अपने निर्णयों के लिए मुट्ठी भर नेताओं पर, निर्भर करती है। अमेरिका के वर्तमान और भविष्य की ऐसी तस्वीरों को चुनौती दिये बिना, यों ही छोड़ देना वांछनीय नहीं। निस्सन्देह, इस प्रकार की धारणाओं का खण्डन करने के लिए हमारे पास सही-सही आंकड़े नहीं हैं। फिर भी, ऐसे प्रबल प्रमाण उपलब्ध हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि उनकी धारणाएं गलत हैं।

उदाहरणार्थ, क्या यह सच है कि मशीनें उत्तरोत्तर काम का इतना अधिक भार अपने ऊपर लेती जा रही हैं कि मनुष्यों के लिए काम बराबर कम होता जायेगा? मेरा एक युवा मित्र, जो अध्यापक बनना चाहता है, गत वर्ष एक विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम में भर्ती हो गया। एक प्रोफेसर ने कक्षा को बताया कि समझने की पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्कूलों में इस समय दाखिला लेने वाले प्रत्येक पांच बच्चों में से तीन को अपने जीवन में कभी भी कोई काम-धन्धा न मिल सकेगा। अगर पर्याप्त संख्या में अध्यापक इस भविष्यवाणी में सचमुच विश्वास करते हैं, तो यह बात सम्भवत: इसके चरितार्थ होने की गारण्टी सिद्ध हो सकती है। अब से २० वर्ष बाद, अमेरिका को श्रमिकों की बहुत तीव्र आवश्यकता हो सकती है और तब हम देखेंगे कि अधिकांश नये वयस्कों को इतना सारा व्यय करके केवल काम न करना सिखाया गया है।

सारी जिन्दगी मैं एक प्रचुर अवकाश वाले समाज में निहित सम्भावनाओं—या संकट—की बात सुनता आ रहा हूं। प्रत्येक महान् प्रौद्योगिक प्रगति—जिसका आधुनिकतम दृष्टान्त संगणक यन्त्र है—अपने साथ विकराल बेरोजगारी, या निठल्लू की तरह सोये पड़े रहने के लिए अवकाश, की भविष्यवाणियों की बाढ़ लाती है। मुझे तो निठल्लू की तरह खाली बैठे रहने के लिए कभी भी अधिक समय नहीं मिला, और आंकड़े बताते हैं कि अकेले मैं ही ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ। १९४० के बाद से, एक ओर जहां, अमेरिका में काम का सप्ताह आहिस्ता-आहिस्ता छोटा होता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर, लाखों की संख्या में महिलाएं श्रमशक्ति में शामिल हुई हैं। रोजगार के बाजार के बारे में आधारभूत तथ्य यह है कि मशीनों द्वारा इतना सारा काम सम्पन्न होने के बावजूद, रोजगार की मांग उत्तरोत्तर बढ़ती रही है।

१९६०-७० के दशाब्द के मध्य में, मैंने एक विश्वविद्यालय के अध्यक्ष को यह कहते सुना कि पूर्व-स्नातक वर्ग के अधिकांश छात्र कालेजों में इसलिए हैं कि समाज ने, जिसके पास उनके लिए करने को कोई काम-धन्धा नहीं है, उन्हें कालेज प्रांगण में 'पार्क' कर दिया है। इसके विपरीत, मेरा विश्वास यह है कि अमेरिका उच्चतर शिक्षा पर इतना अधिक व्यय इसलिए करता है, क्योंकि वह इस बात के प्रति जागरूक है कि भविष्य में उसे लाखों प्रशिक्षित स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता होगी।

गत दस वर्षों के भीतर तेजी से बढ़ती हुई समस्त आय सशक्त संघों के रूप में संयोजित वर्गों में ही केन्द्रित नहीं रही है, जैसा कि लोग समझते हैं। उच्च शिक्षा पर आधारित पेशों में शामिल लोग, जैसे वकील, डाक्टर, कम्पनी मैनेजर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, संचारक, आदि लेजड़ियों के बाजार में रहते रहे हैं, अर्थात् उनकी मांग उनकी पूर्ति की अपेक्षा तीव्रतर रही है। इनकी अपेक्षा व्यापकतर पेशेवर श्रेणियों में भी मांग की मात्रा पूर्ति से अधिक रही है; और यह एक ऐसा तथ्य है जो मुद्रास्फीति की स्थिति को बराबर बनाये रखने में योग दे सकता है।

हम श्रम के अभाव की बात को स्वीकार नहीं करते, क्योंकि हम यह नहीं मानते कि श्रमिकों की कमी और निरन्तर बेरोजगारी की स्थितियां साथ-साथ कायम रह सकती हैं। इस विरोधाभास को हम समझ सकते हैं, बशर्ते बेरोजगारी को हम तीन अलग-अलग समस्याओं के रूप में देखें।

इसका एक रूप, जिससे हम १९३० के दशाब्द से ही उद्विग्न रहे हैं, आवर्तक बेरोजगारी है। अन्य औद्योगिक देशों के साथ-साथ अमेरिका भी व्यावसायिक चक्र में समता लाकर इस क्षेत्र में अच्छी प्रगति करता रहा है।

दूसरे प्रकार की बेरोजगारी, जिसे प्राय: भ्रमवश पहले का ही रूप समझ लिया जाता है, अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक दक्षता के स्तर को ऊंचा कर देने के कारण उत्पन्न होती है। मशीनों ने अदक्ष कर्मचारियों का स्थान छीन लिया है और आगे भी छीनती रहेंगी। शिक्षा-प्रणाली की, और असुविधाग्रस्त वर्गों को रोजगार में खपाने के लिए प्रयुक्त अन्य सामाजिक साधनों की, प्रगति ऐसी नहीं रही है, जो इस समय रोजगार में बने रहने के लिए आवश्यक दक्षता-स्तरों और मनोवृत्तियों के अनुरूप हो। फलस्वरूप, अमेरिका में सम्भाव्य श्रमिकों की, जिनमें बहुत से युवा हैं, एक बड़ी संख्या मौजूद है, जिन्हें तभी कोई रोजगार मिलता है, जब अर्थ-व्यवस्था में बहुत सरगर्मी होती है। कृत्रिम उपायों द्वारा आर्थिक अभिवृद्धि के चरम बिन्दु को ऊपर उठाने का प्रयत्न करके और भी अधिक मुद्रास्फीति को निमंत्रित करने की अपेक्षा इस वर्ग के लोगों की दक्षता का स्तर ऊपर उठाना, अंतत:, अधिक सस्ता प्रयास सिद्ध होगा।

तीसरे प्रकार की बेरोजगारी की समस्या वह है, जिसका दृष्टान्त हाल में वायु-अन्तरिक्षीय उद्योग द्वारा प्रस्तुत हुआ है, जहां हजारों उच्च शिक्षा प्राप्त लोग बेरोजगार कर दिये गये हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी, जिसका रूप अपेक्षाकृत कम स्पष्ट और नाटकीय होता है, सदैव बनी रहती है और अधिक गम्भीर रूप धारण कर सकती है। जैसे-जैसे काम-धन्धे अधिक विशिष्टीकृत और व्यक्ति-सापेक्ष होते जायेंगे, वैसे-ही-वैसे श्रमिकों को उपलब्ध कार्यों के अनुरूप बनाना अधिक कठिन होता जायेगा। भविष्य में, शिक्षा सम्बन्धी नीति का उद्देश्य नई दक्षताओं के प्रौढ़ विकास के लिए एक श्रेष्ठतर पृष्ठभूमि तैयार करना होना चाहिए।

इनमें से किसी भी किस्म की बेरोजगारी इस प्रस्तावना को गलत नहीं ठहराती कि शिक्षित कर्मचारियों और श्रमिकों के लिए अर्थ-व्यवस्था की मांग उत्तरोत्तर बढ़ती ही रहेगी। एक प्रमुख तथ्य यह है कि सभी प्रकार के कुल श्रमिकों की संख्या में सफेदपोश कर्मचारियों की संख्या आधे से अधिक है। इस तथ्य की समीक्षा करने से हमें इस सम्बन्ध में काफी कुछ जानकारी मिल जायेगी कि व्यवसाय या उद्यम के मानवीय पक्ष तथा समाज की गुणवत्ता के बारे में क्या हो रहा है। हमें गम्भीरता से यह पूछने की आवश्यकता है कि अमेरिका को इन सब सफेदपोश कर्मचारियों की इतनी आवश्यकता क्यों है।

चार शब्द, जो आज के समाज की चार विशेषताओं के प्रतीक हैं, सफेदपोश कर्मचारियों की बढ़ती हुई मांग की पहेली को स्पष्ट कर देते हैं। ये शब्द हैं: परिवर्तन, ज्ञान, वैयक्तिकता और परस्परावलम्बन।

एक विरोधाभास प्रस्तुत करने के उद्देश्य से, जिसकी पृष्ठभूमि में इन शब्दों के मन्तव्य को अच्छी तरह स्पष्ट किया जा सकता है, हम उद्योग-प्रधान सदियों से पहले के एक प्रतिनिधि यूरोपीय समाज पर संक्षिप्त रूप में दृष्टिपात कर सकते हैं। उस समाज में साधारण जन के जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता था। ज्ञान का महत्व उस समय भी था, किन्तु उसका संचय बहुत धीरे-धीरे ही हो पाता था। यह ज्ञान बिना किसी संगठित प्रयत्न के पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे संचारित होता जाता था। वैयक्तिकता की धारणा को, जिसे ईसाइयत ने बहुत गहन और सबल बना दिया था, दैनिक जीवन से, जहां किसी एक व्यक्ति का काम और उसके जीवन-यापन का ढंग दूसरे व्यक्ति के

"हमारे समाज को जिस प्रकार की असीमित सहकारिता की आवश्यकता है, उसे स्वेच्छाचारी सत्ता के आदेश द्वारा ऊपर से बलात् थोपा नहीं जा सकता।"

काम और जीवन-यापन के ढंग से बहुत मिलता-जुलता था, बहुत धार्मिक शक्ति प्राप्त नहीं हुई। सहकारिता या तो परम्परा द्वारा अनुशासित थी, अथवा आवश्यकता पड़ने पर ऊपरी सत्ता द्वारा निर्दिष्ट होती थी।

उस प्रकार के समाज को निर्णय लेने, तथ्य-संग्रह करने, योजना बनाने, विभिन्न वर्गों के बीच संचार-सूत्र स्थापित करने, समझाने-बुझाने या भिन्न-भिन्न मतों के बीच तालमेल बिठाने के लिए यत्न करने की कोई अधिक आवश्यकता नहीं थी। सम्पूर्ण जनसंख्या का एक अल्पांश ही—जिसमें मुख्यतः कुलीन लोग और धर्माचार्य शामिल थे—आवश्यकतानुसार सामाजिक निर्णय लेने और सुगठित संचार-सूत्र की व्यवस्था करने का दायित्व वहन करता था। शेष लोगों के लिए तो जीवन का क्रिया-कलाप दिनचर्या के अति-सामान्य विषयों—'भेड़ों की संख्या बढ़ गई. . . .या भेड़ें अचानक बीमार हो गई और मर गई; शलजम उगी. . . .या नहीं उगी'—की चर्चा तक ही सीमित था। दिन-प्रतिदिन दूसरों से कहने-सुनने के लिए था ही क्या? उनके पास क्या था, जिसे वे खोज निकालते अथवा परिवर्तित करते? निर्णय वे करते भी तो किस बात का?

किन्तु, हमारे इस युग में विविध प्रकार की सूचनाओं और जानकारियों के आदान-प्रदान और व्यवस्था की आवश्यकता के कारण श्रम-शक्ति की मांग बहुत तीव्र और व्यापक हो गई है। किसी एक उद्यम के भीतर, एक उद्यम और दूसरे उद्यम के बीच, अथवा समग्र रूप में, सारे समाज के भीतर, हम सूचना-प्रवाह द्वारा ही सहकारिता का उद्देश्य प्राप्त करते और निर्णय लेते हैं। निस्सन्देह, प्रौद्योगिकी से हमें ऐसा करने में मदद मिलती है, किन्तु जहां तक समाज को सुसंगठित करने, उसमें समन्वय स्थापित करने, का सम्बन्ध है, इसका दायित्व मूलतः मनुष्य पर ही है। सफेदपोश कर्मचारियों की संख्या में इतनी वृद्धि होने का कारण यही है।

हमारा समाज ही वह पहला समाज है, जिसमें अध्यापकों की संख्या किसानों से अधिक है; जहां अंकों, शब्दों, विचारों और अन्य प्रतीकों के माध्यम से काम करने वाले लोग भौतिक वस्तुओं का निर्माण करने वालों से संख्या में अधिक हैं। प्रतीकों से काम करने वाले ये करोड़ों लोग, ये सफेदपोश कर्मचारी, कोई परजीवी या फालतू लोग नहीं हैं। वे आज के समाज के मुख्य क्रिया-कलाप का, जो स्वयं समाज के ही संश्लेषण और निर्देशन में निहित है, संचालन कर रहे हैं। जैसे-जैसे अंगरचना अधिकाधिक जटिल होती जाती है, उसकी स्नायु-प्रणाली भी अधिक व्यापक और विस्तृत होती जाती है। आजकल बैंकों, विश्वविद्यालयों, कला एवं मनोरंजन के क्षेत्रों, सरकारी दफ्तरों, समाज-सेवा के संगठनों, संचार-उद्योग तथा हर तरह की प्रबन्ध-व्यवस्था में दसियों लाख ऐसे स्त्री-पुरुष काम कर रहे हैं, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का निर्माण करने और उन्हें कायम रखने की दिशा में आवश्यक भूमिका निभा रहे हैं।

हमारा प्रमुख साधन ज्ञान है, और इसकी खोज तथा इसके व्यावहारिक उपयोग, दोनों ही, में अत्यधिक विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा तथ्य है, जिसके कारण एक व्यक्ति का काम दूसरे व्यक्ति के काम से बहुत भिन्न हो जाता है। यह भिन्नता, यह विविधता, ऐसी है, जो पश्चिमी संस्कृति में निहित दीर्घकालीन व्यक्तिवादी प्रवृत्ति को बहुत बल देती है।

तो भी, हमारे समाज में व्याप्त विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति का एक और परिणाम है, जो देखने में—किन्तु सिर्फ देखने में ही—व्यक्तिवाद की प्रवृत्ति का विरोधी प्रतीत होता है। यह दूसरी विशेषता है—परस्परावलम्बन की। अब से पहले कभी भी कोई ऐसा समाज नहीं रहा, जिसमें उन लोगों की संख्या, जो यह कह सकते हों कि वे अकेले अपने ही पांव खड़े हैं, इतनी कम रही हो। हम एक दूसरे के बिना न तो काम कर सकते और न ही जीवित रह सकते हैं। हम भाईचारा महसूस करें या न करें; किन्तु यह निश्चित है कि अपना वर्तमान जीवन हम, वस्तुतः, भाईचारे में ही बिता रहे हैं।

हमारे समाज को जिस प्रकार की असीमित सहकारिता की आवश्यकता है, उसे स्वेच्छाचारी सत्ता के आदेश द्वारा ऊपर से बलात् थोपा नहीं जा सकता। स्वयं अपने उद्यम के भीतर भी कोई व्यक्ति मनमाने तौर पर अपनी इच्छा के अनुसार प्रभावकारी सहकारिता कायम नहीं कर सकता। राष्ट्रपति निक्सन ने 'नौकरशाही के साथ अपने संघर्ष' का उल्लेख किया है। उन लोगों को, जिनके मस्तिष्क अभी भी अतीत में गड़े हुए हैं, इस बात पर हैरानी हो सकती है कि राष्ट्रपति निक्सन नौकरशाहों से यह कह क्यों नहीं देते कि वह क्या चाहते हैं। किन्तु, सच्चाई यह है कि उनको, और उनकी भांति ही प्रत्येक निगम या विश्वविद्यालय के अध्यक्ष को, प्रायः हर रोज ही किसी-न-किसी ऐसे अदने कर्मचारी से पाला पड़ता है, जिसे निर्णय लेने की क्रिया के किसी नाजुक पहलू की जानकारी उनकी अपेक्षा अधिक होती है। इन विभिन्न इच्छा-शक्तियों पर जोर-जबर्दस्ती नहीं की जा सकती। अब तो नेतृत्व का प्रयोग समझाने-बुझाने और राजी कर लेने की प्रक्रिया के ताने-बाने के भीतर ही किया जा सकता है।

बहुत पहले, १३ वीं शताब्दी में, एक वकील, हेनरी ब्रैक्टन, ने तत्कालीन ब्रिटिश राजाओं की सत्ता की कुछ कमियों और सीमाओं का उल्लेख किया था। राजा को अपनी इच्छा लागू करने और हुक्म चलाने के लिए एक राज-दरबार की जरूरत पड़ती थी। 'सरदार' या नवाब, जो राजा की सहायता करते थे, उसके संगी या साथी कहलाते थे; 'और', ब्रैक्टन के अनुसार, 'जिसका कोई साथी होता है, उसका कोई स्वामी भी होता है।' १३ वीं या किसी भी अन्य सदी की तुलना में, आज यह प्रवृत्ति कहीं अधिक प्रबल रूप में दिखायी देती है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति का काम अपनी गुणवत्ता और प्रभावकारिता के लिए दूसरों के काम या निर्णय पर कुछ-न-कुछ अवश्य निर्भर करता है। ये दूसरे लोग उसके सहायक हो सकते हैं; उसके ऊपर के अधिकारी या अमीर उमराव हो सकते हैं; उसके प्रतियोगी, उसके ग्राहक या उसे वस्तुओं की पूर्ति करने वाले हो सकते हैं; अथवा उसके निर्वाचन-क्षेत्र के शेयरहोल्डर या नागरिक हो सकते हैं, जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है। आज, हम सभी लोगों के अपने संगी-साथी, और इसलिए, ब्रैक्टन के अर्थ में, स्वामी हैं।

किन्तु, इसका यह मतलब नहीं है कि हम सभी असहाय या किसी के गुलाम बन गये हैं। इसके विपरीत, हमारे जीवनकाल में सत्ता का चुपचाप व्यापक विकेन्द्रीकरण हुआ है। ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि समाज में जो लोग पहले उच्च वर्ग में थे, वे अब स्वेच्छा से उदार होना चाहते थे। न ही इसलिए हुआ कि नीचे के लोगों ने विद्रोह कर सत्ता हथिया ली। इस परिवर्तन के सही कारण अधिक बुनियादी और अधिक स्थायी थे, और ये कारण भी उन्हीं चार विशेषताओं—परिवर्तन, ज्ञान, वैयक्तिकता और परस्परावलम्बन—में निहित हैं।

सत्ता के व्यापकतर विकेन्द्रीकरण ने उद्यम के मानवीय पक्ष को बहुत परिवर्तित कर दिया है। इसके सबसे ज्वलन्त उदाहरण, सम्भवतः, किसी निगम के 'आन्तरिक' क्रिया-कलाप में पाये जा सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उद्यम में काम पर लगे अधिकांश लोग, जिनमें कितने ही मध्यम और उच्च स्तर के प्रबन्धकर्ता भी शामिल हैं, अपने-आप में हताश और असन्तुष्ट अनुभव करते हैं। उनकी शिकायत है कि उनका उत्तरदायित्व (अधिकार) बहुत सीमित है। कोई-न-कोई, चाहे वह सरकार हो, उच्च अधिकारी या सहयोगी हो, या श्रमिक संघ अथवा बैंक हो, उनके मार्ग में बाधक बन ही जाता है।

एक तरह से, अपना अधिकार-क्षेत्र बढ़ाने की यह उत्कण्ठा अच्छी है, क्योंकि यह हमारे युग की एक बुनियादी प्रवृत्ति से मेल खाती है। लेकिन, उस हालत में स्थिति बिल्कुल भिन्न हो जाती है, जब हम व्यापक अधिकार-क्षेत्र पाने की इस लालसा को दमनकारी प्रणाली के खिलाफ विद्रोह के रूप में देखते हैं, अथवा उसे चिरकाल से चलती आ रही आजादी पाने की प्रवृत्ति का एक अंग मानते हैं।

हर कहीं यह प्रवृत्ति दिखायी दे रही है कि संगठन उच्चतम स्तर को छोड़ कर अन्य स्तरों पर काम कर रहे व्यक्तियों में अधिकाधिक सत्ता वितरित कर रहे हैं। सेनाएं बदल रही हैं, क्योंकि फ्रेडरिक महान् के नमूने पर प्रशिक्षित मानव-रोबाट आज की सैन्य प्रौद्योगिकी को नहीं सम्हाल सकते। पारिवारिक जीवन में भी सत्ता का रोब जताने की प्रवृत्ति कम होती

जा रही है (४० वर्ष गुजर गये, जब मैंने किसी अमेरिकी को यह शेखी बघारते सुना था कि उसकी पत्नी बड़ी आज्ञाकारी है—और वह भी झूठ बोल रहा था।) राजनीति बदल रही है क्योंकि जो वर्ग पहले चुप थे, वे अब आग्रह कर रहे हैं कि उनकी बात सुनी जाये।

अमेरिका की व्यावसायिक उद्यम-प्रणाली कम-से-कम दो दशाब्दों से इस उन्मुक्तकारी प्रवृत्ति में अगुआ रही है। इसको अग्रणी की यह भूमिका निभानी ही थी, क्योंकि प्रत्येक निगम उत्तरोत्तर अधिक-से-अधिक व्यक्तियों के व्यक्तिगत ज्ञान, व्यक्तिगत पहल और व्यक्तिगत निर्णय पर अधिकाधिक निर्भर होता गया। इस प्रकार के गुणों को सिर्फ पैसे के बल पर न तो प्राप्त किया जा सकता था, न कायम रखा जा सकता था और न ही प्रोत्साहित किया जा सकता था।

आज के व्यावसायिक जगत की विशिष्ट निराशाएं ऊपर से केन्द्रीकृत सत्ता के थोपे जाने के कारण नहीं, अपितु स्वतन्त्रता और सत्ता के विकेन्द्रीकरण में वृद्धि होने के फलस्वरूप, उत्पन्न हुई हैं। अन्य लोगों को स्वतन्त्रता और सत्ता मिल जाने के कारण अब कोई भी काम पूरा करने के लिए उनसे परामर्श करना या उन्हें राजी करना अनिवार्य हो गया है। कुछ इनसे भी ज्यादा गम्भीर हताशाएं वे हैं, जो हम में से प्रत्येक को इसलिए उठानी पड़ती हैं कि हम में कार्य-निष्पत्ति के लिए निर्धारित स्वयं अपने आभ्यन्तरिक पैमानों के अनुरूप उतरने की क्षमता नहीं है।

मैं एक ऐसे समाज की चर्चा कर रहा हूं, जो संकटों, चिन्ताओं और संघर्षो से भरपूर हो—एक ऐसा समाज, जो अपने-आपको खूब अच्छी तरह समझते हुए भी, सुखमय, शान्त या सुरक्षित न हो। किन्तु, जनता के सामने अमेरिका की वास्तविक तस्वीर को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने के कारण समग्र राष्ट्रीय जीवन और भी अधिक कठिन हो गया है। एक ऐसे समाज को, जो संचार-साधनों पर इतना निर्भर है, उन सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीकों के बारे में, जिनका उपयोग वह अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए करता है, बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि बुद्धिजीवियों और जानकारियों का संचार करने वाले पेशेवर लोगों ने, एक समूह के रूप में, इस समाज द्वारा अपनी व्याख्या स्वयं करने के काम में बहुत लापरवाही और सुस्ती दिखलायी है।

अमेरिकी उद्यम की वह तस्वीर, जो नाटकों, उपन्यासों, गीतों, लोकगीतों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रस्तुत की गयी है, बहुत पुरानी पड़ गई है, अथवा बहुत तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत की गयी है। फलस्वरूप, प्रतिभाशाली युवक-युवतियां, जिनकी उद्यम-प्रणाली को जरूरत है, व्यवसाय सम्बन्धी रोजगारों में आने से इन्कार कर देती हैं, क्योंकि उनके सामने उद्यम-प्रणाली की जो तस्वीर रखी गई है, वह सच्ची नहीं है। जो लोग व्यवसाय जगत में आते भी हैं, उनमें से कितने ही हताश और कुण्ठित रहते हैं, क्योंकि वे आत्म-प्रतारणावश और गलती से यह मान बैठते हैं कि पैसे की खातिर वे एक ऐसी अनैतिक प्रणाली अपना रहे हैं, जो मानव-प्राणियों के रूप में उनके समुचित विकास को अवरुद्ध कर देगी।

विचारों की शक्ति, चाहे वे विचार गलत प्रकार के ही क्यों न हों, ऐसी होती है कि सच्चाई को देख पाने का अवसर भी पूर्वधारणाओं को हर हालत में संशोधित करने में असमर्थ होता है। स्वयं व्यवसायी लोग भी अपने जीवन को 'भाग-दौड़' का जीवन बताते हैं, जबकि अधिकांश तनाव और दबाव, वस्तुतः, उत्कृष्टता के ऊर्ध्वशील स्तरों के अनुरूप बनने के लिए उनके द्वारा किये जाने वाले स्वयं अपने प्रयत्नों के कारण उत्पन्न होता है। बहुत से व्यवसायी अपना एकमात्र लक्ष्य व्यवसाय में भौतिक सफलता प्राप्त करना बतलाते हैं, जबकि, वस्तुतः, वे अपना जीवन ऐसे कार्यों में व्यतीत करते हैं, जो समाज के लिए अत्यन्त बहुमूल्य होते हैं। वे स्वयं को उद्यम-प्रणाली का दास बतलाते हैं, जबकि, वस्तुतः, अधिकाधिक लोगों को अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारियां और आजादी प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में, यदि इतनी बड़ी संख्या में युवक-युवतियां व्यावसायिक जीवन को, जो उनके समक्ष एक प्रकार के प्रतिगामी पाखण्ड के साथ—इस गलत धारणा के साथ, कि व्यावसायिक जीवन में नैतिकता की स्थिति बहुत बुरी है—रखा जाता है, ठुकरा देती हैं, या केवल अनिच्छा से अपनाती हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

उद्यम-प्रणाली ही अमेरिकी जीवन का एकमात्र ऐसा पक्ष नहीं है, जिसे गलत और जराजीर्ण प्रतीकों द्वारा विकृत किया गया है। मेरे कहने का जो आशय है, उसके दृष्टान्त दो प्रसिद्ध साहित्यिक गल्प-चरित्र—'राबिन्सन क्रूसो' और जार्ज ओरवेल के उपन्यास का नायक, 'बिग ब्रदर'—हैं। लाखों व्यक्तियों की दृष्टि में राबिन्सन क्रूसो स्वतन्त्रता का पूर्ण प्रतीक—प्रकृति की गोद में पला एक सभ्य पुरुष—है, जो अन्य मनुष्यों के साथ व्यवहार करने की जटिलताओं से सर्वथा मुक्त है। बेशक, मैन फ्राइडे एक ऐसा व्यक्ति अवश्य है, जिसकी दृष्टि में क्रूसो ऐसा मानव नहीं है, क्योंकि उसे क्रूसो के आदेश से बाध्य होकर अप्रिय काम करने पड़ते हैं। अगर क्रूसो का स्वेच्छाचारी और स्वायत्त जीवन ही स्वतन्त्रता सम्बन्धी हमारी धारणा का वास्तविक प्रतीक है, तो हम अपनी तरह की स्वतन्त्रता को कभी भी पसन्द नहीं कर सकेंगे—एक ऐसी स्वतन्त्रता को, जो उत्तरोत्तर ह्रासोन्मुख असमानता की परिस्थितियों में, अन्य मनुष्यों के साथ परस्परावलम्बन के बीच ही, फलती-फूलती है।

भविष्य के अमेरिका में राबिन्सन क्रूसो जैसे व्यक्तियों को प्रश्रय मिलने की बहुत गुंजाइश नहीं है और मैन फ्राइडे जैसों के लिए तो और भी कम है। उसमें पहले के सभी अधीनस्थ या अनुसेवी वर्गों का, जिनमें अश्वेत, महिलाएं, यहां तक कि बच्चे भी, शामिल हैं, उन शर्तों पर अपेक्षाकृत अधिक नियन्त्रण होगा, जिन पर वे सहयोग करने के लिए प्रस्तुत होंगे। कल के अमेरिका में, चाकरी का काम केवल मशीनें करेंगी। व्यक्तियों से तो उसे सिर्फ व्यक्तिगत निर्णय, सूझबूझ और पहल की अपेक्षा होगी।

दूसरा बड़ा साहित्यिक प्रतीक, जो हमारी अपनी तस्वीर को भ्रान्त कर रहा है, अभी थोड़े ही समय पहले सामने आया है। हो सकता है कि ओरवेल के ग्रन्थ, **'नाइन्टीन एट्टीफोर'**, का लक्ष्य एकदलीय अधिनायकवाद पर व्यंग करना रहा हो, किन्तु इसके सम्बन्ध में सामान्य धारणा यही रही है कि यह समूचे आधुनिक समाज पर एक गहरा कटाक्ष है। चूंकि सन् १९८४ को आने में अब १२ वर्ष से भी कम समय रह गया है, इसलिए पूछा जा सकता है कि ओरवेल की कल्पना का दैत्य कितना वास्तविक है? बहुत ज्यादा नहीं। 'बिग ब्रदर' को धता बताने के लिए हम सब प्रस्तुत थे—और अभी भी प्रस्तुत हैं—चाहे वह अमेरिकी सरकार के रूप में आये या रोजगार में 'बॉस' या मालिक बन कर। और, जिस समय हम इस प्रकार तैयार बैठे थे, संकट ने हम पर ठीक विपरीत दिशा से प्रहार किया। ओरवेल ने तो हमें बंधी-कसी व्यवस्था और कठोर-नियन्त्रण के विरुद्ध चेतावनी दी थी। किन्तु, हमारी समस्याएं विभिन्नता और वैविध्य से सम्बद्ध हैं। उसने हमें प्राधिकार के विरुद्ध चेतावनी दी थी। अब हमारी समस्या यह है कि स्वेच्छाप्रेरित सहकारिता कैसे प्राप्त की जाय। उसने हमें विचारों पर नियन्त्रण के खिलाफ चेतावनी दी थी। हमारी समस्या यह है कि सर्वसम्मति कैसे प्राप्त की जाय, सबको साथ लेकर कैसे चला जाय।

'बिग ब्रदर' को मौका तभी मिलेगा, जब हम अगले २० वर्षों में अपने समाज की वास्तविक प्रवृत्तियों से उत्पन्न समस्याओं को हल करने में बुरी तरह विफल रहेंगे।

अब मेरा प्रश्न है: क्या इस बार मैं यह स्पष्ट करने में सफल हूं कि मैं आशावादी या हृदय से प्रसन्न नहीं हूं? क्या मैं वर्तमान और भावी संघर्षों का उल्लेख पर्याप्त बल के साथ करने में सफल हूं? क्या मैंने इस बात पर पर्याप्त बल दिया है कि आगामी दो दशाब्दों में हमारे सामने आने वाले काम और खतरे पिछले २० वर्षों की अपेक्षा भी अधिक कठिन होंगे?

यह मान कर कि मैं ऐसा करने में सफल रहा हूं, मैं अपनी आशावादिता के आधारों का उल्लेख करके यह वार्ता समाप्त करूंगा। हमारी नई प्रकार की मुसीबतें मुख्यतः तरक्की के कारण उत्पन्न होती हैं। यह तरक्की भौतिक सुख-सुविधाओं की ही नहीं है, अपितु समाज के बौद्धिक और नैतिक ढांचे को ऊपर उठाने की भी है। अमेरिकियों का, वास्तव में, कभी भी यह मन्तव्य नहीं रहा कि वस्तुओं को जुटाते जाना ही जीवन का एकमात्र ध्येय है। हम सदा यह मानते आये हैं कि 'अच्छे समाज' का सम्बन्ध कुछ-न-कुछ व्यक्ति की स्वाधीनता, व्यक्ति के विकास और ऐच्छिक सहकारिता से होता है।

और, यही वह दिशा है, जिसमें हम आगे बढ़े हैं। हम गलत रास्ते पर नहीं हैं। अमेरिकी उद्यम के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष—मानवीय पक्ष—में, वस्तुतः, जो कुछ हो रहा है, वह मानव के विकासमान आध्यात्मिक प्रारब्ध का एक अध्याय, स्वाधीन रहते हुए अधिक उत्कृष्ट व्यवस्था प्राप्त करने की उसकी जिम्मेदारी, का प्रतीक है। ■■

क्या अमेरिका पृथकतावाद की दिशा में अग्रसर है?

ह्यू साइडी

व्यापक संचार और आर्थिक परस्परावलम्बन के विश्व में, 'पृथकतावाद' एक निरर्थक शब्द मात्र बन कर रह गया है।

राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन राष्ट्रीय अवनति की आशंका से इतने अधिक उद्विग्न हो उठे हैं कि उन्होंने दो बार सार्वजनिक रूप से इसकी चर्चा की है।

इस आशंका का अंकुरण कुछ माह पूर्व उस समय हुआ, जब वह वाशिंगटन में रात्रि के समय पैन्सिल्वेनिया एवेन्यू में स्थित भव्य एवं विशाल राष्ट्रीय पुरातत्व भवन (नैशनल आरकाइव्स) देखने गये। उस भव्य भवन के विशाल जगमगाते खम्भों को देख कर ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे चिरकाल तक ऐसे ही खड़े रहेंगे। सौन्दर्य एवं सुदृढ़ता के इस प्रतिरूप को देख कर, सहसा ही श्री निक्सन को रोम, यूनान, प्राचीन फारस, आदि स्थानों के प्राचीन भग्नावशेषों का स्मरण हो आया। वह इन सभी भग्नावशेषों का अवलोकन कर चुके थे। बाद में, सभा में उपस्थित जनसमूह के समक्ष अपने मन को सालने वाली चिन्ता प्रकट करते हुए, उन्होंने कहा था : "ये सभ्यताएं वैभव और शक्ति के चरम शिखर पर पहुंचीं। तदुपरान्त, उनका अवसान प्रारम्भ हो गया, क्योंकि प्रतिस्पर्धा और नेतृत्व करने का उनका संकल्प भंग हो गया था।" गत जुलाई माह में, कंसास नगर (मिसौरी राज्य) में, अपने देशवासियों को चेतावनी देते हुए, श्री निक्सन ने कहा : "अमेरिका भी अब वैभव और उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच रहा है।" लेकिन, आशंका व्यक्त करने के साथ ही, उसका समाधान प्रस्तुत करते हुए, उन्होंने अदम्य विश्वासपूर्वक उद्घोषित किया : "अमेरिका की स्फूर्ति नष्ट नहीं होगी; वह विश्व-नेतृत्व की अपनी भूमिका का निर्वाह करेगा।" इस लक्ष्य की ओर राष्ट्र को अग्रसर रखने के कार्य को राष्ट्रपति निक्सन सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं।

किन्तु, वास्तविकता यह है कि ह्वाइट हाउस और देश के सभी भागों के नेताओं को यह आशंका बुरी तरह सता रही है कि अमेरिका अब पृथकत्व के एक नये चरण में प्रवेश कर रहा है।

इसके लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। १९७१ के सम्पूर्ण वर्ष में, अमेरिकी कांग्रेस में इस बात की कोशिश बराबर जारी रही कि विदेश सहायता में और अधिक कटौती कर दी जाय, विदेशों में तैनात अमेरिकी सैनिकों की संख्या घटा दी जाय तथा वियतनाम युद्ध को अविलम्ब समाप्त कर दिया जाय। आइडाहो के सेनेटर फ्रैंक चर्च बड़े उदार और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी माने जाते हैं। लेकिन, उन्होंने भी कांग्रेस में विदेश सहायता के वर्तमान सिद्धान्त की निन्दा की है। इसी प्रकार, सेनेटर स्टुअर्ट सिमिंगटन ने दूसरे महायुद्ध द्वारा क्षत-विक्षत संसार के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान किया है। परन्तु उन्हीं सिमिंगटन ने जब अपने चुनाव-क्षेत्र, मिसौरी, के मतदाताओं को बताया कि भाषण देने के लिए आते समय उन्हें मार्ग में कितनी विदेशी कारें मिलीं, और यह मांग की कि अमेरिकी मजदूर को संरक्षण दिया जाय, तो श्रोताओं ने हर्षध्वनि के साथ उनके कथन का समर्थन किया। जब युवा विश्लेषणकर्ताओं के एक संगठन, 'पोटोमैक एसोशिएट्स', ने जिसके विश्लेषणकर्ता राष्ट्र की चिन्तनधारा और प्रवृत्तियों का समय-समय पर विश्लेषण करते रहते हैं, एक राष्ट्रव्यापी जनमत-संग्रह कराया, तो यह पता चला कि ७७ प्रतिशत अमेरिकी यह सोचते हैं कि "हमें अन्तर्राष्ट्रीय झमेलों में न फंस कर, अपनी राष्ट्रीय समस्याएं सुलझाने और अपने देश को अधिक समृद्ध एवं सुदृढ़ बनाने पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।" अभी कुछ ही समय पहले, ४,००० अमेरिकी मजदूर, जो विदेशी प्रतिस्पर्धा के कारण बेरोजगार हो गये थे, प्रदर्शन करने और अपने क्षेत्र के कांग्रेसजनों और सेनेटरों से सहायता की अपील करने के लिए अपनी

क्या अमेरिका पृथकतावादी हो रहा है ?

यूनियन के खर्च पर कैपिटोल हिल पर एकत्र हुए थे।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रपति निक्सन ने जो नये कदम उठाये हैं, उनसे यह विरोध कुछ सीमा तक ठण्डा पड़ गया है। फिर भी, इस समय जो अपेक्षाकृत शान्ति दिखलायी पड़ रही है, उस पर अत्यन्त सतर्कता से दृष्टि रखने के साथ-साथ यह देखने की जरूरत है कि ये नई नीतियां कहां तक सफल होती हैं।

यहां तक कि भूतपूर्व राष्ट्रपति लिण्डन बी० जौनसन भी वर्त्तमान स्थिति से चिन्तित हो उठे हैं। राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद, गत पतझड़ में दिये गये अपने प्रथम महत्वपूर्ण भाषण में, उन्होंने अनुदारवादियों तथा उदारवादियों द्वारा मिल कर स्थापित पृथकतावादी गठबन्धन के विरुद्ध गम्भीर चेतावनी दी, और कहा : "ये लोग संसार में अमेरिका की भूमिका को कम करना चाहते हैं, और सोचते हैं कि हम अलग-थलग रह सकते हैं। यूरोप, एशिया, मध्यपूर्व या दक्षिण अमेरिका से सहसा ही मुख मोड़ लेने से कोई सुरक्षा नहीं प्राप्त हो सकती। यदि हम पृथकता के गर्त में गिरते हैं, तो शीघ्र ही हमें यह पता चल जायगा कि सबसे अधिक कष्ट उन्हें ही भुगतना पड़ेगा, जो अपने को सबसे अधिक अलग-थलग रखेंगे, अर्थात् हमें।"

अमेरिकी कांग्रेस से कानून पास कराने के लिए राष्ट्रपति निक्सन को भी डट कर संघर्ष करना पड़ा है। इस संघर्ष के दौरान, राष्ट्रपति निक्सन ने स्वयं अपने विरोधियों को 'नव-पृथकतावादी' कह कर बार-बार उनकी आलोचना की है। और, इस आलोचना के कारण अमेरिकी राष्ट्र की चिन्तनधारा के बारे में एक राष्ट्रव्यापी विवाद उठ खड़ा हुआ है।

परम्परागत रूप में, पृथकतावाद से अभिप्राय है : वास्तविक संसार से मुख मोड़ लेना तथा अपने चारों ओर किलेबन्दी करके अपने को दिलासा देना। उन्नीसवीं सदी में अमेरिका इसी नीति का अनुसरण कर रहा था। परन्तु, आज की दुनिया में, जबकि आधुनिक संचार-साधनों ने समस्त संसार को एक सूत्र में बांध दिया है, जबकि आर्थिक दृष्टि से सभी राष्ट्र परस्पराश्रित हैं और परमाणु बमों तथा प्रक्षेपणास्त्रों की काली छाया समस्त विश्व पर मंडरा रही है, पृथकत्व की चर्चा करना बिल्कुल निरर्थक है। ऐसी स्थिति में, यह एक अत्यन्त जटिल और दुर्बोध राष्ट्रीय उत्कण्ठा मात्र प्रतीत होता है।

वियतनाम में प्राप्त कटु अनुभव से पृथकत्व की इस भावना को सबसे अधिक बल मिला है। इस युद्ध को छिड़े १० साल से अधिक हो गये हैं। अब तक इस युद्ध ने ५०,००० अमेरिकियों की बलि ली है तथा राष्ट्र को १.३ खरब डालर खर्च करने पड़े हैं।

इसके अतिरिक्त, युद्ध के कारण अमेरिका के अन्दर जो विरोध और क्षोभ उत्पन्न हुआ है, उसे माप पाना सम्भव नहीं है। १६६१ में, जान एफ. कैनेडी ने राष्ट्र का आह्वान करते हुए, कहा था कि अमेरिका "कोई भी भार वहन करने के लिए" तथा "किसी भी शत्रु का मुकाबला करने के लिए" प्रस्तुत है। बाद में, श्री लिण्डन बी. जौनसन ने भी कहा : "अमेरिका बंदूक और मक्खन, दोनों, सुलभ कर सकता है।" लेकिन, बाद की घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया कि ये दोनों ही दावे अतिरंजित और वास्तविकता से परे थे। अमेरिका की शक्ति और सम्पन्नता की भी सीमाएं हैं, विशेष रूप से ऐसे विश्व में, जहां अन्य देश भी कई अर्थों में अमेरिका के समकक्ष आ गये हैं। १६६६ में विश्व का दौरा प्रारम्भ करते हुए, गुआम में राष्ट्रपति निक्सन ने इस नयी वास्तविकता को समझाने की कोशिश की थी। उसके बाद, अमेरिका के अहं को जो झटका लगा, उसने सारे देश को हिला दिया। इसी प्रतिक्रिया को कुछ लोगों ने स्वभाववश पृथकतावाद की संज्ञा दे डाली।

विगत दो वर्षों में, उत्तरी कैरोलाइना स्थित कपड़ा मिलों में मजदूरों के बेकार होने, मैसाचूसेट्स स्थित विद्युदाणविक उपकरण संयन्त्रों और मिसौरी स्थित टाइपराइटर फैक्टरियों के बन्द होने, तथा अमेरिकी मोटर-निर्माता कम्पनियों द्वारा जापान और जर्मनी में निर्मित मोटरों और उनके पुर्जों का भारी संख्या में आयात किये जाने का देश की चेतना पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। आर्थिक प्रभाव से भी अधिक इसका राजनीतिक प्रभाव पड़ा है। बेरोजगारी का औसत बढ़ कर ६ प्रतिशत पहुंच जाने, विदेश-व्यापार में घाटा होने तथा भुगतान-सन्तुलन के अधिकाधिक प्रतिकूल होने के कारण लोग विदेशी प्रतिस्पर्धियों को बुरी दृष्टि से देखने लगे। जागरूकता के इस युग में, मेन स्ट्रीट के सौदागर शीघ्र ही यह अनुभव करने लगे कि जापान स्वयं तो अमेरिका की मण्डियों पर बुरी तरह छा गया, परन्तु अपनी मण्डियों में अमेरिकी व्यवसायियों को वही सुविधा देने से मुकर गया। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि यूरोपीय देशों ने अपनी वस्तुओं के लिए किस प्रकार अटलाण्टिक महासागर के पार मण्डियां प्राप्त कीं, लेकिन, दूसरी ओर, कुछ विशेष क्षेत्रों, जैसे कृषि, में अमेरिका को अपने यहां समान सुविधाएं देने से इन्कार कर दिया। अमेरिका जैसे सम्पन्न देश में भी इन सब बातों की प्रतिक्रिया बिल्कुल सहज और स्वाभाविक थी। मुद्रास्फीति से पीड़ित तथा घरेलू समस्याओं से बुरी तरह व्यग्र बहुत से अमेरिकी लोगों के मन में यह बात उठने लगी कि अपने मित्रों और शत्रुओं के साथ लगातार दो दशाब्द तक अमेरिका

लेखक के विषय में : अमेरिका की सुप्रसिद्ध **'टाइम'** और **'लाइफ'** पत्रिकाओं के वाशिंगटन समाचार ब्यूरो के अध्यक्ष की हैसियत से ह्यू साइडी को ह्वाइट हाउस की नीति-रीति और राजनीति का अध्ययन करने का सुयोग मिलता रहा है। समाचारपत्र-सम्वाददाताओं की टोली में उन्हें एक प्रमुख स्थान प्राप्त है। कैनेडी और जौनसन प्रशासनों के क्रिया-कलापों के सम्बन्ध में उनके दैनिक विवरण **'जान एफ. कैनेडी, प्रेसिडेण्ट : ए रिपोर्टर्स इनसाइड स्टोरी'** (१९६३) और **'ए वेरी पर्सनल प्रेसिडेंसी : लिण्डन बी. जौनसन इन दि ह्वाइट हाउस'** (१९६८) नामक संग्रहों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। १९६६ से **'लाइफ'** में उनके नाम से नियमित रूप से छपने वाला स्तम्भ, 'दि प्रैसिडेंसी', इस पत्रिका के पाठकों को राष्ट्र के सर्वोच्च पदाधिकारी और उसके प्रशासन के विषय में जानकारी देता रहा है।

ने जो उदारतापूर्ण व्यवहार किया, उसका उसे क्या फल मिला ? अमेरिकी जनों के मनों में व्याप्त इस निराशा की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति स्वयं राष्ट्रपति निक्सन ने की। ताइवान को संयुक्तराष्ट्र-संघ का सदस्य बनाये रखने के लिए अमेरिका द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के विरोध में अनेक राष्ट्रों द्वारा मतदान किये जाने पर कुछ राष्ट्रों द्वारा की गयी हर्षध्वनि के दृश्य को टेलिविजन पर देखते हुए, राष्ट्रपति निक्सन को बहुत आक्रोश हुआ था और उन्होंने अपने इस आक्रोश को प्रकट भी किया।

लेकिन, *यह बात यहीं पर समाप्त हो जाती* है। यद्यपि श्री निक्सन भावनाओं के आवेग में बह गये और कुछ समय के लिए उन्होंने १० प्रतिशत का अतिरिक्त अधिभार भी लगा दिया, परन्तु इसके बावजूद, वह स्वतन्त्र व्यापार और स्वतन्त्र संसार की प्रतिरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने में अटूट विश्वास रखते हैं। 'शान्ति की एक पीढ़ी' का जो नारा उन्होंने बुलंद किया है, उसमें अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, सोवियत रूस, चीन और जापान के मध्य आर्थिक प्रतिस्पर्धा की कल्पना की गयी है। उनके सभी वक्तव्यों में वे सभी बातें स्पष्ट रूप में प्रतिध्वनित होती हैं, जो उन्होंने १९७० की विदेश नीति सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट में कही थीं। उन्होंने कहा था : "यदि अमेरिका को शान्ति के साथ रहना है, तो वह पृथकता की स्थिति में नहीं रह सकता। विश्व से अपने को अलग-थलग कर लेने का हमारा कोई इरादा नहीं है।"

कई अन्य अमेरिकी नेताओं के वक्तव्यों में भी इसी प्रकार की जटिलताओं और विरोधाभासों की झलक मिलती है। न्यूयार्क के सेनेटर जैकब जैविट्स ने, जो युद्ध की घोषणा करने के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के अधिकार को सीमित करना चाहते हैं, यूरोप में तैनात अमेरिकी सेनाओं की संख्या को घटा कर आधी कर देने के लिए सेनेटर माइक मैन्सफील्ड द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के विरोध में मतदान किया। सेनेटर मैन्सफील्ड स्वयं पश्चिमी एशिया में शान्ति की स्थापना कराने के लिए राष्ट्रपति निक्सन द्वारा किये जा रहे प्रयासों का समर्थन करते हैं। यह एक ऐसा प्रयास है, ज़ो अमेरिका की शक्ति और प्रतिष्ठा पर बहुत अधिक निर्भर करता है। सेनेटर चर्च विदेश सहायता को समाप्त करने के पक्ष में नहीं हैं। वह उसमें इस प्रकार परिवर्तन करना चाहते हैं, ताकि सैनिक सहायता का महत्व घट जाये।

अधिकांश अमेरिकी भविष्य में हिन्दचीन में अमेरिका की अन्तर्ग्रस्तता नहीं चाहते। लेकिन, उनकी यह इच्छा केवल अपने समक्ष उपस्थित इस प्रमाण पर ही आधारित नहीं है कि हम इस प्रकार के सैनिक संघर्ष में विजय प्राप्त नहीं कर सकते। वह ऐसा इसलिए भी सोचने लगे हैं कि उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद के नये रूप की अधिक व्यापक जानकारी प्राप्त हो गई है। भूतपूर्व प्रतिरक्षा मन्त्री क्लार्क क्लिफर्ड, सम्भवतः, सबसे अधिक प्रभावशाली राष्ट्रीय नेता हैं, जिन्होंने साम्यवाद के एकांगी रूप को समाप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। राष्ट्रपति लिण्डन जौनसन के कार्यकाल में, प्रतिरक्षा मन्त्री की हैसियत से उन्होंने एशिया की कई यात्राएं कीं और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि साम्यवाद की अपेक्षा राष्ट्रवाद कहीं अधिक प्रबल शक्ति है। और, अपने इस विश्वास के आधार पर वह श्री लिण्डन जौनसन को यह परामर्श देने लगे थे कि वियतनाम में अमेरिका की अन्तर्ग्रस्तता समाप्त कर दी जाये तथा एशियावासियों को अमेरिका के सैनिक प्रभाव से मुक्त रह कर अपने भाग्य का स्वयं निर्धारण करने का अवसर दिया जाये। अन्य लोगों की तरह, उन्होंने भी यह अनुभव किया कि हमारा प्रभाव और कई रूपों में, मुख्यतः, आर्थिक एवं राजनयिक रूप में, पड़ना चाहिए। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि अमेरिका की शक्ति को सबसे अधिक गम्भीर खतरा अत्यधिक या गलत प्रकार के हस्तक्षेप से है। राष्ट्रपति निक्सन ने इसी सिद्धान्त को वास्तविक नीति में समाविष्ट किया है, और इसके प्रत्यक्ष परिणाम अब स्पष्ट रूप से यों प्रकट हो रहे हैं : नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समझौता, बर्लिन के बारे में चार राष्ट्रों का समझौता, मास्को और पेकिंग शिखर-सम्मेलन, अमेरिका और सोवियत रूस के मध्य सम्पन्न अन्न-समझौता।

नये युग की दिशा में हमारी प्रगति मानसिक दृष्टि से अत्यन्त उद्विग्नकारी है। वस्तुतः, एक प्रकार से यह एक 'पुरानी आकुलता' की ही पुनरावृत्ति है। २०वीं शताब्दी में नेतृत्व प्रदान करने का जो दुष्कर कार्य हमारे कंधों पर आ पड़ा है, उससे किसी प्रकार छुटकारा पाने के लिए बार-बार उठायी जा रही आवाज के लिए इतिहासकार श्री आर्थर श्लेसिंगर ने इसी परिभाषा का प्रयोग किया है। लेकिन, अमेरिका की नीति की आधारभूत समस्याओं को सुलझाने में संलग्न लोग इन आवाजों पर बहुत कम ध्यान देते हैं। भूतपूर्व कोष मन्त्री, जान कोनाली, तथा राष्ट्रपति के राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सम्बन्धी मामलों के सहायक, डा० हेनरी किसिंगर, को वस्तुतः यह आशंका थी कि प्रमुख भूमिका का परित्याग कर साझेदार की भूमिका स्वीकार करने तथा अपने मित्रों के साथ दायित्व में उचित हिस्सा बंटाने का अनुरोध करने की जो नई नीति अमेरिका ने अपनायी है, उसका देश के अन्दर और बाहर उसकी अपेक्षा कहीं अधिक विरोध होगा, जितना वस्तुतः हुआ।

स्वतन्त्र विश्व के चोटी के १० उद्योग-प्रधान देशों की बैठकों में आर्थिक वास्तविकता का एहसास कराने के लिए श्री कोनाली ने वैसे ही स्पष्टवादी तरीकों और वैसी ही स्पष्टवादी भाषा का प्रयोग किया, जैसी उनकी अपनी जन्मभूमि, टैक्सास, की राजनीति में प्रयुक्त होती रही है। वह अब भी बल दे कर कहते हैं कि इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करने के लिए कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समझौतों में परिवर्तन करने के लिए इस बार अमेरिका कृतसंकल्प है, इसके अलावा कोई विकल्प नहीं था। श्री किसिंगर का कहना है कि जापान के लिए यह सरल कार्य नहीं था कि वह अमेरिका के साथ अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण आर्थिक सम्बन्ध समाप्त कर दे और एशिया के राजनीतिक नेता के रूप में उभर कर आगे आये। दोनों ही व्यक्ति राष्ट्रपति निक्सन के आदेशानुसार कार्य कर रहे थे, और उन्हें इस बात का दृढ़ विश्वास था कि यद्यपि कई रूपों में, अमेरिका पहले जितनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह नहीं करेगा, परन्तु विश्व में उसकी आधारभूत शक्ति को कायम रखा जायेगा तथा उसकी जनता का दृष्टिकोण, मूलतः, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी बना रहेगा।

आंकड़ों के आधार पर यह कहा जाता है कि अमेरिका सिमट कर अपने-आप तक ही सीमित नहीं रह सकता। एक दशाब्द पूर्व, अमेरिका के १६,३४,००० नागरिकों ने विदेशों की यात्राएं कीं। इसमें उनकी संख्या शामिल नहीं है, जिन्होंने मैक्सिको और कनाडा की यात्राएं की थीं। १९७० तक यह संख्या बढ़ कर ५२,६०,००० तक पहुंच गयी, जो २२२ प्रतिशत वृद्धि की सूचक है। यदि कनाडा और मैक्सिको को भी शामिल कर लिया जाय, तो १९७० में विदेशों की यात्रा करने वाले अमेरिकियों की संख्या २.२ करोड़ हो जाती है। संख्यात्मक रूप में, यह अमेरिका की कुल जनसंख्या के पूरे १० प्रतिशत के बराबर है, किन्तु राष्ट्रीय विचारधारा और प्रभाव के रूप में यह उससे कहीं अधिक है। यात्रा करने वाले अच्छे वक्ता, अत्यधिक शिक्षित और सम्पन्न लोग हैं। वे प्रायः सभी मामलों में, अपने समाज के महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं। यदि कोई अप्रत्याशित अन्तर्राष्ट्रीय संकट उत्पन्न न हो, अथवा अमेरिका में कोई गहरी आर्थिक मन्दी न आये, तो आशा यही की जाती है कि विदेश यात्रा पर जाने वाले अमेरिकियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि का यह क्रम आगे भी बराबर जारी रहेगा। कई ऐसे भौतिक और अनुमेय तत्व हैं, जो इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करते हैं : जैसे, हवाई जहाज के किराये की दरें बराबर घटती जायेंगी; अमेरिका की सम्पन्नता में वृद्धि सर्वथा निश्चित प्रतीत होती है। लेकिन, वे तत्व भी, जिनका माप करना सम्भव नहीं, शायद इतने ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें लोगों की इच्छाओं और दृष्टिकोणों जैसी अमूर्त्त और भावनात्मक बातें शामिल हैं।

'एक पुरानी आतुरता' की पुनरावृत्ति के बावजूद, अमेरिका के अधिकांश लोग, मूलतः, 'अन्तर्राष्ट्रीयतावादी' ही बने रहेंगे।

धनिकों और सम्पन्नों में उन लोगों की संख्या बहुत अधिक है, जो अधिकाधिक भौतिक वस्तुओं का संचय और संग्रह करने की अपेक्षा यात्रा को अधिक महत्वपूर्ण और श्रेयस्कर मानते हैं। छोट-छोटे समाजों में भी यह प्रवृत्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है कि सम्पन्न परिवार एक और मोटरगाड़ी खरीदने की अपेक्षा विश्व-भ्रमण को अधिक तरजीह देते हैं। इसके अतिरिक्त, लोग देश के भीतर स्थित लोस एंजेलस और न्यूयार्क जैसे केन्द्रों का, जो टेलिविजन, आदि सार्वजनिक संचार के माध्यमों द्वारा वायु-प्रदूषण, भीड़-भाड़ और अपराध के गढ़ के रूप में (कभी-कभी अनुचित ढंग पर) प्रदर्शित होते हैं, भ्रमण करने की अपेक्षा किसी अन्य देश की यात्रा करना और उसे देखना अधिक श्रेयस्कर मानते हैं। प्रायः सभी गणनाओं और दृष्टिकोणों के अनुसार, देश की सीमा से परे की दुनिया में औसत अमेरिकी की रुचि और जिज्ञासा बहुत गहरी है, और अभी भी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है।

१९६० में, १५,३०६ अमेरिकी छात्र विदेशों में अध्ययन कर रहे थे। १० वर्ष बाद, ३३४ कालेजों और विश्वविद्यालयों के वैदेशिक कार्य-क्रमों के अन्तर्गत, ३२,१४८ अमेरिकी छात्र विदेशों में पढ़ रहे थे। अमेरिका के एक प्रमुख स्तम्भ लेखक, जोजेफ क्रैफ्ट, पिछले ग्रीष्मकाल में लन्दन हवाई अड्डे पर खड़े थे। वहां के लिए वह कोई नवागन्तुक या अनजाने व्यक्ति नहीं थे। उस अवसर पर वह यह देख कर हैरान रह गये कि उनकी बगल से होकर औसत रूप से प्रति मिनट दो के हिसाब से अमेरिकियों का एक विशाल काफिला गुजर रहा था, जिसमें सभी तरह के लोग—पर्यटक, छात्र, व्यवसायी, खिलाड़ी, संगीतज्ञ, विद्वान—शामिल थे। कुछ विस्मित से होकर, उन्होंने लिखा: "आज की सच्ची अन्तर्राष्ट्रीयता, वस्तुतः, उन प्रभूत सम्बन्ध-सूत्रों में . . . निहित है, जो विकसित देशों के अनधिकृत तत्वों के बीच स्थापित हो रहे हैं।"

विदेशों में अमेरिकी अन्तर्ग्रस्तता के आर्थिक तथ्य और भी अधिक प्रभावकारी हैं। अकेले संयन्त्रों और उपकरणों में ही अमेरिका द्वारा विनियोजित पूंजी अनुमानतः लगभग ७० अरब डालर के बराबर है। विदेशी हितों द्वारा अमेरिका में प्रत्यक्ष रूप में विनियोजित पूंजी अनुमानतः १२ अरब डालर से अधिक है। अमेरिका की लगभग ३,४०० कम्पनियों के स्वत्व मोटे तौर पर २३ हजार विदेशी फर्मों में निहित हैं, जो प्रतिवर्ष लगभग २ अरब डालर मूल्य की वस्तुओं का उत्पादन करती हैं। साथ ही, लगभग ५०० अमेरिकी व्यवसायों पर ३५० विदेशी फर्मों का स्वत्व या नियन्त्रण है।

फोर्ड मोटर कम्पनी के एक कार्यवाहक अधिकारी ने हाल में कहा: "हमारी दृष्टि के सामने. . . . विश्व का एक ऐसा मानचित्र है, जिसमें कोई सीमारेखाएं नहीं हैं।" अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य मण्डल की अमेरिकी परिषद के एक अर्थशास्त्री ने यह विचार व्यक्त किया है कि "पहली बार मनुष्य ऐसी स्थिति में आये हैं, जहां समस्त विश्व को एक ही आधारभूत आर्थिक इकाई माना जा सकता है।" अमेरिका के सहायक वाणिज्य मन्त्री, श्री सी० लैंगहोर्न वाशबर्न, ने घोषणा की है: "आज विश्व में एक प्रकार की 'प्रदेशातीत अर्थ-व्यवस्था' का अस्तित्व है, जो किसी भी देश द्वारा नियन्त्रित नहीं है, किसी भी देश द्वारा सीमाबद्ध नहीं है, किन्तु सभी देशों को प्रभावित करती है। अन्य कोई ऐसी समानुरूपी राजनीतिक संस्था नहीं है, जिससे इसकी तुलना की जा सके।"

यहां, फिर, इस समीकरण में अमूर्त्त और अमाप्य तत्वों का समावेश करना आवश्यक हो जाता है। किसी भी यात्री को, चाहे वह किसी भी राष्ट्र में खड़ा हो, वाणिज्य पर आई० बी० एम० या कोनराड हिल्टन की छाप के दर्शन अवश्य होंगे। हो सकता है कि प्रतियोगिता में उनकी स्थिति कुछ ढीली पड़ गयी हो, फिर भी, अभी तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला है कि अमेरिकी व्यापारियों के उत्साह में कोई कमी आयी है। राष्ट्रपति निक्सन ने '१९७६ की भावना' को पुनर्जीवित करने का अपना जो राष्ट्रीय आन्दोलन चला रखा है, उसका अर्थ हर दृष्टि से केवल यह है कि वस्तुओं का उत्पादन प्रतिस्पर्द्धी मूल्यों पर किया जाय। अमेरिकी उद्योग ने इस आह्वान के सम्बन्ध में अब अनुकूल प्रतिक्रिया दिखलाना प्रारम्भ कर दिया है।

निस्सन्देह, इस नये युग का, जिसे श्री निक्सन तथा अन्य लोग इतना महत्व देते हैं, आधार-स्तम्भ अभी भी स्वतन्त्र विश्व की सुरक्षा है, जिसकी सुनिश्चित व्यवस्था सैन्य शक्ति द्वारा की गयी है। यद्यपि यह माना जा चुका है कि इसकी प्रभावकारिता कुछ दृष्टियों से सीमित है, फिर भी जार्ज मैगवर्न, विलियम फुलब्राइट और जार्ज शर्मन कूपर जैसे नव-पृथकतावादियों ने भी इसकी पूर्ण आवश्यकता को स्वीकार किया है। विवाद का विषय केवल यह है कि इस विश्व में, जो खतरों से भरा है, सैन्य शक्ति का 'स्वीकार्य स्तर' क्या हो, अथवा सेना और शस्त्रास्त्रों की वह मिश्रित मात्रा ठीक-ठीक क्या हो, जो मानव-प्राणियों में अभी भी पायी जाने वाली किसी भी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को निरुत्साहित करने के लिए आवश्यक समझी जाती हो। परिणामस्वरूप, राष्ट्रपति निक्सन अगले वर्ष के सैन्य बजट के लिए ६३० करोड़ डालर की अतिरिक्त राशि की मांग करेंगे, जिसका अधिकांश और भी अधिक अनुसंधान और विकास के लिए निर्दिष्ट है, ताकि जब गुआम में प्रतिपादित नीति के अन्तर्गत, अमेरिका का भौगोलिक नेतृत्व घट जाय, तो भी उसका प्रौद्योगिक नेतृत्व बराबर कायम रहे।

यदि इस बात का, कि अमेरिका विश्व में अन्तर्ग्रस्त बना रहना चाहता है और उसका इरादा उससे अलग-थलग हो जाने का नहीं है, कोई अन्य प्रमाण उपलब्ध नहीं है, तो भी श्री निक्सन इस इच्छा के सजीव प्रतीक हैं। वस्तुतः, उन्होंने अपनी समस्त शक्ति और सारा समय पेकिंग और मास्को में हुए शिखर सम्मेलनों में लगाया है और ये इस वर्ष की प्रथम छमाही की प्रमुख घटनाएं रही हैं। राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण करने के पहले भी श्री रिचर्ड निक्सन यह घोषणा कर चुके थे कि विश्व में शान्ति की स्थापना और उसकी रक्षा उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य होगा। स्पष्टतः, उनकी विचारधारा अभी भी वही है। ■■
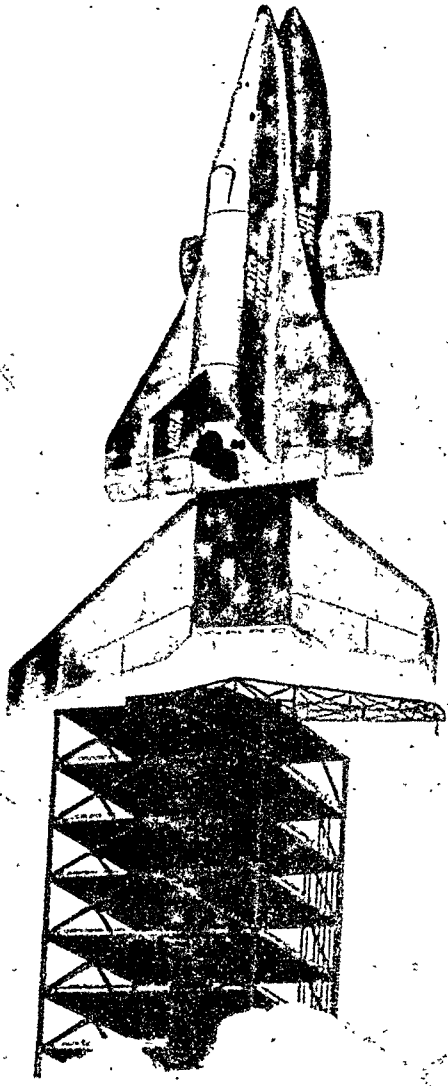
अन्तरिक्ष युग
अपोलो के बाद क्या?

अन्तरिक्ष शटल का प्रक्षेपण :
ऊपर के रेखाचित्र में, उस शटल सम्बन्धी धारणा चित्रित हुई है, जिसका निर्माण अमेरिका के राष्ट्रीय उड्डयन एवं अन्तरिक्ष प्रशासन के विचाराधीन है। यह शटल २५० फुट लम्बे प्रक्षेपक राकेट के साथ, जिसकी पीठ पर एक परिक्रमा-वाहन लदा होगा, प्रक्षेपण-मंच से उठेगी।

वेन कोसीवार

चन्द्रमा तक व्यापारिक उड़ानें। पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा से दृश्यावलोकन। न्यूयार्क से टोकियो तक की यात्रा ४५ मिनट में। ये हैं उन अन्तिम सम्भावनाओं में से कुछ, जो अमेरिका में विकसित हो रहे नये अन्तरिक्षीय उपकरणों में निहित हैं। अमेरिकी वैज्ञानिक अब अन्तरिक्ष शटल और अन्तरिक्ष स्टेशन भी बना रहे हैं। इन अन्तरिक्ष स्टेशनों में मनुष्य लम्बी-लम्बी अवधियों तक रहेंगे और काम करेंगे।

अन्तरिक्ष में प्रवेश करने और आगे बढ़ कर चन्द्रमा पर उतरने के बाद, अमेरिका अब और अधिक महत्वाकांक्षापूर्ण अन्तरिक्ष-प्रयासों के आयोजन में संलग्न है। समानव अन्तरिक्ष-उड़ान सम्बन्धी कार्यक्रम—मर्करी, जैमिनी और अपोलो, चन्द्रतल पर मनुष्यों का अवतरण—हाल में ही पूरे हुए हैं और अब इतिहास के अंग बन रहे हैं। ब्रह्माण्ड के विषय में मानव का ज्ञान बढ़ाने और अन्तरिक्ष-उड़ान के क्षेत्र में व्ययों में कमी करने के उद्देश्य से भविष्य में, शीघ्र ही, कुछ और भी बड़े कदम उठाये जायेंगे।

प्रथम अमेरिकी अर्द्ध-स्थायी अन्तरिक्ष स्टेशन, 'स्काईलैब', १९७३ में, पृथ्वी से २७० मील की ऊंचाई पर अन्तरिक्षीय कक्षा में स्थापित होगा। इसका वजन ६८ टन और लम्बाई ८३ फुट होगी। यह अन्तरिक्ष स्टेशन एक मानवरहित वाहन का तीसरा और शिखरस्थ भाग होगा, जो

'पैन ऐम' की पत्रिका, 'क्लिपर', से पुनः मुद्रित।
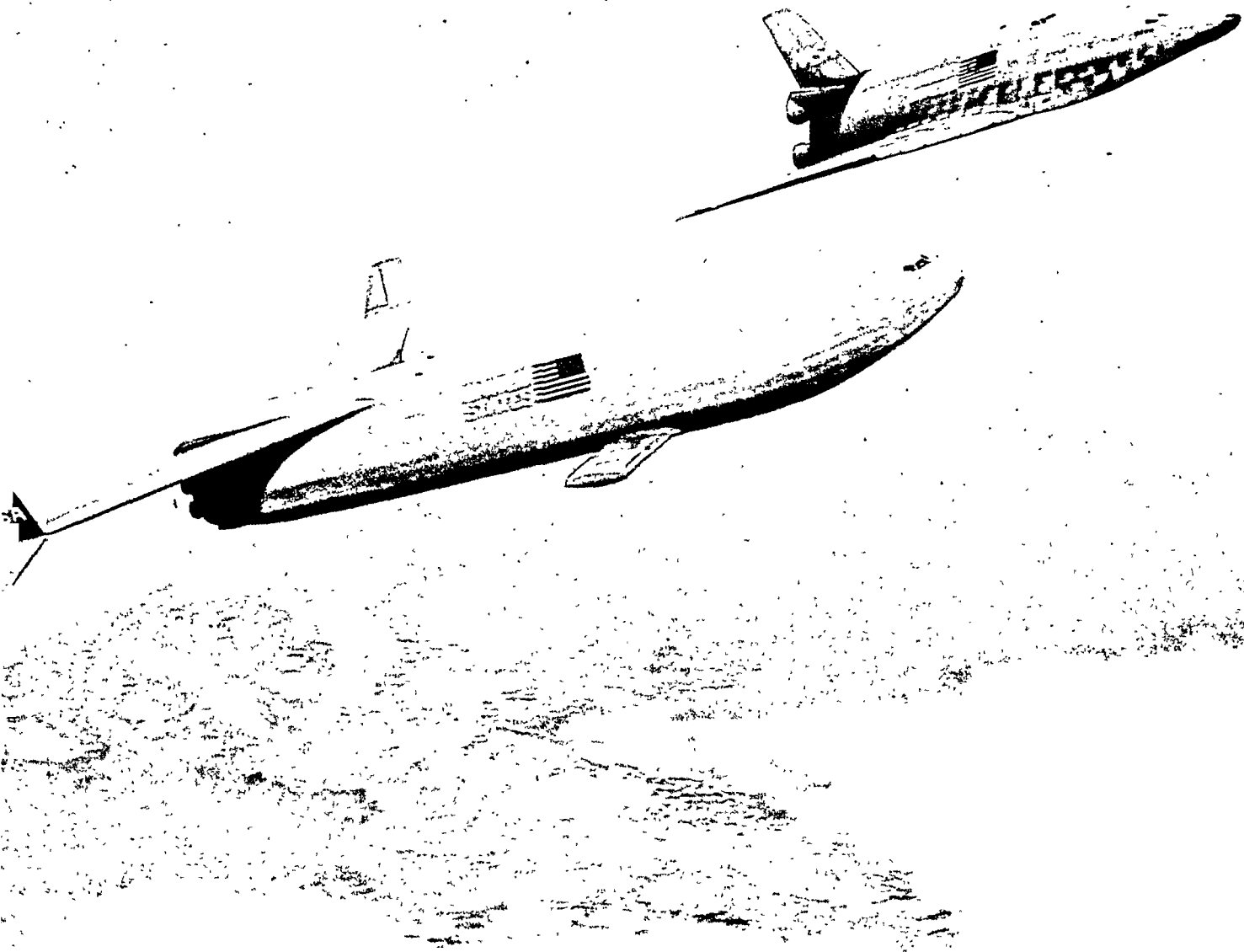
वाहन-पृथक्करण :
राकेट इंजिनों का प्रयोग करके प्रक्षेपक राकेट, परिक्रमा-वाहन को लगभग २,५०,००० फुट की ऊंचाई तक ले जायगा, जहां शटल के दोनों खण्ड पृथक (ऊपर) हो जायेंगे।

उड़ान की रूपरेखा :
पृथ्वी से उठने और पृथक होने के बाद, प्रक्षेपक राकेट को उसके दो चालक पृथ्वी पर वापस ले आयेंगे, जबकि परिक्रमा-वाहन अपनी राकेट-शक्ति के सहारे पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा में उड़ेगा और अपना उड़ान-अभियान पूरा करके पृथ्वी पर लौट आयेगा।

अन्तरिक्ष शटल की उड़ान की रूपरेखा
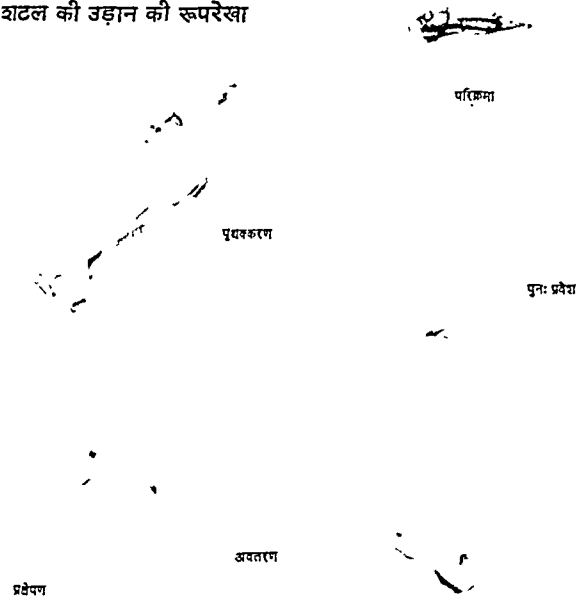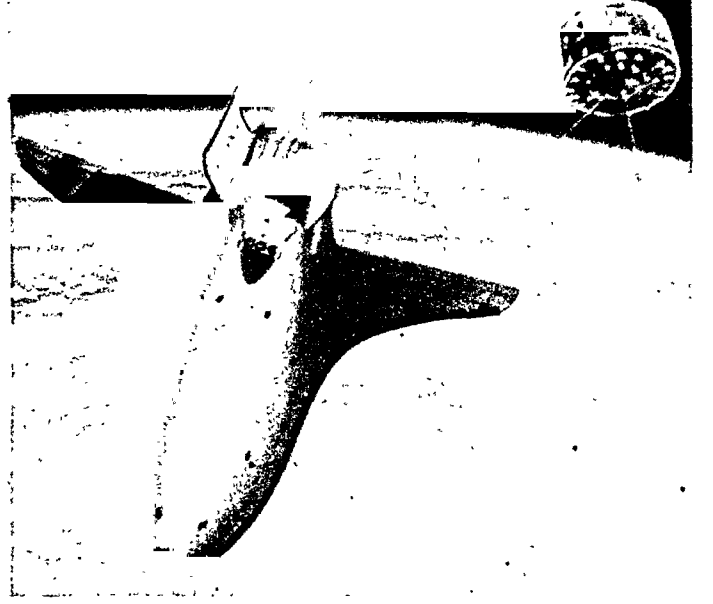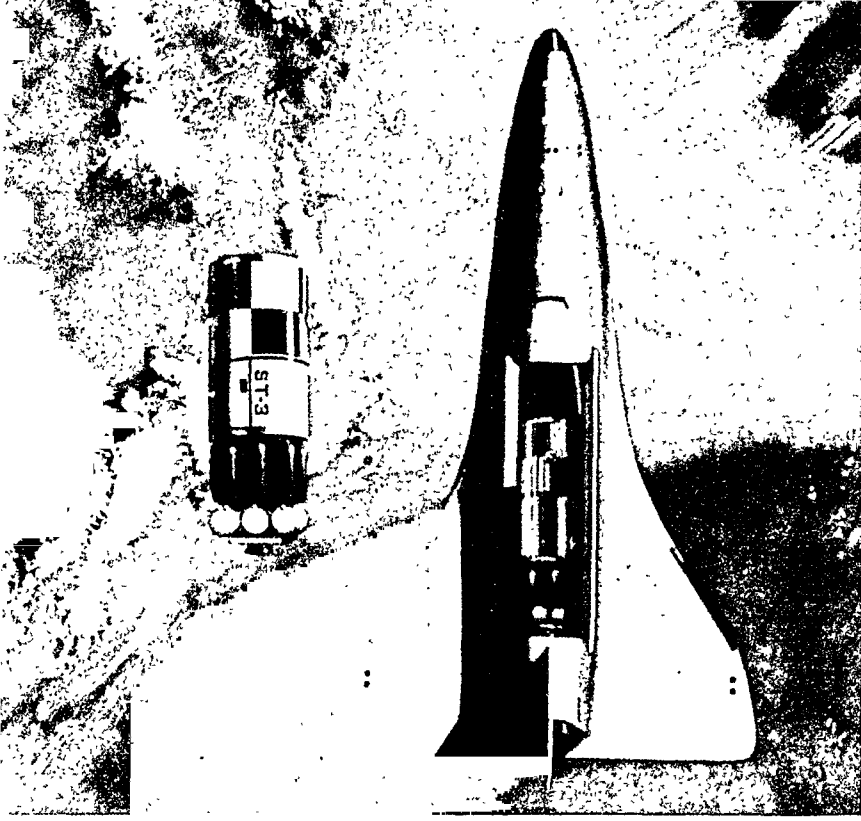
अन्तरिक्षगामी कर्षयान की स्थापना :
सबसे ऊपर, बायें, अन्तरिक्षगामी कर्षयान को एक शटल पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा में स्थापित कर रही है। परिक्रमा-वाहन की ६० फुट लम्बी माल-गोदी में एक अन्य अन्तरिक्षगामी कर्षयान बाहर निकाले जाने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा में है। कर्षयान में एक प्रणोदन-इकाई और एक माड्यूल, जो माल या यात्री वहन कर सकता है, शामिल हैं। कर्षयान की अभिकल्पना इस तरह तैयार की जायगी, ताकि यह इन माड्यूलों को अन्तरिक्षीय प्रयोगशालाओं से संयोजन के लिए पार्श्ववर्ती कक्षाओं तक पहुंचा सके।

परिक्रमा-कक्षा में उपग्रहों की स्थापना :
सबसे ऊपर, दायें, के रेखाचित्र में, अन्तरिक्ष शटल का दूसरा खण्ड, परिक्रमा-वाहन, एक संचार-उपग्रह को कक्षा में स्थापित कर रहा है। शटल की सहायता से प्रविधि-विशेषज्ञ अन्तरिक्ष में उपग्रह की जांच-पड़ताल, मरम्मत, सफाई, आदि कर सकेंगे, और यदि आवश्यकता पड़ी, तो उन्हें पुनः ग्रहण भी कर सकेंगे।

वायुमण्डल में पुनः प्रवेश :
ऊपर, एक कलाकार ने अन्तरिक्ष शटल के परिक्रमा-वाहन को कक्षागत उड़ान के बाद पृथ्वी के वायुमण्डल में पुनः प्रविष्ट होते दिखाया है।

सैटर्न-५ राकेट के प्रथम दो खण्डों से चालन-शक्ति प्राप्त करेगा। उसके थोड़े ही समय बाद, तीन व्यक्तियों की एक चालक-टोली एक सैटर्न राकेट द्वारा अन्तरिक्ष में प्रक्षिप्त की जायेगी। यह टोली स्काईलैब में चार से आठ सप्ताह की अवधि तक रहेगी। स्काईलैब का आकार तीन शयनकक्षों वाले मकान के बराबर है, और यह वैज्ञानिक प्रयोग तथा लम्बी अवधियों के आवास के लिए सभी आवश्यक साज-सामानों और उपकरणों से सुसज्जित है।

तीन टोलियां, जिनमें से प्रत्येक में ३ व्यक्ति शामिल होंगे, पृथक-पृथक तीन उड़ानों द्वारा स्काईलैब में भेजी जायेंगी। ये टोलियां अपोलो अन्तरिक्षयान के कमाण्ड-कक्षों में उड़ान करेंगी। इन्हें सैटर्न-१ बी राकेट द्वारा क्रम से, एक के बाद एक, अन्तरिक्ष में प्रक्षिप्त किया जायेगा। ये राकेट सैटर्न-५ से छोटे हैं।

स्काईलैब के लिए, प्रथम समानव उड़ान २८ दिन की होगी, जबकि दूसरी और तीसरी उड़ानें ५६ दिन की होंगी। इन टोलियों को कुछ विशिष्ट काम सौंपे जायेंगे। प्रथम टोली चिकित्सा सम्बन्धी प्रयोग और स्काईलैब के यन्त्रों तथा उपकरणों की जांच-पड़ताल करेगी; दूसरी टोली तीन मास बाद प्रक्षिप्त की जायेगी और दूरवीक्षण यन्त्र से सूर्य का पर्यवेक्षण करेगी। वायुमण्डल के बीच में आ जाने के कारण पृथ्वी पर से इस प्रकार का पर्यवेक्षण सम्भव नहीं है।

तीसरी उड़ान दूसरी टोली की प्रक्षेपण-तिथि के तीन मास बाद प्रारम्भ होगी। इस उड़ान के दौरान, विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रम पूरे किये जायेंगे और अन्तरिक्ष में लम्बी अवधियों तक काम करने विषयक मनुष्य की क्षमता के बारे में और अधिक जानकारियां एकत्र की जायेंगी।

कार्यक्रम के अनुसार, दूसरा बड़ा कदम १९७७ में उठाया जायेगा, जिसके अन्तर्गत, अन्तरिक्ष शटल की स्थापना की जायगी। यह शटल पहले के अन्तरिक्ष-वाहनों से इस अर्थ में भिन्न होगी कि इसका प्रयोग बार-बार किया जा सकेगा।

अन्तरिक्ष शटल की परिवहन-प्रणाली में, तीन प्रमुख तत्वों का समावेश हुआ है। वे तत्व हैं: भूतलीय सहायता सम्बन्धी गतिविधियां; प्रक्षेपक राकेट (बूस्टर); और परिक्रमा-वाहन (आर्बिटर)। इनमें प्रथम तत्व, अर्थात् भूतलीय सहायता, के अन्तर्गत, मुख्यत:, अन्तरिक्ष-पत्तन की गतिविधियां शामिल हैं। इस केन्द्रीयकृत अड्डे पर प्रक्षेपण, अवतरण और रख-रखाव सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होंगे।

लम्बवत् प्रक्षेपण के बाद, प्रक्षेपक राकेट (बूस्टर), जो अन्तरिक्ष शटल का दूसरा तत्व है, अपनी पीठ पर लदे परिक्रमा-वाहन (आर्बिटर) को ५० मील की ऊंचाई तक ऊपर ले जाता है। वहां परिक्रमा-वाहन से पृथक होने के बाद, प्रक्षेपक राकेट पृथ्वी के वायुमण्डल में पुन: प्रविष्ट हो जाता है, प्रक्षेपण-स्थल तक वापसी उड़ान करता है और विमान की तरह पृथ्वी पर अवतरित हो जाता है।

परित्राण-अभियान :
संकट के समय परित्राण सम्बन्धी कार्यवाही के लिए शटल एक आदर्श साधन सिद्ध होगी। बायें, अन्तरिक्ष शटल परित्राण-मंजूषा उतार रही है, जिस पर परित्राण का चिन्ह अंकित है। यह परित्राण-मंजूषा संकट में पड़े विकारग्रस्त अन्तरिक्षगामी कर्षयान (टग) से संगमित होगी। कर्षयान के यात्री पहले परित्राण-मंजूषा में आयेंगे, और फिर, पृथ्वी पर वापसी के लिए परिक्रमा-वाहन में आ जायेंगे।

माल पहुंचाना :
शटल अन्तरिक्ष में अनेक काम कर सकती है। नीचे के चित्र में, एक परिक्रमा-वाहन अपनी ६० फुट लम्बी माल-गोदी से एक मालवाही माड्यूल ऊपर उठा रहा है। यह माड्यूल सीधे ऊपर के अन्तरिक्ष स्टेशन से जुड़ जायेगा। अन्तरिक्ष शटल ६५ हजार पौण्ड तक वजन पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा में पहुंचा सकती है।

उस समय, परिक्रमा-वाहन अपना कार्य प्रारम्भ करता है। वह अपने इंजिनों को, जो ५½ लाख पौण्ड का प्रवेग उत्पन्न करते हैं, प्रज्वलित कर देता है, और अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा में उड़ान जारी रखता है। अपना प्रयोजन पूरा कर लेने के बाद, वह पृथ्वी के वायुमण्डल में पुन: प्रविष्ट होता है, प्रक्षेपण-स्थल तक उड़ कर जाता है और सामान्य विमान की तरह पृथ्वी पर उतर जाता है। परिक्रमा-वाहन की भारवहन-क्षमता बढ़ाने के लिए उसके हवा खींचने वाले जेट इंजिनों को हटाया जा सकता है। उस दशा में, यह वाहन एक विशाल ग्लाइडर की तरह पृथ्वी पर उतरेगा।

अन्तरिक्ष शटल का उपयोग, सम्भवत:, तीन विशिष्ट प्रकार की उड़ानों के लिए किया जायेगा। एक उड़ान का उद्देश्य यात्रियों तथा माल-असबाब को पृथ्वी की किसी कम ऊंचाई वाली परिक्रमा-कक्षा में पहुंचाना होगा। यहां उपग्रहों का प्रक्षेपण किया जा सकता है, उनकी मरम्मत हो सकती है, यहां तक कि उन्हें पृथ्वी पर वापस भेजने के लिए पुन: ग्रहण किया जा सकता है। यहां अन्तरिक्ष स्टेशन की, जो एक तीसरा अन्तरिक्ष-कार्यक्रम होगा, जांच-पड़ताल और मरम्मत की जा सकती है। इनके अतिरिक्त, यहां पंगु और विकारग्रस्त अन्तरिक्षयानों की रक्षा की जा सकती है। संक्षेप में, यहां ऐसी सभी परिवहन-उड़ानें, जिनकी कल्पना की जा सकती है, सम्पन्न हो सकती हैं।

अन्तरिक्ष शटल का उपयोग, परिक्रमा-वाहन (आर्बिटर) के ऊपर से की जाने वाली विशिष्ट वैज्ञानिक उड़ानों के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यह तीन सप्ताह की दूरवीक्षणीय उड़ान हो सकती है, जिसके समाप्त होने के बाद पृथ्वी पर लौटा जा सकता है। फिर, वैज्ञानिक, आर्थिक, यहां तक कि सैनिक, उद्देश्यों से पृथ्वी का पर्यवेक्षण और सर्वेक्षण किया जा सकता है।

अन्त में, शटल बाह्य अन्तरिक्ष की दूरस्थ गहराइयों तक उड़ान के लिए एक प्रक्षेपण-मंच का काम भी देगी।

अन्तरिक्ष शटल-प्रणाली का उड़ान सम्बन्धी परीक्षण, सम्भवत:, तीन चरणों में पूरा होगा। परीक्षण के प्रथम और द्वितीय चरणों में, परिक्रमा-वाहन और प्रक्षेपक राकेट को अलग-अलग उड़ाया जायेगा। वे विमान की तरह हवाई पट्टी से समानान्तर उठ कर अवस्वन गति से उड़ेंगे। तीसरे चरण में, प्रक्षेपण संयुक्त होगा, जिसमें परिक्रमा-वाहन और प्रक्षेपक राकेट आपस में जुड़े होंगे। ऐसा होने पर, प्रक्षेपण लम्बवत् होगा।

राष्ट्रीय उड्डयन एवं अन्तरिक्ष प्रशासन (नैसा) द्वारा चुने गये वायु-अन्तरिक्षीय निगम —जैसे, सैंट लुई का मैक्डोनेल डगलस—अब ऐसी अभिकल्पनाओं का अध्ययन कर रहे हैं, जिनके फलस्वरूप, पुन:-पुन: प्रयुक्त होने वाली अन्तरिक्ष शटल का निर्माण किया जा सकेगा। मैक्डोनेल डगलस के साथ, वाहन की अभि-

बार-बार प्रयुक्त हो सकने वाली अन्तरिक्ष शटल, अनेक प्रकार के कार्य सम्पन्न करके, अन्तरिक्ष-अनुसंधान के व्ययों में भारी कमी करेगी।
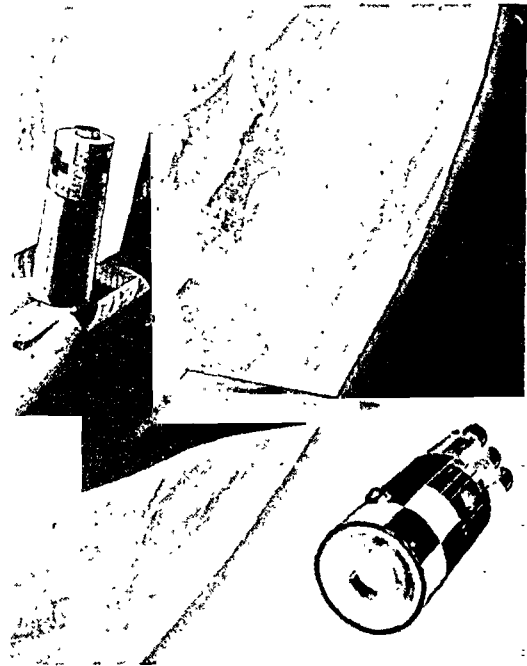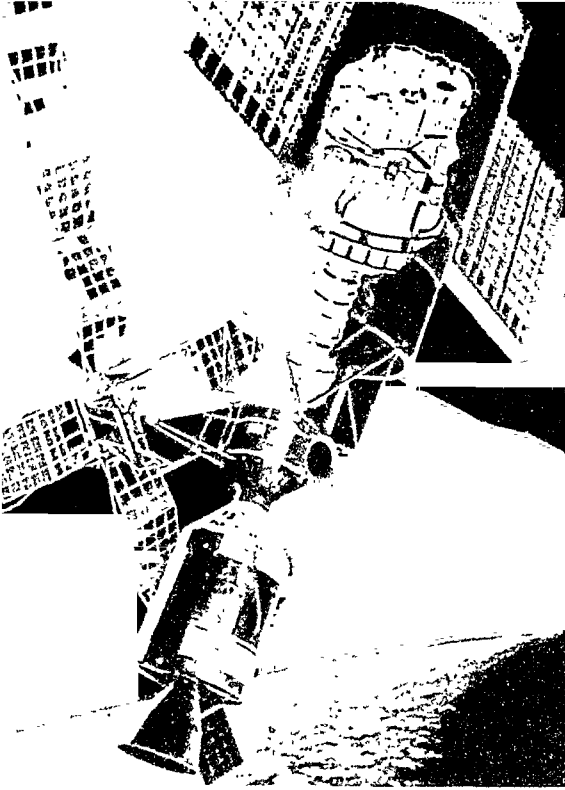
अन्तरिक्ष स्टेशन :

कार्यक्रम के अनुसार, कक्षागत प्रयोगशाला, स्काईलैब, १९७३ में प्रक्षिप्त होगी। यह प्रयोगशाला अन्तरिक्ष में लम्बे समय तक मानव की निवास-क्षमता का परीक्षण, पृथ्वी के साधनों का मूल्यांकन और सूर्य का पर्यवेक्षण करेगी। यहां ऊपर के खुले खण्ड में स्काईलैब की वर्कशाप दिखायी गयी है, जिसमें रहने के लिए ३०० घन मीटर स्थान होगा। पृथ्वी पर से स्काईलैब तक जाने और यहां से वापस आने के लिए एक साधारण अपोलो यान (सामने की ओर) प्रयुक्त होगा।

कल्पना में विमान सम्बन्धी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए पैन अमेरिकन वर्ल्ड एयरवेज (पैन ऐम), और राकेट इंजिन के विकास के लिए एयरो-जेट जनरल कम्पनी, सहयोग कर रही हैं।

इस समय, 'पैन ऐम' की एक टोली अन्तरिक्ष शटल के विकास सम्बन्धी प्रत्येक क्षेत्र में पूरे चौबीस घण्टे कार्य-संलग्न है। उसके इस प्रयास का उद्देश्य, अन्तरिक्ष शटल की परिवहन-प्रणाली में उन नियमों और धारणाओं का समावेश करना है, जो विमान की परिवहन-प्रणाली में निहित हैं। टोली इस बात का पता लगा रही है कि अन्तरिक्ष शटल की जांच-पड़ताल और मरम्मत किस प्रकार की जानी चाहिये तथा उसे सुरक्षा, विश्वसनीयता और अल्पव्यय के साथ संचालित करने के लिए क्या-कुछ करना आवश्यक होगा।

बार-बार प्रयुक्त हो सकने वाली अन्तरिक्ष शटल का एक प्रमुख उद्देश्य मनुष्यों और सामग्रियों को अन्तरिक्षीय कक्षा में स्थापित करने के व्यय को कम करना है। अनुमान है कि इस समय जहां एक पौण्ड भार के परिवहन पर एक हजार डालर खर्च होता है, वहां इन प्रयासों के फलस्वरूप, यह व्यय कम होकर प्रति पौण्ड सौ डालर या इससे भी कम हो जायेगा।

यह सब कुछ कैसे सम्भव होगा? इसकी कुंजी विमान और अन्तरिक्षयान सम्बन्धी प्रौद्योगिकियों के प्रभावकारी विलयन में निहित होगी। आधुनिक विमानों की तरह, अन्तरिक्ष शटल में भी अतिरिक्त अप्रयोज्य प्रणालियां तथा नियन्त्रण और संचार की अनेक व्यवस्थाएँ होंगी, जिनके द्वारा सुरक्षित और नियन्त्रित संचालन का विश्वास प्राप्त किया जा सकेगा। दूसरे शब्दों में, यदि कुछ पुर्जे ठीक से कार्य न कर रहे होंगे, तो भी यात्रा निर्विघ्न जारी रखी जा सकेगी।

उड़ान और रख-रखाव सम्बन्धी वैमानिक धारणाओं को अपनाने के फलस्वरूप, अन्तरिक्ष शटल को अन्तरिक्ष-उड़ान से लौटने के दो सप्ताह बाद, फिर उड़ान के लिए तैयार किया जा सकेगा। इस समय, एक बार उड़ान के बाद, प्रक्षेपक राकेट प्रक्षेपण के उपरान्त जल जाता है, और परिक्रमा-वाहन अन्त में किसी संग्रहालय की शोभा बढ़ाने लगता है।

हाल में, मैं मैक्डोनेल डगलस संयंत्र में अन्तरिक्ष शटल का प्रतिरूपक-तन्त्र (सिमुलेटर) देखने गया था। उसके चालक-कक्ष की रूपरेखा बहुत कुछ विमान के चालक-कक्ष की तरह ही है। उसमें अन्तरिक्षयात्रियों की हजारों स्विचों और बटनों वाली कोचों के बजाय, आधुनिक विमान की तरह अगल-बगल दो सीटें थीं और एक यन्त्र-पैनल लगा था। दोनों चालकों में से प्रत्येक के लिए कंट्रोल और रडर पैडल बने थे।

चालक-कक्ष (केबिन) की खिड़कियों से बाहर के दृश्य का प्रतिरूप प्रस्तुत करने के लिए, एक पर्दे पर बन्द सर्किट का टेलिविजन दृश्य प्रक्षिप्त होता है, जिससे चालकों को परिवर्तनशील दृश्य-क्षेत्र देखने को मिल जाते हैं। हमने टर्मिनल क्षेत्र तक पहुंचने और एक हवाई अड्डे पर उतरने की घटनाओं का नकली अभ्यास किया। इस सिलसिले में, हमने लगभग ३०,००० फुट की ऊंचाई से अपनी उड़ान प्रारम्भ की, बादलों के बीच से होकर नीचे १,००० फुट की ऊंचाई तक आये, और फिर, इंजिन बन्द करके हवा में संतरण करते हुए, हवाई अड्डे की सामान्य पट्टी पर उतर गये।

अन्तरिक्ष शटल के इस प्रतिरूपक-तन्त्र का प्रयोग करके दोनों वाहनों को इस रूप में अभिकल्पित करने का प्रयत्न किया जा रहा है, ताकि वे, जहां तक सम्भव हो, परम्परागत विमानों की तरह ही उड़ान और भूमि पर अवतरण कर सकें। यह स्मरणीय है कि पहले के अमेरिकी अन्तरिक्षयान उड़ान के बाद हवाई छतरी द्वारा पृथ्वी पर वापस आये थे। समुद्र में जहाजों का एक विश्वव्यापी बेड़ा तैनात करके अन्तरिक्षयानों का पुनर्ग्रहण बड़ा व्ययसाध्य होता है। पृथ्वी पर हवाई छतरी द्वारा उतरना भी सम्भव है, लेकिन इसमें सुरक्षा और भार की समस्याएं सामने आती हैं।

नये अन्तरिक्ष-कार्यक्रम के अन्तर्गत, तीसरा बड़ा कदम अन्तरिक्ष स्टेशन की स्थापना है। स्टेशन दस साल या उससे अधिक समय तक चालू रह सकेगा, और वैज्ञानिकों तथा प्रविधि-विशेषज्ञों को औसत भौतिक परिस्थितियों में रखने में समर्थ होगा। पृथ्वी पर काम करने वाले वैज्ञानिकों की तरह, वे सोमवार को किसी शटल पर सवार होंगे, अन्तरिक्ष में एक सप्ताह कार्य करेंगे और सप्ताहान्त की छुट्टी बिताने घर लौट आयेंगे। सम्भवतः, महिलाएं भी अन्तरिक्ष में जायेंगी। किन्तु, उन्हें प्राविधिक बातों की पूरी जानकारी रहेगी। इसी प्रकार, अन्तरिक्ष में राजनीतिज्ञ भी जायेंगे, और वैज्ञानिकों की तो बात ही नहीं पूछनी है।

प्रारम्भिक अन्तरिक्ष स्टेशन पर १२ मनुष्य काम करेंगे। वे चार डैकों तथा एक अतिरिक्त कक्ष और मियानी जैसी जगह में रहेंगे। लेकिन यह सीमा अन्तिम नहीं। अन्तरिक्ष स्टेशन की आधारभूत धारणा के अन्तर्गत, उसका विस्तार करना सम्भव है। स्टेशन को एक विशाल खिलौना समझ लीजिए, जिसमें आवश्यकता पड़ने पर कक्ष जोड़े या पृथक किये जा सकते हैं। अन्त में, एक ऐसी योजना बनेगी, जिसके अन्तर्गत, १०० व्यक्ति स्थायी वैज्ञानिक केन्द्र पर रहेंगे और कार्य करेंगे। वे कुछ दिन से लेकर एक साल की अवधि तक अन्तरिक्ष में रहेंगे।

ये केवल प्रारूप और निरर्थक रेखाएं नहीं हैं। अगले दस वर्षों में, इनमें से बहुत सी बातें मूर्त्त रूप ले लेंगी। सौभाग्यशाली और दिलचस्पी रखने वाले साधारण जनों का भी कार्यक्रम से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो जायेगा। यह उस समय होगा, जब प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप, व्यापारिक अन्तरिक्ष-परिवहन एक वास्तविकता बन जायेगा। कितने ही लोगों ने तो यहां तक भविष्यवाणी की है कि इस शताब्दी के समाप्त होने से पहले ही ऐसा हो जाएगा।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शायद तीन कार्यक्रम पूरे करने पड़ेंगे। पृथ्वी पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक उप-कक्षागत व्यापारिक परिवहन, सम्भवतः, प्रथम व्यापारिक प्रयत्नों में शामिल होगा। ४५ मिनट में न्यूयार्क से टोकियो की यात्रा एक आदर्श निर्धारित कार्यक्रम होगी। पृथ्वी की परिक्रमा-कक्षा से दृश्यावलोकन और, अन्ततः, चन्द्रमा तक की व्यापारिक यात्राएं भी सम्भव हो सकती हैं।

अन्तरिक्ष-कार्यक्रम के लाभ अब सर्वविदित हो चुके हैं। ये हैं: मौसम की अधिक सही भविष्यवाणी, टेलिफोन और टेलिविजन से तत्क्षण संचार तथा फसलों की भविष्यवाणी के लिए नये अनुसन्धान। अब तो चित्र और ध्वनि-संदेश उन अविकसित क्षेत्रों तक भी पहुंचने लगे हैं, जहां परम्परागत शिक्षण विधियां पहले कभी भी नहीं पहुंची थीं। यह सब अन्तरिक्ष-उपग्रहों द्वारा सम्भव हुआ है। मानवता के लिए अन्तरिक्ष-अनुसन्धान के अन्तिम लाभ उतने ही वास्तविक और असीम दिखायी देते हैं, जितना स्वयं अन्तरिक्ष है। ■■

ास्तु शिल्प

एस. आर. मधु

अहमदाबाद के प्रसिद्ध वास्तु-शिल्पी, श्री बी. वी. दोषी, द्वारा निर्मित भवनों में भावी विकास के बीज निहित हैं, क्योंकि "वास्तुशिल्प से अपेक्षित है कि वह परिवर्तन की अपरिहार्यता को स्वीकार करे।"

ऊपर, बायें : भारतीय विद्या संस्थान भवन (सामने प्रांगण में श्री दोषी दिखायी दे रहे हैं) विद्वानों का आश्रम है। उसमें एक अनूठी गरिमा और शान्ति का आभास मिलता है। भवन को चारों ओर से घेरे छिछला सरोवर वातानुकूलन-व्यवस्था के बिना ही भवन के तापमान को कम रखता है।

ऊपर : बम्बई के गगनचुम्बी भवनों का यह मीनाक्षी दृश्य वास्तुशिल्प की भावी दिशा का सूचक है।

किसी बस्ती के वास्तुशिल्प में, "सामुदायिक भावना, एक साथ हिलमिल कर रहने की प्रवृत्ति", का सृजन करने की क्षमता होनी चाहिये।

'फार्चून' पत्रिका ने लिखा है कि श्री बी. वी. दोषी "प्रथम समकालीन भारतीय हैं, जिन्हें विश्व के श्रेष्ठतम वास्तुशिल्पियों की पंक्ति में स्थान प्राप्त है।" 'द जापान आर्किटेक्ट' नामक पत्रिका ने अपने सर्वेक्षण, 'छठें दशक के ४३ महान् वास्तुशिल्पी,' में उन्हें शामिल करके, उन्हें ला कारबूज़िए, यामासाकी और लुई काहन के समकक्ष स्थान दिया है। और, अभी हाल में, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त वास्तुशिल्प-संस्थान, 'अमेरिकन इन्स्टिटयूट ऑव् आर्किटेक्ट्स', ने उन्हें अपना सम्मानित फैलो निर्वाचित किया है।

इन सबसे प्रमाणित है कि अहमदाबाद के श्री बालकृष्ण विट्ठलदास दोषी हमारे युग के एक श्रेष्ठतम वास्तुशिल्पी हैं। इन सबके अतिरिक्त, उनकी वास्तुशिल्पिक कृतियां भी हैं, जिनमें २० करोड़ रुपए की लागत वाली प्रतिष्ठित भवन-योजनाओं से लेकर, निम्न आय-वर्ग के लोगों के लिए आवास-बस्तियों तक, सभी प्रकार की परियोजनाएं शामिल हैं। उनकी साहसिक शैली, कल्पनाशक्ति और मौलिकता की अभिव्यक्ति भारत के विभिन्न भागों में निर्मित आवासीय भवनों, औद्योगिक अधिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, बैंकों और अस्पतालों में स्पष्ट रूप से हुई है।

निश्चय ही, अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता के साथ-साथ, उन्हें वास्तुशिल्पिक रचनाओं के लिए अधिकाधिक निमंत्रण मिलते रहे हैं। 'अमेरिकन इन्स्टिटयूट ऑव आर्किटेक्ट्स' के फैलो चुने जाने के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, श्री दोषी ने कहा : "इस विश्वप्रसिद्ध वास्तु-शिल्प-संघटन का 'फैलो' चुने जाने पर मैं अत्यन्त गौरव और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। इस 'संघटन' ने विश्व के वास्तुशिल्प को प्रभावित करने और उसके मानदण्ड को ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है।" इस समय तक केवल १५५ अन्य वास्तुशिल्पियों को ही यह सम्मान प्राप्त हुआ है। श्री दोषी यह सम्मान प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय वास्तुशिल्पी हैं।

उनके जीवन पर जिन प्रमुख व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा है, उनकी चर्चा करते हुए, श्री दोषी ने कहा कि वह ला कारबूज़िए और लुई काहन के विशेष ऋणी हैं। विश्वविख्यात वास्तुशिल्पी, कारबूज़िए, से उनकी पहली मुलाकात कुछ वर्ष पूर्व लंदन के एक सम्मेलन में हुई थी। उसके तुरन्त बाद, वह कारबूज़िए के पेरिस स्थित कार्यालय में शामिल हो गये। वहां उन्होंने चार वर्ष बिताये। भारत लौटने पर, श्री दोषी ने इस प्रख्यात फ्रांसीसी वास्तुशिल्पी के प्रतिनिधि के रूप में, चण्डीगढ़ के निर्माण-कार्य का संचालन किया।

श्री दोषी के अनुसार, "कारबूज़िए में हर दोष को गुण में बदलने की अपूर्व क्षमता है।" दोषी भी अब उन्हीं के पदचिन्हों पर चलने का भरसक प्रयास करते हैं। यही कारण है कि जब किसी योजना के लिए धन और सामग्री की कमी पड़ जाती है, तो श्री दोषी हिम्मत नहीं हारते। अपने भवनों में वह अक्सर ईंटों का इस्तेमाल करते हैं, ताकि कंकरीट की कमी का संकट न उत्पन्न होने पाये। उनके बहुत ही कम भवन वातानुकूलित हैं, क्योंकि वातानुकूलन पर बहुत अधिक खर्च बैठता है। इसके बजाय, तापमान पर नियन्त्रण पाने के लिए इनमें सूझबूझपूर्ण तरीकों का उपयोग किया गया है।

अमेरिकी वास्तुशिल्पी, श्री काहन, के साथ अपने साहचर्य को श्री दोषी अत्यन्त 'प्रेरणादायक' मानते हैं। श्री काहन के साथ उन्होंने सर्वप्रथम १९६२ में, अहमदाबाद के 'इण्डियन इन्स्टिटयूट ऑव् मैनेजमेण्ट' के भवन के निर्माण के समय काम किया। उन्होंने कहा: "काहन ने अपनी वास्तुशिल्पिक शैली की अभिव्यक्ति के लिए जिस नये प्रकार की सूझबूझपूर्ण प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। . . . वह मेरे सर्वश्रेष्ठ गुरु रहे हैं; उनके साथ काम करने के बाद ही मैं यह अनुभव कर सका कि कल्पनाशीलता और दर्शन के माध्यम से वास्तुशिल्प को किस प्रकार नई दिशा दी जा सकती है।"

कारबूज़िए और काहन से प्रभावित होने के बावजूद, श्री दोषी के वास्तुशिल्प में भारतीयता स्पष्ट झलकती है। उसमें भारत की जलवायु और आर्थिक परिस्थितियों का भी अच्छा समन्वय मिलता है। उनका दृढ़ विश्वास है कि वास्तुशिल्प का सम्बन्ध धरती से होना चाहिए। ("किसी भवन को देख कर कोई भी यह कह उठे कि 'यह भवन भारत का है'।") उन्होंने बताया कि बहुत से प्राचीन भारतीय भवनों के आकर्षण और स्थायित्व का कारण यह रहा है कि

गुजरात राज्य के उर्वरक निगम की बस्ती में आड़े-तिरछे मार्गों का जाल बिछा है। इस प्रकार के मार्गों के निर्माण का उद्देश्य विभिन्न आय-वर्ग के लोगों में मेलजोल और अपनत्व की भावना को प्रोत्साहन देना है।

उनका निर्माण स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रख कर किया गया था। उन्होंने कहा : "उनके निर्माण में विशुद्ध भारतीय वास्तुशिल्पिक प्रतिभा का उपयोग किया गया था। मैं चाहता हूं कि मेरे वास्तु-शिल्प की दिशा भी यही हो।"

श्री बालकृष्ण दोषी का जन्म पूना में एक फर्निचर-निर्माता परिवार में हुआ। १८ वर्ष की आयु में इन्जिनियर बनने का दृढ़ संकल्प कर उन्होंने फर्ग्युसन कालेज में प्रवेश किया। लेकिन, 'इन्स्टिटयूट ऑव् माडर्न आर्ट', जहां वह अध्ययन कर रहे थे, के अध्यापकों ने परामर्श दिया कि उनका झुकाव विज्ञान के बजाय कला की ओर है। अतः, दोषी ने वास्तुशिल्प का अध्ययन करने का निश्चय किया, क्योंकि यह एक ऐसा विषय था, जिसमें वह अपनी कलात्मक और अभियांत्रिक क्षमताओं का समान रूप से उपयोग कर सकते थे।

१६५० में, बम्बई के 'जे० जे० स्कूल ऑव् आर्ट' से वास्तुशिल्प का चार-वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के बाद, श्री दोषी इंगलैण्ड चले गये। वहां वह किसी संस्था में शामिल नहीं हुए, बल्कि पुस्तकालयों में बैठ कर अध्ययन करते रहे। उनका कहना है कि इस प्रकार अध्ययन करके वह उससे कहीं अधिक ज्ञान अर्जित करने में समर्थ हुए, जो विश्वविद्यालय में अध्ययन करने से प्राप्त होता है। शीघ्र ही, उन्हें लन्दन के "रॉयल इन्स्टिटयूट ऑव् आर्किटेक्ट्स" की सहायक सदस्यता प्राप्त हो गई। इसके बाद, उनकी भेंट कारबूजिए से हुई और उन्होंने चण्डीगढ़ के निर्माण-कार्य का संचालन किया। १९७० में, जब अहमदाबाद नवगठित गुजरात राज्य की राजधानी बना, तो श्री दोषी ने वहां अपना कार्यालय खोलने का निश्चय किया। इस कार्यालय का नाम 'वास्तुशिल्प' रखा गया। आज उनके और उनके तीन साझीदारों के पास कुल मिला कर २० कर्मचारी काम करते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, श्री दोषी के वास्तुशिल्प की सबसे प्रमुख विशिष्टता यह रही है कि वह भविष्योन्मुखी है। वह वास्तुशिल्प और नगर-रचना की ऐसी शिल्प-शैलियों का विकास करने के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं, जिनके द्वारा आज के भवनों को कल की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके।

श्री दोषी के मतानुसार, "वास्तुशिल्प से अपेक्षित है कि वह परिवर्तन की अपरिहार्यता को स्वीकार करे। आकार और स्थान को सतत परिवर्तनशील, सतत विकासशील, रहने की आवश्यकता है, ताकि उनमें आवश्यकता और समय के अनुसार, आन्तरिक और बाह्य परिवर्तन, संशोधन अथवा परिवर्द्धन किया जा सके....।"

श्री दोषी द्वारा निर्मित भवनों में परिवर्तन की सदैव गुंजाइश रहती है। अनेक सूक्ष्म उपायों का सहारा लेकर, जिनमें से कुछ संरचनात्मक तथा कुछ स्थान से सम्बद्ध होते हैं, वह अपनी वास्तुशैलियों में भावी विकास का बीजारोपण करते हैं। वह भावी पीढ़ियों के लिए सांकेतिक सुझाव प्रस्तुत करते हैं, और इस बात का पूरा यत्न करते हैं कि उनके द्वारा निर्मित भवनों को

बायें नीचे : श्री दोषी के मकान का पिछवाड़ा। उनके अनेक अन्य भवनों की भांति ही, इसमें भी उससे कहीं अधिक खुली जगह है, जितनी पहली बार देखने में प्रतीत होती है।

नीचे : घर के भीतर प्रायः सभी कमरे हवादार, प्रकाशमान और शान्तिमय हैं। श्री दोषी कहते हैं : "घर पहुंचने पर मुझे शान्ति का पूर्ण और सच्चा सुख मिलता है।"

सबसे नीचे : विद्यालय के उपाहारगृह का एक दृश्य।
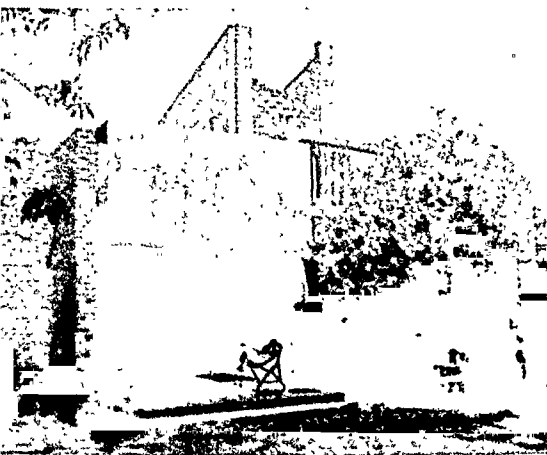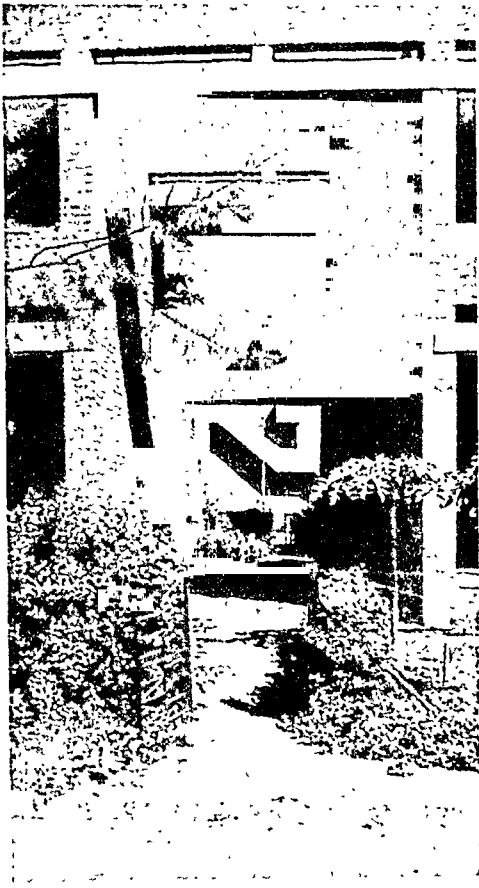
बस्ती की एक वीयिका। कंक्रीट की कमी को देखते हुए, श्री दोषी ईंटों का खुल कर प्रयोग करते हैं।

शिक्षा-संस्थान "एक खुला स्थान होना चाहिए....जहां विचारों के आदान-प्रदान पर कोई रोक न हो।"

और अधिक सुन्दरता और श्रेष्ठता प्रदान करने के प्रयास में तो कोई कठिनाई न आये, किन्तु साथ ही, जहां तक सम्भव हो, उनकी सुन्दरता नष्ट करने वाले परिवर्तन करना कठिन और दुष्कर भी हो जाये।

'आर्किटेक्चरल फोरम' के श्री पीटर ब्लेक ने लिखा है: "श्री दोषी द्वारा निर्मित भवनों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वे पूर्ण विकास की अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। वस्तुतः, वे भवन प्रत्याशित और अप्रत्याशित परिवर्तनों और परिवर्द्धनों की अनवरत शृंखला में प्रथम कड़ी मात्र हैं। प्रत्याशित इस अर्थ में कि श्री दोषी को यह ज्ञात है कि २१वीं शताब्दी में मानव-जीवन की विशिष्टताओं को दृष्टि में रखते हुए ये परिवर्तन अवश्यम्भावी हैं, और अप्रत्याशित इसलिए कि कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि ये परिवर्तन और परिवर्द्धन क्या रूप ग्रहण करेंगे।"

श्री दोषी की कुछ सर्वोत्कृष्ट वास्तुशिल्पिक कृतियाँ विचारणीय हैं:

भारतीय विद्या संस्थान, अहमदाबाद: इस संस्था में हजारों प्राचीन पाण्डुलिपियां, प्रशस्तिपत्र और ताम्रपत्र सुरक्षित हैं। यह भारतीय विद्याविदों (इण्डोलोजिस्ट) एवं इतिहासकारों के अनुसन्धान-केन्द्र के रूप में विख्यात है।

इसका भवन १८ महीने के अन्दर १९६२ में बन कर तैयार हुआ। यह विद्वानों का आश्रम है और यहां का वातावरण अत्यन्त प्रशान्त और गरिमामय है। सुरक्षित पाण्डुलिपियों की तरह ही, यह भवन भी अतीत की स्मृति दिलाने वाला है। यह विद्यापीठ उच्चकोटि की तकनीकी उपलब्धि का प्रतीक है। इसकी निचली मंजिल में वातानुकूलन की व्यवस्था के बिना ही तापमान को नियन्त्रित किया गया है। यह युक्ति भवन के चारों ओर एक उथले सरोवर का निर्माण करके लागू की गयी है। सरोवर का जल प्रकाश को अन्दर की ओर प्रतिबिम्बित करता है, और साथ ही, तल-घर में स्थित कार्यालय-कक्षों को शीतल बनाये रखता है। पहली और दूसरी मंजिलों पर भी परिसरीय बरामदों के कारण छाया रहती है।

गुजरात राज्य उर्वरक निगम की बस्ती, बड़ौदा: श्री दोषी ने कहा: "जब मुझ से इस बस्ती की अभिकल्पना तैयार करने के लिए कहा गया, तो मैंने यह निश्चय कर लिया कि मेरी कृति ऐसी होगी, जो बस्तियों के निर्माण के क्षेत्र में एक प्रतिमान बनने के साथ-साथ, आस-पास के ग्रामों के लिए भी आदर्श सिद्ध होगी।" उनके मुख्य उद्देश्य थे: एक ऐसी आवास-प्रणाली का विकास करना, जो स्थानीय रीति-रिवाजों और रुचियों के अनुरूप हो; इस बात का निश्चित आश्वासन प्राप्त करना कि उसमें परिवर्तन और परिवर्द्धन किये जा सकेंगे; और निर्माण में स्थानीय सामग्री का उपयोग करना, ताकि स्थानीय शिल्पों और उद्योगों को नया जीवन मिले।

इस बस्ती के निर्माण से श्री दोषी को अपना यह विश्वास साकार करने का अवसर भी मिला कि वास्तुशिल्प में, "सामुदायिक भावना, एक साथ हिलमिल कर रहने की प्रवृत्ति", का सृजन करने की क्षमता होनी चाहिए। इस बस्ती में तिरछे, कर्णवत्, मार्गों का जाल बिछा हुआ है, जो विभिन्न आय-वर्गों के लोगों में एकीकरण की भावना जगाने के साथ-साथ, भविष्य में बस्ती के समानान्तर तथा लम्बवत्, दोनों ही, प्रकार के विकास की सुविधा प्रदान करता है। इस प्रकार के विकास से आर्थिक और सामाजिक सीमाओं को भी समाप्त करना सम्भव हो सकेगा।

श्री दोषी ने बड़े ही मुग्ध भाव से कहा: "यह बस्ती एकीकृत भावना की प्रतीक है और मकानों की पंक्तियों के बजाय, विशिष्ट प्रकार की आवास-पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है।"

अहमदाबाद में श्री दोषी का निवासस्थान: श्री दोषी के ही शब्दों में, "यह छोटे परिवार के लिए कम खर्च में और स्थानीय तौर पर उपलब्ध सामग्रियों से बने मकान का एक उदाहरण है। इसकी अभिकल्पना में, यहां की जलवायु का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। मेरा घर तेज धूप, मौसमी गर्मी, वर्षा, तूफानी धूल, कीड़ों और आवारा पशुओं से सुरक्षित है और शीतल हवा आसानी से इसमें प्रवेश पा लेती है।"

लाल ईंट से निर्मित इस दो-मंजिला भवन में रसोईघर, ज़ीना, स्नानागार और भण्डार-घर 'अपरिवर्तनीय' हैं और ये ही योजना के आधार हैं। बैठक, भोजन-कक्ष और शयन-कक्ष में आवश्यकतानुसार फेर-बदल की जा सकती है—"कभी-कभी तो उन्हें एक इकाई का रूप भी दिया जा सकता है।" श्री दोषी ने बताया: "श्री लुई काहन यहां आकर बहुत प्रसन्न होते हैं।" इन दोनों वास्तुशिल्पियों ने मकान के पिछले लान में बैठ कर अनेक बार लम्बे विचार-विमर्श किये हैं।

वास्तुशिल्प विद्यालय, अहमदाबाद: श्री दोषी कई पदों पर हैं। उनमें से एक पद वास्तु-शिल्प विद्यालय के निदेशक का भी है। हाल में, इस विद्यालय का नाम 'पर्यावरण नियोजन एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र' रख दिया गया है। हारवर्ड विश्वविद्यालय से आये विशेषज्ञों ने विद्यालय की सर्वथा नवीन अभिकल्पना की प्रशंसा की है। हारवर्ड विश्वविद्यालय और इस विद्यालय के मध्य एक विनिमय कार्यक्रम भी चल रहा है।

विद्यालय में ईंट निर्मित तोरण हैं, जो शान्ति और गरिमा का संदेश देते हैं। इसमें अगल-बगल में और ऊपर की ओर विस्तार की गुंजाइश है, परन्तु बरामदों और अधिक खुले स्थानों का अभाव है। श्री दोषी का कहना है कि यह एक ऐसा मण्डपाकार भवन है, जिसके निर्माण में गर्म जलवायु का पूरा ध्यान रखा गया है।

"विद्यालय भवन के चारों ओर की दृश्यावली कक्षा का ही एक अंग प्रतीत होती है।"

इसकी अभिकल्पना तैयार करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि "यह एक ऐसे खुले स्थान के रूप में हो, जिसमें बहुत कम द्वार हों। वहां विचारों के आदान-प्रदान पर कोई रोक नहीं होनी चाहिए।" इस पर लागत भी कम आई है, क्योंकि "अभिकल्पना में रख-रखाव वाली चीजें बहुत कम हैं।"

वास्तुशिल्प में वातावरण की भूमिका को श्री दोषी पर्याप्त महत्व देते हैं। उनकी कृतियों और वास्तुशिल्प सम्बन्धी उनकी धारणा में, जिस पर समाजशास्त्र का व्यापक प्रभाव है, यह एक प्रमुख उपादान है। उनका कहना है कि किसी परिवेश से हम यही अपेक्षा करते हैं कि वह "जीवन को स्वस्थ दिशा की ओर उन्मुख करने में योग देगा। जब अभिकल्पना में निहित प्रत्येक तत्व दूसरे की उपेक्षा करके अपनी कहानी कहने लगता है, तो वातावरण संघर्ष का स्थल बन जाता है तथा वहां अव्यवस्था फैल जाती है.....इसलिए यह आवश्यक है कि परस्पराश्रितता तथा एकात्मकता का विकास एक साथ ही हो।"

वातावरण के प्रति इस व्यग्रता ने श्री दोषी को अनियोजित नगरों की संवृद्धि का प्रबल विरोधी बना दिया है। अनियोजित नगर-निर्माण से गंदी बस्तियों, भीड़भाड़, वर्गभेद, अधिक दूरियों, अवकाश की कमी और पारिवारिक जीवन के विघटन जैसी बुराइयां जन्म लेती हैं। उनका कहना है: "नगरों के अति-विकास से न केवल हमारे साधन चुकते हैं, बल्कि हमारा वातावरण भी दूषित होता है।.... शहरी क्षेत्रों में विद्रोह सुलग रहा है। जीवन की पूर्णता के बजाय, अस्तित्व की रक्षा हमारी चिन्ता का मुख्य विषय बन गयी है।"

श्री दोषी का दृढ़ विश्वास है कि श्रेष्ठतर भारत के निर्माण की आशा उसके ग्रामों के कायाकल्प और सुधार में ही निहित है। आर्थिक साधनों का सदुपयोग और उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करके देश के ५,५०,००० गांवों को छोटे कस्बों में रूपान्तरित कर देना चाहिए। "इससे ग्रामीण समाज की आवश्यकताएं पूरी होंगी, उसका गतिहीन स्वरूप बदलेगा और गांव छोड़ कर नगरों में बसने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी।"

श्री दोषी की कल्पना के ऐसे छोटे कस्बों में "मानव और प्रकृति, श्रम और विश्राम, क्रिया और प्रतिक्रिया में गतिशील सन्तुलन होगा।"

अन्य वास्तुशिल्पियों की तरह, श्री दोषी भी वातावरण की रक्षा के लिए विशेष व्यग्र हैं। वह अनुभव करते हैं कि पर्यावरणीय सन्तुलन को फिर से स्थापित करना जरूरी है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई और वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं के दुरुपयोग के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय असन्तुलन को वनारोपण, तालाबों के निर्माण और सरल सिंचाई-योजनाओं के क्रियान्वयन द्वारा दूर किया जाना चाहिए। उनका कहना है: "प्राचीन भारतीय साहित्य में वनों, उपवनों और जलाशयों के महत्व का तथा ग्रामों और कस्बों के बीच सतत सम्पर्क का उल्लेख मिलता है। लेकिन, यदि आज आप महाद्वीप की हवाई यात्रा करें तो चारों ओर शुष्क क्षेत्र, रेगिस्तान और ग्रामों के खण्डहर ही दृष्टिगोचर होते हैं।"

अमेरिकी वास्तुशिल्प में व्यक्ति और उसके वातावरण की ओर जो विशेष ध्यान दिया जा रहा है, श्री दोषी उसका स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा: "मैं समझता हूं कि पहले चमक-दमक और स्थायित्व पर अधिक जोर दिया जाता था। वर्तमान प्रवृत्ति अत्यन्त सामयिक और कल्याणकारी है, क्योंकि इसका प्रभाव भारत तथा अन्य विकासशील देशों पर भी पड़ने की सम्भावना है।"

अमेरिकी वास्तुशिल्प के क्षेत्र में, नयी-नयी प्रौद्योगिक विधियों और तरीकों का जो विकास हुआ है, उससे भी वह बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने कहा: "समय, आवास और संचार-व्यवस्था सम्बन्धी नये विचारों ने अमेरिका के वास्तुशिल्प को अभूतपूर्व अभिव्यक्ति प्रदान की है। मैं इस संदर्भ में प्रमुख अमेरिकी नगरों, नये विश्वविद्यालयी प्रांगणों, नगर नवीकरण-योजनाओं और आवास-परियोजनाओं में निहित सिद्धान्तों का उल्लेख करना चाहूंगा। ये सभी भविष्य के वास्तुशिल्प की झलक प्रस्तुत करते हैं।" ■■

नीचे: अहमदाबाद में निर्माणाधीन सेण्ट्रल बैंक के भवन के बाहर, वास्तुशिल्पी श्री दोषी अपने सहयोगियों से किसी समस्या पर विचार-विमर्श कर रहे हैं।

बायें, नीचे: हैदराबाद की इस आवास-परियोजना में श्री दोषी के वास्तुशिल्प का सरल सौन्दर्य स्पष्ट झलक रहा है। उनका कहना है: "सस्ते आवासों का निर्माण भारतीय वास्तुशिल्प की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है।"
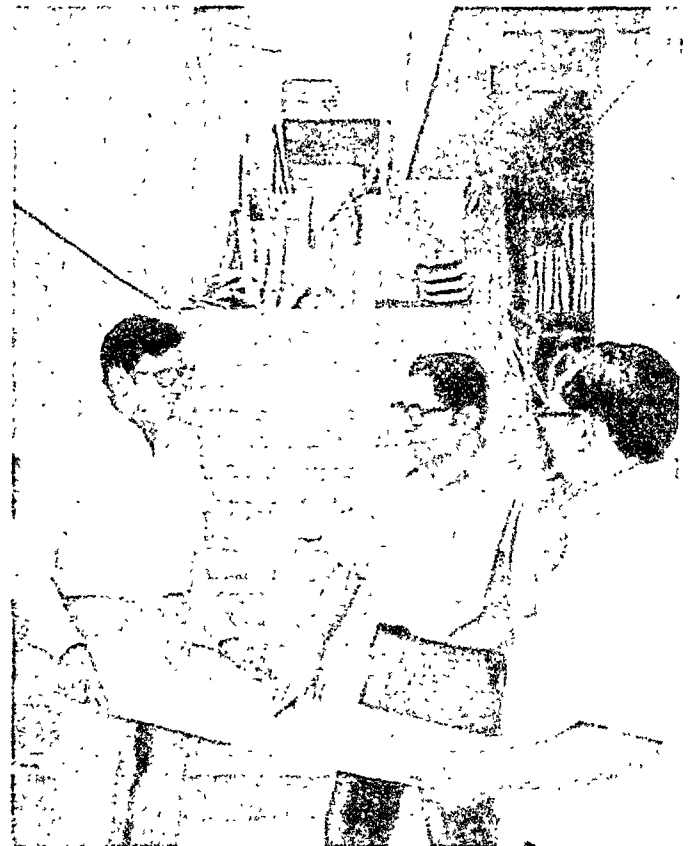
मैसूर की कृषि-समस्याओं के कल्पनाशील, किन्तु व्यावहारिक, समाधान की खोज कर बंगलौर स्थित कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय ने राज्य में कृषि की सम्पन्नता को उल्लेखनीय रूप में बढ़ाया है। विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष के छात्र, बायें, खेत में फसल के विकास का अध्ययन कर रहे हैं। इस संस्था की एक सफलता के फलस्वरूप, कम उपज देने वाली रागी, नीचे, प्रचुर उपज देने वाली संकर रागी में परिवर्तित हो गयी है। एक स्नातक किसान, दायें नीचे, अपनी धान की फसल की देखभाल कर रहा है। सबसे दायें, नारियल की जटा से बनी विशेष चटाई से धूप छन-छन कर आती है। इसका निर्माण इस तरह किया गया है, ताकि इलायची के कोमल पौधे को 'कट्टे' से बचाया जा सके।

मिट्टी की सेवा

मैसूर के किसान के लिए, जिसे सदियों तक एक फसल के बाद दूसरी फसल उगाते रहने के बावजूद, उपज के रूप में अपने श्रम का समुचित प्रतिदान कदाचित् ही कभी मिला हो, अब प्रचुर उपज की नयी आशा और सम्भावना का द्वार उन्मुक्त हो गया है। उसका भविष्य उज्ज्वलतर होता दिखायी दे रहा है, क्योंकि मैसूर के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने रागी की घटिया किस्म को संकर जाति की एक ऐसी उन्नत फसल में बदल दिया है, जिसकी उपज की भारी प्रचुरता अभी तक स्वप्न में भी कल्पनातीत थी।

रागी के संकरण में इस सफलता का मैसूर के लिए विशेष महत्व है, क्योंकि वहां इसकी खेती २० लाख एकड़ भूमि पर होती है और राज्य के लाल मिट्टी वाले क्षेत्र में अनाज और चारे की मुख्य फसल यही है। रागी की खेती भारत के अन्य भागों, दक्षिण-पूर्वी एशिया और अफ्रीका में भी होती है। अतएव, इसके संकरण और अच्छी उपज देने वाले अन्य बीजों से इसके संसेचन का प्रभाव दूरगामी पड़ेगा।

रागी की किस्म सुधारने का काम, वस्तुतः, १६१३ में ही शुरू हो गया था, किन्तु इसकी पुष्परचना इतनी विचित्र है और इसमें पराग-संक्रमण की प्रक्रिया इस प्रकार स्वचालित होती है कि इस पर संकरण की सामान्य विधियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वर्तमान शताब्दी के पांचवें दशाब्द के अंतिम चरण तक रागी के बीज को सुधारने की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। किन्तु, उसके बाद, इसकी किस्म सुधारने के प्रयत्न फिर शुरू हुए। काफी प्रयत्नों के बाद, उन्नत किस्म के बीज से संसेचन की 'सम्पर्क-विधि' अपनायी गयी, जिसमें भारी सफलता मिली। यह विधि जटिल होने के बावजूद, बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। नयी किस्म के बीज तैयार करने वालों ने ऐसी कई नयी किस्में तैयार कीं, जिनसे उपज में भारी वृद्धि होने की आशा है।

मैसूर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना बंगलौर में १६६४ में हुई। उससे सामान्य रूप से कृषि को, तथा विशेष रूप से रागी की उन्नत किस्म के बीज तैयार करने के प्रयत्नों को, बढ़ावा मिला। पिछले कुछ वर्षों के दौरान, रागी की खेती सम्बन्धी सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय घटना यह रही कि रागी के अफ्रीकी बीजाणु-प्रस (जर्म प्लाज्मा) का बड़ी सफलता से प्रयोग किया गया। विश्वविद्यालय को प्रयोग के लिए अफ्रीकी प्रस रॉकफेलर फाउण्डेशन से प्राप्त हुआ। फलस्वरूप, वैज्ञानिकों को ऐसी तीन नयी किस्में तैयार करने में सफलता मिली है, जिन पर सूखा और रोग, दोनों का, प्रभाव बहुत कम पड़ता है और जिनकी उपज उन्नत किस्म की उपज से भी २५ प्रतिशत अधिक होती है। रागी की किस्म सुधारने में योग देने वाले वैज्ञानिक, श्री सी० एच० लक्ष्मणैया, के अनुसार: "रागी की इन भारत-अफ्रीकी संकरणों की एक उल्लेखनीय बात यह है कि वे तन्द्रिल होती हैं, अर्थात् इनके बीज बालियों में ही अंकुरित नहीं होते। रागी की प्रायः सभी किस्मों का एक बड़ा दोष यह है कि वे अ-तन्द्रिल हैं, जिसका अर्थ यह है कि यदि फसल काटने में जरा भी विलम्ब हो जाय, तो उनके बीज बालियों के भीतर ही अंकुरित हो जाते हैं। इससे अनाज और मात्रा, दोनों की, हानि होती है।"

रागी की किस्म सुधारने के सम्बन्ध में जितना अनुसन्धान-कार्य हुआ है, वह इस बात का एक ज्वलन्त उदाहरण है कि किस प्रकार आठ साल में ही कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय मैसूर राज्य के कृषि-सुधार में एक शक्तिशाली साधन बन गया है। यह इस बात का प्रत्यक्ष साक्षी है कि शिक्षा, अनुसन्धान और सेवा-विस्तार का यथार्थतापूर्ण और समन्वित कार्य-क्रम अपना कर क्या कुछ सफलता प्राप्त की जा सकती है।

नये ज्ञान की खोज और मैसूर की परिवर्तन-शील परिस्थितियों पर उसका प्रयोग इस नये और गतिमान विश्वविद्यालय का आधारभूत सिद्धान्त रहा है। इसीलिए, रॉकफेलर फाउण्डे-शन के अध्यक्ष, जार्ज हरार, के शब्दों में, यह विश्वविद्यालय "भारत की महत्वपूर्ण

समर्पित'

मुहम्मद रियाज़ुद्दीन

बेकर्स ट्रेनिंग स्कूल की गतिविधियों के माध्यम से इस विश्वविद्यालय का कार्य-क्षेत्र कृषि के परम्परागत दायरे को पार कर गया है। यह ट्रेनिंग स्कूल अमेरिका के 'ह्वीट असोशियेट्स' के सहयोग से चलाया जा रहा है।

कृषि-संस्थाओं में एक है।"

विश्वविद्यालय को जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, उसे देख कर ईर्ष्या होती है। लेकिन, उसे यह प्रतिष्ठा दिलाने में कई बातें सहायक हुई हैं। इसके निष्ठावान और योग्य प्राध्यापक-मण्डल के कारण उसे चोटी की प्रतिभा वाले विद्वानों का सहयोग प्राप्त है। अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी (यू एस ए आई डी) के कार्यक्रम के अधीन, इस विश्वविद्यालय के प्राध्यापक-मण्डल के लगभग ६० सदस्यों को विभिन्न अमेरिकी विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षित किया गया है।

अनुसन्धान पर विशेष बल दिया जाना इसकी एक अन्य उल्लेखनीय बात है। **'फार्म जर्नल'** के भूतपूर्व सम्पादक, कैरोल पी० स्ट्रीटर, ने लिखा है: "कुछ नये विश्वविद्यालयों में, जिनमें से एक मैसूर में है, अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना ३० प्रतिशत समय अनुसन्धान में लगायेंगे। इसी प्रकार, अनुसन्धानकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे लगभग इतना ही समय अध्यापन में लगायेंगे। अध्ययन और अनुसन्धान का यह एक ऐसा समन्वय है, जो अमेरिका के पुराने भूमि-अनुदान विश्वविद्यालयों तक में दुर्लभ है।"

मैसूर का कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय उन आठ भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों में एक है, जिनको अमेरिका से सहायता प्राप्त है। यह विश्वविद्यालय इस दृष्टि से बहुत भाग्यशाली है कि भारत के एक प्रमुख वैज्ञानिक-प्रशासक, डा० के० सी० नायक, इसके उपकुलपति हैं। उन्हें कृषि पर अनुसन्धान करने का चालीस वर्ष का लम्बा अनुभव प्राप्त है। उनकी मान्यता है कि यदि किसी विश्वविद्यालय को एक संस्था के रूप में अपनी उपयोगिता बनाये रखनी है, तो उसे इस देश की समस्याओं के कल्पनाशील, किन्तु व्यावहारिक, हल खोजने होंगे।

१९६५ में, राज्य सरकार ने इसे ३४ अनुसन्धान-केन्द्र सौंप दिये, जिससे यह रातों-रात भारत में अपने ढंग की सबसे बड़ी संस्था बन गया। विश्वविद्यालय के लिए यह प्रारम्भिक कदम अत्यन्त शुभ सिद्ध हुआ। अनुसन्धान-केन्द्रों को राज्य के प्रत्येक कृषि-जलवायु क्षेत्र में स्थित पांच क्षेत्रीय केन्द्रों के अधीन पुनः श्रेणीबद्ध किया गया है ताकि किसी भी फसल की उपेक्षा न हो। बंगलौर केन्द्र पर, असिंचित भूमि पर कृषि, और मक्का तथा रागी की खेती सम्बन्धी समस्याएं हल करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसी प्रकार, माण्ड्या में, धान, रागी और गन्ने पर; मुडीगेरे में, बागानों की फसलों—इलायची, काफी, नीबू-प्रजाति के रसीले फलों—पर; धारवाड़ में, कपास और ज्वार पर; तथा रायचूर में, कपास, तेलहन और मूंगफली पर अनुसन्धान के विशेष प्रयास हो रहे हैं।

क्षेत्रीय अनुसन्धान-केन्द्रों और उनसे सम्बद्ध उपकेन्द्रों की स्थापना सम्बन्धी धारणा अमेरिकी भूमि-अनुदान कालेजों की एक मुख्य विशेषता रही है। मैसूर की संस्था भी इन्हीं कालेजों के नमूने पर टेनेसी विश्वविद्यालय के सहयोग से स्थापित की गयी है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने १९६६ में कहा था: "अमेरिकी भूमि-अनुदान कालेजों का एक गुण यह है कि वे अपनी संस्थाओं से अपेक्षा करते हैं कि उनकी निष्ठा मिट्टी की सेवा में ही समर्पित होगी।"

कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में इससे बढ़ कर सही बात कोई और नहीं हो सकती कि उसकी निष्ठा मैसूर की मिट्टी की सेवा में समर्पित है। विश्वविद्यालय जिस प्रकार के अनुसन्धान-कार्य कर रहा है, उसका अनुमान माण्ड्या और मुडीगेरे केन्द्रों को देख कर लगाया जा सकता है।

माण्ड्या मैसूर का एक पुराना अनुसन्धान-केन्द्र है। रागी की उन्नत किस्में विकसित करने का अधिकांश कार्य यहीं हुआ। इसकी स्थापना १९३१ में एक कनाडी, डा० लेस्ली सी० कोलमैन, ने की थी। प्रारम्भ में, केन्द्र का सम्बन्ध, मुख्यतः, गन्ने के प्रचार-प्रसार तक सीमित रहा। विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद, इस केन्द्र पर धान, रागी और गन्ने के विषय में गहन और विस्तृत अनुसन्धान करने तथा अनुसन्धान के परिणामों को मैसूर के किसानों तक पहुंचाने का अतिरिक्त दायित्व आ पड़ा।

यहां विश्वविद्यालय के उस अभिनव प्रयास का भी अवलोकन किया जा सकता है, जो उसने ऐसा किसान तैयार करने की दिशा में किया है, जिसे न केवल एक कृषि विश्वविद्यालय की सर्वश्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप शिक्षा मिली हो, बल्कि जिसकी सच्ची निष्ठा और सेवा-भावना मिट्टी को ही समर्पित हो।

इस सिलसिले में, फसल-उत्पादन सम्बन्धी स्नातकोत्तर डिप्लोमा-कोर्स की योजना के अधीन, कृषि-स्नातकों को मौके पर ही प्रशिक्षित किया जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत, प्रत्येक छात्र को ५० रुपये प्रति एकड़ वार्षिक लगान की दर पर तीन एकड़ सिंचित और दो एकड़ असिंचित भूमि एक वर्ष के लिए दी जाती है। इसके बाद, छात्र स्वयं पहल लेता है; जिस फसल को ठीक समझता है, उसे उगाता है; और यथासम्भव लाभ अर्जित करता है। विश्वविद्यालय प्रत्येक छात्र को निवेश्य साधन—खाद, बीज, आदि—खरीदने के लिए नकद ऋण देता है और वह संकाय के सदस्यों से सलाह-मशविरा ले सकता है। सितम्बर, १९७१ में तीन छात्रों के पहले दल ने माण्ड्या में अपना पाठ्यक्रम पूरा किया। उन्होंने पांच हजार से छः हजार रुपये तक शुद्ध लाभ कमाया था।

मुडीगेरे का सुरम्य केन्द्र पश्चिमी घाट की ओट में ९४५ मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय की ओर से

इलायची, काफी, नीबू-प्रजाति के फलों और केले के बारे में होने वाले अनुसन्धान का केन्द्र है। किन्तु, यहां पर मुख्य अनुसन्धान-कार्य इलायची पर हो रहा है। डा० आर० एस० देशपाण्डे के नेतृत्व में युवा और निष्ठावान वैज्ञानिकों की एक टोली इलायची में लगने वाले 'कट्टे' नामक रोग की रोकथाम के लिए एकजुट प्रयत्न कर रही है। डा० देशपाण्डे का कहना है: "कट्टे का रोग दक्षिण भारत के उस समस्त क्षेत्र में पाया जाता है, जहां इलायची की खेती होती है। इस रोग के कारण फसल की पैदावार घटती तथा इलायची बागानों की स्थिति बिगड़ती जा रही है।"

भारत को इलायची का घर कहा जाता है। दक्षिण में पांच हजार साल से इसकी खेती होती आ रही है। लेकिन, इस मसाले और 'कट्टे' रोग पर पहला वास्तविक अनुसन्धान-कार्य १९४५ में ही शुरू हुआ। दस साल बाद, १९५८ में, मुडीगेरे में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद (आई सी ए आर) के तत्वावधान में पूरी लगन और तत्परता के साथ अनुसन्धान-कार्य आरम्भ किया गया।

मुडीगेरे में अब तक जितना अनुसन्धान-कार्य हुआ है, उससे पता चलता है कि 'कट्टे' का पूरी तरह तो उन्मूलन सम्भव नहीं है, किन्तु रोगी पौधों को चुन-चुन कर नष्ट कर देने से इस रोग की रोकथाम प्रभावशाली ढंग से की जा सकती है। डा० देशपाण्डे ने कहा: "किसी उन्मूलन-कार्यक्रम की सफलता अधिकतर इस बात पर निर्भर होती है कि रोगी पौधों को कितनी कुशलता के साथ नष्ट किया जाता है।"

देश के लिए कट्टे पर हो रहा अनुसन्धान महत्वपूर्ण है। इसका कारण यह है कि विश्व में प्रतिवर्ष जितनी इलायची—लगभग दो हजार से ढाई हजार टन तक—होती है, उसका ७५ प्रतिशत भाग भारत में ही पैदा होता है। थोड़ी मात्रा में इलायची ग्वाटेमाला, श्रीलंका, तंजानिया, एल साल्वेडोर, विएतनाम, लाओस और कम्बोडिया में भी पैदा की जाती है। इलायची का पौधा एक सदाबहार बूटी होता है। उसे खुली धूप में नहीं उगाया जा सकता। इसे बढ़ने-फैलने के लिए लता-पत्रों की छाया की जरूरत होती है। कट्टे की रोकथाम के प्रयत्न में संलग्न मुडीगेरे के वैज्ञानिक, आवश्यक संरक्षण प्रदान करने के लिए विशेष प्रकार से बुने गये नारियल की चटाई के जाल पर परीक्षण कर रहे हैं। परीक्षण के तौर पर शुरू की गयी पौधशालाओं से उत्साहवर्द्धक परिणाम सामने आये हैं।

इलायची, रागी, धान और मक्का पर होने वाले अनुसन्धान तो प्रायः कृषि विश्वविद्यालय के अनुसन्धान-कार्य के अविभाज्य अंग होते हैं। किन्तु मैसूर के कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय ने परम्परागत विश्वविद्यालयों से एक भिन्न कदम भी उठाया है, हालांकि उसका यह कार्य देश में खाद्यान्नों की पैदावार बढ़ाने विषयक उसके कार्यक्षेत्र के दायरे में ही आता है।

मछली को खाद्य का बहुत पोषक और सस्ता साधन मान कर तथा देश की औद्योगिक समृद्धि में उसकी भारी योगदान-क्षमता को समझ कर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय ने १९६९ में मंगलौर में मत्स्य कालेज चालू किया, जो भारत में अपने ढंग का पहला कालेज है।

इस कालेज को स्थापित करने की आवश्यकता स्पष्ट थी। जैसा कि कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के डीन, डा० जी० रंगास्वामी, ने बताया, लगभग पांच हजार किलोमीटर लम्बे समुद्रतट के अलावा, देश के भीतर ढाई लाख वर्ग-किलोमीटर की महाद्वीपीय तटरेखा से लगी हुई ढालू समुद्री तलहट; तीन लाख हेक्टेयर में फैली दलदल, खाड़ियां, समुद्री घाटियां, आदि; दस हजार किलोमीटर लम्बी और साल भर बहने वाली नदियां; पांच हजार किलोमीटर लम्बी सिंचाई वाली नहरें; और लगभग दस लाख हेक्टेयर भूमि में फैले हजारों छोटे-बड़े तालाब हैं। ये सब साधन मछली के स्थायी स्रोत हैं।

डा० रंगास्वामी ने बताया कि भारत के विशाल प्राकृतिक साधनों के बावजूद, "देश में मत्स्य उद्योग के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। भारत में, वर्ष में कुल मिला कर, १५ लाख टन मछली पकड़ी जाती है, जो विश्व भर में पकड़ी जाने वाली मछली के २.५ प्रतिशत के बराबर है।"

मंगलौर स्थित मत्स्य कालेज को आशा है कि मत्स्य साधनों के सही और लाभप्रद उपयोग के लिए वह व्यावसायिक दृष्टि से कुशल कर्मचारी दे सकेगा, जिनकी देश को अतीव आवश्यकता है। यह कालेज कितना लोकप्रिय है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि मछली को साफ करके डिब्बे में बन्द करने की प्रौद्योगिकी के एक वर्ष के डिप्लोमा-कोर्स में उपलब्ध ३० सीटों के लिए इस साल ३०० से अधिक छात्रों ने आवेदन-पत्र भेजे।

मत्स्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी में शिक्षण की सुविधा सुलभ करने के अलावा, मंगलौर कालेज ने जलचर जीव-विज्ञान और महासागरीय विज्ञान के अध्ययन-अनुसन्धान का भी व्यापक दायित्व संभाला है।

कालेज ने अपना ध्यान मुख्य रूप से बंगलौर के आस-पास के क्षेत्र पर केन्द्रित किया है। अब तक वह यह स्थापित करने में सफल हुआ है कि इस क्षेत्र में ५० विभिन्न किस्मों की मछलियां, झिंगे, आदि पाये जाते हैं। उसने यह भी स्थापित किया है कि नाव से जाल फेंक कर जिन

बायें, इलायची का एक पौधा, जिसे कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय में अनुसन्धान का मुख्य लक्ष्य बनाया गया है। नीचे, रोगी पशुओं के लिए एक चलता-फिरता चिकित्सालय, जिसे अमेरिकी अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी (ए. आई. डी.) से उपहार में प्राप्त दो मोटर गाड़ियों की सहायता से चलाया जा रहा है। यह चिकित्सालय विश्वविद्यालय के सेवा-विस्तार कार्यक्रम का अंग है।

क्षेत्रों में मछली पकड़ी जाती है, उनको व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी मछलियों के प्रजनन-क्षेत्रों के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

मत्स्य अधिकारी, डा० पी० एस० बी० आर० जेम्स, ने कहा : "मछलियों पर पर्यावरण का क्या प्रभाव पड़ता है, इस सम्बन्ध में किये गये एक अध्ययन-अनुसन्धान के अन्तर्गत यह पता चला है कि मानसून से पहले नाव से जाल फेंक कर जो मछलियां पकड़ी जाती हैं, वे प्राय: समुद्री जाति वाली मछलियां होती हैं। मानसून के बाद जो मछलियां पकड़ी जाती हैं, उनमें ऐसी किस्मों की मछलियां होती हैं, जो क्षार की घट-बढ़ को सहन कर सकती हैं।"

डा० जेम्स और उनके साथी मंगलौर की विख्यात और लोकप्रिय मछली, 'लेडी फिश', के बारे में भी अध्ययन कर रहे हैं। यह मछली खाने में बड़ी स्वादिष्ट होती है और मानसून में नदी के मुहाने पर अण्डे देती है। कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक ऐसी कोशिश कर रहे हैं, जिससे यह मछली कृत्रिम रूप से बनाये गये जलाशयों में भी अण्डे देने लगे, ताकि इसे पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जा सके।

मत्स्य-अभियन्ता मैसूर के समुद्री तट और वर्तमान गोदियों पर भी एक महत्वपूर्ण एवं विशद अनुसन्धान कर रहे हैं। वे यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि इस प्रकार की अन्य नयी गोदियां अन्यत्र कहां स्थापित की जा सकती हैं, जिससे अरब सागर की मत्स्य सम्पदा का और अच्छी तरह विदोहन हो सके।

टेनेसी विश्वविद्यालय की टोली के अध्यक्ष और मैसूर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय में सेवा-विस्तार कार्य के सलाहकार, डा० जिस्ट वेलिंग, का कहना है : "संसार में सब तरह का ज्ञान उपलब्ध है, लेकिन यदि राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करने में उसका उपयोग नहीं किया जाता, तो वह व्यर्थ है।"

डा० वेलिंग का मत है कि किसी कृषि विश्वविद्यालय के संकुल कार्यक्रम में सेवा-विस्तार कार्य के महत्व को अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। टेनेसी विश्वविद्यालय के सहयोग से काम करते हुए, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय ने बंगलौर जिले में, परीक्षण के तौर पर, १९६७ में एक विस्तार-परियोजना प्रारम्भ की। परियोजना वाला समूचा क्षेत्र संकर और अधिक उपज वाली फसलों, और विशेष रूप से मक्का, को लोकप्रिय बनाने वाली प्रयोगशाला बन गया। यह परियोजना इतनी सफल रही कि पहले वर्ष ही संकर मक्का की खेती का क्षेत्रफल कुछ-एक सौ हेक्टेयर से बढ़ कर ५,५०० हेक्टेयर हो गया।

प्रयोग के तौर पर आरम्भ किये गये इस कार्यक्रम की सफलता का रहस्य, अंशत:, यह था कि जिले के ११ तालुकों में से प्रत्येक में एक-एक विस्तार-निदेशक की सेवाएं सुलभ करने का अभिनव प्रयोग आरम्भ किया गया। विस्तार-निदेशक स्नातक होता था। उसे विश्वविद्यालय की ओर से मोटर साइकिल दी गयी, ताकि वह काफी घूम-फिर सके।

बंगलौर जिला-कार्यक्रम से यह तथ्य उजागर हुआ कि परम्परागत खेती-बाड़ी को शीघ्रता से आधुनिक कृषि में बदलने के लिए विस्तार-कार्यक्रम एक प्रभावशाली माध्यम है। जैसा कि डा० वेलिंग ने बताया : "हमें आशा है कि भविष्य में राज्य के १७२ तालुकों में से प्रत्येक में एक-एक विस्तार-निदेशक रखा जा सकेगा।"

डा० वेलिंग ने कहा : "किसान और विश्वविद्यालय के बीच की खाई को पाटना हमारा मुख्य लक्ष्य है, क्योंकि ऐसा होने पर ही यह विश्वविद्यालय मैसूर में ग्राम-विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देने का प्रभावशाली माध्यम बन सकता है।"

विश्वविद्यालय ने प्रथम आठ वर्षों में जितनी प्रगति की है, वह मैसूर में कृषि की समृद्धि के उज्ज्वल भविष्य की परिचायक है। जैसा कि उपकुलपति, श्री नायक, ने कहा : "ऐसा प्रतीत होता है कि अब भविष्य की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास के साथ करना सम्भव हो गया है।" ■■

मंगलौर स्थित मत्स्य कालेज में, उत्साही युवा छात्र मछली पकड़ने के लिए विभिन्न प्रकार के जालों का उपयोग करना सीख रहे हैं। यह कालेज, जो भारत में अपने ढंग का सबसे पहला कालेज है, १९६९ में खुला।

क्स या ईसा के बिना ही

ज्यां-फ्रांसिस रेवेल

नयी अमेरिकी क्रान्ति प्रारम्भ हो गयी है

गत शताब्दी के आरम्भ में, एक फ्रांसीसी मनीषी ने संयुक्तराज्य अमेरिका का भ्रमण किया और उस क्रान्ति के विषय में एक उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखा, जिसका प्रतिनिधित्व समता सम्बन्धी अमेरिकी धारणा करती है। अलेक्सी द् टौकविल नामक उस फ्रांसीसी विद्वान् ने कहा था : "अमेरिका मेरा केवल ढांचा था, मेरा विषय तो था लोकतन्त्र।"

उसके लगभग १५० वर्ष बाद, एक अन्य फ्रांसीसी मनीषी, ज्यां-फ्रांसिस रेवेल, ने संयुक्तराज्य अमेरिका का भ्रमण किया। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अमेरिका ने एक दूसरी क्रान्ति को जन्म दिया है, जो हमारी इस शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण क्रान्ति होगी। वह कहते हैं : "केवल वहीं यह क्रान्ति हो सकती थी, और यह प्रारम्भ हो भी चुकी है।" रेवेल की दृष्टि में, क्रान्ति सड़कों पर लड़ने और रक्तपात करने का नाम नहीं है। वह तो, वस्तुतः, एक व्यापक सामाजिक रूपान्तरण, एक नयी सभ्यता, की प्रतीक है।

उनकी पुस्तक, 'विदाउट मार्क्स ऑर जीसस : दि न्यू अमेरिकन रिवोल्यूशन हैज़ बिगन', जो १९७० में, फ्रांस में प्रकाशित हुई, संयुक्तराज्य अमेरिका में सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक होने जा रही है। भारत में, यह पुस्तक 'अमेरिकन रिव्यू' के परिशिष्टांक के रूप में, हाल ही में, प्रकाशित की गयी थी और इसका एक भारतीय संस्करण जून, १९७२ में, 'एलाइड पब्लिशर्स' द्वारा प्रकाशित किया गया है।

मार्सेलीज़ में जन्मे, दार्शनिक-समीक्षक, श्री रेवेल, फ्रांस में चिरकाल से प्रतिष्ठित धारणाओं का भण्डाफोड़ करने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके राजनीतिक विचार उदार हैं। द्वितीय महायुद्ध के दौरान, 'फ्रांसीसी प्रतिरोध' में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया; मैक्सिको, अल्जीयर्स तथा फ्लोरेन्स में दर्शनशास्त्र का अध्यापन किया; और आजकल पेरिस की एक प्रकाशन-संस्था, 'एडिशन्स राबर्ट लेफौण्ट', में सम्पादक के पद पर हैं। प्रस्तुत लेख उनकी 'विदाउट मार्क्स ऑर जीसस' पुस्तक से संकलित किया गया है।

स्सन्देह, अमेरिकी क्रान्ति इतिहास की वह पहली क्रान्ति है, ...जिसमें अस्तित्व के साधनों के बारे में मतभेद की अपेक्षा जीवन के मूल्यों एवं लक्ष्यों के बारे में मतभेद अधिक प्रखर है।"

बीसवीं शताब्दी की क्रान्ति संयुक्तराज्य अमेरिका में होगी। यह केवल वहीं हो सकती है। और, यह प्रारम्भ हो भी चुकी है। उस क्रान्ति का प्रसार शेष संसार में होता है या नहीं, यह इस पर निर्भर करता है कि पहले यह अमेरिका में सफल होती है या नहीं।

प्रत्येक स्तर के यूरोपीय वामपक्षियों और 'तृतीय विश्व' के राष्ट्रों को इस तरह के वक्तव्यों से जो धक्का पहुंचेगा, और इनके प्रति अविश्वसनीयता का जो भाव उनमें उपजेगा, उनसे मैं अनभिज्ञ नहीं हूं। मैं जानता हूं, यह विश्वास करना कठिन है कि अमेरिका—जिसे साम्राज्यवाद की पितृभूमि कहा जाता है, जो वियतनाम युद्ध के लिए उत्तरदायी शक्ति है, जो ऐसा राष्ट्र है जहां जो मैकार्थी जैसे लोग संदिग्ध साम्यवादियों को सूंघते-फिरते हैं, जो संसार के प्राकृतिक साधनों का दोहन करने वाला देश है—क्रान्ति का पालना है या कभी हो सकता है। हम अमेरिका को क्रान्ति का तर्कसंगत लक्ष्य मानने, और अमेरिका के हाथ खींच लेने की गति से क्रान्ति की प्रगति को आंकने, के आदी हो गये हैं। अब, हमसे अपेक्षा की जा रही है कि हम यह स्वीकार कर लें कि क्रान्ति सम्बन्धी हमारा विसर्पणशील मापदण्ड सही नहीं था, और यह कि उस सुविधाजनक उपकरण के बिना ही हम भविष्य का सामना करें।

यदि हम उन सारी चीजों की एक सूची बनायें, जो आज मानव-जाति को कष्ट दे रही हैं, तो हमें उस क्रान्ति के व्यवस्थित कार्यक्रम की, जिसकी मानव-जाति को आवश्यकता है, एक रूपरेखा प्राप्त हो जायेगी: राज्यों और राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की धारणा का अन्त करके युद्ध तथा साम्राज्यवादी सम्बन्धों का उन्मूलन; आन्तरिक अधिनायकवाद की सम्भावना का निरसन (जो युद्धोन्मूलन की एक सहवर्ती शर्त है); विश्वव्यापी आर्थिक और शैक्षणिक समानता; भूमण्डलीय स्तर पर संतति-निग्रह; स्वाधीनता द्वारा व्यक्तिगत सुख तथा चुनाव की बहुलता को सुनिश्चित करने के लिए, और मानव के सृजनात्मक साधनों का समग्र रूप से उपयोग करने के लिए, पूर्ण सैद्धान्तिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक स्वतन्त्रता।

स्पष्टतः, यह एक अव्यावहारिक, स्वर्णयुगीन कार्यक्रम है, और सिवाय इस एक बात के, कि अगर मानव-जाति को जीवित बचना है तो इसका क्रियान्वयन नितान्त आवश्यक है, और कोई चीज इसके पक्ष में नहीं है। मुझे लगता है कि अमेरिका में, एक राजनीतिक सभ्यता के साथ दूसरी राजनीतिक सभ्यता का विनिमय, जो उस कार्यक्रम से अभिप्रेत है, सम्प्रति हो रहा है। और, जैसा कि अतीत की सभी महान् क्रान्तियों में हुआ है, यह विनिमय तभी विश्वव्यापी बन सकता है, जब यह, एक प्रकार के राजनीतिक अन्तर्मिश्रण द्वारा, आदर्शरूप-राष्ट्र से दूसरे राष्ट्रों के बीच फैलता है।

आदर्शरूप-राष्ट्र की भूमिका निभाने के लिए अमेरिका, वस्तुतः, सर्वाधिक उपयुक्त देश है। इसके कारण निम्नलिखित हैं: इसे सतत आर्थिक समृद्धि और विकास की तारतम्यपूर्ण गति की सुविधाएं, जिनके बिना कोई भी क्रान्तिकारी योजना सफल नहीं हो सकती, प्राप्त हैं; इसमें प्रौद्योगिक सामर्थ्य है और यहां आधारभूत अनुसन्धान का स्तर भी बहुत ऊंचा है; सांस्कृतिक दृष्टि से, यह अतीत के बजाय भविष्य की ओर उन्मुख है; यहां आचार-व्यवहार के मानदण्डों, तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं समानता की पुष्टि के क्षेत्रों, में क्रान्ति हो रही है; यह सभी—विशेषतः, कला, जीवन-शैली और अनुभूति के—क्षेत्रों में निरंकुश नियन्त्रण को अस्वीकार करता और सृजनात्मक पहल को अधिकाधिक बढ़ावा देता है; तथा यह विविध प्रकार की परस्पर पूरक वैकल्पिक उप-संस्कृतियों के सह-अस्तित्व को प्रश्रय देता है।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट है कि किसी क्रान्ति के विभिन्न पक्ष आपस में सम्बद्ध होते हैं—और, उनका यह सम्बन्ध इतना घनिष्ठ होता है कि यदि एक पक्ष का अभाव हो जाय, तो दूसरे पक्ष अपूर्ण रह जाते हैं। पांच तरह की क्रान्तियां हैं, जिन्हें या तो साथ-साथ, या बिल्कुल नहीं, घटित होना चाहिए। वे हैं: राजनीतिक क्रान्ति; सामाजिक क्रान्ति; प्रौद्योगिक और वैज्ञानिक क्रान्ति; संस्कृति, जीवन-मूल्यों और मानदण्डों की क्रान्ति; और अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्जातीय सम्बन्धों में क्रान्ति। मेरी दृष्टि में, अमेरिका ही अकेला ऐसा देश है, जहां इन पांचों प्रकार की क्रान्तियों का कारवां एक साथ आगे बढ़ रहा है; ये क्रान्तियां आंगिक रूप से इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि देखने में वे एक ही क्रान्ति जैसी जान पड़ती हैं। अन्य सभी देशों में, या तो पांचों क्रान्तियों का अभाव है, जिससे 'न रहे बांस न बाजे बांसुरी' की स्थिति हो गयी है, या उनमें से एक, दो या तीन की कमी है, जिससे क्रान्ति ख्याली पुलाव पकाने जैसी घटिया चीज बन कर रह गयी है।

'अमेरिका के बारे में विचार करते समय, एक आम गलती यह होती है कि हम उस राष्ट्र को क्रान्ति विषयक अपने सुपरिचित निर्देशों की शब्दावली में समझने-समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि ऐसे निर्देश प्रायः विशुद्ध रूप से सैद्धान्तिक होते हैं। फिर, जब हम देखते हैं कि उन निर्देशक सिद्धान्तों को अमेरिकी परिस्थितियों पर लागू नहीं किया जा सकता, तब यह फतवा दे देते हैं कि अमेरिका एक प्रतिक्रियावादी देश है।

जिन क्रान्तिकारी योजनाओं को हम जानते हैं और जिन्हें हम आम तौर से लागू करने की कोशिश करते हैं, वे सबकी-सब विरोध के, वैमनस्य के, अस्तित्व पर आधारित हैं: जमींदारों के विरुद्ध किसान; कारखानेदारों के विरुद्ध मजदूर; उपनिवेशवादियों के विरुद्ध उपनिवेशवासी। परन्तु, वर्तमान अमेरिकी क्रान्ति विरोधी शिविरों के बीच भिड़न्त के बजाय, केन्द्र-विमुख घूर्णन अधिक जान पड़ती है। इसकी कुछ विशेषताएं पुराने ढंग की क्रान्ति से मिलती-जुलती हैं। यहां भी उत्पीड़ित और उत्पीड़क हैं; शोषित और शोषक हैं; निर्धन और धनवान हैं। यहां ऐसे लोग हैं, जो वर्तमान परिस्थिति से नैतिक रूप से असन्तुष्ट हैं—और, यह क्रान्ति की एक अनिवार्य शर्त है। साथ ही, यहां स्वयं शासनकर्ता कुलीन वर्ग के भीतर भी गम्भीर फूट है।

कुछ ऐसे लक्षण भी हैं, जो बिल्कुल नये हैं और अमेरिका में ही खास तौर से पाये जाते हैं। यहां के 'निर्धन' भी असाधारण प्रकार के निर्धन हैं; वे प्रतिवर्ष १,५०० डालर से ३,००० डालर तक कमाते हैं, और अगर उनकी आय ३,००० डालर से नीचे गिरती है, तो वे सरकारी सहायता के पात्र बन जाते हैं। यूरोप में अगर किसी परिवार की आय इतनी हो, तो उसे निर्धनता के स्तर से काफी ऊपर का समझा जायेगा। निस्सन्देह, अमेरिकी क्रान्ति इतिहास की वह पहली क्रान्ति है, जिसमें अस्तित्व के साधनों के बारे में मतभेद की अपेक्षा जीवन के मूल्यों एवं लक्ष्यों के बारे में मतभेद अधिक प्रखर है। अमेरिकी क्रान्तिकारी केवल इतना ही नहीं चाहते कि केक को बराबर-बराबर टुकड़ों में विभाजित किया जाय; वे तो, वस्तुतः, पूरी की पूरी नयी केक चाहते हैं। मूल्यों और मान्यताओं की आलोचना करने की यह भावना, जो अभी भी बौद्धिक के बजाय संवेगात्मक अधिक है,

केवल सूचना सम्बन्धी स्वतन्त्रता के कारण ही सम्भव हो सकी है। सूचना सम्बन्धी इस प्रकार की स्वतन्त्रता इससे पूर्व की कोई भी सभ्यता सहन नहीं कर पायी थी—ऐसी स्वतन्त्रता, जो शासक वर्ग के भीतर, और उसके लाभार्थ, भी कभी नहीं देखी गयी; सामान्य जन तक सूचना पहुंचाने के साधनों, जैसे समाचारपत्रों, के स्तर पर तो इसकी कल्पना भी व्यर्थ है। सूचना तक सहज पहुंच का परिणाम यह हुआ है कि लोगों में अपने को दोषी मानने की एक व्यापक और प्रबल भावना, और आत्मनिन्दा की एक ऐसी ललक, को प्रश्रय मिला है, जो कभी-कभी तो अति की सीमा तक पहुंच जाती है। और, इस परिणाम ने, बदले में, एक ऐसी घटना को जन्म दिया है, जिसकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। वह घटना है: अमेरिकी परराष्ट्र नीति की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के विरुद्ध देश के भीतर एक विद्रोह।

किन्तु, यह विद्रोह भी एक नवीन क्रान्तिकारी दिशा का एकमात्र संकेत नहीं है। नीग्रो जनों के मामले में अमेरिका को जिस तरह की परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है, उस तरह की परिस्थिति का सामना किसी दूसरे समाज को कभी नहीं करना पड़ा। इस संक्रामक घरेलू समस्या और अफ्रीकी-अमेरिकी समुदाय की मांगों के समक्ष अमेरिकी समाज गुटों में बंटता जा रहा है और सांस्कृतिक बहु-केन्द्रीयता के पथ पर चलने लगा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस प्रक्रिया के कारण आज अमेरिकी समाज की 'समानुरूपता' और 'समानता' सम्बन्धी हमारे पूर्वाग्रह विध्वस्त हो रहे हैं। वस्तु-स्थिति यह है कि अमेरिकी समाज बहुत सारे तनावों में पड़ कर विदीर्ण हो चुका है और वह अधिकाधिक विविधतापूर्ण होने की स्थिति में नहीं रह गया है।

अमेरिकी क्रान्ति की एक अन्य अपूर्व विशिष्टता है युवा पीढ़ी का विद्रोह, जिसकी छूत १९६५ और १९७० के बीच, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, दोनों, स्तरों पर बहुत प्रचण्ड रूप से फैली है। परन्तु यह विद्रोह क्रान्ति की अवधि में उच्च वर्ग में उत्पन्न विभेदों और अलगावों के संदर्भ में पनपी हुई एक नयी प्रगति है, क्योंकि ये युवा क्रान्तिकारी अधिकांशतः छात्र, अर्थात् सुविधाप्राप्त वर्ग के सदस्य, हैं। यह कहना असंगत नहीं होगा कि यह 'सुविधा-प्राप्त वर्ग' क्रमशः कम अपवादस्वरूप होता जा रहा है। यह मामला, वस्तुतः, सामान्य जन की सुविधा का है। इस समय हो रही इस उथल-पुथल का कारण केवल यही नहीं है कि शेष जनसंख्या की तुलना में युवकों की संख्या अधिक है, बल्कि यह भी है कि युवा वर्ग में छात्रों की ही संख्या अधिक है। आजकल २० करोड़ की कुल आबादी में छात्रों की संख्या ७० लाख है। अनुमान है कि यह संख्या १९७७ तक बढ़ कर १ करोड़ १० लाख हो जायेगी।

स्वयं अपने विरुद्ध अमेरिका के इस विद्रोह के मूल में बहुत-सी 'प्रखर' एवं ज्वलन्त समस्याएं हैं। ये समस्याएं इतनी संश्लिष्ट और संगत हैं कि, कुल मिला कर, वे एक ही समस्या बन गयी हैं; उनमें से कोई भी एक समस्या दूसरी समस्याओं से अलग नहीं की जा सकती। ये समस्याएं इस प्रकार हैं: नैतिक मूल्यों के प्रति एक मूलतः नया दृष्टिकोण; अश्वेत लोगों का विद्रोह; पुरुषों के प्रभुत्व पर नारियों का आक्रमण; युवा लोगों द्वारा पूर्णतया आर्थिक और प्राविधिक सामाजिक लक्ष्यों का तिरस्कार; शिक्षा में अनुत्पीड़क विधियों का व्यापक रूप से अपनाया जाना; निर्धनता को अपराध के रूप में मान्यता; समता के लिए बढ़ती हुई मांग; सत्तामूलक निरंकुश संस्कृति का तिरस्कार, और उसके स्थान पर एक आलोचनात्मक तथा विविधतापूर्ण संस्कृति का, जो पुरानी संस्कृतियों की संचित राशि से गृहीत होने के बजाय, मूलतः नवीन है, अपनाया जाना; विदेशों में अमेरिकी प्रभुत्व के प्रसार और अमेरिकी परराष्ट्र नीति, दोनों को स्वीकृति न देना; और इस बात का दृढ़ संकल्प कि व्यापारिक लाभ के बजाय, प्राकृतिक पर्यावरण अधिक महत्वपूर्ण है।

अस्तु, अमेरिकी विद्रोह जिन-जिन रूपों में प्रकट हो रहा है, उन सबका आधार सामान्य रूप से एक ही है। वह आधार है: एक ऐसे समाज को अस्वीकार करना, जो लाभोपार्जन की भावना से प्रेरित है; जिसे केवल आर्थिक प्रतिफल की ही चिन्ता है; जो प्रतियोगिता की भावना से अनुशासित है; और जो अपने सदस्यों के पारस्परिक अभिघातों का शिकार बना हुआ है। वस्तुतः, प्रत्येक क्रान्तिकारी आदर्श के मूल में हम यह दृढ़ विश्वास निहित पाते हैं कि मनुष्य अपने ही औज़ारों का खिलौना बन गया है और उसे एक बार फिर अपने-आप में एक लक्ष्य और एक मूल्य बन जाना चाहिए। आज आदमी अपनी पहचान खुद भूल गया है; उसने जीवन का अर्थ विकृत कर डाला है—इस तथ्य को, विशेषतः, हिप्पियों ने बहुत स्पष्ट रूप से समझ लिया है। उदाहरण के लिए, प्रतियोगिता से अनुप्रेरित समाज या प्रतिद्वन्द्विता की भावना से उन्हें बड़ी पीड़ा होती है। लेकिन, वे अपनी ईमानदारी के कारण इस तरह के समाजों की न तो निन्दा करते हैं, न सैद्धान्तिक रूप से उनका प्रतिवाद करते हैं। वे तो बस ऐसे समाज में कोई हिस्सा लेने से इन्कार करके ही रह जाते हैं। इस प्रकार, हिप्पी, अंततः, कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसने जानबूझ कर अपने को 'पंक्ति से अलग' कर लिया है; वह एक ऐसा बालक या बालिका है, जिसने, एक दिन, सामाजिक तन्त्र का पुर्जा न बनने का फ़ैसला कर लिया हो। फ्रांसीसी कवि चार्ल्स पियरे बौडलेयर ने सुझाव दिया था कि 'मानवाधिकार सम्बन्धी घोषणा-पत्र' में दो अधिकार और भी जोड़ दिये जाने चाहिएं: स्वयं अपने विचारों का खण्डन करने का अधिकार, और उल्लंघन करने का अधिकार। हिप्पी लोग इन दोनों अधिकारों का उपयोग करते हैं। यह उपयोग जब इतना व्यापक बन जाता है कि प्रान्तवर्ती या क्षेत्रीय नहीं रह जाता, तब वह उस व्यक्ति के अनुमान की अपेक्षा, जो हर बात को कट्टरपंथी की दृष्टि से, अथवा पुरानी राजनीतिक क्रियाशीलता के रूप में, देखने का दुराग्रह करता हो, कहीं अधिक क्रान्तिकारी बन जाता है। जब किसी समाज का पतन गम्भीर रूप में होने लगता है, तो उसका कारण, वस्तुतः, यह आन्तरिक अनुपस्थिति ही होती है, क्योंकि उसके लोग प्रतिबद्धता के दूसरे रूपों की तलाश कर चुके होते हैं।

निश्चय ही, हिप्पियों की राजनीतिक अन्य-मनस्कता और उनकी इस निश्छलता के विरुद्ध, जो वे हर प्रकार की हिंसा को अस्वीकार करने में प्रदर्शित करते हैं, बहुत-कुछ कहा जा सकता है—क्योंकि ये मनोवृत्तियां ही हिप्पियों की प्रमुख विशेषताएं हैं और उन्हें दूसरे लोगों से भिन्न प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं। उनके दृष्टिकोण के बारे में इसलिए भी मीन-मेष निकाला जा सकता है कि वे यह भूल जाते हैं कि हिप्पियों की तरह का जीवन बिताना केवल एक सम्पन्न समाज में, और उत्पादन में आधिक्य के कारण, ही सम्भव है। (यह बात और है कि हिप्पी लोग निजी रूप से अपेक्षाकृत गरीबी का जीवन व्यतीत करने के इच्छुक हों।) कोई चाहे तो उनके इस निरीह, भोले, विश्वास की भी खिल्ली उड़ा सकता है कि सार्वभौम प्रेम सारी समस्याओं की कुंजी है। उनके इस विश्वास पर भी आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता कि दूसरों के अधिकारों को व्याघात पहुंचाये बिना ही, व्यक्ति पूर्ण और निरपेक्ष स्वाधीनता का उपभोग कर सकता है। निस्सन्देह, इन सारी चीजों की कई दृष्टिकोणों से आलोचना की जा सकती है; और ये सभी, निश्चित रूप से, बहुत सीमित धारणाएं हैं। फिर भी, वास्तविकता यही है कि किसी भी प्रकार के 'रेजिमेन्टेशन',

त्येक क्रान्तिकारी आदर्श के मूल में हम यह दृढ़ विश्वास निहित पाते हैं कि मनुष्य अपने ही औज़ारों का खिलौना बन गया है और उसे एक बार फिर अपने-आप में एक लक्ष्य और एक मूल्य बन जाना चाहिए।"

अर्थात् आरोपित विधि-नियमों के अनुसार, बंधे-कसे ढंग पर जीवन-यापन की व्यवस्था, को स्वीकार करने से इन्कार कर देने के कारण हिप्पियों को एक रहस्यपूर्ण शक्ति और दवाव डालने का एक साधन मिल जाता है—उसी प्रकार की शक्ति और दवाव, जो, उदाहरण के लिए, भूख-हड़ताल से प्राप्त होता है। जो लोग हिप्पियों से यह आग्रह करने का प्रयत्न करते हैं कि वे अपने विद्रोह को एक राजनीतिक या धार्मिक ढांचा प्रदान करें, उनकी बातों का वे धैर्यपूर्वक, किन्तु पूरी दृढ़ता से, प्रतिरोध करते हैं।

अत्यधिक तात्कालिक तथा अत्यधिक ठोस समाधानों को अस्वीकार करने की यह बात इस आधारभूत सहज-बोध अथवा अन्तःप्रेरणा से उत्पन्न होती है कि क्रान्ति की एक बुनियाद, जिसकी आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है, व्याधिकीय आक्रमण का उन्मूलन है। जब तक यह उन्मूलन सम्भव नहीं हो जाता, तब तक कोई भी क्रान्ति एक नये प्रकार के उत्पीड़न को जन्म देने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। हमें राजनीतिक क्रान्ति की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी प्रति-राजनीतिक क्रान्ति की; अन्यथा परिणाम केवल यह होगा कि नये-नये पुलिस राज्य उत्पन्न हो जायेंगे। मानवीय आक्रमण मानवीय आचार-व्यवहार का एक निर्णायक तत्व है; यह उन सभी पवित्र उद्देश्यों की अपेक्षा भी, जिनके द्वारा यह अपना औचित्य सिद्ध करता है और जिन्हें यह अपना आधार वनाता है, कहीं अधिक अकारण रूप से स्वीकृत होता है और कहीं अधिक घातक होता है। हिप्पियों का विश्वास है कि जब तक इस मूल दोष को नहीं मिटाया जाता, तब तक कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती; यही नहीं, जो कुछ रहा-सहा है, वह भी भ्रष्ट हो जाएगा। उस विश्वास को अपनी प्रवृत्तियों और व्यवहारों में प्रतिबिम्बित करके, हिप्पी लोग कम-से-कम एक उपयोगी कार्य तो करते ही हैं; वे हमें निरन्तर स्मरण कराते रहते हैं कि क्रान्ति केवल सत्ता के हस्तान्तरण का ही नहीं, अपितु उन लक्ष्यों में परिवर्तन का भी नाम है, जिनके लिए सत्ता का प्रयोग किया जाता है; यह तो, वस्तुतः, नये सिरे से उन वस्तुओं के चयन की प्रतीक है, जो प्रेम, घृणा तथा आदर की पात्र हो सकती हैं।

रूसो के युग की भांति ही, आज भी, प्रकृति के सौन्दर्य और लाभों को सुरक्षित रखने का संघर्ष यह प्रकट करता है कि हमारे लिए मनुष्य की, या स्वयं अपनी, सदाशयता में अपना विश्वास जमाना आवश्यक है, और साथ ही, यह भी आवश्यक है कि हम उस सदाशयता को अपने प्रति प्रमाणित करें। यह हमें किसी अकेली संस्कृति के बजाय, कई संस्कृतियों की ओर उन्मुख होने को विवश करता है। इस कारण, पर्यावरण सम्बन्धी अभियान को केवल नोंक-झोंक या मुख्य युद्ध से पलायन मान बैठना एक असंगत बात है। पर्यावरण-अभियान क्रान्तिकारी पहेली का ही एक अंश है; और यह चित्र को पूरा करने के लिए एक आवश्यक तत्व है। उदाहरण के लिए, यह हमें विशाल औद्योगिक साम्राज्यों की सर्वशक्तिमत्ता को चुनौती देने के लिए आवश्यक संवेगात्मक शक्ति प्रदान करता है; और इस तरह की शक्ति किसी राजनीतिक कार्यक्रम के द्वारा, चाहे वह कितना ही स्पष्ट क्यों न हो, उत्पन्न नहीं हो सकती। कोई सप्ताह ऐसा नहीं गुजरता, जब हम यह न सुनते हों कि १९७५ तक आन्तरिक दहनशील इंजिनों के उपयोग पर पाबन्दी लगाने के लिए कानून बनने वाला है, या न्यूयार्क राज्य अथवा दूसरे राज्यों द्वारा ऐसी कानूनी कार्यवाही की जाने वाली है, जिसके द्वारा विमान-परिवहन कम्पनियों को इस बात के लिए मजबूर किया जा सकेगा कि वे जेट विमानों से निकलने वाले धुएं को छान कर शुद्ध करें।

इन उपायों के तत्काल प्रभावोत्पादक होने के सम्बन्ध में हमें किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए, क्योंकि ऐसा लगता है कि समस्या जितनी ही अधिक संगीन होगी, उतना ही कम धन राष्ट्र इसके समाधान पर व्यय कर सकेगा। वास्तव में, वातावरण की रक्षा सम्बन्धी समस्याएं इतनी जटिल हैं कि उनके समाधानों की कल्पना कर पाना अत्यन्त कठिन है। कुछ विशेषज्ञ तो इस मर्ज को लाइलाज ही समझते हैं। जो हो, किसी भी अन्य देश की अपेक्षा अमेरिका में इस खतरे की चेतावनी अधिक तत्परता, उत्साह और जोर-शोर से दी जा चुकी है। स्पष्टतः, इसने दो रूप ले लिये हैं: एक है वैज्ञानिक और तकनीकी शोध का, तथा दूसरा है एक सामूहिक संवेग का, जो अमेरिका में जितना उग्र और व्यापक है, उतना संसार के किसी अन्य देश में नहीं है। 'धरा-दिवस' ('अर्थ-डे') अमेरिका में एक विशाल सर्वेश्वरवादी समारोह के रूप में मनाया गया था। कुछ लोग कहते हैं कि ऐसा इसलिए है कि "प्रदूषण की समस्या किसी अन्य देश की अपेक्षा अमेरिका में अधिक गम्भीर रूप धारण कर चुकी है।" यूरोपवासियों का हमेशा से यह विश्वास रहा है कि अमेरिका में प्रकृति का तो कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया है। वे इस समूचे देश को एक विशाल शिकागो जैसा समझते हैं। वे भूल जाते हैं कि यद्यपि अमेरिका की आबादी और यूरोपीय 'साझा बाजार' के देशों की आबादी लगभग समान है, किन्तु 'साझा बाजार' के देशों का कुल क्षेत्रफल अमेरिका के क्षेत्रफल के केवल आठवें भाग के ही बराबर है। जब कोई यूरोपवासी अमेरिका के ऊपर से विमानयात्रा करता है, तब उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि इस देश में नगरों की अपेक्षा खुली जगह अधिक है। कई अमेरिकी नगरों के आसपास काफी खुला देहाती इलाका है और नगर भी प्रायः हरियाली में छिपे हुए हैं, क्योंकि यहां (दस लाख आबादी वाले नगरों तक में) वृक्षादि से घिरे, हरे-भरे, स्थानों पर ही मकान बनाने का रिवाज है।

जिस तरह यूरोपवासी अब भी यह विश्वास करते हैं कि अमेरिकी लोग विशुद्धाचारवादी हैं, उसी तरह वे अमेरिकियों को अब भी युक्तियों, 'कल-पुर्जों' और वातावरण दूषित करने वाली मशीनों का गुलाम समझते हैं। किन्तु, सच्चाई यह है कि दुनिया में अमेरिका को छोड़ कर कोई दूसरा ऐसा देश नहीं है, जहां, मिसाल के तौर पर, मोटरगाड़ियों को प्रायः मामूली औजारों जैसा ही माना जाता है—या जहां मोटरगाड़ियां चलाते समय लोग विक्षिप्तों जैसा व्यवहार करते कम जान पड़ते हैं। इसके अलावा, अमेरिका में ही यह सम्भव हो पाया है कि नैतिक क्रान्ति और पर्यावरण सम्बन्धी क्रान्ति ने, जो नैतिक क्रान्ति का ही एक अंश है, मशीनों और 'प्रौद्योग-विद्युदणु प्रधान समाज' के बारे में, अगर सर्वथा अविश्वास का नहीं, तो कम-से-कम सतर्कता के युग का तो अवश्य ही, सूत्रपात कर दिया है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अमेरिका में एक प्रति-संस्कृति, एक प्रति-समाज, का प्रादुर्भाव पहले से ही हो चुका है। और, जैसा कि अनिवार्य रूप से होना ही चाहिए, यह एक ऐसा प्रति-समाज है, जिसका सब कुछ खुला-खुला, सीमान्तहीन, है। यह एक क्रान्तिकारी विश्व है, जिसकी विशेषताएं हैं: स्त्री-पुरुषों, विविध जातियों और विभिन्न आयु-वर्गों के बीच समानता की मांग; प्रभुता पर आधारित सम्बन्ध—जिस पर ही वे सभी समाज, जो बल-प्रयोग और निरंकुशता द्वारा विभिन्न

स्तरों में विभाजित हैं, निर्भर करते हैं—की अवमानना; निर्देशित संस्कृति का उत्पादनशील संस्कृति में रूपान्तरण; परराष्ट्र नीति में राष्ट्र-वाद के पुट का बहिष्कार; 'राज्य की प्रभुता' के उस स्वरूप को, जिसके संगठन में जनता ने समुचित रूप में भाग न लिया हो और जिसका प्रयोग इस ढंग से किया जाता हो कि सत्ता का अत्यधिक दुरुपयोग जनता के लिए असह्य हो उठा हो, रूढ़िग्रस्त और जरा-जर्जरित मानना; आर्थिक और शैक्षणिक समानता पर जोर; प्रौद्योगिकी के लक्ष्यों और उसके परिणामों का आमूल एवं तात्विक पुनर्मूल्यांकन; पूर्ण व्यक्तिगत और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता की, जिस पर कोई नैतिक रोकटोक न हो—जो प्रभुता पर आधारित सम्बन्ध की अवमानना का ही एक परिवर्तित रूप है—मांग। जब ये सारी मांगें पूरी हो जायेंगी, तब इस बात की पूरी सम्भावना है कि हमें एक 'नया मानव', जो दूसरे मनुष्यों से बहुत भिन्न होगा, उपलब्ध हो जायेगा।

इस अमेरिकी 'आन्दोलन' की तुलना पुरातन ईसाइयत से की गयी है—यह तुलना कभी तो एक नवीन युग के प्रभात का स्वागत करने के लिए अनुकूल ढंग पर हुई है, और कभी असहमति के आत्ममोह विषयक तत्वों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिकूल ढंग पर। अमेरिकी आन्दोलन में धार्मिक तत्व के अस्तित्व से इंकार नहीं किया जा सकता। **पवित्रता की आवश्यकता** की तुष्टि प्राच्य धर्मों को अव्यवस्थित ढंग से अपनाकर और मनमाने तौर पर, यदा-कदा, व्यवहार में लाकर; तथा प्राकृतिक एवं सात्विक भोजन सम्बन्धी भारतीय सिद्धान्त अंगीकार करके, ज्योतिष में श्रद्धा उत्पन्न करके (ज्योतिष के अनुसार, हम लोग अब कुम्भराशि के युग में आ गये हैं। इसके नक्षत्रीय परिणाम क्या होंगे, इसका पूरे मनोयोग से, परिश्रमपूर्वक, अध्ययन किया जा रहा है) और ईसाइयत को नये सिरे से समझने की कोशिश करके की जा रही है। किन्तु, सबसे बढ़ कर, इस आवश्यकता की संतुष्टि एक परम्परागत सिद्धान्त को, जो अमेरिका में हमेशा सफल रहा है, प्रयोग में लाकर की जा रही है। वह सिद्धान्त है: "वे ही धर्म सर्वोत्तम हैं, जिन्हें आप अपने लिए अनुकूल पाते हों।"

अमेरिका का कभी कोई राजकीय धर्म नहीं रहा—न तो अधिकृत रूप से, न ही अन्य प्रकार से। यूरोप के कुछ विदग्ध लोग अमेरिका की देशज धार्मिकता का, जिसका उदाहरण होटलों के कमरों में बाइबिल की प्रति की उपस्थिति और मुद्रा पर अंकित इस लेख में, कि "परमात्मा में हमारी आस्था है," मिलता है, मजाक उड़ाया करते हैं। अच्छा हो, यदि ये यूरोपीय विदग्ध जन इस अत्यन्त महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तथ्य के परिणामों पर कुछ गहन चिन्तन-मनन करें: कोई भी धर्म-संस्था इस विशाल देश के नैतिक, बौद्धिक, कलात्मक, या राजनीतिक जीवन पर, कानूनन या व्यवहारतः, कभी हावी नहीं हो पायी है।

क्रान्ति की परिभाषा इस प्रकार की गयी है: "यह असहमति के प्रदर्शन का एक ऐसा आन्दोलन है, जो सत्ता हथियाने में सफल हो जाता है।" यह परिभाषा काफी सही है। इसी संदर्भ में, हम चाहें तो इतना और कह सकते हैं कि हमारे युग का महत्वपूर्ण एवं निर्णायक प्रश्न यह है: कोई असहमति से क्रान्ति तक कैसे पहुंचता है? मेरे विचार में, इसका उत्तर इस बात पर निर्भर करेगा कि हम उपर्युक्त परिभाषा में 'सत्ता हथियाने' शब्द का क्या अर्थ निकालते हैं। ऐसे समाजों में, जहां सरकार का रूप अविकसित और केन्द्रीभूत होता है, सत्ता हथियाने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल और त्वरित होती है। लेकिन, अमेरिका जैसे एक जटिल देश में, अगर कोई आदमी उसके संसद-भवन, कैपिटोल, पर आक्रमण करने में सफल हो जाय, तो भी सत्ता उसके हाथ में नहीं आ सकती। यही कारण है कि शहरी छापामार लड़ाई, जिसके बारे में हम इतना-कुछ सुनते रहते हैं, वास्तव में, कोई क्रान्ति की लड़ाई नहीं है, और न ही वह असहमति से क्रान्ति की ओर संक्रमण की सूचक है। वह तो, वस्तुतः, केवल सशस्त्र असहमति का एक रूप है। वह संघर्ष को प्रचण्ड करना मात्र है, किसी नये रूप को अपनाना नहीं। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में, जिन अराजकतावादियों ने पेरिस के काफी हाउसों में बम फेंक कर ग्राहकों की हत्या करनी शुरू की थी, वे लड़ाकू असहमत लोग तो थे, किन्तु क्रान्तिकारी कदापि नहीं थे। सत्ता हथियाने की सम्भावना उनके मामले में शून्य थी। क्रान्ति की एक अपरिहार्य शर्त यह है कि सत्ता एक हाथ से दूसरे हाथ में अवश्य जानी चाहिए। कभी-कभी क्रान्तिकारी प्रक्रिया के बावजूद, सत्ता-परिवर्तन में समय लग जाता है। तात्पर्य यह है कि सत्ता का हस्तान्तरण ऐसे साधनों द्वारा होता है, जो राजनीति के सामान्य नियमों से परे होते हैं और उनका उल्लंघन करते हैं। किन्तु ये साधन किसी समाज की संरचना के प्रसंग में उचित, और अन्तर्ग्रस्त शक्तियों के अनुपात में, होने चाहिएं।

जहां तक अमेरिका का सम्बन्ध है, कोई शायद ही इस भ्रम में रहना चाहेगा कि वहां वास्तव में कोई 'मौन बहुसंख्यक' मौजूद है। साथ ही, वह इस भुलावे में भी नहीं रह सकता कि वहां गृहयुद्ध ही कार्यवाही का एकमात्र सम्भव विकल्प शेष रह गया है। किसी भी विद्रोह के पूर्णतः सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि सेना और पुलिस विद्रोहियों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिला कर खड़ी हो जाय। लेकिन, यह बात एक ऐसे देश में मुश्किल से ही हो सकती है, जहां संवैधानिक असहमति की धारणा इतनी गहराई से बद्धमूल है। वहां गृहयुद्ध एक ही स्थिति में हो सकता है। वह स्थिति यह है कि या तो कोई जबर्दस्त सैनिक पराजय हो जाय और उसके साथ-साथ देश में भौतिक साधनों का नितान्त अभाव हो उठे, जैसा कि रूस में १९७१ में हुआ था, या कोई राष्ट्रीय मुक्तियुद्ध छिड़ जाय, जैसा कि चीन में हुआ था। अमेरिका के सम्बन्ध में, ये दोनों ही परिकल्पनाएं अत्यन्त अवास्तविक हैं। इसके अलावा, यह बात भी है कि गृहयुद्ध कुछ समाजशास्त्रीय परिस्थितियों की उपज होता है, और ऐसी परिस्थितियां अमेरिका में अनुपस्थित हैं। अमेरिका में वर्गयुद्ध 'वर्ग के विरुद्ध वर्ग' की लड़ाई नहीं है।

जब अमेरिका में निर्धनता के विषय में माइकेल हैरिंगटन की पुस्तक, **'दि अदर अमेरिका'**, मार्च, १९६२ में प्रकाशित हुई, तब कई आशावादी अर्थशास्त्रियों को इस रहस्योद्घाटन से बड़ा धक्का लगा कि इतनी प्रचुरता और सम्पन्नता के होते हुए भी, अमेरिका में निर्धनता का अस्तित्व है। उन दिनों, चार व्यक्तियों के एक शहरी परिवार के लिए प्रतिवर्ष ३,००० डालर की न्यूनतम आय आवश्यक मानी जाती थी; इस स्तर से कम आय निर्धनता की द्योतक थी। १९६८ में यह न्यूनतम आय बढ़ कर ३,५५३ डालर हो गयी। १९७० के अन्त तक, यह ३,७०० डालर तक पहुंच गयी। इससे कम आय होने पर, चार सदस्यों के एक परिवार को अतिरिक्त आय के रूप में सार्वजनिक सहायता मिलनी आवश्यक हो जाती है। १९६८ में, अमेरिका में औसत वार्षिक आय—प्रति परिवार नहीं, बल्कि प्रति व्यक्ति—३,४१२ डालर थी। यह आय पुर्तगाल में ४१२ डालर; स्पेन में

म यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अमेरिका में एक प्रति-संस्कृति, एक प्रति-समाज, का प्रादुर्भाव पहले ही हो चुका है। और, ...यह एक ऐसा प्रति-समाज है, जिसका सब कुछ खुला-खुला, सीमान्तहीन, है।"

७१६ डालर; इटली में १,३०० डालर; फ्रांस में १,४३६ डालर; और पश्चिमी जर्मनी में १,७५३ डालर थी।

इन परिस्थितियों में, निर्धनता से (जो आय के बजाय, अन्य वस्तुओं, जैसे आवास और शैक्षणिक सुविधा, के रूप में परिभाषित होती है) अमेरिका की कुल जनसंख्या के छठें से लेकर पांचवें अंश तक लोग प्रभावित हैं। इस प्रतिशत के कारण ही माइकेल हैरिंगटन ने 'इतिहास के प्रथम निर्धन अल्पसंख्यक' मुहावरे का उल्लेख किया था। किन्तु, 'निर्धन अल्पसंख्यक' से उनका आशय यह नहीं था कि निर्धनों की संख्या थोड़ी थी, बल्कि यह था कि कुछ धनी परिवारों और बहुसंख्यक निर्धन परिवारों के रूप में समाज के वर्गीकरण की जो सामान्य परम्परा चली आ रही थी, उसका क्रम, अब पहली बार, उलट गया था। राजनीतिक दृष्टि से देखा जाय, तो इस तथ्य के कारण अपनी कार्यविधियों में संशोधन करना आवश्यक हो जाता है। अब हम यह कहने की स्थिति में नहीं रहे कि प्रपीड़ित लोगों के पक्ष में कम-से-कम एक बात तो है कि वे बहुसंख्यक हैं, और यह कि दमनकारी व्यवस्था जैसे ही निर्बल पड़ेगी, ये बहुसंख्यक उठ खड़े होंगे और सरकार का सारा ढांचा चरमरा कर ध्वस्त हो जायेगा।

१९७० की जनगणना के अनुसार, अमेरिका की कुल जनसंख्या लगभग २० करोड़ ५० लाख है; उसमें से लगभग २ करोड़ ५० लाख व्यक्ति 'निर्धन' हैं। इस श्रेणी में नीग्रो लोगों की लगभग २९ प्रतिशत आबादी और श्वेत लोगों की लगभग ८ प्रतिशत आबादी आ जाती है; अर्थात् कोई ८० लाख नीग्रो और करीब १ करोड़ ६० लाख श्वेत लोग 'निर्धन' कहे जा सकते हैं। शेष 'निर्धन' लोगों में, कुछ तो प्वेर्टोरिको के निवासी हैं, और कुछ मैक्सिकी-अमेरिकी लोग हैं। स्पष्ट है कि अमेरिकी निर्धन न तो कुल जनसंख्या की तुलना में अपने आकार के कारण, और न ही अपनी संरचना के आधार पर, सही अर्थ में, कोई 'सामाजिक वर्ग' बन पाते हैं, क्योंकि जातीय अल्पसंख्यकों की समस्या और निर्धनता की समस्या, दोनों आपस में समानुरूप नहीं हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका के अश्वेत परिवारों में से एक-तिहाई की आय ८,००० डालर वार्षिक से अधिक ही है।

१९६० की जनगणना के उपरान्त, निर्धनता के विरुद्ध अभियान, अश्वेत लोगों की दशा और जातीय भेदभाव के उन्मूलन की दिशा में जो प्रगति हुई है, उसे पर्याप्त तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु नकारा भी नहीं जा सकता। यह प्रगति प्रति-समाज के उग्र विद्रोह, और लोकतान्त्रिक सहभागिता द्वारा प्रस्तुत अवसरों तथा अमेरिकी राजनीतिक ढांचे द्वारा प्रस्तुत साधनों के उपयोग, के सूक्ष्म मिश्रण के कारण ही सम्भव हो पायी है। इसका एक दृष्टान्त कैलिफोर्निया के अंगूर बागानों के मजदूरों की हड़ताल है—यह हड़ताल पांच साल तक चली और जुलाई १९७० में मजदूरों की विजय के साथ इसकी समाप्ति हुई। अंगूर के बागान-मालिकों से जो-जो रियायतें मांगी गयी थीं, उनको उन्होंने स्वीकार कर लिया। हड़ताल शुरू हो जाने पर, चिकैनो लोगों (जिनमें से बहुत से अमेरिकी नागरिक नहीं हैं) के नेता सीजर चावेज ने अंगूरों के बहिष्कार का आन्दोलन छेड़ दिया, जो बड़े-बड़े शहरों में, और खास तौर से विश्वविद्यालयों में, बहुत सफल रहा। अंगूर-उत्पादकों ने भी प्रत्याक्रमण किया; उन्होंने 'पेन्टागन' (अमेरिकी सैन्य विभाग) के अधिकारियों को प्रभावित किया और उनको इसके लिए तैयार कर लिया कि जितना अंगूर बिना बिके रह जाय, उसे सेना के लिए खरीद लिया जाय। इस पर चावेज ने उच्चतम न्यायालय में इस मामले की अपील की; उसने आरोप लगाया कि अंगूर-उत्पादकों और सेना के बीच जो व्यवस्था हुई है, उससे न्यास-विरोधी कानूनों का उल्लंघन होता है। न्यायालय ने निर्णय उसके पक्ष में दिया। समाचारपत्रों, रेडियो और टेलिविजन जैसे सार्वजनिक संचार-साधनों ने भी इस मामले के पक्ष में सारे देश में जनमत जागृत कर दिया। अपनी हत्या के कुछ ही पूर्व, राबर्ट कैनेडी ने चावेज के पक्ष का समर्थन करते हुए, मैक्सिकी और अमेरिकी लोगों के एक विशाल जुलूस में भाग लिया था। इतने पर भी, हड़ताल आगे दो साल, २५ जुलाई, १९७० तक, और चलती रही। अन्ततः, अंगूर-उत्पादकों ने चावेज को टेलिफोन पर सूचित किया कि उत्पादकगण उसकी वार्ता-समिति के साथ बातचीत करने को तैयार हैं और उसकी मांगे मानने के लिए प्रस्तुत हैं।

अंगूर के बागानों में काम करने वाले मजदूरों की हड़ताल में उन सभी विशेषताओं की झलक मिलती है, जो किसी संघर्ष-स्थिति में निहित होती हैं। इसमें एक जातीय और सांस्कृतिक अल्पसंख्यक वर्ग भाग ले रहा था, और अमेरिका में जातीय अल्पसंख्यक लोग क्रान्ति की आग को भड़काने वालों की भूमिका निभाते हैं। (उदाहरण के लिए, प्रदर्शन, धरना, आदि के समय काले लोगों के साथ-साथ काम करने के फलस्वरूप ही कई श्वेत लोगों का राजनीतिक विवेक जागृत हो पाया है।) अंगूरों के बहिष्कार का आन्दोलन इसलिए सफल हो गया कि उसे नगरों के उदार श्वेतों—जिनमें शीर्षस्थ थे राबर्ट कैनेडी—और प्रगतिशील छात्रों का समर्थन प्राप्त था। यह समर्थन इस बात का सूचक था कि सुविधाप्राप्त वर्गों और कुलीन शासकों के बीच भी आपसी फूट है। कानून ने भी एक निर्णायक क्षण में, उच्चतम न्यायालय के फैसले के रूप में, हस्तक्षेप किया और चावेज के पक्ष का समर्थन किया। श्रमिक संघ की भीतरी एकता के कारण हड़ताल पांच वर्षों तक चलती रह सकी और मजदूर डटे रह सके। सूचना-स्वातन्त्र्य का ही यह परिणाम था कि वे जनता के सामने अपना मामला अंगूर-उत्पादकों के समान ही रख पाये थे।

यदि न्यायाधिकरण और न्यायाधीश बहुत अधिक पूर्वाग्रहयुक्त होते या कानून के आधार पर अपना निर्णय देने में दब्बूपन दिखाते, जैसा कि कुछ दूसरे देशों में होता है, तो इस विशेष मामले में जो कार्यविधि अपनायी गयी, वह सर्वथा भिन्न होती। साथ ही, अमूर्त्त रूप में 'औपचारिक' लोकतन्त्र पर भरोसा करना भी हास्यास्पद रहता। हर मामले में, केवल एक चीज विचारणीय है। वह है सामाजिक संघर्षों, और नागरिकों तथा प्रशासकों के बीच होने वाले संघर्षों, में कानूनी प्रणाली के क्रियाशील होने का स्तर। इस स्तर को (जो कुछ देशों में तो बिल्कुल है ही नहीं, कुछ में औसत दर्जे का है और अन्य कुछ देशों में अपेक्षाकृत ऊंचे स्तर का है) किसी विशेष परिस्थिति में उत्पन्न सम्भावनाओं की जांच-परख करने में निर्णायक तत्व सिद्ध होना चाहिए।

अमेरिका के नागरिक संघर्ष चाहे जितने उग्र एवं हिंसक क्यों न हों (ऐसे संघर्ष या तो विश्वविद्यालयों के प्रांगण में दिखायी देते हैं, या अल्पसंख्यक जातियों के आन्दोलनों में), किन्तु यह तथ्य है कि अमेरिकी राजनीतिक पद्धति के अन्तर्गत, जो वैज्ञानिक साधन उपलब्ध हैं, उनके साथ हिंसा का गठबंधन हो जाने से सर्वोत्तम परिणाम निकलते हैं। यह बात खास तौर से सही है, क्योंकि देश का संघीय ढांचा और इसकी नगरपालिकाओं की स्वायत्तता व्यक्ति को कई स्तरों पर कार्यवाही करने की

मेरिकी असहमति परिवर्तन के एक बड़े खतरे को टालने में समर्थ हुई है। वह खतरा है: परिवर्तन के लागू होने से पहले ही परिवर्तन की वस्तु को विनष्ट कर देना।"

छूट, और अपनी शिकायतें दूर कराने के लिए कई तरीके अपनाने का मौका, देते हैं। ऐसी परिस्थितियों में, हम शायद ही इस भ्रम में रहें कि अमेरिका में क्रान्ति का एकमात्र सम्भव रूप सशस्त्र विद्रोह रह गया है; या कि 'व्यवस्था' से बिल्कुल नाता तोड़ लेना जरूरी है और उससे बातचीत के द्वारा मामला सुलझाने की कोई आशा नहीं है; और, जैसा कि हैप्सबर्ग्स या रूसी ज़ारों जैसे निरंकुश राजाओं के साम्राज्यों के विरुद्ध १९वीं सदी में लिखे गये एक आलेख में कहा गया है, आदमी को या तो 'जीतना या मरना' ही चाहिए।

वस्तुतः, अमेरिकी मार्क्सवाद-लेनिनवाद और माओवाद विश्लेषण की एक भूल के आधार पर आगे बढ़ते हैं, क्योंकि श्वेत श्रमिक वर्ग, कुल मिलाकर, रूढ़िपंथी और अनुदार है; क्योंकि व्यवसायी जगत सुधार का पक्षपाती है; क्योंकि संघीय सरकार गत बीस वर्षों से अश्वेत लोगों के पक्ष में और स्थानीय जातिवाद के विरुद्ध व्यवहार करती आ रही है; और क्योंकि १९६९ और १९७० में सेनेट ने (रिपब्लिकन सदस्यों का प्रबल समर्थन पाकर) राष्ट्रपति निक्सन द्वारा उच्चतम न्यायालय के लिए मनोनीत दो न्यायाधीशों की नियुक्ति की पुष्टि करने से इंकार करके 'ह्वाइट हाउस' की बड़ी किरकिरी कर दी थी। ये दोनों न्यायाधीश दक्षिणवासी थे; इनमें से एक ने कई वर्ष पहले रंगभेद के पक्ष में भाषण किया था। विरोधाभास तो यह है कि अमेरिका आज संसार में सबसे कम जातिवादी देशों में से है। वर्षों से अश्वेत अल्पसंख्यक बड़ी संख्या में श्वेत जनता के साथ-साथ रहते आये हैं। जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष, इसका मूलोच्छेदन, इसके लक्षणों का विश्लेषण, दूसरों में इसके पाये जाने पर उसके निराकरण की चिन्ता, परन्तु खुद अपने इसी भावना से पराभूत होना—ये सारी चीजें एक वास्तविकता हैं, जिसके बीच अमेरिका आज जी रहा है।

कोलम्बिया विश्वविद्यालय के एक समाज-शास्त्री, अमिताई एत्जिओनी, १९६९ की गर्मियों में एक अध्ययन के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि यह कहना कि अमेरिका दक्षिण-पंथ की ओर जा रहा है, एक तथ्य को गम्भीर रूप से अतिरंजित करना है। प्रो० एत्जिओनी के कथनानुसार, "क्रियात्मक रूप से यह देश ६५ प्रतिशत उदार है और २१ प्रतिशत प्रतिक्रियावादी।" ('उदार' से तात्पर्य है: सामाजिक प्रगति के मामलों में सरकारी हस्तक्षेप के अनुकूल।) यह विभाजन ठीक है और इसकी पुष्टि इस तथ्य से हो जाती है कि कानून और व्यवस्था की इतनी चर्चा होने के बावजूद, पिछले कुछ वर्षों में उदार कानून बनाने की बड़ी-बड़ी परियोजनाएं या तो सफलता से पूर्ण हुई हैं, या वैसी होने की प्रक्रिया में हैं, जैसे: अश्वेत लोगों को मताधिकार देने के सम्बन्ध में १९६४ का नागरिक अधिकार अधिनियम; स्कूलों में अश्वेत और श्वेत छात्रों में भेदभाव न बरतने के सम्बन्ध में कानून; स्त्रियों को पुरुषों के समान मताधिकार देने के सम्बन्ध में पारित संशोधन विधेयक (१९७०); मतदाता की न्यूनतम आयु-सीमा घटाकर अठारह वर्ष करने का कानून; विवाह-विच्छेद, गर्भपात, अश्लील सामग्री और इसी तरह की दूसरी चीजों के बारे में उदार कानून। कई बड़े नगरों, जैसे वाशिंगटन, क्लीवलैण्ड और नेवार्क, के मेयर अश्वेत ही हैं।

निस्सन्देह, यह नहीं कहा जा सकता कि किसी देश में निरंकुश सत्तावाद की प्रवृत्ति कब पनप उठेगी। इसकी सम्भावना किसी भी देश में कभी भी हो सकती है। परन्तु हम कह सकते हैं कि पिछले दशाब्द में, अमेरिका में, ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता, जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि वहां निरंकुश सत्तावाद की ओर झुकाव बढ़ा है, हालांकि अशान्ति, दंगों, जीवन-पद्धति तथा जीवन के सिद्धान्तों में बड़े-बड़े परिवर्तनों और सभी तरह की मांगों में हठधर्मिता के कारण उन लोगों में भय, विस्मय, भ्रान्त धारणा और क्रोध की वृद्धि हो रही है, जो नवीन अमेरिका के, जिसके निर्माता बनने की उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी, बंदी बनते जा रहे हैं।

किसी भी देश या युग में, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जनमत इतना प्रबुद्ध हो गया हो (ऐसा शायद ही कभी हुआ हो) कि अपनी प्रबल असहमति को उसने इस तीव्रता से व्यक्त किया हो कि परराष्ट्र नीति में सरकार की धांधली निन्दा का पात्र बन गयी हो और उसके कारण देश में एक वास्तविक राजनीतिक समस्या उठ खड़ी हुई हो। २९ मई, १९७० की एक हैरिस जनमत-गणना से पता चलता है कि अमेरिका में ५० प्रतिशत लोग कम्बोडियाई हस्तक्षेप के पक्ष में और ४३ प्रतिशत इसके विपक्ष में थे। नागरिकों (या प्रजाओं) के इतने बड़े प्रतिशत ने क्या कभी किसी ऐसे कृत्य की निन्दा की है, जिसको राष्ट्रभक्ति के नाम पर परम्परागत रूप से वन्द्य और सम्मानप्रद माना जाता रहा हो?

अमेरिकी असहमति परिवर्तन के एक बड़े खतरे को टालने में समर्थ हुई है। वह खतरा है: परिवर्तन के लागू होने से पहले ही परिवर्तन की वस्तु को विनष्ट कर देना। ऐसा होने पर क्रान्ति विकास की गति को कुण्ठित कर देती है और ऐसा करके स्वयं अपना विनाश कर डालती है। इससे (कई नकारात्मक पहलुओं के बावजूद) क्रान्ति के लिए कई आवश्यक शर्तें—जैसे, नैतिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा देना; विकल्पों में संशोधन करना; और सामान्यतः सांस्कृतिक मानदण्डों की आलोचना करना—पूरी हो जाती हैं। इसके अलावा—और यह बहुत महत्वपूर्ण है—असहमति सम्पूर्ण अमेरिकी परिस्थितियों के संदर्भ में यह सब कुछ कर रही है।

आज अमेरिका में एक नयी क्रान्ति पनप रही है। यह हमारे युग की क्रान्ति है। एकमात्र यही वह क्रान्ति है, जिसमें राष्ट्रवाद की भावना के प्रति तात्विक, नैतिक और व्यावहारिक विरोध का समावेश है। एकमात्र यही वह क्रान्ति है, जो उस विरोध के साथ संस्कृति, आर्थिक और तकनीकी शक्ति और प्राचीनतावादी निषेधों के स्थान पर सबकी स्वतन्त्रता की धारणा को संयुक्त कर देती है। इसलिए, यह आज मानव-जाति की मुक्ति का एकमात्र उपाय इस रूप में प्रस्तुत करती है: तकनीकी सभ्यता को साधन के रूप में स्वीकार करना, न कि साध्य के रूप में; और—चूंकि हमारा उद्धार न तो सभ्यता का विनाश होने से होगा, न उसके यथावत् जारी रहने से, इसलिए—अपने भीतर ऐसी योग्यता उत्पन्न करना, जिससे सभ्यता का विध्वंस किये बिना ही, उसका पुनर्गठन करना सम्भव हो सके। ■■

कार में निश्चिन्तता से बैठकर अमेरिका देखने चलें, तो कठिनाई यह होती है कि सभी प्रकार के मिथक—कपोलकल्पित आख्यान—रास्ता रोकने लगते हैं।

ये मिथक या कपोलकल्पित आख्यान किसी एक जगह, मान लीजिए, वाशिंगटन-न्यूयार्क क्षेत्र में, कुछ समय तक, यही कोई चार-एक साल, बैठे रहने से, और अधिकांश लोगों की तरह **'टाइम'** पत्रिका, **'ईज़ी राइडर'** सरीखी फिल्मों, नार्मन मेलर जैसे लेखकों, **'द न्यूयार्क टाइम्स'**, कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सर्विस के सायंकालीन समाचार, आदि स्रोतों से अपने देश के बारे में जानकारी प्राप्त करने से, उत्पन्न हो जाते हैं।

अमेरिका के बारे में इस तरह जानकारी प्राप्त करने, और फिर, उसके किसी पर्याप्त बड़े भाग का प्रत्यक्ष दर्शन करने के बाद, कोई भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि एक विशेष ढर्रे में बंधा संगठित देश अपने बारे में होने वाले प्रचार की ओर से उदासीन है। उदाहरण के लिए, फिल्मों में पीटर फोंडा के साथ चाहे जैसी भी बीती हो, किन्तु अपेक्षतया लम्बे केश और हिप्पी पोशाक धारण करने वाला कोई युवक आज भी अमेरिका के दक्षिणी प्रदेशों की यात्रा समूचे राजमार्ग पर फब्तियों और धुत्कारों, हू-हू और लू-लू, का शिकार हुए बगैर ही, कर सकता है। इसी प्रकार, चूंकि हर कोई कहता है, इसलिए देहाती इलाकों का वायुमण्डल दूषित होना ही चाहिए; फिर भी, बगैर सचेत प्रयास के इस विश्वास से चिपके रहना सम्भव नहीं। इसका कारण यह है कि नगरों की सीमा पार करते ही, देहाती इलाकों का परिदृश्य, जिसने राष्ट्र के अधिकांश पर्यावरण को अपने अंचल में समेट रखा है, इतना स्निग्ध और तरोताजा दिखलायी देता है कि उसे पी लेने, आत्मसात् कर लेने, का मन हो आता है।

यदि आप **'वाशिंगटन पोस्ट'** के सम्पादकीय लेख साल भर तक बराबर पढ़ते रहें, तो हो सकता है कि आपके हृदय में यह विश्वास जम जाये कि अमेरिका की विदेश नीति का रूप वही है, जिसकी चर्चा प्रायः हर कोई करता रहता है। किन्तु, वास्तविकता यह है कि यदि आप किसी से स्वयं न पूछें, तो उसके विषय में शायद ही कोई आप से बात करेगा।

आवर्न, केण्टकी, में ६,४६० किलोमीटर लम्बे-चौड़े इलाके का एक किसान पेट्रोल पम्प के सहारे खड़ा अपने-आप ही सुना रहा था कि पिछले वर्ष सुअरों का बाजार इतना तगड़ा रहा कि नारकीय सरकार ने नारकीय युद्ध के लिए नारकीय करों की शक्ल में ३,००० डालर हथिया लिये। इसके बाद, वह अपनी कैडिलक कार में जा बैठा और कंक्रीट की सड़क पर धूल उड़ाता हुआ अपने पीछे यह एहसास छोड़ गया कि उसने अमेरिकी नीति के विषय में अपनी कोई राय प्रकट नहीं की है; उसने तो, वस्तुतः, किसान और सरकार के बीच विद्यमान उस परम्परागत सम्बन्ध का एक उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया है, जो उस समय से चला आ रहा है, जब जार्ज वाशिंगटन ने कुछ फसलों पर कर लगाने की घोषणा की थी और उत्तर में किसानों ने 'पहले हमें पकड़ तो पाओ' की चुनौती देते हुए, पश्चिम का रास्ता पकड़ लिया था।

पथिक यात्रा

लेखक के बारे में : यदि आप जॉन स्टर्न से पूछें कि वह कौन हैं, तो वह आपको बतायेंगे कि वह केण्टकी के एक फार्म पर पले-बढ़े, अमेरिकी नौसेना में रहे, फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में पढ़े, सम्वाददाता बने, 'अज्ञात' उपन्यास लिखते हैं, और देश की लोक-संस्कृति के अध्ययन के लिए हाल में ही अमेरिका के दक्षिणी और मध्य-पश्चिमी प्रदेशों का दौरा किया है, 'क्योंकि देश के विषय में अनजान बने रहने से वह ऐसा ही बन जाता है, या बन रहा है, अथवा हो सकता है कि बन गया हो।'

वेस्टर्न केण्टकी विश्वविद्यालय का प्रांगण, जहां "शान्ति-पट चमका कर रोषपूर्ण प्रदर्शन करने वाले, कालेज के उत्तेजित छात्रों की तस्वीरें टेलिविजन के पर्दे पर थरथराती और बुझती रहती हैं।"

लोग अगर बिना पूछे किसी विषय की चर्चा छेड़ बैठते हैं, तो वह है 'हिप्पी'। ओहायो नदी के दोनों ओर बराबर की चिन्ता थी। हिप्पी क्या है, इसकी व्याख्या कर पाने में कोई भी समर्थ नहीं था। हिप्पी वह नहीं है, जिससे लोग बात कर रहे हैं। वे तमाम लम्बे केशों वाले लड़के-लड़कियां भी हिप्पी नहीं हैं, जो अंगूठा दिखा कर वाहनों पर मुफ्त सवारी करते घूमते हैं। हिप्पी तो, वस्तुतः, कोई कस्बे के बाहर का जीव है; वह है जो मादक द्रव्यों, विद्रोह और अपराधों की दुनिया से सम्बन्धित है; वह है जो मूल्यों के लिए खतरा बन गया है।

दक्षिण के एक छोटे से विश्वविद्यालय के एक अधिकारी ने समझाया कि मध्यवर्ती अमेरिका की जीवन-शैलियां तटवर्ती अमेरिका के नये घटनाक्रमों का अनुसरण कोई १८ महीने बाद कर पाती हैं। हो सकता है कि घटनाक्रम में विलम्ब हो जाता हो, किन्तु उसकी चेतना तो तत्काल ही होती है।

उदाहरण के लिए, रेडियो, टेलिविजन, आदि संचार के साधन हर रोज छः बजे शाम को ही अलाबामा में न्यूयार्क को प्रस्तुत कर देते हैं; और अलाबामा में न्यूयार्क जिस रूप में प्रस्तुत होता है, उसमें वह एक विकट स्थान दीखता है, जहां नशेबाजों की, अपराधों की, भरमार है, जहां बिजली अक्सर जाती रहती है, जहां दुःख और दयनीयता का राज है। वह ऐसा शहर नहीं मालूम होता, जहां के लोग हर रोज सुबह उठते हैं, काम पर जाते हैं, रात को भोजन करते हैं, नाटकघर जाते हैं, अवकाश लेकर सैर करने जाते हैं तथा इस तरह के बाकी सारे काम करते हैं, हालांकि होता यही सब है। लगता है, लोगों में यह डर घर कर गया है कि दूसरी जगह जो कुछ घट रहा है, वह उनके गांव-शहर में भी शीघ्र ही घटने लगेगा। मारिजुआना बरामद होने के आरोप में एक नवयुवक की गिरफ्तारी डेल्फोस, ओहायो, में बहुत बड़ी खबर बन गयी थी और उस कस्बे में सर्वत्र उसी तरह चिन्ता व्याप्त हुई, जैसे जलती रबड़ की दुर्गंध सर्वत्र छा जाती है।

बातें तो लोग दूसरी चीजों के बारे में भी करते हैं, पर उस तरह नहीं, जैसे कि सोचा जाता है कि वे करते हैं। सेण्ट्रल ओहायो के एक वातानुकूलित मदिरालय में, नियोन प्रकाश से दमकते वुलिट्जर ज्यूक बाक्स को स्कूलों में जातीय एकीकरण के बारे में जोशीले, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से विनम्रतापूर्वक, तर्क करने वालों से होड़ बदनी पड़ रही थी। दक्षिणी क्षेत्र से आये कुछ बाहरी व्यक्ति स्थानीय लोगों के सामने अपने वितण्डावाद के बूते साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि उत्तर के मुकाबले दक्षिण में जातीय एकीकरण तेजी से हुआ है, और हमेशा से, और हर प्रकार से, ऐसे ही होता रहा है, आदि।

उत्तर वाले बचाव पक्ष में थे। उन्हें अपनी स्थिति का बचाव करना पड़ रहा था। उनका तर्क था कि हो सकता है कि ऐसा ही हो, लेकिन उत्तर में कम-से-कम ऐसे गवर्नर तो नहीं ही हैं, जो दरवाजे रोक कर खड़े हो जाते हों, अथवा

अमेरिका में अब कैम्परों का प्रयोग बराबर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अवकाश लेकर देशाटन करने वाले अधिकाधिक अमेरिकी परिवार उनका उपयोग कर रहे हैं। "यदि पीढ़ी के अन्तर जैसी कोई चीज सचमुच है, तो भी कम-से-कम इस क्षेत्र में तो उसका अस्तित्व नहीं ही है।"

"···· वे, आम तौर पर, एक साथ दो-दो की टोलियों में सफर करते हैं, और कपोल-कल्पित धारणा के अनुसार, उनके चेहरों पर उन्माद का जो चिन्ह होना चाहिये, वह भी वहां दिखलायी नहीं देता।"

कुल्हाड़ी की बेंट भांजते फिरते हों, आदि। सारा बहस-मुबाहिसा अज्ञानपूर्ण, आक्रामक और, अन्ततः, निरर्थक था। लेकिन, जो लोग इस बहस-मुबाहिसे में हिस्सा ले रहे थे, इस भीड़ में शामिल थे, वे पारस्परिक स्नेह और सद्भावना के सूत्र में आवद्ध थे। वे जातीय विद्वेष या भेदभाव की भावना से किञ्चित्मात्र प्रेरित नहीं थे; उनकी बहस का विषय भी फुटबाल से बहुत दूर का था; और किसी ने वियर की बोतल फेंक कर दूसरे का सिर तोड़ने की कोशिश नहीं की।

राजमार्ग पर चले वर्षों गुज़र जाने के बाद, कार द्वारा भ्रमण के लिए निकलने पर मछली के सुफनों जैसी नाक-नक्शदार, अत्यधिक शक्तिशाली, कारों से अमेरिका के लोगों की जानी-मानी मुहब्बत में निष्ठाहीनता के लक्षणों की प्रतीति और जानकारी तुरन्त होने लगती है। बीच में आने वाली सुन्दरी छैल-छबीली, नाटी और दबंग है; किसी पिकअप ट्रक के पेटे पर सवारी करती है; स्टेशन वैगन द्वारा खींची जा रही है; अथवा खुद अपने बल पर चल रही होती है। और, नाम है इसका 'कैम्पर'।

कैम्पर में, रहने-ठहरने की आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था होती है और होते हैं—पिता, मां, बरतन, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, सड़कों के नक्शे और बच्चों से खचाखच भरी पिछली सीट। अभ्यस्त और अनुभवी कैम्परों की पहचान आसान है, क्योंकि उनके वाहनों के पीछे विभिन्न राज्यों के नामों की चिप्पियां लगी होती हैं, मानो वे पदसूचक तमगे हों। यदि पीढ़ी के अन्तर जैसी कोई चीज सचमुच है, तो कम-से-कम इतना निश्चित है कि वह यहां नहीं है, क्योंकि यदि अमेरिका के अधेड़ आयु के लोगों को मोटर पर अपना सारा सामान लाद कर पर्यटन करने का शौक है, तो अमेरिकी नवयुवक भी उनसे कुछ कम नहीं है। वह भी सड़कों का दीवाना है—वह जीन और हाईकिंग जूते पहनता है, पीठ पर कसा जाने वाला सामान भरा थैला लादे होता है और अंगूठा दिखा कर मुफ्त यात्रा करता है। ये नवयुवक आम तौर पर एक साथ दो-दो की टोलियों में भ्रमण करते हैं, और उनके चेहरों पर कपोलकल्पित धारणा के अनुसार, उन्माद का जो चिन्ह होना चाहिये, वह भी नहीं दिखलायी देता। लगता है कि मां-बाप और युवा पीढ़ी में अगर कोई अन्तर है, तो वह केवल इस दृष्टि से है कि किसी पेड़ के नीचे आराम से रात बिताने के लिए उन्हें कितना-कितना सामान चाहिए।

यदि '**द वाल स्ट्रीट जर्नल**' की ये दैनिक घोषणाएं सही हैं कि अर्थ-व्यवस्था जड़ तक कमजोर हो गई है और लोग अपनी आय और व्यय का तालमेल बिठाने के फेर में घर पर ही पड़े रहने के लिए बाध्य हैं, तो शाम को ५ बजे के बाद मोटलों में एक भी खाली कमरा खोज पाना मुश्किल क्यों होता है? यह तो सचमुच आश्चर्य की ही बात है।

कुछ भी हो, कुछ चीजें आशा के अनुरूप ही रहीं। नार्थ कैरोलाइना में शारलोट है। इसके नाम में ही दक्षिण की अनुभूति का, गरमी और नमी का, नकदी फसलों का और सस्ते स्टोरों का स्पर्श और स्पन्दन है। और, शारलोट निराश भी नहीं करता।

शारलोट ऐसी जगह पर बसा हुआ है, जहां ज्योर्जिया, नार्थ कैरोलाइना और साउथ कैरोलाइना की सीमाएं मिलती हैं। अन्तर्राज्यीय राजपथ, 'इण्टरस्टेट हाइवे-८५', पर मोटर से शारलोट की ओर जाते समय, यदि आप रेडियो खोल दें तो रेडियो-केन्द्र "मूंगफली प्रसारण संजाल" के रूप में अपना परिचय देंगे, और शीघ्र ही, फसल सम्बन्धी लगभग आधी सूचना प्रसारित होते-होते, आप यह समझ जायेंगे कि नार्थ कैरोलाइना में प्रमुख उद्योग मूंगफली का है, हालांकि यह ऐसी बात है, जिसे मूंगफली से बना मक्खन खाने वाले पहले ही से अच्छी तरह जानते हैं। शारलोट एक ऐसी जगह है, जहां उपाहार-गृहों में मौजूद सभी लोग एक-दूसरे से परिचित मालूम होते हैं (ऐसा महसूस होता है, जैसे हम पारिवारिक रात्रिभोज के वातावरण में प्रवेश कर रहे हैं); जहां पेट्रोल-पम्पघरों के मिस्तरी घूमने-फिरते आते हैं और अपने बाल-बच्चों की चर्चा छेड़ बैठते हैं; जहां लोगों को अपने नगर के गिरजाघरों की संख्या पर गर्व है (उनका दावा है कि दुनिया भर में सबसे अधिक—कुल मिला कर १,०००—गिरजाघर उन्हीं के नगर में हैं)। किन्तु इन सभी पूर्वापेक्षित बातों के अस्तित्व के बीच एक अपवाद, कपोलकल्पित धारणाओं या मिथकों का एक भंजक, भी है। वह है एक ६९-वर्षीय यहूदी, जिसका नाम हैरी गोल्डेन है। हैरी गोल्डेन १९४१ में न्यूयार्क से शारलोट आया था और यहां उसने 'कैरोलाइना इस्रायलाइट' नामक मासिक पत्रिका आरम्भ की थी। हैरी ने '**ओनली इन अमेरिका**' समेत २० किताबें लिखी हैं, और अब वह अपने घर के पास ही, सड़क के उस पार स्थित, सेण्ट्रल पीडमॉण्ट कम्युनिटी कालेज में रचनात्मक साहित्य का शिक्षक है। जब शारलोट के प्रैस्बिटेरियनों ने (जिन्होंने ही अधिकांश गिरजाघरों का निर्माण कराया है) ऐसे लेखक की तलाश आरम्भ की, जो नार्थ कैरोलाइना में उनके गिरजाघर का इतिहास लिख सके, तो वे स्वभावतः शारलोट में 'टेम्पुल इस्रायल' वाले इस हैरी गोल्डेन के पास पहुंचे। और, जैसा कि गोल्डेन पहले ही कह चुका है, ऐसा 'केवल अमेरिका में ही' सम्भव हुआ है।

मिथकों का एक दूसरा विभंजक एटलाण्टा, ज्योर्जिया, है। एटलाण्टा जाने वाली सड़क अपने अन्तिम छोर के बारे में कोई संकेत नहीं देती। यह पिकअप-ट्रकों का इलाका है। ज्योर्जिया देहाती क्षेत्र है और उसके निवासी, स्पष्टतः, लगातार इसी पूर्वानुमान में जीते हैं कि उन्हें 'क' नामक स्थान से कुछ-न-कुछ 'ख' नामक स्थान तक पहुंचाना है। राजमार्ग पर आगे-पीछे पटी हुई बहुत सारी पिकअप-ट्रकों के बीच थोड़ी देर गुजरने के बाद, वह व्यक्ति भी, जिसके लिए पिकअप-ट्रक की उपयोगिता बिल्कुल न हो, एक प्रकार की अपूर्णता की भावना से ग्रस्त हो जाता है। वह अनुभव करने लगता है कि केवल उसकी कार ही उसके लिए पर्याप्त नहीं। उस समय, एटलाण्टा क्षितिज के ऊपर उभरने लगता है और धीरे-धीरे सारी पिकअप-ट्रकें कहीं गायब हो जाती हैं। खुली सड़कें सुरुचिपूर्ण किस्म की सेडन कारों से भर जाती हैं, जिनके चालक व्यवसायियों जैसे सूट धारण किये होते हैं।

एटलाण्टा ज्योर्जिया के मध्य में है, ज्योर्जिया की राजधानी है, लेकिन ज्योर्जिया की विशेषताओं से अछूता है। वह दक्षिण अमेरिका में तो है,

हैरी गोल्डेन: 'मियक-भंजक', लेखक, अमेरिकी जीवन का अध्येता।

पर 'दक्षिणी' नहीं है। यदि कोई अमेरिका के बारे में एक और अध्ययन-योजना बना रहा हो, और उसका बजट सीमित हो, तो उसे एटलाण्टा में अपना तम्बू तान कर अनुवीक्षण करना चाहिए। सभी जगहों के लोग एटलाण्टा में आकर बसे हैं। यहां उच्चारण की कोई एक शैली नहीं है। यहां व्यवसाय-प्रबन्धक और श्रमिक हैं; यहां विद्रोही और सत्ताधारी प्रतिष्ठान हैं; यहां नगर की परिधि में श्वेतों और अश्वेतों की संख्या लगभग समान है। और, हर कोई संघर्षरत है। एटलाण्टा का सौभाग्य ही है कि उसने निकटवर्ती दक्षिण अमेरिकी परिवेश की एक विशेषता ग्रहण कर ली है—और यह है अलंकृत वाग्मिता का विनम्र और शिष्ट नियम। इसलिए, जब नगर में सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक संघर्ष होते हैं, तो उनमें हमेशा एक विशेष प्रकार की शिष्टता सन्निहित होती है।

एटलाण्टा का यह चरित्र, यह गुण, संयोग मात्र नहीं है। एटलाण्टा को एक रेलवे कम्पनी ने इस उद्देश्य से बसाया था, ताकि यह एक चौराहे का काम दे सके। उसके पहले यहां लगभग कुछ नहीं था। इसके नाम भी क्रम से बदलते रहे (जैसे टर्मिनस, ज्यौर्जिया; फिर, मार्थासविल, ज्यौर्जिया), और अन्त में, रेलवे ने अपने टाइमटेबुलों में इसका नाम एटलाण्टा प्रकाशित किया। यह नाम टिकाऊ सिद्ध हुआ। एटलाण्टा अब भी एक चौराहा है। और, एक खास किस्म के लोग ही चौराहे की ओर आकृष्ट होते हैं। चौराहे के लोग हमेशा आते-जाते रहते हैं, किसी चीज की तलाश में रहते हैं, अन्यत्र कहीं जाने को तत्पर रहते हैं, भयंकर रूप से स्वतन्त्र होते हैं और स्वभावतः सर्वसम्मति के आग्रह को स्वीकार नहीं करते। वाणिज्य-मण्डल को इस पर बहुत नाज़ है। उसके एक प्रवक्ता ने तो यहां तक कहा है कि "इस प्रकार की असंगति ही एटलाण्टा को गतिहीन होने से बचाती है।"

एटलाण्टा का आकर्षण व्यापार है। यही वह चुम्बक है, जो तमाम किस्म के लोगों को उसकी ओर खींचता है। इस व्यापार के अन्तर्गत, वाणिज्य, गोदाम-संचालन, क्रय-विक्रय, जहाजरानी और नौकान्तरण, आदि शामिल हैं। अमेरिका के सबसे बड़े ५०० निगमों में से, ४१३ ने एटलाण्टा में अपने कार्यालय, कारखाने, गोदाम या अन्य अधिष्ठान स्थापित कर रखे हैं।

एटलाण्टा को आसा ग्रिग्स चैण्डलर की कहानी पर बहुत गर्व है। वह जब एटलाण्टा आया, तब वह बेरोजगार था, लेकिन शीघ्र ही एटलाण्टा के एक दवाखाने में उसे काम मिल गया। सन् १८८७ में एटलाण्टा के एक औषधि-निर्माता, जान पेम्बर्टन, से उसकी भेंट हुई, जो रोगों के इलाज के लिए बराबर नये-नये नुस्खों के प्रयोग करता था। उस समय उसके दिमाग में सिरदर्द के नुस्खे घूम रहे थे।

युवा चैण्डलर ने इस नुस्खे में अपनी पूंजी लगायी। तीन वर्ष के भीतर, उसने २,३०० डालर में उस नुस्खे से सम्बद्ध सभी स्वत्व खरीद लिये। हुई न बात कोका कोला की!

एटलाण्टा के चौराहे से गुजरने वाली एक सड़क फ्लोरिडा को जाती है। फ्लोरिडा का नाम सामने आते ही मस्तिष्क में तमाम किस्म की कल्पनाएं उभर आती हैं, लेकिन उस राज्य की सीमा में पहुंचने पर उनमें से शायद ही कोई साकार हो पायेगी। फ्लोरिडा से होकर गुजरने पर ठीक वैसा ही अनुभव होता है, जैसा ज्यौर्जिया में दूर तक भीतर चले जाने पर होता है—लम्बे कटे देवदारु के वृक्षों और पिकअप-ट्रकों की एक दुनिया। हौले से 'फ्लोरिडा' का नाम लेते ही, हर कोई जिन चीजों की कल्पना में खो जाता है, वे हैं रेत, धूप और बिकिनी। राज्य की सीमा से फ्लोरिडा के इस क्षेत्र में पहुंचने के लिए कम-से-कम छः घण्टे, और नहीं तो आठ घण्टे, मोटर दौड़ानी पड़ेगी। फ्लोरिडा के अधिकांश भागों में रेत, बालू, समुद्र की लहरों और बिकिनी के दर्शन नहीं होते। अधिकांश फ्लोरिडा संतरे के बागों, मवेशियों के खुरों, दलदलों, फास्फेट की खदानों या फार्मों से भरा पड़ा है। लेकिन फ्लोरिडा को उसकी ख्याति उसके समुद्रतट के कारण ही मिली है। फ्लोरिडा का सागरतट अलास्का को छोड़ कर अन्य किसी भी राज्य के समुद्रतट से अधिक लम्बा—२,१६० किलोमीटर—है। अलास्का का समुद्रतट लम्बा अवश्य है, पर सील मछलियों के अलावा किसी के लिए उसका कोई उपयोग नहीं है। अतः, फ्लोरिडा अपने समुद्रतट का पूरा-पूरा लाभ उठाता है। राज्य के भीतर ८ किलोमीटर घुसने के बाद ही, प्रदर्शन-पटों पर अंकित विज्ञापन ऐलान

सामान्य धारणा के विपरीत, फ्लोरिडा में यौवन और बिकिनियों का बाहुल्य नहीं है। यह तो, वस्तुतः, अवकाश-प्राप्त लोगों की पसन्द का प्रदेश है। दायें, मायामी का एक सामान्य घर। अगले पृष्ठ पर, फ्लोरिडा में सन्तरे का एक व्यावसायिक बगीचा।
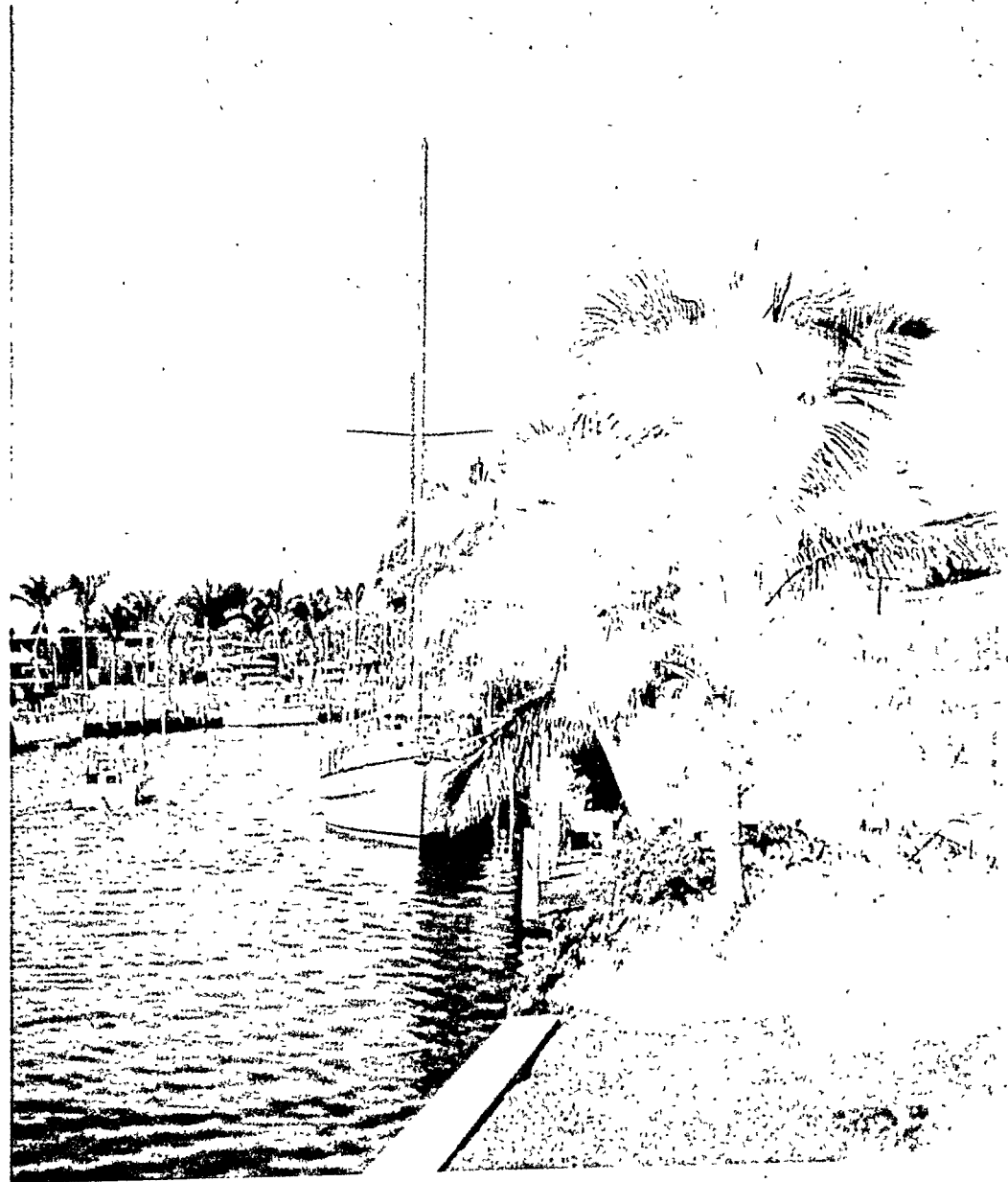
करने लगते हैं कि धूप की सही रंगत के लिए प्रयुक्त अमुक लोशन दूसरों से श्रेष्ठतर है; रेडियो सलाह देने लगता है कि ढेर सा गाजर का रस पीने से शरीर की त्वचा धूप का सुख भोगने के उपयुक्त हो जाती है, कि तैराकी की जल्द सूखने वाली पोशाक एक अनिवार्यता है, और *यह कि यहां की संस्कृति की प्रतीक* है गीली तौलिया। दिमाग लहरों के थपेड़ों का आनन्द ले रहे पतले-छरहरे जवानों और मध्य रात्रि की तटवर्ती पार्टियों की कल्पना में खो जाता है; हालीवुड-निर्मित फिल्मों के समस्त मदहोश कर देने वाले सागरतटवर्ती दृश्य आंखों के सामने कौंध जाते हैं और आप अपने वालों को फ्रैंकी एवालोन की तरह ब्रुश से पीछे की ओर संवारने लगते हैं; सहसा आपको स्मरण हो आता है कि बिकिनी धारण किये हुए, ऐनेट फ्यूनिसेलो रंगीन फिल्मों में कैसी दिखलायी पड़ती है; और फिर, आप मायामी तट पहुंचने के लिए उतावले हो उठते हैं।

ये सारी कल्पनाएं और धारणाएं मन में भरे हुए, जब आप वहां पहुंचते हैं, तो सहसा आपको पता चलता है कि यहां की ४६ प्रतिशत जनसंख्या की आयु ६५ वर्ष से ऊपर है। आबादी में अवकाश-प्राप्त लोगों का प्रतिशत अमेरिका में यदि कहीं सबसे अधिक है, तो वह फ्लोरिडा में ही है। प्रकाश से दमकते हुए नगर में श्वेत केशियों की भरमार है। इण्डियैना, ओहायो अथवा पैन्सिल्वेनिया से आकर तमाम शान्तिप्रिय परिवार यहां बस गये हैं। ये सब *लोग धूप तो थोड़ी ही सेंकते हैं, परन्तु ब्रिज अधिक* खेलते हैं; वे अपने बच्चों और नाती-पोतों के फोटो उतारते हैं; उनका व्यवहार बहुत सामान्य है और वे समुद्रतट पर लेट कर लहरों की थपकियों के मज़े नहीं लेते। अलविदा, ऐनेट!

और, यह है आपका नैशविल। क्या आप जानते हैं, या जानना चाहते हैं कि 'अमेरिका के संगीत नगर' का सबसे बड़ा उद्योग छपाई है? और, वह भी मुख्यतः धार्मिक पुस्तकों की? नैशविल, टेनेसी, की सड़कों पर दिन भर विचरने के बाद भी आपको ढीली-ढाली पोशाक में, नंगे पांव घूमने वाला, ऐसा एक भी नौजवान नहीं मिलेगा, जो कन्धे से गिटार लटकाये ख्याति के शिखर पर पहुंचने की तैयारी कर रहा हो।

सुनने में तो यहां तक आता है कि नैशविल के अधिकतर निवासी लोक संगीत को, जिसने इस शहर को प्रसिद्धि दिलायी है, सुनना भी पसंद नहीं करते हैं। 'कण्ट्री म्यूजिक असोसिएशन' की कार्यकारी निदेशिका, जो वाकर, स्वीकार करती हैं कि हर सप्ताहान्त रेमन रंगशाला 'ग्रैण्ड ओल ओपरी' का आनन्द लेने के लिए जिन लोगों से खचाखच भरी *होती है, उनमें से ६५ प्रतिशत नैशविल से* बाहर के होते हैं।

वह कहती हैं: "नैशविल के लोगों को लोक संगीत पहले की अपेक्षा अब अधिक पसंद है। पहले तो ये लोग इसे बिल्कुल ही पसन्द नहीं करते थे—इससे मुंह फेर लेते थे।" लेकिन, यह तब की बात है, जब लोक संगीत को गंवारू और बौद्धिकता-विरोधी कला का चरमोत्कर्ष माना जाता था; जब वह अमेरिका और कनाडा के रेडियो स्टेशनों का अधिकतम प्रसारित संगीत नहीं था, और जब इसके रिकार्डों ने अमेरिका में सबसे अधिक बिकने वाले रिकार्डों में द्वितीय स्थान पर होने की प्रतिष्ठा अभी नहीं प्राप्त की थी। (अधिकतम बिक्री 'रौक' के रिकार्डों की है।)

इसके बावजूद, नैशविल सही अर्थ में 'अमेरिका का संगीत नगर' नहीं है। न्यूयार्क है। वह
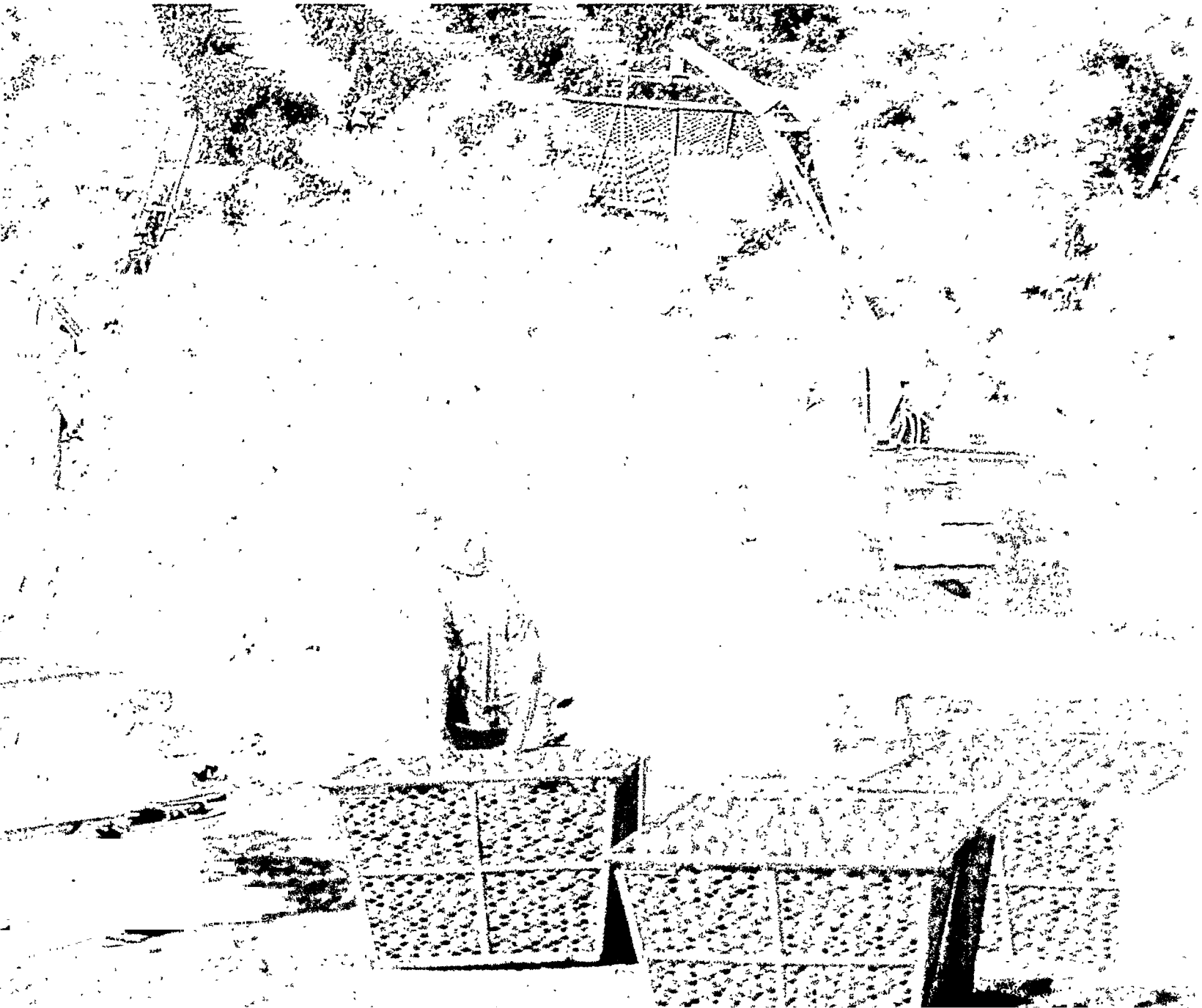
मिथकों का एक दूसरा विभंजक एटलाण्टा है। यह ज्यौर्जिया की राजधानी है, लेकिन ज्यौर्जिया की विशेषताओं से प्रायः अछूता है। यह दक्षिण अमेरिका में तो है, पर 'दक्षिणी' नहीं है। सभी जगहों के लोग एटलाण्टा में आकर बसे हैं।

किसी एक परिधि में आबद्ध नहीं है। न्यूयार्क संगीत नगर, थियेटर नगर, कला नगर, प्रकाशन नगर, व्यापारिक नगर, सभी बातों का नगर है। लेकिन नैशविल का स्थान दूसरा है; कम-से-कम संगीत के रिकार्डों के मामले में तो है ही।

और, इस तथ्य से भी मुँह फेरने की कोई गुंजाइश नहीं कि ब्लूज़ से लेकर रौक, देहाती और पश्चिमी संगीत तक, अमेरिका का समस्त लोक संगीत मिसीसिपी घाटी की देन है। नैशविल देहाती संगीत की राजधानी है; मेम्फिस ब्लूज़ की राजधानी है; भक्ति-संगीत और जाज़ नदी के उत्तर से आये; और इन सबने मिल कर रौक-संगीत को जन्म दिया।

अलाबामा का उत्तर-पश्चिमी कोना संगीत-जगत का रसीला क्षेत्र है, जहां एक और कपोल-कल्पित आख्यान खण्डित पड़ा है। वह मिथक यह है कि मनोरंजन की दुनिया में ऊंचे चढ़ने के लिए सशरीर न्यूयार्क जाना और कंधे से कंधा रगड़ना आवश्यक है। रिक हाल अलाबामा राज्य के मसल शोल्स नामक नगर में पैदा हुए, बढ़े और रहे, हालांकि यह कस्बा इतना छोटा है कि सोयाबीन के अनेक खेत भी नगर-सीमा में शामिल हैं। रिक हाल से पहले मसल शोल्स को लोग मुख्यतः नदी पर बने बांध के कारण जानते थे। यह कस्बा बहुत ही विकट नदी, टेनेसी, के किनारे, विल्सन बांध के एक सिरे पर, बसा है। यह बांध टेनेसी घाटी प्राधिकरण के उन विशालकाय बांधों की शृंखला की प्रथम कड़ी है, जो बाढ़ों को नियन्त्रित करते, नौकानयन की सुविधा प्रदान करते और इस क्षेत्र को बिजली देते हैं। विल्सन बांध में विश्व का सबसे ऊंचा—३० मीटर का—सिंगल लिफ्ट लौक है।

मसल शोल्स के आसपास दिलचस्पी की और बहुत-सी चीजें हैं। उदाहरण के लिए, संसार में रैकून जाति के श्वानों का एकमात्र कब्रिस्तान पास में ही है। रैकून श्वान एक शिकारी जानवर है, जिसका मूल्य पास-पड़ोस के लोगों की निगाह में बीबी-बच्चों की तुलना में कुछ ही कम ठहरता है।

हेलेन केलर भी टुस्कुम्बिया में, जो यहां से कोई बहुत दूर नहीं है, पैदा हुई थीं। उन्होंने अपने पहले शब्द कस्बे में 'आइवी ग्रीन' नाम से विख्यात कुटीर के बाहर बने कुएं पर सीखे थे। मसल शोल्स के पास, नदी के पार, फ्लोरेंस 'ब्लूज़' शैली के संगीत के जनक, डब्ल्यू० सी० हैण्डी ('सेंट लुई ब्लूज़'), का जन्मस्थान है। वह छोटी-सी कुटिया, जहां वह पैदा हुए थे, स्मारक के रूप में अभी भी सुरक्षित है। फ्लोरेंस ने शायद इससे बड़ा सम्मान उन्हें दिया है—वहां एक सब-डिवीजन का नामकरण उनके नाम पर ही किया गया है।

बहुत-से लोगों ने, जिन्होंने मसल शोल्स के बारे में यह सब कुछ कभी नहीं सुना है, रिक हाल के कारण इस का नाम अवश्य सुना है। सम्भव है कि वे श्री हाल के नाम से परिचित न हों। किन्तु, यदि वे रिकार्ड सुनते हैं, तो वे उनकी देन, 'मसल शोल्स साउण्ड' रिकार्डों, से तो अवश्य ही परिचित होंगे। साउण्ड रिकार्ड श्री हाल के 'फेम स्टुडियो' से बन कर निकलते हैं, जिसकी छोटी-सी घनाकार इमारत कस्बे के प्रमुख चिन्ह, पानी की टंकी, की छाया में सुस्ता रही है। श्री हाल कलाकारों के पास नहीं जाते। कलाकार स्वयं उनके पास आते हैं और अपने गीतों के रिकार्ड बनाने के लिए उनसे अनुरोध करते हैं। इसलिए, अरेथा फ्रैंकलिन, बौबी जेंट्री, लिटिल रिचर्ड, जो साउथ, रे स्टीवेंस और विल्सन पिकेट सरीखे उच्च कोटि के, सोना पैदा करने वाले, सितारों का मेला मसल शोल्स में लगता ही रहता है और वे यहां आकर इसके ग्रामीण वातावरण और सोयाबीन की हरियाली से समरस होकर संगीत तैयार करते हैं। फेम स्टुडियो ने १० वर्ष में सोना उगलने वाले (१० लाख या उससे अधिक बिकने वाले) १० रिकार्ड तैयार किये हैं। रिक हाल बड़े आराम से मोटर चलाते हुए ५ मिनट में अपने काम पर पहुंच सकते हैं। इतनी हरियाली यदि न्यूयार्क में होती तो ईर्ष्या का कारण बन जाती।

केण्टकी पहुंचाने वाली सड़क उस इलाके से होकर गुजरती है, जहां सुअर का मांस बहुत होता है, जहां होटल में इसे परोसने वाली परिचारिका को अपनी महिला ग्राहक के शरीर पर तंग और ऊंचा हाट पैंट, स्पष्टतः, पसंद नहीं; फिर भी, वह मुस्कराते हुए परोसती है, और इस तरह, दक्षिणी आतिथ्य के बारे में प्रचलित धारणा की, कुछ कष्ट उठा कर ही सही, पुष्टि कर देती है। यह इलाका ऐसा है, जहां आप और विशालकाय ट्रक और ट्रेलर का चालक, जिसका शरीर बढ़िया ढंग से गुदा हुआ है, स्वागत केन्द्र के पार्किंग स्थान में अपनी गाड़ियाँ खड़ी करके विश्राम-कक्ष की ओर एक साथ ही तेजी से लपकते हैं। वहां वह अपने-आप ही, बिना किसी के पूछे, घोषणा करता है कि उसका काम—देश भर में ट्रक चलाते फिरना—कितना गन्दा है :

"मैं सिर्फ बैठा ही तो रहता हूं। जिंदगी भर मैं बैठ कर किये जाने वाले कामों से भागने की कोशिश करता रहा। और, मेरा हाल यह है। मैं सिर्फ बैठा ही तो रहता हूं।"

यह बात ऐसी है, जो अगले ८०० किलोमीटर का रास्ता हर चीज की सापेक्षता पर—एक जगह बैठे रह कर किये जाने वाले कामों से लेकर अमेरिकावासी के लिए गतिशीलता की आवश्यकता पर—चिन्तन करने में गुजारने को बाध्य करती है, हालांकि कुछ लोगों के लिए, जिन्हें अपना अधिकांश चेतनायुक्त—और शायद कुछ चेतनाशून्य भी—समय टाइप-राइटर के सामने बैठे-बिठाये ही गुजारना पड़ता है, देश में एक छोर से दूसरे छोर तक कार चलाते फिरना पर्याप्त गतिशीलता का द्योतक सिद्ध होगा। मंगल ग्रह चलो, बन्धु, मंगल ग्रह!

दक्षिण-मध्य केण्टकी के आसपास रहने वालों में यह कहावत प्रचलित है कि अगर हवा में बास्केट बाल उछाला जाये, तो उसके जमीन पर गिरने के पहले ही ४,००० लोग यह देखने के लिए इकट्ठे हो जायेंगे कि गेंद उछल कर किसके हाथ लगेगी। यदि खेलकूद के प्रति यह जोश-खरोश कहीं एक स्थान पर केन्द्रित है, तो वह ब्राउनिंग ग्रीन, केण्टकी, में अमेरिका के अन्त-र्राज्यीय राजपथ-६५ से कुछ हट कर, उस पहाड़ी पर ही है, जहां वेस्टर्न केण्टकी विश्व-विद्यालय और उसकी बास्केट बाल टीम, जिसे उचित ही 'हिल टापर्स' की संज्ञा दी गयी है, स्थित है। यही वह स्थान भी है, जहां शान्ति-पट चमका कर रोषपूर्ण प्रदर्शन करने वाले कालेज के उत्तेजित छात्रों की तस्वीरें टेलिविजन के पर्दे पर थरथराती और बुझती रहती हैं। वेस्टर्न केण्टकी विश्वविद्यालय के प्रांगण के बीच से तीसरे पहर गुजरें तो लगेगा कि सन् १९५० के दशाब्द से गुजर रहे हैं। इमारतों की बगल की दीवालों पर खुरच कर बनाये गये चित्र या निशान कहीं नहीं दिखायी देंगे। ऐसा लगता है कि शान्ति के प्रतीक की रचना अभी होनी बाकी है। यहां कुछ-एक ही पोस्टर नजर आयेंगे, जिन पर तैराकी प्रतियोगिता; छात्रों के शरदकालीन प्रवेश सम्बन्धी पंजीकरण; एम० आई० टी० वाद्यवृन्द, ली इवांस ट्रायो अथवा अमेरिकी वायुसेना के ५८१वें रिज़र्व बैण्ड सरीखी संगीत-मण्डलियों के सामूहिक संगीत-आयोजनों की सूचना मिलेगी। वातावरण सैद्धान्तिक विवाद से मुक्त है; और छात्रों की गर्दनें बालों से ढकी नहीं है, बल्कि नंगी दिखलायी देती हैं।

अमेरिका की विदेश नीति, लामबन्दी, ब्लैक पैंथर आन्दोलन या जैफर्सन विमान के बारे में पूछें, तो इन पर वे अपनी राय—कुछ पक्ष में और कुछ विपक्ष में—देने को तत्पर होंगे। लेकिन, बास्केट बाल के बारे में तो,

फिर भी, वे शायद ही बात करना पसन्द करेंगे। विश्वविद्यालय के अधिकारियों का कहना है कि 'वेस्टर्न' में जीवन का ढर्रा मध्यवर्ती अमेरिका के औसत आकार के विश्वविद्यालय का, उन सैकड़ों कालेजों का, जिनके बारे में **'न्यूज वीक'** में तब तक कभी कुछ पढ़ने को नहीं मिलता, जब तक उनके खेलकूद विभागों ने क्रीड़ांगन में कोई अभूतपूर्व करिश्मा न दिखाया हो, प्रतिनिधित्व करता है। बास्केट बाल के दो मौसमों के बीच की अवधि में पढ़ाई-लिखाई ही दिलचस्पी का मुख्य विषय होती है। क्योंकि **'न्यूयार्क टाइम्स'** ने हाल में यह रहस्योद्घाटन किया है कि येल विश्वविद्यालय के छात्र इस वर्ष विरोध-प्रदर्शन त्याग कर पढ़ाई-लिखाई की ओर ध्यान दे रहे हैं (**'टाइम्स'** लिखता है : 'येल में पुस्तकालय का उपयोग ६६ प्रतिशत बढ़ गया है।'), अतएव वेस्टर्न केण्टकी को, कुछ समय के लिए ही सही, येल विश्वविद्यालय के छात्रों की जीवन-शैली को दिशा देने का अनुपम गौरव प्राप्त होगा।

एक अधिकारी ने वेस्टर्न केण्टकी विश्वविद्यालय के छात्रों के बारे में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है: "आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि अधिकांश छात्र यहां शिक्षा के लिए आते हैं और अधिकांश के माता-पिता उनकी शिक्षा का खर्च स्वयं वहन करते हैं। बहुत से छात्र तो ऐसे परिवारों से आते हैं, जिन्हें इन छात्रों को यहां रखने के लिए किसी-न-किसी प्रकार का त्याग करना पड़ता है। यहां का हाल यह है कि यदि किसी के लिए कुछ किया जाये, तो वह कृतज्ञ अनुभव करता है। असल बात इतनी ही है।"

सिद्धान्ततः, ओहायो नदी पार करने का अर्थ है मैसन-डिक्सन रेखा पार करना और मध्य-पश्चिमी (मिडवेस्ट) क्षेत्र में पहुंचना, जो बृहस्पतिवार की रात को बाउलिंग लीगों द्वारा आयोजित खेलों, क्यू कटों, सफेद मोजों, कत्थई रंग के जूतों और बहुत सारी शेवरले मोटर कारों के लिए प्रसिद्ध है। सिद्धान्ततः, यह ठीक है, लेकिन इसमें से कोई भी बात इस रूप में नहीं होती। ओहायो के लोग बहुत-कुछ किसी अन्य स्थान के लोगों की तरह ही दिखाई देते हैं और बहुत कुछ उसी तरह के कामकाज करते हैं। इस तथाकथित नीरस और बिना उतार-चढ़ाव वाले राज्य के बीचोबीच एक व्यक्ति ऐसा भी है, जो कुछ विचित्र सा काम करता है। वह अमेरिका की लोक-संस्कृति का पेशेवर अध्येता है। वह बाउलिंग के खेलों, सफेद मोजों, रौक-एन-रोल, शेवरले, बास्केट बाल, फिल्मों और हास्य-व्यंग्य वाले रेखाचित्रों में गम्भीर दिलचस्पी लेता है। वह व्यक्ति है डा० रे ब्राउन। डा० रे ब्राउन बाउलिंग ग्रीन, ओहायो, स्थित बाउलिंग ग्रीन राज्य-विश्वविद्यालय में 'लोक संस्कृति अध्ययन संस्थान' का संचालन करते हैं। प्रिंसटन या हारवर्ड में, अथवा इनसे भी अधिक बर्कले, कैलिफोर्निया, में, होने के बजाय, ओहायो में यह सब होता देख कर, वस्तुतः, आश्चर्य होता है। और, जब ब्राउन से यह बात कही जाती है, तो वह कुछ आह सी भरते हुए, सामन्तवाद पर और मिथक-प्रवर्तकों की सरपरस्ती पर अपना पुराना, जाना-सुना, भाषण पिला बैठते हैं। वह कहते है कि लोक-संस्कृति का प्रादुर्भाव जनता से होता है। यह मिट्टी से उपजने वाली जीवन्त संस्कृति है, जो संग्रह मात्र होने के बजाय, जीवन के क्रिया-कलापों में सचमुच व्यक्त होती है, जी जाती है। सहसा, ओहायो अर्थपूर्ण लगने लगता है। बौब केलर के सम्मान में कुछ दिन पहले आयोजित एक दावत का स्मरण हो आता है—केलर ने 'डर्बी' नाम की अत्यन्त सफल फिल्म बनाई थी, जो जाहिरा तौर पर तो डर्बी रोलर के बारे में थी, पर वास्तव में थी एक मानवप्राणी के स्वप्नों, आकांक्षाओं, के बारे में। 'डर्बी' का फिल्मांकन करने के सिलसिले में बौब अपनी पत्नी फोबे के साथ काफी समय तक डेटन, ओहायो, में रहे। उस छोटी सी दावत में बौब के मित्रों की भरमार थी—सभी पूर्वी सागर के तटवर्ती क्षेत्र के बुद्धिजीवी थे। उन सबने एक स्वर से कहा था : "यह एक महान् फिल्म है, बौब, लेकिन इसके लिए दुनिया भर में तुम्हें (मौन, लेकिन समझ में आने वाले उपेक्षा भाव के साथ) केवल यह रोलर डर्बी ही मिला ?"

और, इसी 'डर्बी' के सम्बन्ध में, अब लीजिये **'न्यूयार्क टाइम्स'** के २ मई, १६७१ के अंक में प्रकाशित, उसके चलचित्र-समीक्षक, विन्सेण्ट कैनबी, की यह समीक्षा :

"डर्बी. . . .आश्चर्यजनक रूप से श्रमसाध्य, भावुकताविहीन, आशावादितापूर्ण फिल्म है, जो वस्तुस्थिति का चित्रण करती है और अमेरिकावासियों की चेतना के उस स्तर को छूती है, जो किसी समय 'मोनोग्राम-बी' फिल्मों में फिल्मांकित होता था, किन्तु अब बहुधा उपेक्षित है—जिसकी खोज आजकल न तो वास्तविक जीवन में और न ही कथा-साहित्य में की जा रही है।"

दूसरे शब्दों में, रे ब्राउन की तरह, या ऐसे किसी भी व्यक्ति की तरह, जो कार में बैठ कर कपोलकल्पित आख्यानों या मिथकों से आंखें चार करने निकल पड़ने को तत्पर है, बौब केलर भी यहां एक ऐसे देश की खोज कर सकता है, जो हमेशा वैसा नहीं है, जैसा माना जाता है, और बहुत बार वैसा है, जैसा वह माना नहीं जाता। अलेक्सी द टोकविल ने कहा था कि यह देश बहुत पेचीदा है। यह १६ वीं शताब्दी के मध्य की बात है। पर, आज भी यह देश प्रायः ऐसा ही है। ◻◻

ब्रैडले का प्रांगण, जो नैशविल के ३० रिकार्डिंग स्टुडियों में से एक है। अमेरिका में बिकने वाले फोनोग्राफ के रिकार्डों में से आधे नैशविल में ही बनते हैं।
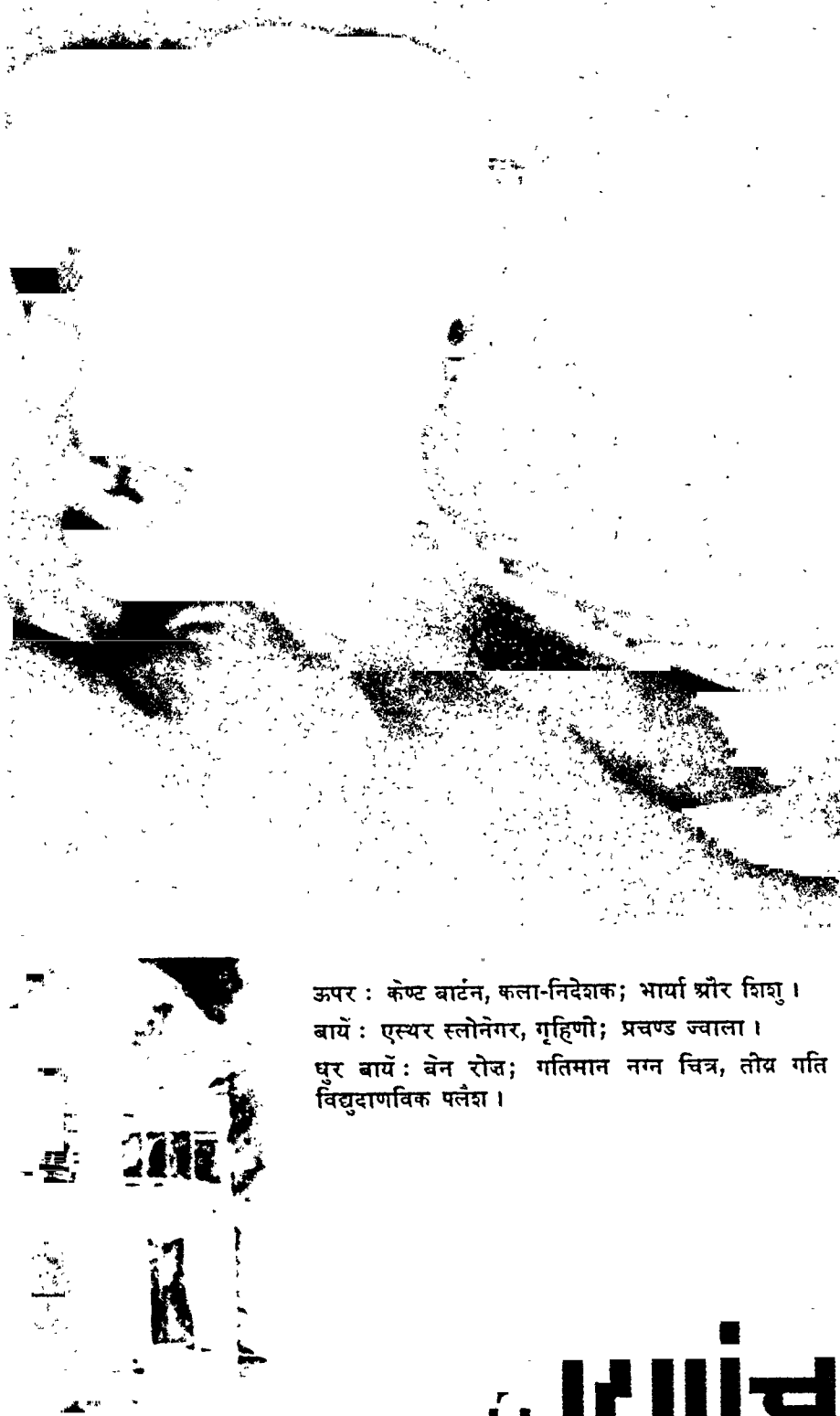
ऊपर : केण्ट बार्टन, कला-निदेशक; भार्या श्रौर शिशु।
बायें : एस्थर स्लोनेगर, गृहिणी; प्रचण्ड ज्वाला।
धुर बायें : बेन रोज; गतिमान नग्न चित्र, तीव्र गति का विद्युदाणविक फ्लैश।

आज, हम जहां-कहीं भी जायें, अपने-आपको छायाचित्रों से घिरा पाते हैं। अब तो छायाचित्र आधुनिक जीवनानुभूतियों के सहज अंग, और सूचना एवं संचार के अपरिहार्य स्रोत, बन चुके हैं। किसी पुस्तक, पत्रिका या अखबार के पन्ने पलटिये, घरों की दीवारों या सार्वजनिक स्थानों पर दृष्टि दौड़ाइये, आप, निश्चय ही, स्वयं को छायाचित्र के सम्मुख पायेंगे। विज्ञापन, विज्ञान, फैशन, कला और शिक्षा के क्षेत्रों में छायाचित्रण एक अप्रतिस्थाप्य सहायक बन चुका है, जिसने इन प्रयासों को और भी प्रभावपूर्ण बना दिया है।

छायाचित्रण केवल शौक या रोज़गार का साधारण साधन होने के बजाय, अब शौकिया और पेशेवर, सभी लोगों के लिए, समान रूप से, व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। यह व्यक्ति को एक ऐसा साधन प्रदान करता है, जो उसके आसपास के विश्व तथा उसके परिवेश के सम्बन्ध में उसकी प्रतिक्रियाओं को अंकित करने और सुरक्षित रखने में समर्थ है। इन दोनों पृष्ठों के चित्र शौकिया छायाकारों द्वारा खींचे गये थे, और उनकी ऐसी ही व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के प्रतीक हैं।

छायाचित्रण की भाषा

आधुनिक युग का माध्यम

किसी छायाचित्र को 'देखना' उतना ही सहज है, जितना किसी वास्तविक दृश्य या चेहरे को 'देखना'। सच्चाई एक कागज के टुकड़े पर बांध ली गयी है—वर्षों-वर्षों तक सुरक्षित। किन्तु, सच्चाई की अपनी सीमाएं हैं; और प्रारम्भ से ही यह मान लिया गया है कि छायाचित्रण की सम्भावनाएं केवल हमारे आस-पास की स्थिति के सही रूप-विधान तक ही सीमित नहीं हैं। सन् १८३९ में, लुई डागेर ने अपनी डागेरोटाइप-विधि का प्रदर्शन किया, जो समस्त आधुनिक छायाचित्रण की अग्रदूती मानी जाती है। उस वर्ष के एक समाचारपत्र के विवरण के अनुसार, "एम० डागेर को ठोस धरातल पर प्राकृतिक प्रकाश को जमाने में—आंख की पुतली, दर्पण और कैमरे के उपकरण में प्रतिबिम्बित वस्तुओं की स्पर्शातीत और क्षणभंगुर छाया को मूर्त रूप देने में—सफलता मिली है। ...... आशा है कि यह खोज कला और विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।"

और, यह विधि ऐसी ही सिद्ध भी हुई है। अगले कुछ दशाब्दों तक छायाचित्र खींचने की प्रौद्योगिकी की खोज छायाचित्रण के क्षेत्र का मुख्य आग्रह बनी रही। यह ऐसी विधियों और उपकरणों की खोज थी, जो वास्तविकता को सही-सही संजोने और अंकित करने वाले साधन के रूप में, कैमरे के मुख्य कार्य को परिष्कृत करने में सहायक सिद्ध हों। फलस्वरूप, डागेर द्वारा व्यवहृत धात्विक प्लेट का स्थान कागज ने ले लिया, और ऐसी सामग्रियों का प्रयोग शुरू हुआ, जो प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील और उत्कृष्ट थीं। विभिन्न प्रकार के लेंस इस्तेमाल किये गये और हाथ के कैमरों का निर्माण किया गया। १८८० के दशाब्द के अन्तिम चरण में, मुलायम और लोचशील रौल फिल्म व्यवहार में लायी गयी, जो प्रारम्भ में कागज की, और बाद में, सेलुलोज नाइट्रेट की बनने लगी।

उसी अवधि में, शैली सम्बन्धी कुछ परम्पराएं स्थापित हुईं, जो एक शताब्दी बाद, आज भी, अमेरिकी छायाचित्रों पर अपना प्रभाव जमाये हुए हैं। इन चार विधियों की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए, बोमोण्ट न्यूहाल ने, जिनकी गणना अमेरिका में छायाचित्रों के सर्वमान्य इतिहास-कारों की कोटि में होती है, कहा है कि वे किसी रूढ़िगत, या निरपेक्ष रूप में पृथक-पृथक, श्रेणियों की प्रतीक नहीं हैं। प्राय: वे किसी एक ही छायाकार की कृतियों में सम्मिश्रित और एक-दूसरे पर छायी हुई हैं। वस्तुत:, वे कार्य करने की पद्धतियाँ हैं, जिनका प्रयोग सृजनशील छायाकार अपनी व्यक्तिगत कैमरा-शैलियों के विकास में प्रारम्भिक बिन्दु के रूप में किया करते हैं।

'सरल' या सीधी शैली के अन्तर्गत, जिसके उदाहरण में अलफ्रेड स्टीगलिट्स, ऐन्सेल ऐडम्स और एडवर्ड वेस्टन की कृतियां आती हैं, वस्तुओं को उनके सही बिम्बों में, सान्द्र संरचना और सूक्ष्म विस्तार के साथ, चित्रांकित करने का प्रयास किया जाता है। इस शैली का अनुसरण करने वाला छायाकार वास्तविकता से अपना सम्पर्क सदैव बनाये रखता है, और कहता है: "वास्तविकता यही है—और, मेरे कैमरे ने इसे इसी रूप में देखा है।"

दूसरी ओर, 'रूपवादी' अथवा प्रयोगवादी छायाकार कहता है: "मैं वहां स्वयं उपस्थित था—और, मैंने उसे इसी रूप में देखा है।" यह दूसरी शैली, जो २०वीं शताब्दी के तृतीय दशाब्द के दौरान चल रहे कलाओं सम्बन्धी अथक प्रयोगों की देन है, स्वयं छायाचित्रण की विधि के ही समुपयोग—जैसे, किसी चित्र को जानबूझ कर अल्प या अधि-उद्भासित करने, निगेटिव को ही तैयार छायाचित्र मान लेने, अथवा कोई विशेष कलात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए प्रकाश, फिल्म या परिप्रेक्ष्य के साथ छेड़छाड़ करने—पर केन्द्रित है। यह शैली १९२० के दशाब्द में छायाकार मैन रे की, और इधर हाल में, पीन टर्नर की, कृतियों में विशेष रूप से परिलक्षित है।

छायाचित्रण की 'वृत्तात्मक' या छाया-पत्रकारिता शैली, मूलत:, भावसम्प्रेषण की, लोगों के विषय में कुछ कहने और किसी अनुभूत क्षण को किसी बाह्य व्यवधान के बगैर अंकित करने की, उत्कण्ठा की प्रतीक है। इस विधि का अनुसरण करने वाला छायाकार कहता है: "मैंने इसे देखा—और, इसके विषय में मेरी भावनात्मक प्रतिक्रिया ऐसी ही रही।" अमेरिका में, इस प्रकार का छायाचित्रण 'बहु-स्तरीय चित्र-सम्वाद' में अपनी सृजनात्मकता के चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया है। इसके दृष्टान्त चार्ल्स हार्बट्ट और ग्रे विलेट जैसे कलाकारों की कृतियों में विशेष रूप से मिलते हैं। इनके द्वारा खींचे गये छायाचित्र ऐसे छायाचित्र-लेख या छायाचित्र-सम्वाद मात्र नहीं हैं, जो कोई प्रारम्भ, मध्य और अन्त वाला विवरण प्रस्तुत करते हों। विषयवस्तु की नाटकीय और संवेगात्मक प्रगति पर भी प्रकाश डाल कर, बहुस्तरीय छायाचित्र-सम्वाद केवल घटना को ही नहीं, बल्कि उस घटना की पृष्ठभूमि में निहित अभिप्राय को भी, प्रतिभासित करता है, और प्राय: विश्वव्यापी स्तर पर पहुंच जाता है, जहां समस्त मानवता के विषय में विचार व्यक्त होते हैं। यह सच है कि बहु-स्तरीय छायाचित्र-सम्वाद अतीव प्रभावकारी होता है। किन्तु जटिल, सुकुमार और भंगुर होने के कारण आजकल इसका प्रयोग बहुत कम हो चला है। सच तो यह है कि हाल में छायाकारों और पत्रिकाओं, दोनों ने छायाचित्र-पत्रकारिता के एक प्रभावकारी अंग के रूप में छायाचित्र-सम्वाद की कड़ी आलोचना की है। इस आलोचना में, छायाचित्र-सम्वाद के विरोध में बहुत तर्क और कारण दिये गये हैं, किन्तु इस प्रसंग में सबसे संक्षिप्त और सटीक बात हार्बट्ट ने इस प्रकार कही है: "कभी-कभी ऐसा लगता है कि छायाचित्रों द्वारा वर्णनात्मक स्वरूप लाने का प्रयत्न वास्तविकता और छायाकार की दृष्टि के बीच प्रत्यक्ष सम्पर्क के मार्ग में एक सहज अवरोध बन जाता है, जो मेरे विचार में छायाचित्रण-कला की भावना के विरुद्ध है।"

न्यूहाल ने आधुनिक छायाचित्रण को मूर्तरूप देने वाली छायाचित्रीय अभिव्यक्ति की जिन शैलियों का उल्लेख किया है, उनमें चौथी है 'समप्रभावी' विधि। इसके अन्तर्गत, छायाकार कहता है: "मैं ऐसा अनुभव करता हूं—और, यह लीजिये, मेरी अनुभूति का एक प्रतीक।" इस विधि की खोज और व्याख्या सबसे पहले अलफ्रेड स्टीगलिट्स ने की। उन्होंने लिखा: "छायाचित्र न केवल किसी निश्चित स्थान की व्याख्या है, न केवल एक ऐसा बिम्ब है जो अपनी अपार सुन्दरता के कारण प्रशंसनीय है, न केवल पत्रकार द्वारा प्रस्तुत किसी निश्चित क्षण का विवरण है, बल्कि चेतना-प्रवाह की एक उद्बोधक अभिव्यक्ति, एक प्रतीक है—एक ऐसा तीर, जो लगते ही चेतना-प्रवाह को उद्वेलित कर देता है।"

इस प्रकार के श्रेणीकरण के बावजूद, एक कला के रूप में छायाचित्रण के कोई अपने औपचारिक और सुनिर्दिष्ट नियम नहीं हैं। 'देखना' तो केवल पहला कदम है; अभी तो हमें यही नहीं मालूम कि छायाचित्रों को 'पढ़ा' कैसे जाय। फिर भी, उनके गहरे प्रभाव, उनकी सार्वभौमिकता और मानव की दृश्यानुभूति को तीव्रतर बनाने की उनमें निहित क्षमता के प्रमाण सर्वत्र मिलते हैं। छायाचित्रीय सौन्दर्यबोध सम्बन्धी एक दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए, कला-समीक्षक, क्लीमेण्ट ग्रीनबर्ग, ने कहा है: "छायाचित्रण की कला कुछ और होने से पहले साहित्यिक कला है: इसकी सफलता और उपलब्धियों का श्रेय इसकी ऐतिहासिकता, कथात्मकता, विवरणात्मकता और प्रेक्षणीयता को है, न कि केवल इसकी चित्रात्मकता को। . . . यदि छायाचित्रण को कला के धरातल पर आना है, तो उसे कोई कहानी कहनी ही पड़ेगी। और, कलाकार-छायाकार की कला की दृष्टि से, कहानी या विषयवस्तु का चयन और निर्धारण ही सबसे महत्वपूर्ण है।"

इस बात से सभी सहमत नहीं हैं कि छाया-चित्रण की कला में विषयवस्तु ही सबसे महत्व-पूर्ण और निर्णायक तत्व है। एक अन्य सिद्धान्त में, स्वयं छायाकार की चयन-क्षमता और सतत जागरूकता पर अधिक बल दिया गया है। विख्यात छायाचित्र-समीक्षिका, मार्ग्रेट वीस, ने **'सैटर्डे रिव्यू'** में प्रकाशित अपने लेख में कहा है: "छायाचित्रण की विशेष प्रतिभा वास्तविकता की खोज करने, उसे अनावृत करने, उसकी जानकारी देने और उसकी व्याख्या करने में निहित है। छायाकार की आंख देखती है; उसका कैमरा दृश्य के सम्प्रेषण और

संचार के लिए 'दृष्टि-भाषा' का प्रयोग करता है।"

विशेष 'दृष्टि-भाषा', जिसकी रूपरेखा न्यूयार्क के 'म्युजियम ग्रोव् फाइन ग्रार्ट' के छायाचित्रण विभाग के निदेशक, जान ज़ारकोवस्की, ने प्रस्तुत की है, वास्तविकता के सुरक्षित विवरण के रूप में 'स्वयं वस्तु' में; समग्र के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त 'विवरण' या ग्रंश में; विषयवस्तु ग्रौर ग्राकल्पना की व्याख्या करने वाले 'चौखटे' या छायाचित्र के किनारे में; 'प्रतिभासन-काल' में, चाहे गतिमान विषयवस्तु की कई-कई छवियां ली गयी हों या किसी विशिष्ट क्षण की स्थिर छवि खींची गयी हो; ग्रौर कैमरे के 'कोण' में, जो विषयवस्तु को ग्रधिक स्पष्टता के साथ उद्घाटित करता है, सन्निहित है।

छायाचित्रण के 'व्याकरण' के साथ-साथ उसकी प्रौद्योगिकी का भी विकास होता रहा। उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम के कुछ महत्वपूर्ण प्रगति-चिन्हों में, सन् १९२४ में ३५ एम० एम० फिल्मों का प्रयोग, ग्रौर बाद में, फ्लैश-छायाचित्रण का प्रचलन उल्लेखनीय है। फ्लैश-विधि के प्रयोग के फलस्वरूप, घर के भीतर ग्रथवा घिरी जगहों में चित्र खींचना ग्रधिक सुविधाजनक हो गया। सन् १९३१ तक तो इतना विकास हो चुका था कि हैरोल्ड एडगर्टन स्ट्रोबोस्कोपिक फ्लैश से चित्र खींचने की विधि का परीक्षण करने लगे थे। इस विधि के ग्रन्तर्गत, कैमरा बहु-प्रतिभासन की क्रिया द्वारा गतिमानता का पर्यवेक्षण करने में समर्थ होता है। इसमें पृथक-पृथक फ्लैश बल्बों का प्रयोग करने की ग्रावश्यकता भी नहीं पड़ती। फिर, रंगीन ग्रौर ग्रधिक त्वरित एवं संवेगशील फिल्मों के प्रादुर्भाव के फलस्वरूप, एक समूचे नये 'दृश्य' जगत का द्वार उन्मुक्त हो गया। टेलिफोटो ग्रौर चौड़े कोण वाले लेंसों में परिष्कार होने के फलस्वरूप भी इस प्रक्रिया में पर्याप्त योग मिला।

ग्राज शौकिया ग्रौर पेशेवर, दोनों ही, प्रकार के छायाकारों को छायाचित्रीय सूचना के प्रसारण के ग्रधिक ग्रौर विविध ग्रवसर उपलब्ध हैं। १९३० के दशाब्द के ग्रन्तिम चरण में, ग्रौर १९४० ग्रौर १९५० के दशाब्दों के दौरान, चित्रमय पत्रिकाग्रों की लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी ग्रौर वे करोड़ों ग्रमेरिकियों के लिए दृश्यगत ग्रनुभव के महत्वपूर्ण स्रोत बन गयीं। साथ ही, उनमें पेशेवर छायाकारों को ग्रपने छायाचित्र प्रकाशित करने के ग्रवसर भी मिले। यह एक ऐसी ग्रवधि थी, जिसके दौरान छायाचित्रण की वृत्तात्मक शैली का बोलबाला रहा, ग्रौर 'लाइफ' तथा 'लुक' जैसी पत्रिकाग्रों में ऊंचे स्तर के चित्र-निबन्ध ग्रौर चित्र-कथाएं ग्रत्यधिक परिष्कृत रूप में प्रकाशित हो रही थीं। ग्रागे चल कर, जब दूरदर्शन या टेलिविजन 'दृश्य प्रभाव' का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया, तब सूचना के माध्यम के रूप में बहुत सी चित्रमय-पत्रिकाग्रों का महत्व गिर गया। दूरदर्शन द्वारा तात्कालिक प्रसारण के फलस्वरूप, पत्रिकाग्रों को ग्रपनी विधियों ग्रौर दृष्टिकोणों में परिवर्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

इधर हाल में, छायाचित्र-पुस्तकें जागरूक ग्रौर गम्भीर छायाकारों के लिए ग्रभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन गयी हैं। ये पुस्तकें बड़े ग्राकार में, सुन्दर छपाई ग्रौर सजावट के साथ, बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से, प्रायः सजिल्द, प्रकाशित की जाती हैं। इन पुस्तकों द्वारा किसी विषय-वस्तु या किसी विशेष छायाकार की कृतियों के महत्व की छानबीन ग्रौर खोज, शब्दों ग्रौर छवियों के माध्यम से, इस सीमा तक की जा सकती है, जितनी पत्रिकाग्रों या सार्वजनिक प्रदर्शनों के माध्यम से सम्भव नहीं। चित्रमय-पुस्तकों के प्रकाशक, जेरी मेसन, के शब्दों में, वे "छायाचित्रों की भाव-संचार क्षमता ग्रौर मूलपाठ के सम्मिश्रण से प्रादुर्भूत एक ऐसी पूर्णतया समन्वित इकाई की प्रतीक हैं, जिसके द्वारा महत्वपूर्ण विषयों की गहन छानबीन ग्रौर समीक्षा सम्भव हो जाती है।"

किन्तु, छायाचित्रों को कला के रूप में परिणत करना न तो प्रौद्योगिकी द्वारा सम्भव है, ग्रौर न ही, प्रकाशन की विधियों द्वारा। वर्षों के दौरान छायाचित्रण की प्रगति के एक विश्लेषण से पता चलता है कि सही ग्रौर संवेदनशील छायाचित्र परिष्कृत उपकरणों ग्रौर उत्कृष्ट प्रकाशन के परिणाम नहीं हैं। "इसके बजाय," जैसा कि मिस वीस ने कहा है, "देखने की—दृश्य रूपों में ग्रभिप्राय स्पष्ट करने की—कला ही वह तत्व है, जो छायाकार की कला का सृजन करती है।" पिछले कुछ दशाब्दों के दौरान, कैमरे ने एडवर्ड स्टीचेन द्वारा प्रस्तुत ग्रपनी इस परिभाषा की सत्यता को भली भांति प्रमाणित कर दिया है कि यह "वास्तविकता की संवेगात्मक ग्रभिव्यक्ति का माध्यम, ग्रौर ग्रमूर्त भावनाग्रों को रूप देने की गतिशील क्षमता का प्रतीक, है।" इस व्याख्या में इतना ग्रौर जोड़ा जा सकता था कि कैमरा, कुछ मामलों में, विश्व को परिवर्तित करने का भी माध्यम होता है। एक ग्रन्य विचारधारा के ग्रनुसार, प्रतिभाशाली पेशेवर छायाकार ग्रपने छायाचित्रों द्वारा मानव-जाति के प्रति ग्रपनी प्रतिबद्धता ग्रौर जिम्मेदारी की गहन भावना को व्यक्त करते हैं। ग्रधिकांशतः, वे वास्तविकता या सच्चाई के सहज एवं सुरक्षित विवरण होते हैं। किन्तु, एक ग्रन्य स्तर पर, वे ऐसे संवेदनशील मनुष्यों के क्षोभ—ग्रौर कभी-कभी ग्राशा—की मुखर ग्रभिव्यक्ति भी होते हैं, जो कहते हैं: "इसे ग्राप ग्रवश्य देखिये, क्योंकि यह ग्रन्याय का एक ग्रभिलेख है," ग्रथवा, "इसे ग्राप ग्रवश्य देखिये, क्योंकि यह मानवीय शालीनता का एक प्रमाण है", ग्रथवा "इसे ग्राप ग्रवश्य देखिये, क्योंकि यह एक ऐसे प्रेम का चित्र है, जो दुर्लभ होता है।"

जहां तक स्वयं छायाचित्रण का सम्बन्ध है, यह निश्चित है कि इसका भविष्य ग्रत्यन्त उज्ज्वल है। 'फेमस फोटोग्रैफर्स मैगज़ीन' के सम्पादक, ग्रार्थर गोल्डस्मिथ, के ग्रनुसार, "मानवीय भावनाग्रों के ग्रादान-प्रदान तथा संचार के साधन के रूप में, छायाचित्रण की भूमिका पहले ही से बहुत सशक्त ग्रौर व्यापक रही है, ग्रौर भविष्य में उत्तरोत्तर ग्रौर ग्रधिक विस्तृत ग्रौर गहन होती जायेगी। भाषा की बाधाग्रों से ऊपर होने के कारण, यह एक ऐसे विश्व-समाज के लिए ग्रभिव्यक्ति ग्रौर विचारों के ग्रादान-

"मानवीय भावनाओं के आदान-प्रदान तथा संचार के साधन के रूप में, छायाचित्रण की भूमिका पहले ही से बहुत सशक्त और व्यापक रही है, और भविष्य में और भी अधिक विस्तृत और गहन होती जायेगी।"

सैम कूम्बस द्वारा निर्मित इस पारिवारिक छविचित्र में भाव-सम्प्रेषण की, दूसरों के विषय में कुछ कहने की, उत्कण्ठा प्रतिबिम्बित है।

प्रदान का सहज माध्यम बनता जा रहा है, जिसमें संचार-उपग्रहों द्वारा, जो प्रकाश की गति से भूमण्डल भर में दृश्यमान चित्रों का प्रसारण करते हैं, समूची मानव-जाति उत्तरोत्तर अधिक घनिष्ठता और एकता के सूत्र में आबद्ध होती जायेगी। छायाचित्र पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बड़े पैमाने पर शिक्षा, निर्देश और सूचनाएं देंगे। छायाचित्र एक ऐसी अन्तर्दृष्टि, एक ऐसा सौन्दर्यात्मक आनन्द, देंगे, जैसा पहले कभी सम्भव नहीं हुआ था।" प्राविधिक दृष्टि से, संयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और अधिक पराविद्युत, स्वचल एवं सूक्ष्मीकृत उपकरणों का क्षेत्र बहुत विस्तृत होगा। गोल्डस्मिथ ने आगे कहा है: "जैसे-जैसे छायाचित्रों के सार्वजनीन उपयोगों में वृद्धि होगी और वे अधिक लोकप्रिय होते जायेंगे, वैसे-ही-वैसे गम्भीर और सृजनशील छायाकार की प्रतिष्ठा भी बढ़ती जायेगी। स्वचल उपकरणों के उपयोग के कारण मानवीय तत्व निरर्थक और व्यर्थ नहीं हो जाता। सच तो यह है कि उसका परिणाम इसके ठीक विपरीत होता है। उससे तो कल्पना, रुचि और व्यक्तिगत शैली के रूप में मानवीय योगदान का मूल्य और भी बढ़ जाता है।"

इससे सहमत होते हुए, मिस वीस, छायाचित्रकला की क्षमता के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में, संक्षेप में, यह निष्कर्ष प्रस्तुत करती हैं: "हम जानते हैं कि हमारी आंखों में सीधे वही भाव पैदा होता है, जो एक सधा हुआ कैमरा हमसे कहना चाहता है—चाहे वह तथ्यात्मक रूप में कहे या कल्पनाजनित रूप में; चाहे वह कोमलता से कहे या कठोरता से; चाहे वह 'सीधी' शैली में कहे या 'वृत्तात्मक', 'प्रयोगवादी' अथवा 'समप्रभावी' शैली में। सच तो यह है कि जब कोई छायाचित्र जीवन की यथार्थता का कोई नया रहस्य खोलता है, तो प्रेम की भांति ही, दृश्य भी, पहली नजर में ही हमारी आंखों में समा जाता है।"

शिल्प की दृष्टि से, छायाचित्रण रसायनों का प्रयोग करके भा-संवेदी पदार्थों पर चित्र अंकित करने का एक साधन मात्र है। किन्तु, जैसा कि इस माध्यम के संक्षिप्त इतिहास से पहले ही स्पष्ट हो चुका है, यह, वस्तुतः, उससे कहीं अधिक है। दशाब्दों के दौरान, विकसित होकर इसने वीक्षण कला की एक विशेष शैली का रूप धारण कर लिया है—एक ऐसी विधि का, जिसके द्वारा मनुष्य अपने आसपास के संसार सम्बन्धी अपनी धारणा का पुनः सृजन और विस्तार कर सकता है।

प्रारम्भ में, एक सहज यथार्थता—एक पहचाने जा सकने वाले उदासीन विवरण—द्वारा ही यह लक्ष्य प्राप्त हो जाता था। किन्तु, आज, अधिकाधिक परिष्कृत उपकरणों और उन्नत विधियों की सहायता से छायाकार, उस सीमा से आगे बढ़ कर, यथार्थता की, जिसे वह देखता है, व्याख्या प्रस्तुत करता है और छायाचित्रों पर अपने व्यक्तित्व और अपनी अन्तर्ग्रस्तता की छाप छोड़ देता है। वह जो कुछ कहना चाहता है, उसे किसी भी ऐसी विषयवस्तु के माध्यम से, जो उसे प्रभावित करती हो, कहा जा सकता है—चाहे वह विषयवस्तु मानव शरीर का सौन्दर्य हो, कोई परिदृश्य हो, अमूर्त्त बिम्ब हो, दैनिक जीवन का क्रिया-कलाप हो, अथवा कोई अन्य वस्तु हो। इसे यथार्थ या अति-यथार्थ रूप में, सहज या असहज रूप में, प्रसन्नता के साथ या हृदयद्रावक रूप में, जैसे भी चाहें, कहा जा सकता है। उसे किसी बाक्स कैमरे से खींचे गये एक सीधे-सादे चित्र द्वारा भी उसी तरह कहा जा सकता है, जिस तरह नवीनतम किस्म के मंहगे-से-मंहगे कैमरे द्वारा सावधानी से खींचे गये चित्र द्वारा। लगातार प्रयोग करके, तथा अपने कैमरे को उसके पुराने रूप से आगे बहुत अधिक विकसित करके, आज का छायाकार मनुष्य की वीक्षण-क्षमता को परिष्कृत कर रहा है और यथार्थता को कला का रूप प्रदान कर रहा है।

समसामयिक छायाचित्रों के उदाहरण, जो इस पृष्ठ पर दिये गये हैं, इस क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न और विविध शैलियों पर प्रकाश डालते हैं। इनमें से प्रत्येक चित्र अपना संदेश पृष्ठ पर से सीधे आंख में, और वहां से, मस्तिष्क तथा हृदय में, सम्प्रेषित कर देता है। ■

वीक्षण कला

ऊपर: बर्क उज्वले; ह्वाइट सैण्ड्स नैशनल मानूमेण्ट, टेलिफोटो लेंस।

बायें: इस फैशन-छायाचित्र का असाधारण प्रभाव एकल और बहु प्रतिभासन विधियों के संयुक्त प्रयोग द्वारा सम्भव हुआ है।
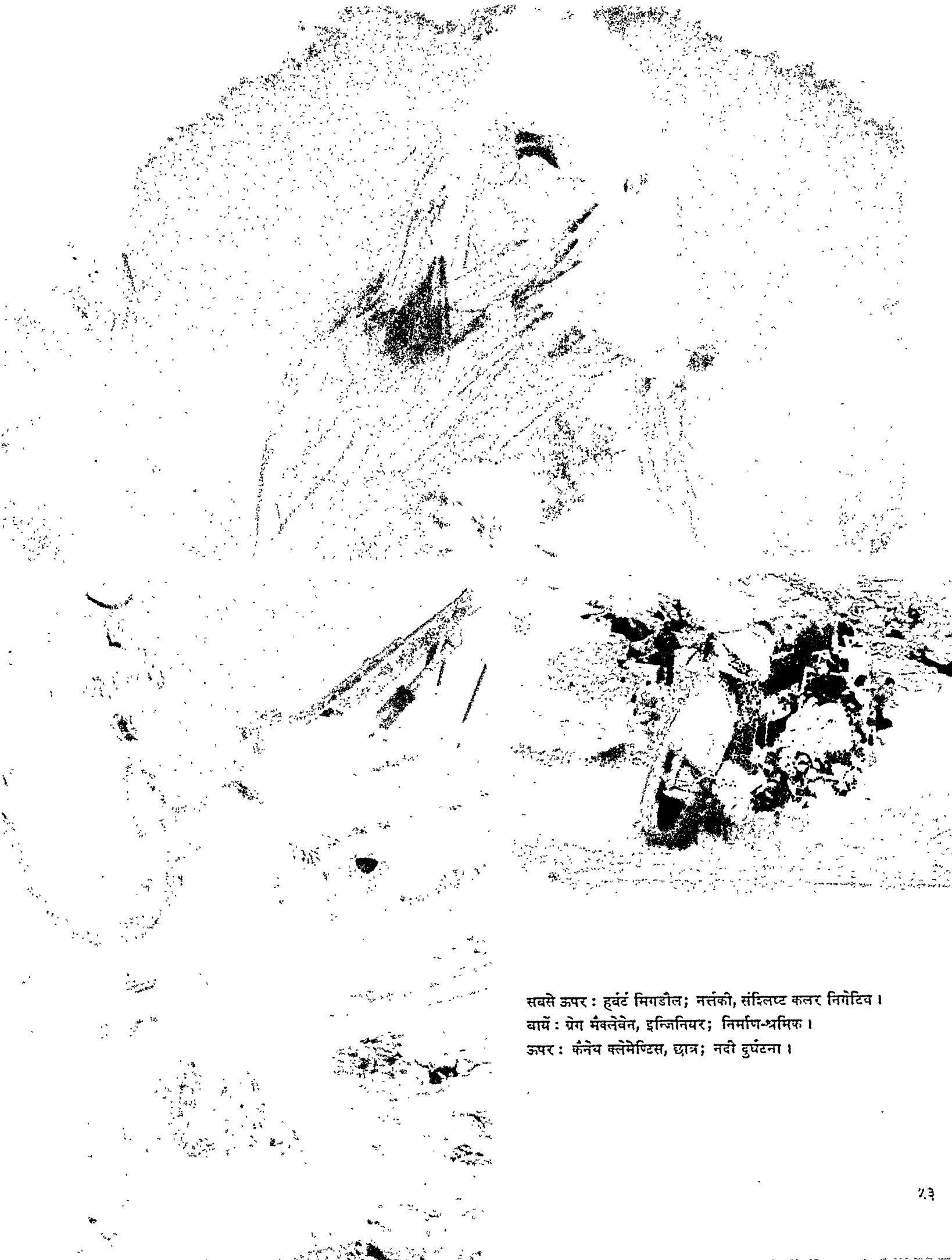
सवसे ऊपर : हर्वर्ट मिगडौल; नर्त्तकी, संश्लिष्ट कलर निगेटिव।
बायें : ग्रेग मैक्लेवेन, इन्जिनियर; निर्माण-श्रमिक।
ऊपर : कैनेय क्लेमेण्टिस, छात्र; नदी दुर्घटना।
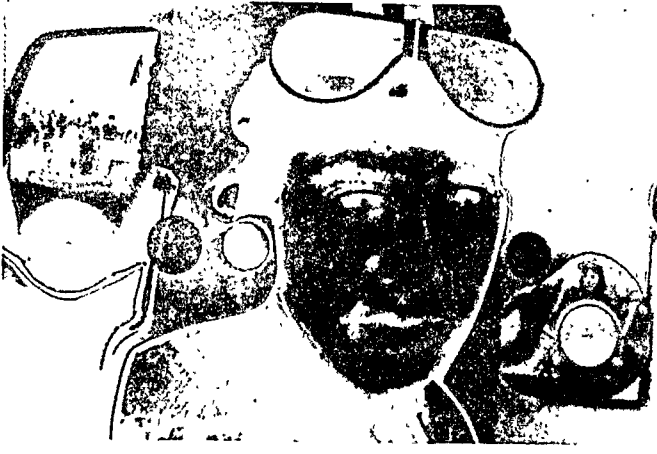
वायें : जान वुड ; मोटरसायकिल-चालक, पाज़िटिव और निगेटिव कोलाज़।

वायें, नीचे : हेनरी कल्लहन ; प्रतिमा, प्रिंटिंग के समय निगेटिव का आंशिक छायांकन।

नीचे : सुसेन ट्रुइट ; घोड़े, निगेटिव प्रिंट।

जेरी उएल्समैन ; वृक्ष और छायाएं, फिल्म की निगेटिव और पाज़िटिव छायाएं एक साथ मुद्रित।
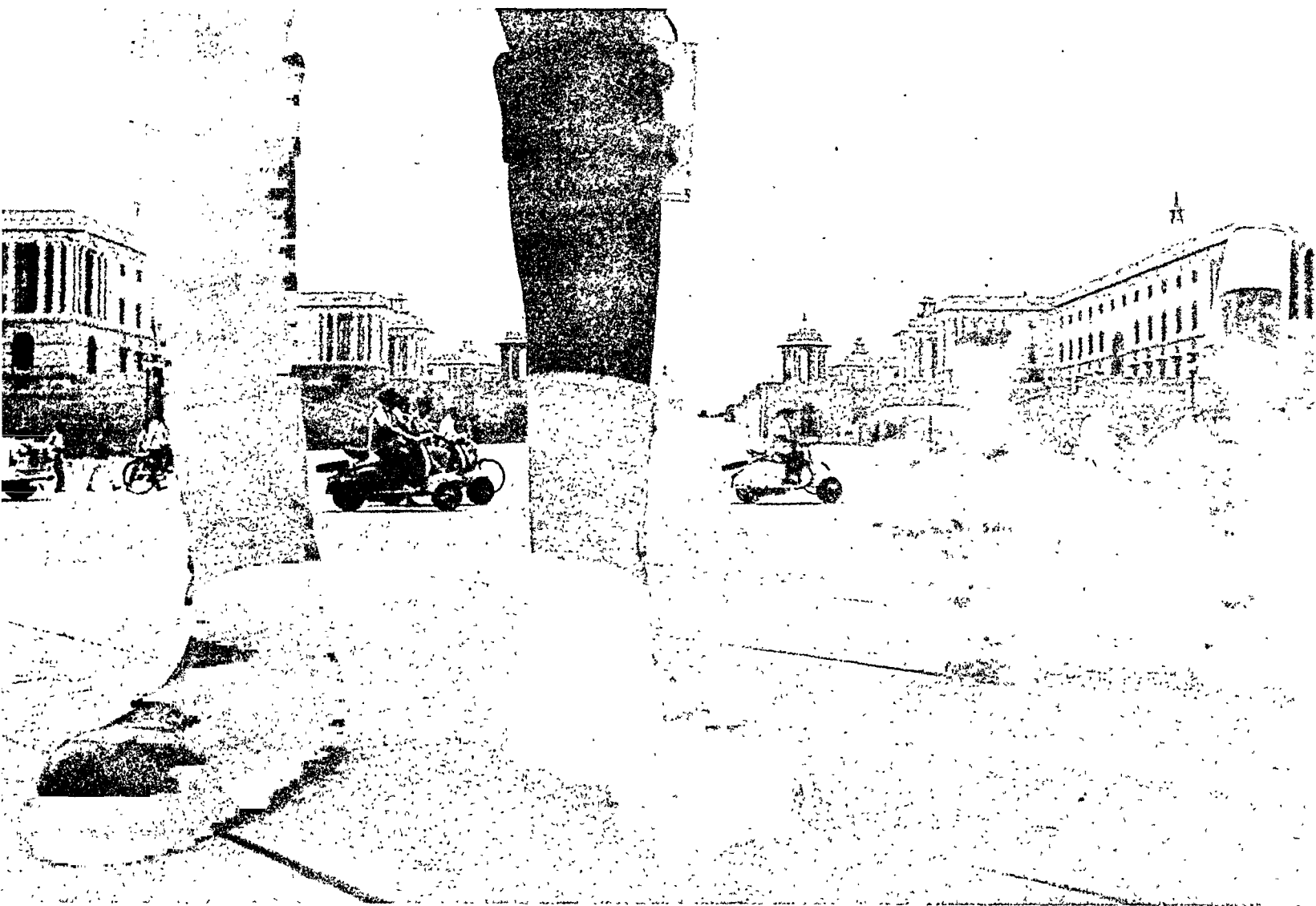
रघु राय का संसार

"मेरी रुचि सबसे अधिक जन-साधारण में है।" यह विचार है ३०-वर्षीय श्री रघु राय का, जो नई दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक, **स्टेट्समैन**, के प्रधान छायाकार हैं। जैसा कि इन पृष्ठों के चित्रों से स्पष्ट है, श्री रघु राय की कलाकृतियां केवल लोगों की छवियां ही नहीं, बल्कि बहुत कुछ और भी प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। वह किसी मनःस्थिति का, अवसाद, उद्वेग या निराशा के किसी सफल क्षण का, चित्रण करने में सदैव सफल रहे हैं।

वह कहते हैं: "अकस्मात् कोई स्थिति आप से कुछ कह उठती है, और उस पल आप फोकस पा लेते हैं। फिर तो हर चीज तत्काल उससे सम्बद्ध हो जाती है। यह प्रक्रिया सर्वथा असंकल्पित होती है, मानो कोई जादू है, जो अपने-आप हो जाता है। बाद में, जब लोग पूछते हैं, 'कैमरे की कीली दबाने के क्षण मात्र में आप ने इतना सब कुछ कैसे देख लिया?' तो आपकी समझ में नहीं आता कि उत्तर क्या दें, क्योंकि यह तो सब अपने-आप ही हो गया।"

अपने विचार स्पष्ट करते हुए, श्री रघु राय कहते हैं: "मैंने चौड़े कोण वाले लेंसों का महत्व समझ लिया है। जब मैं उनका उपयोग करता हूं, तो संसार अधिक व्यापक हो उठता है और मैं अधिक निकटता से उसका पर्यवेक्षण कर सकता हूं।"

सितम्बर, १९७० में, श्री रघु राय ने अपने छायाचित्रों की पहली एकल-प्रदर्शनी दिल्ली में आयोजित की। पिछले वर्ष के अन्तिम चरण में, उन्होंने अपने छायाचित्रों की एक प्रदर्शनी यूरोप और अमेरिका के कई नगरों में दिखलायी। उसके बाद से, उनके छायाचित्रों की ओर लोगों का अधिकाधिक ध्यान आकृष्ट हुआ है। उदाहरण के लिए, 'फोटोग्राफी ईयर बुक' के १९७२ के संस्करण में, उसके सम्पादक, जान स्लैण्ट्र्स, ने श्री रघु राय का उल्लेख करते हुए कहा है कि वह "भारत के अधिकतम बोधक्षम, ग्रहणशील और प्रतिभा-शाली छायाकार......एक विश्व-स्तर के कैमरा-कलाकार......हैं।" ■■
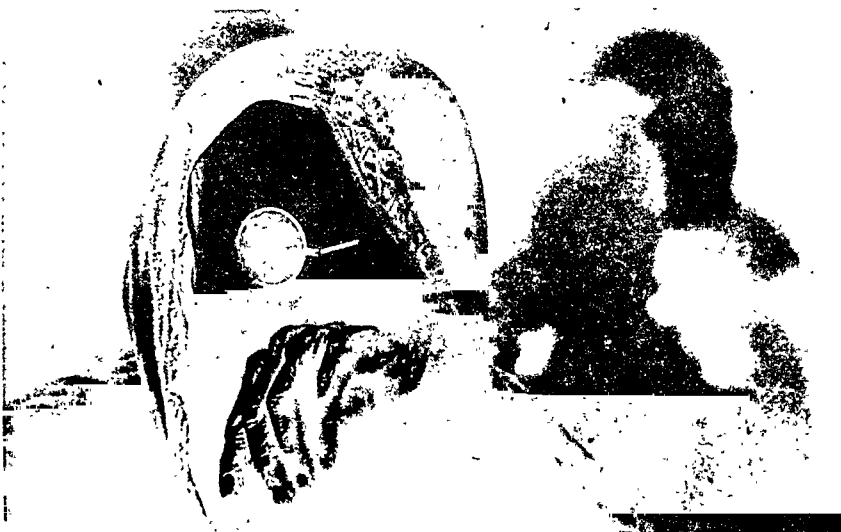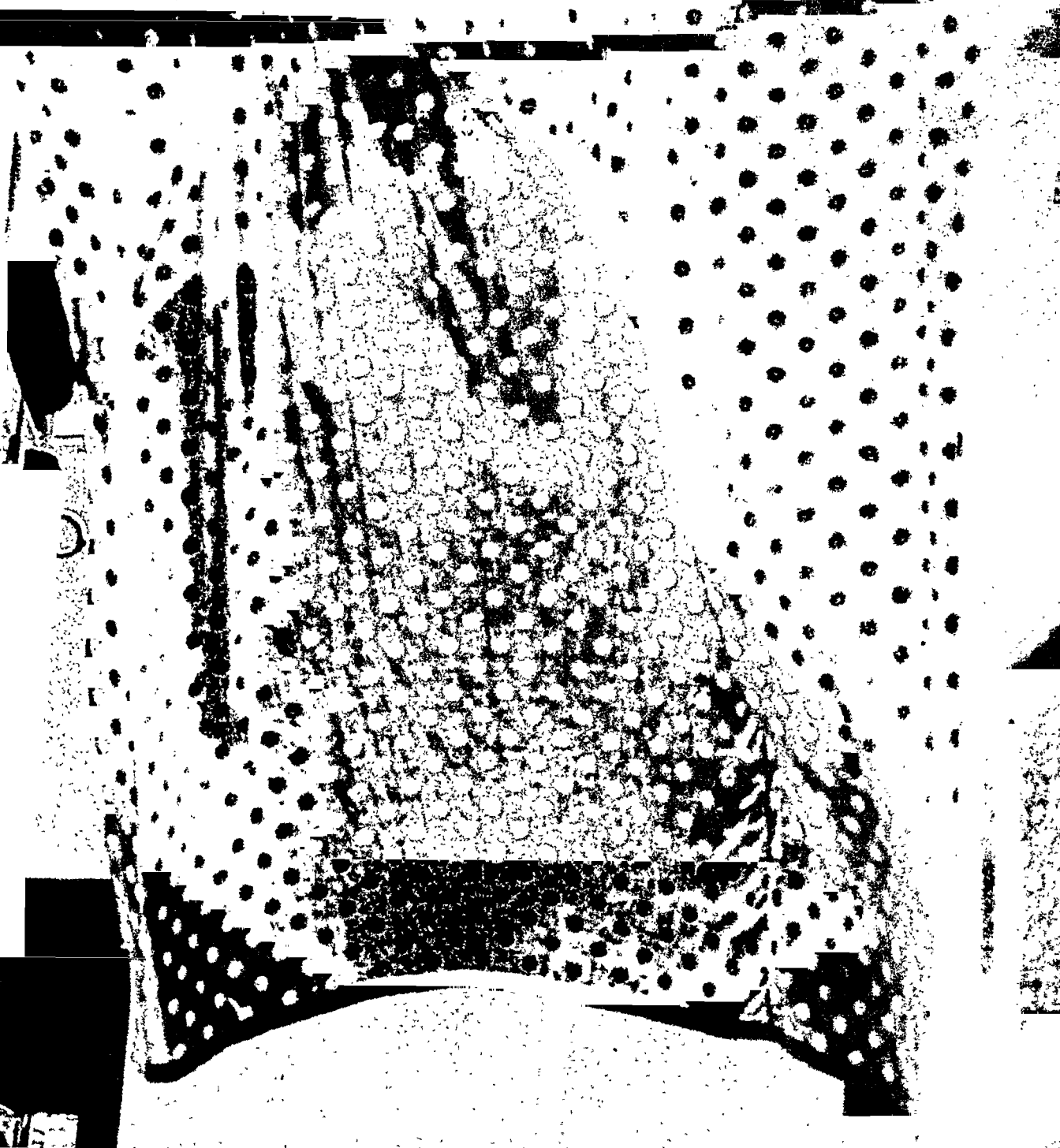
ज्योफ्रे नॉर्मन
सह-सम्पादक, 'प्लेब्वाय'

बीसवीं शताब्दी ने भाषा को गहरा आघात पहुंचाया है। युवा पीढ़ी के लोग आपसी बातचीत में हर प्रकार की अश्लीलता और मूढ़तापूर्ण गंवारू भाषा का खुल कर प्रयोग करने लगे हैं; नौकरशाही की सौम्य, स्निग्ध, शब्दावली अब उनकी पिछली पीढ़ियों, बड़े-बूढ़ों, की शैली बन कर रह गयी है; और राजनीतिक वाग्मिता इतनी शुष्क हो गयी है, जितनी पहले कभी नहीं थी। आज की एक घिसी-पिटी उक्ति है : 'वे तो केवल शब्द हैं, उनका कोई अभिप्राय नहीं।' ऐसा लगता है कि कवि, जो भाषा के संरक्षक माने जाते हैं, कहीं लुक-छिप गये हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो आग्रह करते हैं कि कविता मरी नहीं है, कि यह अब भी पहले जैसी ही सशक्त है, कि बीटल और बौब डिलन हमारे इस युग के वर्ड्सवर्थ हैं। इस तरह के दावों से यही सिद्ध होता है कि भाषा की सटीकता एक नीरस गुण है; डिलन और बीटलों ने, निश्चय ही, गीत लिखे हैं। परन्तु, काव्यात्मकता की सही कसौटी क्या है? कविता लिखता कौन है?

जेम्स डिकी को उनकी पुस्तक, '**बकडान्सर्स च्वायस**', पर राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार मिला है, और राबर्ट लावेल की भांति उन्हें भी अपनी पीढ़ी के प्रमुख अमेरिकी कवियों की पंक्ति में होने का सम्मान प्राप्त है। किन्तु, डिकी में, स्पष्टतः, उन अटपटे गुणों का अभाव है, जो लोगों की धारणा के अनुसार, कवियों में होने चाहियें। दूसरी ओर, क्षीणकाय, दुर्बल, तंगदस्त, और दुनिया को पीड़ा भरी दृष्टि से देखने वाले लावेल सर्वगुण-सम्पन्न हैं—उनमें प्रतिष्ठा, स्वाभिमान, घृणा, पीड़ा और विराग की भावनाएं ठीक उसी अनुपात में हैं, जितनी होनी चाहियें। ४९ वर्ष की आयु, ६ फुट ३ इंच ऊंचे कद और २१५ पौण्ड वजन वाले डिकी अपने बालुई रंग

डिकी अपने सीधे-सादे, स्पष्ट, बिम्बों और तारतम्यपूर्ण विवरण के कारण जनता के कवि बन गये हैं—साहित्यिक अर्थ में, राजनीतिक अर्थ में नहीं।

के झड़ते-छीजते वालों को ब्रुश से अपने प्रशस्त ललाट पर पीछे की ओर तथा आरपार सँवारते हुए, और अपने भारी भरकम, अधीर, हाथों को हाव-भाव प्रकट करने या यों ही उद्विग्नता में हमेशा हिलाते-डुलाते हुए, एक फुटवाल-प्रशिक्षक जैसे दिखलायी पड़ते हैं। लेकिन, वह कवि हैं। फुटवाल-प्रशिक्षक पाल डीत्ज़ेल सड़क के उस पार, डिकी के मकान के सामने, अपना मकान वनवा रहा है। जब वह अपने नये घर में आकर रहने लगेगा, तब कवि डिकी के साथ उसकी ढेर सारे विषयों पर गपशप हुआ करेगी, क्योंकि कवि भी एक वार फुटवाल के खिलाड़ी रह चुके हैं और अब भी उनका खिलाड़ीपन उनमें काफी-कुछ वाकी है।

असल में, जब डिकी १९४२ में क्लेम्सन विश्वविद्यालय में दाखिल हुए, तब उन्हें फुटवाल खेलने का बड़ा शौक था। उन्होंने अपने नगर, एटलाण्टा, के एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ते समय, स्कूल की फुटवाल टीम में हाफबैक के रूप में अपने को चमकाया था। कालेज में वह और अधिक फुटवाल खेलने तथा पशु-पालन विज्ञान की शिक्षा लेने की उत्कट इच्छा लेकर भरती हुए थे। शायद उनके मन में पशु-चिकित्सक वनने की अस्पष्ट अभिलाषा थी। कालेज की टीम में नये-नये आये खिलाड़ी के रूप में, वहाँ उन्हें खेलने का अच्छा मौका मिला। फिर, कालेज की पढ़ाई अधूरी छोड़ कर वह वायुसेना में भरती हो गये, क्योंकि तब तक द्वितीय महायुद्ध छिड़ चुका था। उनकी असाधारण दृष्टि-शक्ति के कारण उन्हें वायुसेना में रात में लड़ने वाले दस्ते में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिल गया।

डिकी ने साहित्य की दुनिया में युद्ध के दिनों में प्रवेश किया। श्वेत प्रवाल की हवाई पट्टियों पर, वह प्रतीक्षा की घड़ियों को विशेष सैनिक पुस्तकालय से ली हुई पुस्तकें पढ़ने में विताते थे। पढ़ते-पढ़ते उनमें एक तरह की सौन्दर्यात्मक अनुभूति उत्पन्न हुई, जिससे वह विलियम फौकनर, टामस वुल्फ और जेम्स ऐगी जैसे कवियों को तुलनात्मक दृष्टि से समझने में समर्थ हुए। इनके वारे में उनका निष्कर्ष यह रहा कि वे ऐसे असफल कवि हैं, जो काव्यात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए गद्य का उपयोग कर रहे हैं। सीलन भरे शिविरों में, उन्होंने कविता का पहली बार गम्भीर अध्ययन किया। उन्होंने काव्य-संकलन पढ़े, और उनमें से अपनी रुचि की कविताएं चुनीं। कविताओं के सम्बन्ध में अपनी रुचि का आधार स्पष्ट करने के लिए उन्होंने एक सिद्धान्त निरूपित करने की चेष्टा की। और, उन्होंने स्वयं भी थोड़ी-थोड़ी कविता लिखनी शुरू कर दी।

महायुद्ध समाप्त हो गया और डिकी सेना से मुक्त होकर अपने घर लौट आये। उन्होंने फिर से कालेज में भरती होकर अध्ययन प्रारम्भ करने का फैसला किया। २६ वर्ष वीत गये, लेकिन उनकी कुछ सर्वोत्तम कविताओं में स्पष्ट झलकता है कि युद्ध अब भी उनके साथ है:

"और, यान्त्रिक वृत्ति का कोई अपरिचित
मेरे ही हाथों को धारण किये
वैठा है,
नीले प्रकाश के माणिक-मणि कोष में,
नीचे निज डैनों की
अनिर्गन्वित भुजाओं के
धारे हुए सम्भावित ज्वाला
वमों की कृशकाय लड़ियों पर,
आंसू के सीकर से रूप वाली
नापाम, गैसोलिन पूरित ड्राप-टंकियां
३०० गैलन की।"

वह लड़ाई के वारे में वातें करते हैं—असली मुठभेड़ के वारे में नहीं, वल्कि अपने सुखद, पूर्वानुमेय, जीवन को त्याग कर सैनिक सेवा, उड्डयन तथा, अन्ततः, युद्ध में जाने के कारण निजी जीवन में आयी विशृंखलता के वारे में; इस वारे में कि किसी दक्षिण-पश्चिमी धूल भरे हवाई अड्डे पर तैनात होना और सैकड़ों अपरिचितों के साथ वायुयान उड़ाने का खतरनाक प्रशिक्षण लेना कैसा लगता है; और इस वारे में कि सैनिकों के जीवन पर इन सवका क्या प्रभाव पड़ता है, सैनिक जीवन की कठिन परिस्थितियां किस प्रकार सैनिकों को एक-दूसरे के निकट आने के लिए विवश कर देती हैं, कैसे वे आपस में घनिष्ठ मित्र वन जाते हैं, किन्तु साथ ही, कठोर वनने के लिए भी विवश होते हैं, क्योंकि उनमें वहुत-से ऐसे होते हैं, जो सीख नहीं पाते, और इसलिए, या तो उनको नौकरी से निकाल दिया जाता है, या वे किसी दिन किसी दुर्घटना में अपने प्राणों से हाथ धो वैठते हैं। अव डिकी का कहना है: "सेना ही एक ऐसी जगह है, जहां आप किसी आदमी को यह कहते सुनेंगे, 'मुझे जाना पड़ रहा है, लेकिन तुम मेरे इस मित्र का ख्याल रखना।' आपको मनुष्यों में इस तरह का पारस्परिक स्नेह और कहीं नहीं मिलेगा।" विमान उड़ाने का प्रशिक्षण लेने के सिलसिले में प्राप्त अपने अनुभवों के आधार पर अव वह एक उपन्यास लिखना चाहते हैं।

युद्ध से लौटने के वाद, साहित्य के प्रति जागृत अपनी नयी पिपासा को तृप्त करने के लिए वह किसी ऐसे विद्यालय में अध्ययन करना चाहते थे जो उनकी इस आवश्यकता की सबसे अधिक पूर्ति कर सके। उन्होंने इसके लिए वैण्डरविल्ट को चुना, जिसका अंग्रेजी विभाग किसी भी दक्षिणी स्कूल के अंग्रेजी विभाग की तुलना में अधिक पुराना था और जिसकी प्रतिष्ठा भी सवसे ऊंची थी। वहां वह फुटवाल नहीं खेल सकते थे, क्योंकि एक सम्मेलन के नियमानुसार, अन्य कालेजों से आये छात्र इस अधिकार से वंचित थे। इसलिए, खेल-कूद की अपनी भूख मिटाने के लिए उन्होंने दौड़ के मैदान का रास्ता चुना। वह वाधा-दौड़ का अभ्यास करने लगे। यह ऐसा खेल था, जिसके लिए उनका शरीर नहीं वना था, लेकिन, आखिर, लगन भी तो कोई चीज होती है। उन्होंने अपने इस चारित्रिक गुण के कारण वाधा-दौड़ का अच्छा अभ्यास कर लिया। स्नातकीय परीक्षा उन्होंने प्रशंसा-पत्र के साथ उत्तीर्ण की और 'फी वीटा कप्पा' के सदस्य वन गये। फिर, एक ही वर्ष में एम० ए० की उपाधि भी प्राप्त कर ली। तदनन्तर, उनकी नियुक्ति अंग्रेजी के अध्यापक के पद पर ह्यूस्टन स्थित राइस विश्वविद्यालय (तब इसका नाम राइस इन्स्टिट्यूट था) में हो गयी। लेकिन, एक साल वाद ही, कोरिया-युद्ध में जाने के लिए उन्होंने फिर सैनिक वर्दी पहन ली।

इस वार उन्हें मुठभेड़ों में भाग लेने का अवसर कम ही मिला; अपनी पहली सैन्य सेवा के दौर में उन्हें जितना मैत्रीपूर्ण वातावरण मिला था, उतना इस वार नहीं मिला। इस वीच, उन्होंने मैक्सिन सायर्सन से विवाह कर लिया था। उनका एक छोटा-सा शिशु भी था, जिसका नाम उन्होंने क्रिस्टोफर रखा था। कुछ समय तक नये विमान-चालकों को उड्डयन का प्रशिक्षण देने के वाद, उन्हें सक्रिय सैन्य सेवा से पुनः मुक्ति मिल गयी। वह राइस लौट आये। वह विद्यालय, वस्तुतः, उन्हें वापस नहीं लेना चाहता था। अधिकांश भूतपूर्व सैनिकों की तरह, शैक्षणिक जगत के लिए उनके हृदय में कोई विशेष श्रद्धा नहीं थी। अपने वरिष्ठ अध्यापकों की दृष्टि में, वह जल्दवाज़ थे, अश्रद्धालु थे, अवज्ञाकारी थे और वेहद शराव पीते थे। इस तनावपूर्ण और असुविधाजनक वातावरण में, उन्होंने किसी तरह दो साल तो काट लिये, लेकिन जैसे ही उन्हें लेखन-कार्य के लिए एक अनुदान प्राप्त हुआ, उन्होंने उस नौकरी को धता वतायी और वहां से विदा ले ली।

लेखन-कार्य के लिए उन्हें यह अनुदान प्राप्त हुआ 'सेवानी रिव्यू' नामक पत्रिका से, जिसमें डिकी की प्रथम प्रकाशित कविता, 'दि शार्क ऐट दि विण्डो', सन् १९५१ में छपी थी। पत्रिका ने उनको इस कविता के लिए २७ डालर पारिश्रमिक दिया था। अव, १९५४ में, उसी पत्रिका वाले उन्हें ३,५०० डालर देने के लिए तैयार थे, ताकि वह कहीं दूर जाकर अपना लेखन-कार्य दत्तचित्तता से कर सकें। वह अपने परिवार सहित एण्टाइव्स अन्तरीप चले गये और अपने काम में जुट गये। जव पैसा चुक गया, तव वह अमेरिका लौट आये और अध्यापन करने लगे। इस वार, उन्होंने अध्यापन के लिए फ्लोरिडा विश्वविद्यालय को चुना।

एक वर्ष पश्चात्, शिक्षक-जीवन की

कभी फुटबाल के खिलाड़ी और अब कवि, जेम्स डिकी, के गीतों में युद्धक विमान-चालक के रूप में युद्ध के संत्रास, और डोंगी के माँझी के रूप में तीव्र जलधारा से संघर्ष, की अनुभूतियां मुखरित हुई हैं।

अकिंचनता से ऊब कर, तथा अपने भीतर डाक्टर की उपाधि लेने के लम्बे, नीरस और पाण्डित्यपूर्ण मार्ग को अपनाने की इच्छा न पाकर, उन्होंने न्यूयार्क का रास्ता लिया। वहां वह कोई ऐसा काम करना चाहते थे, "जिससे मैं अपने परिवार के लिए कुछ धन कमा सकूं।" डाक्टर की उपाधि प्राप्त करके, वह शैक्षणिक सुरक्षा और अपेक्षाकृत अधिक समृद्धि का मार्ग चुन सकते थे, परन्तु उन्होंने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया, क्योंकि उनका ध्यान लेखन-कार्य की ओर से—इन दिनों वह खूब जम कर लिखने लगे थे—हट जाता। अगले छः वर्षों तक, उन्होंने विज्ञापन-आलेख तैयार करने का कार्य किया; पहले यह कार्य उन्होंने मैनहट्टन में किया, और बाद में, अपने मूल निवास-स्थान, एटलाण्टा, में। लिखने में तो वह अच्छे थे ही, खास-खास हिसाब-किताब रखने की भी उन्हें अच्छी जानकारी थी। इसलिए, उन्होंने वहां रहते हुए अच्छी-खासी कमाई शुरू कर दी। १९६० में, जब उन्हें विज्ञापन-व्यवसाय में प्रवेश किये पांचवाँ वर्ष हो चुका था और वह प्रतिवर्ष ५०,००० डालर कमाने लगे थे, उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ। जैसा कि अधिकांश कविता-पुस्तकों का भाग्य होता है, यह पुस्तक भी बिकी नहीं, लेकिन यह डिकी के जीवन में एक नाजुक मोड़ की सूचक अवश्य थी। वह ३७ वर्ष के हो चुके थे; एटलाण्टा की एक बड़ी विज्ञापन एजेन्सी के वह सृजनात्मक निदेशक थे; उस पद के उत्तरदायित्वों को निभाने के बाद, उनके पास लिखने के लिए बहुत थोड़ा समय बच पाता था। इस बीच, उनके दूसरे पुत्र, केविन, का भी जन्म हो चुका था। उनकी पारिवारिक आवश्यकताएं पहले की अपेक्षा बढ़ गयी थीं। फिर भी, उन्होंने अपना एक कविता-संग्रह प्रकाशित कर ही दिया। दस वर्षों से उनकी कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आ रही थीं; विज्ञापन-आलेख तैयार करने का उनका उद्देश्य तो केवल धन कमाना था।

उनके सामने विकल्प सीधा और स्पष्ट था: या तो वह उच्च मध्यम वर्ग की आरामदेह जिन्दगी बिताने का फैसला कर लें और व्यवस्थित होकर रहें, या इसे छोड़ दें और कविताएं लिखें—और, इस तरह, अपने परिवार की आर्थिक सुरक्षा को, जिसके लिए उन्होंने पहले विज्ञापन को अपनाया था, संकट में डालें। उन्होंने इस प्रश्न पर अपनी पत्नी से विचार-विमर्श किया, गम्भीरतापूर्वक सोचा और, अन्ततः, नौकरी छोड़ दी। बेरोजगारी की पहली सुबह, वह बहुत तड़के उठे और अपनी कार में बैठ कर एक धनुर्विद्या-अभ्यास क्षेत्र की ओर चले गये। लक्ष्य-वेध का अभ्यास उनका प्रिय मनोरंजन है: उन्होंने लक्ष्य-वेध करने में विशेष दक्षता प्राप्त कर ली है; इसमें उनको कई ट्राफियां मिल चुकी हैं; जंगल में उन्होंने कई हिरनों का शिकार भी किया है। उस दिन धनुर्विद्या का अभ्यास करने के मैदान में वह अकेले ही टहल रहे थे, क्योंकि क्लब के दूसरे सदस्य उस समय अपने-अपने कार्य में व्यस्त थे। टहलते-टहलते उनके मन में यह विचार चल रहा था कि नौकरी छोड़ कर उन्होंने ठीक ही किया। उन्हें अब तक उस दिन के अपने मानसिक चिन्तन की स्मृति है। उन्होंने सोच कर देख लिया कि विज्ञापन का क्षेत्र उनका अपना क्षेत्र नहीं था; उसमें उनके टिके रहने की कोई सम्भावना कभी थी ही नहीं।

लेकिन सब चीजों के व्यवस्थित होने में थोड़ा समय लगा। धीरे-धीरे उनको प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि और धन—सब कुछ मिलने लगा; हालांकि कई कवियों को जीवन भर ये चीजें नहीं मिल पातीं। ऐसा भी समय आया, जब उन्हें सरकार द्वारा दिये जाने वाले गुजारे पर निर्भर रहना पड़ा। पहले कुछ वर्षों तक वह इधर-उधर घूमते रहे। निमन्त्रण पाने पर वह कहीं-कहीं कविता-पाठ भी करने जाते रहे। इसके लिए कभी-कभी तो पत्रं-पुष्पं के रूप में उन्हें बस-टिकट के अलावा केवल ७५ डालर की तुच्छ धनराशि भी स्वीकार करनी पड़ती थी। उन्होंने ५,००० डालर के गगेनहाइम अनुदान पर एक वर्ष यूरोप में बिताया। फिर, वह अमेरिका लौट आये, और अधिष्ठित कवि (पोएट-इन-रेजिडेंस) के रूप में क्रमशः रीड कालेज (१९६३–६४), सन् फरनैण्डो वैली स्टेट कालेज (१९६४–६६) और विस्कौन्सिन विश्वविद्यालय (१९६६) में कार्य किया। १९६६ में, उन्होंने राष्ट्रीय पुस्तक पुरस्कार जीता और इसके साथ ही ७५ डालर पारिश्रमिक के लिए की जाने वाली बस-यात्राओं के दिन भी बीत गये। अब तो वह कविता-पाठ के लिए ३,५०० डालर पारिश्रमिक लिया करते हैं।

१९६६ में, वह अमेरिकी कांग्रेस पुस्तकालय के परामर्शदाता कवि नियुक्त हुए। उन्हें यह पद श्री स्टीफेन स्पेंडर के अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त प्राप्त हुआ। वह इस पद पर १९६८ तक रहे। तभी उनको अपना वर्तमान पद—कोलम्बिया के दक्षिण कैरोलाइना विश्वविद्यालय में अधिष्ठित कवि का पद—मिल गया। १९७० में, ४७ वर्ष की आयु में, उन्हें वह सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त हुई, जिसका अधिकांश कवि अपने जीवन भर स्वप्न देखते रहते हैं।

इसी वर्ष बसन्त ऋतु में, उनका पहला उपन्यास, **'डेलिवरेन्स'**, प्रकाशित हुआ। यह अधेड़ावस्था के चार मध्यमवर्गीय पुरुषों की कहानी है। वे अपने में से सबसे अधिक बलिष्ठ तथा साहसी पुरुष के आग्रह पर ज्योर्जिया की एक उफनती नदी में बहाव की दिशा में नौका-यात्रा करने का निश्चय कर लेते हैं। रास्ते में, उनको हत्या, गुदा-मैथुन और डाकुओं के आक्रमण का सामना करना पड़ता है, और यहां तक कि वे नदी में डूबते-डूबते बचते हैं। डिकी के शब्दों में, "यह कहानी बताती है कि शिष्ट-शालीन व्यक्ति भी कैसे हत्या कर सकते हैं और जब आदमी की जान पर बन आती है, तब वह अपनी जान बचाने के लिए क्या-कुछ नहीं कर गुजरता।" इस पुस्तक को लिखने का विचार उन्हें यूरोप में सूझा था। इसे पूरा करने में उन्हें सात वर्ष लग गये। पुस्तक की समीक्षाएँ उत्साहवर्धक थीं और उस साल के शेष महीनों में यह सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों की सूची में शामिल रही।

वार्नर ब्रदर्स ने इस उपन्यास के फिल्मांकन का अधिकार खरीद लिया और पटकथा लिखने की जिम्मेदारी डिकी पर ही डाल दी। १९७० में प्रकाशित होने वाली अपनी दो अन्य पुस्तकों का लेखन-कार्य समाप्त करने के बाद, उन्होंने उस साल की गर्मियों में अपने उपन्यास की पटकथा भी तैयार कर डाली। १९७० में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में से एक थी, **'सेल्फ इण्टरव्यूज'**, जिसको लिखने का विचार उन्हें नार्मन मेलर से वार्तालाप करते समय मिला था। दूसरी पुस्तक, **'दि आईबीटर्स, ब्लड, विक्टरी, मैडनेस, बकहेड ऐण्ड मर्सी'**, कविताओं का एक संकलन थी। यह पुस्तक **'डेलिवरेन्स'** से एक महीना पहले प्रकाशित हुई थी।

लेकिन, १९७० में डिकी को जो ख्याति और प्रसिद्धि प्राप्त हुई, उसका श्रेय, मुख्यतः, उनके उपन्यास, **'डेलिवरेन्स'**, को ही है। निस्सन्देह, कविता के कारण भी उन्हें साहित्यिक समाज में समुचित प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा मिली; साथ ही, उन्हें अच्छा-खासा धन भी प्राप्त हुआ। उनके सरल एवं स्पष्ट बिम्ब-विधान तथा तारतम्यपूर्ण वर्णनात्मक शैली के फलस्वरूप, उन्हें 'जनता का कवि'—साहित्यिक अर्थ में, राजनीतिक अर्थ में नहीं—होने का गौरव प्राप्त हो गया। जहां अन्य कवि अधिक दुर्बोध और चौंकाने वाले होते गये, वहां वह अपनी कविता को अधिक से अधिक बोधगम्य और स्पष्ट बनाने के लिए सतत सचेष्ट रहे। परन्तु, इस युग में, कोई भी कवि, चाहे जनता में उसकी कितनी ही प्रतिष्ठा और प्रशंसा क्यों न हो, उपन्यासकार जैसी प्रसिद्धि या प्रभाव अर्जित नहीं कर सकता।

फिर भी, डिकी की कविता को कालान्तर से जो अपेक्षाकृत अमुखरित सफलता प्राप्त हुई, उसके कारण ही उन्हें प्रथम कोटि का एक अनूठा उपन्यासकार होने का सम्मान प्राप्त हो सका है। किन्तु, उपन्यास की बिक्री से प्राप्त धन ने भी, जो कम-से कम ५ लाख डालर होगा, उनके रहन-सहन और स्वभाव में किसी तरह का परिवर्तन नहीं आने दिया। वह और मैक्सिन अब भी उसी मकान में रहते हैं, जो २२ वर्षों के उनके विवाहित जीवन का ३२वां मकान है। उस मकान को देखकर उन लोगों को तो जरूर आश्चर्य होगा, जिन्होंने डिकी के विषय में तरह-तरह की बातें सुन-सुन कर उनकी एक कल्पना-मूर्ति गढ़ रखी है। कोलम्बिया, दक्षिणी कैरोलाइना, के उपान्त में, एक मानव-निर्मित झील के किनारे बना हुआ, उनका यह एक-मंजिला मकान आकर्षक है; उसके सामने लगभग एक-चौथाई एकड़ का लान है, जिस पर जहां-तहां, फूलों से लदे, सीधे-तने, श्रीतालीश और पतले-छरहरे चीड़ के वृक्ष खड़े हुए हैं। मकान के भीतरी कक्ष में पुस्तकों से अटी आलमारियां सुशोभित हैं। आवास-कक्ष की एक दीवार पर एक पोर्ट्रेट लगा है। वह एलेघनी एयरलाइन्स की एक महिला कर्मचारी द्वारा पानी के रंगों से निर्मित छोटा-सा चित्र है। विमान की उड़ान के दौरान, उसका एक दरवाज़ा रहस्यमय ढंग से खुल जाने के कारण वह युवती ५,००० फुट की ऊंचाई से गिर कर काल-कवलित हो गयी थी। इस दुर्घटना का विवरण **'न्यूयार्क टाइम्स'** के एक छोटे-से स्तम्भ में प्रकाशित हुआ था। उसी से प्रभावित होकर डिकी ने अपनी एक सबसे लम्बी, सर्वाधिक कल्पनात्मक और कदाचित् सर्वोत्तम कविता, 'फालिंग', का प्रणयन किया था। उन्होंने अपनी इस कविता में इस घटना को अमेरिका के मध्य-पश्चिमी प्रदेश (मिडवेस्ट) में घटते दिखाया है। विमान रात में चमकीले सफेद बादलों को चीरते हुए कई हजार फुट की ऊंचाई पर उड़ान भर रहा होता है, तब वह लड़की सहसा उस पर से गिर पड़ती है; गिरते हुए वह अपने वस्त्रों के टुकड़े नोच-नोच कर फेंकती जाती है, ताकि कन्सास के अनाज के खेतों में गिर कर, अपनी अपरिहार्य मृत्यु को वरण करने से पूर्व, वह एक काल्पनिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर सके। **'दि न्यूयार्कर'** में इस कविता के प्रकाशित होने के बाद, यह चित्र डिकी के पास कहीं से आया। इसे उस आदमी ने भेजा था, जो उस यात्रा की अन्तिम मंजिल पर उस युवती से मिलने की आशा में अपनी आंखें बिछाये प्रतीक्षा कर रहा था। उस आदमी ने इच्छा की थी कि डिकी उस चित्र को और युवती द्वारा उसके पार्श्व में लिखित फ्रांसीसी कविता को अपने पास रख लें।

आवास-कक्ष से कुछ हट कर डिकी का कार्यालय-कक्ष है, जहां से उन्होंने पुराने ढंग के टाइपराइटर को हटा कर उसकी जगह विद्युत्-चालित नये टाइपराइटर को दे दी है। उन्होंने यह नया टाइपराइटर यह सोच कर खरीदा कि उसकी तेज रफ्तार दैनिक पत्र-व्यवहार और लेखन-कार्य को जल्दी-जल्दी निपटाने में मदद देगी। यह कमरा गिटारों, धनुषों, ट्राफियों, एक रेकर्डप्लेयर, और पाण्डुलिपियों तथा पुस्तकों से भरे सन्दूकों से अटा पड़ा है। अपने निजी सचिव के लिए, जो विश्वविद्यालय का छात्र है, डिक्टाफोन में वह जो पत्रिका रेकार्ड कराते हैं, उसमें वह अपने-आपसे कहते है: "मेरे दफ्तर में जो अस्तव्यस्तता फैली है, उसको दुरुस्त करने के लिए मुझे कुछ करना ही पड़ेगा।"

डिकी को यह मकान बहुत पसन्द है। अपना समय अन्यत्र बिताने के बजाय, इस मकान में बिताना उन्हें अच्छा लगता है। वह घर में हों, दिन सुहावना हो और उनके मन में मौज उठ जाय, तो वह अपनी विशाल काया को अपनी फटीचर-सी नीली स्पोर्ट्स कार में किसी तरह ठूंसकर बैठ जाते हैं—कार की छत को उनका सिर लगभग छू रहा होता है और उनके कन्धे इस कदर भिंचे-सिकुड़े होते हैं, मानों वह एक बार फिर किसी युद्धक विमान के छोटे से चालक-कक्ष में घुसे बैठे हों; फिर, कार चलाते हुए, वह कोई पन्द्रह मील दूर स्थित एक धनुर्विद्या-अभ्यास क्षेत्र की ओर निकल पड़ते हैं, जो कोलम्बिया के इर्द-गिर्द चीड़ और छोटे ताड़ के वृक्षों से घिरे देहात के बीच पड़ता है।

धनुर्विद्या का अभ्यास करने के पश्चात्, वह भारोत्तोलन, डंडों से ठोड़ी छुलाने और छाती चौड़ाने, आदि का अभ्यास करते हैं और अपने शरीर को इतना चुस्त-दुरुस्त रखने की कोशिश करते हैं कि उन्हें देख कर उनसे २० साल कम उम्र के नौजवान भी उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। इतना सब करने के बावजूद, उनका वजन उनके उन दिनों के वजन से, जब वह खिलाड़ी थे, कुछ पौण्ड ज्यादा है, और इसकी उन्हें चिन्ता लगी रहती है। व्यायाम करने के अनन्तर, वह कुछ देर तक गिटार बजाते हैं और कभी-कभी झील के चारों ओर चार मील की दौड़ लगा आते हैं। तत्पश्चात्, वह फुहारा-स्नान करते हैं, थोड़ी-सी मदिरा पीते हैं और अपनी पत्नी के साथ भोजन करने बैठते हैं। सुहावने दिनों में, वह अपने मकान के ऊंचे चबूतरे पर, जिसके सामने झील का सौन्दर्य बिछा होता है, खाना खाते हैं। तीसरे पहर, वह अपनी कक्षाएं पढ़ाने के लिए कालेज चले जाते हैं, या अपने अव्यवस्थित कार्यालय में बैठ कर काम करते हैं: पत्रों के उत्तर लिखवाते हैं, कविताएं पढ़ते हैं—बहुधा वह इतालवी, फ्रांसीसी, स्पेनी या जर्मन भाषा की कविताएं पढ़ते हैं—या लिखते हैं। रात्रिकालीन भोजन से कुछ पहले वह, इच्छा हुई तो, एक झपकी ले लेते हैं। रात को उन्हें कोलम्बिया में अक्सर होती रहने वाली दावतों में जाना होता है; इन दावतों में वह अपने पड़ोसियों, विश्वविद्यालय के अपने सह-कर्मियों या ऐसे लोगों के साथ शरीक होते हैं, जो उन्हें एक दिलचस्प मेहमान मान कर आमन्त्रित करते रहते हैं। कभी-कभी ऐसी दावतों में उन्हें कुछ झल्लायी औरतें घेर लेती हैं और उनसे यह जानना चाहती हैं कि उन्होंने ऐसी 'गन्दी किताब' क्यों लिखी। डिकी का उत्तर प्रायः यह होता है: "मैं सच्ची बात कहना चाहता था।"

आम तौर पर, वह एक खुशमिजाज़ मेहमान हैं, जो प्रोफेसरों, वकीलों, वास्तुकारों और व्यापारियों से विश्वविद्यालय के झगड़े-झंझट के बारे में, या विश्वविद्यालय में बास्केट बाल के प्रशिक्षक, फ्रैंक मैक्गवायर, की यशस्वी टीम के बारे में, बातें करते होते हैं, अथवा महिलाओं से कहते होते हैं कि वे कितनी सुन्दर दिखायी दे रही हैं और उनके बच्चे आजकल स्कूल में कैसे चल रहे हैं। कोलम्बिया में उनका जीवन बहुत-कुछ एटलाण्टा की विज्ञापन-एजेन्सी में बिताये गये दिनों के सांचे में ढला जान पड़ता है: वह जीवन व्यस्त, उपनगर के वातावरण के अनुकूल और अपने परिवार में केन्द्रित है। उनके जीवन की प्रशान्तता को देख कर आदमी विस्मित हो जाता है। स्पष्ट ही, वह ऐसे जीवन को पसन्द करते हैं, क्योंकि उनके पास धन है और वह चाहें तो दूसरे प्रकार का श्रेष्ठतर जीवन भी जी सकते हैं। किन्तु, उनकी कविता और **'डेलिवरेन्स'** के कुछ उल्लासकारी अनुच्छेदों को

पढ़ कर, आप सरलता से यह कल्पना कर सकते हैं कि जब वह अपने आरामदेह मकान में बैठे हुए, कैथरीन झील की ओर, जिसके चारों ओर करीने से कटे-छंटे लानों और सीधे खड़े चीड़ के पेड़ों वाले ऐसे ही और भी मकान बने हैं, निहारते हैं, और जब सौन्दर्य-पान के इन क्षणों में उनकी आंखों के सामने से पानी में फिसलने का खेल खेलने वालों को लेकर कोई स्पीड बोट अकस्मात् जल को चीरती हुई निकल जाती है, तब उनका मन कुछ ऐसा करने को मचल उठता होगा, जो कम आरामदेह और कुछ खतरनाक भी हो। उनके मन में ऐसे विचार खास तौर से संध्या के समय आते होंगे, जब वह दिन भर के काम के बाद मदिरा-पान करते होंगे और झील के उस पार स्थित जैक्सन के किले से उठते हुए प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति-गणना के लयबद्ध स्वर को सुनते होंगे, जो दिन भर राइफल या ग्रेनेड की चांदमारी के कड़े अभ्यास और थका देने वाले दिन के बाद, जिसने उनको लड़ाई के एक दिन और करीब पहुंचा दिया होगा, लौट रहे होंगे। इस स्वर को उन्होंने अपनी कविता में जितना व्यक्त किया है, उससे भी अधिक यह उनकी स्मृति में बार-बार गूंजता रहा होगा :

"किन्तु, हर रात जब सोता हूं
आश्वस्त होता हूं
ध्वनियां नगाड़ों की, निश्चय ही, पहुंचेंगी
भोर में, पहली किरन सी,
वहां, जहां रहता हूं;
और मेरा हृदय, मेरा रक्त, मेरा परिवार,
जोड़ेंगे चार अंक मुश्किल से जीने योग्य।
अपदस्थ, सैनिक। मुक्त है धूप
बुनियादी प्रशिक्षण की गूंज से।
यह युद्ध मेरा है, इस बार,
जाने यह शुरू हुआ कहां से ?
दो, तीन, चार, शान्ति में :
शान्ति, शान्ति, शान्ति, में :
एक, दो
नींद में।"

कवि के व्यक्तित्व के एक अंश का सहज वर्णन सम्भव नहीं। वह है उनके व्यक्तित्व का वह अंश, जब वह अपने कार्यालय में जाते हैं और आंग्ल भाषा की वाग्देवी के समक्ष आराधक की भांति एकाकी बैठे होते हैं।

उनका शान्त, अनुशासित और सावधानी से व्यवस्थित जीवन उनकी प्रतिष्ठा से मेल नहीं खाता। कई लोग उनको एक तरह का अर्नेस्ट हेमिंग्वे समझते हैं, जो कविता लिखता है; जो एक लम्बा-तगड़ा, मेहनत-मशक्कत करके जीने वाला, आदमी है; जो किसी अन्य स्थान की अपेक्षा वनान्त में अधिक सुखी रहता है; जो जीवन और वन को चुनौतियों के रूप में, ऐसी प्रतियोगिता के रूप में, देखता है, जहां शक्ति तथा संकल्प ही सब कुछ हैं। और, यह सब अकारण ही नहीं है। वह अपने फुटबाल-प्रशिक्षकों के अनुशासन और संयम को कभी नहीं भूलते और अपने बाद के जीवन के लिए उन्हें अत्यावश्यक मानते हैं। असफलता के बारे में उनके विचार बहुत स्पष्ट हैं; वह इस शब्द का उच्चारण घृणापूर्वक करते हैं। **'डेलिवरेन्स'** में नीत्शे की उग्र भावनाओं की झलक मिल जाती है। नीत्शे की भांति वह भी शक्ति और अधिकार में, जो अपनी पाशविक और हिंस्र प्रवृत्तियों को संयमित रखने वाले व्यक्तियों को ही प्राप्त होते हैं, विश्वास करते हैं।

डिकी जिन कतिपय लेखकों की सर्वाधिक प्रशंसा करते हैं, उनमें जीवन की अमिट प्यास थी। ऐगी, वुल्फ और हार्ट क्रेन ने अपने-आपको खाक कर डाला; लेकिन उनके विनष्ट जीवन ने महान् कला को जन्म दिया। डिकी जीवन के पथ पर उसी तीव्र गति से प्रवाहित हो रहे हैं, जिस गति से ये लेखक प्रवाहित हुए थे। जब-तब न्यूयार्क में यह अफवाह उड़ जाया करती है कि वह अस्वस्थ हैं। ऐगी, वुल्फ और क्रेन की भांति वह मदिरा-पान कर सकते हैं। वह अपनी इस क्षमता से परिचित हैं और इस सम्बन्ध में कुछ जिज्ञासा प्रकट करते हुए, कहते हैं :

"मैंने सदैव यह महसूस किया है कि मैं अधिकांश लोगों के साथ मदिरा-पान कर सकता हूं। लेकिन हार्ट क्रेन जिस तरह से मदिरा-पान करते हैं, उसे मैं आधे घण्टे तक भी नहीं झेल सकता; उनकी तरह लगातार कई-कई दिनों तक पीने का सिलसिला जारी रखने का तो सवाल ही नहीं उठता। उस तरह की चीज मेरे मिजाज के खिलाफ है। मैं अधिकांश लोगों से कहीं अधिक शराब पी सकता हूं, और शायद ऐसा करता भी हूं, लेकिन मैं कुछ अच्छा दीवाना नहीं हूं। मेरा ख्याल है कि मैं इस तरह ज्यादा समय तक जिन्दा रह सकूंगा। जिन्दा रहूं या नहीं, कम-से-कम मैं उम्मीद तो यही करता हूं।"

डिकी इन लेखकों की तुलना में अधिक समय तक जी सके और स्वस्थ हैं। इस तथ्य के अलावा, एक बात यह भी है कि उनके जीवन में जो व्यवस्था और अनुशासन है, उसका इन लेखकों के जीवन में अभाव रहा है। वह उल्लसित अधिक हैं, मोहग्रस्त कम। जब वह घर पर होते हैं, तब उनका जीवन शान्त रहता है। एक प्रकार से, नित्यप्रति का नियमित क्रम चलता रहता है। लेकिन, जब वह घर से बाहर होते हैं, दावतों में शामिल होते हैं और अपनी शामें मदिरा-पान तथा दोस्तों से गपशप करने में बिताते हैं, तो उन मौकों पर वह अपनी प्रतिष्ठा को भोग रहे होते हैं।

कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं, जब डिकी की हल्ला-गुल्ला करने की आदत और भूतपूर्व खिलाड़ी के नाते जिन्दगी को खुल कर जी लेने की प्रवृत्ति को लोग राजनीतिक रंग दे देते हैं। डिकी को लोगों की इस हरकत से परेशानी होती है। कुछ आलोचकों और विद्वानों ने उन्हें प्रतिक्रियावादी, अति-दक्षिणपंथी, कहा है, हालांकि डिकी ने यूजीन मैकार्थी को चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया था और दोनों की मित्रता भी हो गयी थी। परन्तु, निश्चय ही, उनकी मैत्री उनके राजनीतिक विचारों की—अगर उनके राजनीतिक विचार हैं, तो—कुंजी नहीं है। विलियम एफ० बकले, जूनियर, और विली मौरिस उनके गहरे दोस्त हैं। मौरिस, मूलतः, मिसिसिपी के निवासी हैं, लेकिन अब उन्होंने उस राज्य और उसकी राजनीति को बहुत पीछे छोड़ दिया है। इस स्थिति का उन्होंने 'नार्थ टुवर्ड होम' में हृदय-स्पर्शी वर्णन किया है। उनकी प्रबन्ध-व्यवस्था के अन्तर्गत, **'हार्पर्स'** पत्रिका बतौर फैशन वाम-पंथी हो गयी थी, फिर भी डिकी उसकी गिनती सर्वोत्तम पत्रिकाओं में करते थे। उसमें उनकी रचनायें अक्सर प्रकाशित हुआ करती थी।

यद्यपि डिकी ने बकले द्वारा प्रकाशित अनुदारवादी पत्रिका, **'नैशनल रिव्यू'**, में अपनी कोई रचना प्रकाशनार्थ कभी नहीं भेजी, तो भी बकले-दम्पति और डिकी-दम्पति घनिष्ठ मित्र हैं और एक-दूसरे के घर आते-जाते हैं। डिकी को दूसरों की नकल उतारने का अच्छा शौक है; जब वह लोगों के साथ होते हैं, तब वह राजनीति पर चर्चा करने के बजाय, या तो लोगों का स्वांग भरते हैं, या अपनी ज्ञान-गंगा की पुनीत धारा प्रवाहित करते हैं। जब कभी बातचीत राष्ट्रीय घटनाओं या व्यक्तियों पर केन्द्रित होने को होती है, तब वह या तो चुप और व्यग्र हो उठते हैं, या कमरे में इधर-उधर ऐसे देखने लगते हैं, मानो वहां से रफूचक्कर होने की बात सोच रहे हों। असल में, राजनीति का सारा विषय ही उनको नीरस प्रतीत होता है। राजनीति की कल्पनारहित और भयंकर रूप से थका देने वाली भाषा, निश्चय ही, एक कवि के लिए असहनीय हो जाती होगी। उन्होंने मैकार्थी का समर्थन कदाचित् यह सोच कर किया था कि ह्वाइट हाउस में एक चरवाहा जाय, इससे तो अच्छा यही है कि एक कवि जाये। उनके राजनीतिक विचार चाहे जो हों, वह अन्य साहित्यकारों की भांति याचिकाओं पर हस्ताक्षर नहीं करते-फिरते और न दूसरी तरह के कार्य करते है।

उन्हें यह पसन्द है कि लोग उन्हें उनकी प्रतिभा की बदौलत जानें; और जब कभी इसका अवसर आता है, तब वह अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय देते हैं। जब वह अपनी कविताओं का सस्वर पाठ करते हैं, उस समय उनका अभिजात दक्षिणी स्वराघात समस्त कथानक के भीतर प्रवाहित होने लगता है और अभिव्यक्ति के उत्कृष्ट बिन्दुओं पर सावधानी से मंडराने लगता है। वह अपनी कविताओं का पाठ उसी ढंग से करते हैं, जिस ढंग से दक्षिणी पादरी-पुरोहित बाइबिल का पाठ करते हैं—सदा श्रद्धा-पूर्वक, कभी-कभी नवीकृत सम्भ्रम सहित, और

हमेशा अपने ध्यान में अबोध लोगों को रखते हुए, क्योंकि अगर कविता घिसे-पिटे ढंग से पढ़ी जाय, तो श्रोताओं की चेतना उद्‌बुद्ध नहीं होगी। और, उनकी चेतना को अप्रभावित ही छोड़ देना ईश्वर या सरस्वती की नजरों से गिर जाने के समान है। धर्मोपदेश की उनकी यह प्रवृत्ति उनकी कक्षाओं में भी उन्हें उत्प्रेरित करती है और उनके विद्यार्थी उन्हें एक अत्यन्त उद्‌बोधक अध्यापक के रूप में स्मरण करते हैं। एटलाण्टा के लोग तीन वर्ष पहले एक कला-समारोह में उनके एक अतीव सुन्दर कविता-पाठ का रसास्वादन कर चुके हैं। वे उनके कुछ श्रेष्ठ व्याख्यान भी ज्यौजिया इन्स्टिट्यूट औव् टेक्नोलाजी की एक विद्वत्-गोष्ठी में सुन चुके हैं।

एटलाण्टा नगर से प्रकाशित '**काण्टेम्पोरा**' नामक साहित्यिक पत्रिका के तत्वावधान में, एटलाण्टा मेमोरियल आर्ट सेण्टर में डिकी को हाल ही में एक काकटेल पार्टी दी गयी थी। जब डिकी उसमें भाग लेने के लिए एटलाण्टा आये, तब संयोग से मैं भी उनके साथ था। दावत तो सोमवार को थी, लेकिन डिकी उससे कुछ पहले ही एटलाण्टा आना चाहते थे, क्योंकि वह अपने पुत्र के बारहवें जन्म-दिवस के लिए कुछ उपहार खरीदना चाहते थे और अपने इष्टमित्रों तथा परिवार वालों से, जिनमें उनके गम्भीर रूप से अस्वस्थ पिता भी शामिल थे, मिलना-जुलना चाहते थे। उन्हें आशा थी कि दावत के बाद उन्हें इतना समय मिल जायेगा कि वह लेविस किंग और अल ब्रैसेल्टन, के साथ, जिनको उन्होंने '**डेलिवरेन्स**' के समर्पण में 'साथी' कह कर याद किया है, डोंगी खेने का लुत्फ भी उठा सकेंगे। उन्होंने शनिवार को दोपहर के आसपास कोलम्बिया से चलने का निश्चय किया। उस रोज सुबह हमने मकान के सामने वाले चबूतरे पर बैठ कर नाश्ता किया था। डिकी खाने की मेज पर किसी भी विषय पर बातचीत शुरू कर सकते हैं; वह किस विषय पर चर्चा कर बैठेंगे, इसका पहले से अनुमान करना कठिन होता है। कुछ विषय तो उनके बहुत निजी होते हैं, जैसे जब '**डेलिवरेन्स**' का फिल्मांकन हो, तब उसका निर्देशक कौन होने योग्य है—इस सम्बन्ध में उनकी पसन्द का व्यक्ति आयरिश जान बूरमैन होता है; और कुछ विषय बहुत प्रकृष्ट भी हो सकते हैं, जैसे आज सुबह की बातचीत का विषय ही लें—आज उन्होंने सुकरात के पूर्व के दर्शनशास्त्र पर गम्भीर चर्चा की थी। वह अपनी डायरी में लिखते हैं :

"सुकरात के पहले के दार्शनिकों ने मुझे सदैव अत्यधिक प्रभावित किया है। उन दिनों, जब लोग, वास्तव में, इस भ्रम में थे कि सृष्टि की संरचना को एक या दो तत्वों तक ही सीमित किया जा सकता है; जब लोग, वास्तव में, यह सोचते थे कि वे समाधान, और सो भी एकमात्र समाधान, खोज सकते थे, एक चिन्तनशील व्यक्ति होना कितना महत्वपूर्ण रहा होगा ?"

हम लोग बात करने लगे और हमारी बातचीत काफी सजीव हो उठी। वह अपनी बहुत सारी उद्‌घोषणाओं के बीच-बीच में 'आप तो जानते ही हैं' का तकियाकलाम लगाते चलते हैं। लेकिन, जब वह किसी समस्या पर आपसे बात करते हैं, तब उसके प्रति पूर्ण चैतन्य रहते हैं और आपसे भी आशा करते हैं कि आप उत्तर देते चलेंगे; वह निश्चिन्त हो लेना चाहते हैं कि बातों को जितनी अच्छी तरह वह समझ रहे हैं, उतनी ही अच्छी तरह आप भी समझ रहे हैं। वह विचारों के आदान-प्रदान से लाभान्वित होने की प्रवृत्ति के महान् पोषक हैं।

अगले दिन, तीसरे पहर, लेविस किंग भी उस होटल में पहुंच गये, जहां डिकी ठहरे हुए थे। दोनों में करीब एक घण्टे तक उस डोंगी-यात्रा के कार्यक्रम पर, जिसे किंग ने मंगलवार के लिए निर्धारित किया था, बातचीत होती रही। '**डेलिवरेन्स**' उपन्यास में लेविस मेडलौक नामक पात्र का आधा चरित्र लेविस किंग के नमूने पर गढ़ा गया है—अविश्वसनीय बल और शक्ति से सम्पन्न पात्र, जो अन्य लोगों को डोंगी से यात्रा करने के लिए सहमत कर लेता है। लेविस किंग का उत्साह और उनकी 'मोहक नीली आंखें' औपन्यासिक पात्र, लेविस मेडलौक, की भांति ही हैं, लेकिन मेडलौक का शरीर लेविस किंग का नहीं है, वह डिकी का है। किंग का शरीर कोमल, लचीला, छरहरा है—वह टेनिस के खिलाड़ी जैसे जान पड़ते हैं। जिस समय किंग और डिकी होटल के स्नानगृह के गिलासों में भरी स्काच ह्विस्की की चुस्की ले-लेकर बातें कर रहे थे, उस समय उनके संवाद '**डेलिवरेन्स**' उपन्यास से उद्धृत जान पड़ते थे; बातचीत के बीच-बीच में टोकते और मुस्कराते हुए और अपनी जिह्वा को प्रत्येक शब्द पर प्रेम से फिसलाते हुए, डिकी कह उठते थे : "लगता है, मैंने यह सब पहले कहीं पढ रखा है।"

अगले दिन, सुबह, बहुत तड़के ही, अल ब्रैसेल्टन होटल पर आ धमके और हमें उठाया। हम सब उनकी कार में बैठ कर, सूनी सड़कों पर ड्राइव करते हुए, किंग के घर की ओर रवाना हुए। वहां हमने उनकी दो डोंगियों को दो कारों की छतों पर रख लिया। शहर से बाहर निकलने के बाद, रास्ते में हम एक छोटे-से कैफे में कलेवा करने के लिए थोड़ी देर रुके। हमने कैफे की बगल वाली पंसारी की दूकान से बीयर की छः बोतलें खरीद लीं। इस यात्रा का उद्देश्य खतरा कम और आनन्द उठाना अधिक था।

डिकी पिछले दस वर्षों में उस दिन पहली बार नदी की सैर को निकले थे। इतने वर्षों तक वह एटलाण्टा से, और अपने उन मित्रों से, जिन के साथ उन सारे वर्षों में उन्होंने इस तरह के सैर-सपाटे किये थे, अलग रहे थे। यों, किंग ने इस अवधि में उनको कुछ यात्राओं के लिए निमन्त्रित किया था। एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जो डिकी जितना घूमता-फिरता रहता हो, यात्राओं पर निकलना कोई समस्या नहीं होनी चाहिए थी। लेकिन उन दिनों वह '**डेलिवरेन्स**' लिखने में व्यस्त थे। जैसे-जैसे उपन्यास का खाका उभरने लगा, नदी के प्रति उनका आदर बढ़ता गया होगा, यहां तक कि वह काल्पनिक नदी उनके लिए असली और विशुद्ध रूप से विश्वासघातिनी नदी बन गयी होगी—हालांकि उनका और उनके मित्रों का जिन नदियों से अब तक पाला पड़ा था, वे वास्तव में उतनी भयंकर और विश्वासघातिनी नहीं थीं। (इसमें सन्देह नहीं कि कभी-कभी उन्हें मुसीबतें भी झेलनी पड़ी थीं और नाकों चने चबाने पड़े थे।) जिस तरह फौकनर संसार के प्रति अपनी वितृष्णा और विराग के कारण—और अपने प्रसिद्ध जन-द्वेष के कारण भी—एकान्तप्रिय, सन्यस्त, जीवन व्यतीत करने लगे थे (लोगों के बीच रह कर भी वह अपने काल्पनिक जगत में जीने लगे थे) और अपने वास्तविक संसार को अपनी कल्पनाप्रसूत काउण्टी में परिणत कर उसी को वास्तविकता दे बैठे थे और किसी भी वास्तविकता द्वारा उसके रूप को विकृत होते नहीं देख सकते थे, उसी तरह, डिकी भी उन दस वर्षों में अधिकांशतः अपनी काल्पनिक नदी के साथ मोहाविष्ट हो गये थे। '**डेलिवरेन्स**' में एक स्थल पर वह लिखते हैं :

"लेकिन आवाज बदलती, अधिक गहरी होती, जा रही थी। गर्जन बढ़ता जा रहा था। ध्वनि तो पुरानी ही थी, लेकिन उसमें कुछ नवीनता आ गयी थी; दीवारों के पार अपने आरोह-अवरोहमय स्वर की प्रतिध्वनियों की तुलना में यह ध्वनि अधिक अनुगूंज-भरी थी। यह एक ऐसी वीणा के सदृश थी, जो नदी की उन सारी ध्वनियों के समवेत प्रभाव से निर्मित हो रही थी, जिनको हम यहां आने के बाद से सुन रहे थे। मेरे भगवान्, मैंने सोचा, मैं जानता हूं कि यह क्या है। अगर यह प्रपात है, तो हमारी जीवन-लीला समाप्त ही समझो।"

पीछे, आधे मील के लगभग, नदी का जल शान्त था। जब हम डोंगियों को खेना बन्द कर, डांड़ों को नदी के हल्के हरे जल में डुबोये सुस्ता रहे होते थे, तभी थोड़ी-थोड़ी देर बाद डिकी चिल्ला उठते थे : "होटल में वापस जाकर मैं मार्टिनी की पांच सौ डबल बोतलें जरूर पीऊंगा।" इसके बाद, वह ठहाका लगा कर हंस पड़ते थे। तीसरे पहर की प्रारम्भिक घड़ियों में, हमारे कपड़े कितनी बार पानी से सराबोर हुए और कितनी बार सूखे, नदी में पड़ी चपटी चट्टानों से रगड़ खाकर हमारी जांघें और कुहनियां कितनी बार छिलीं, इसकी कोई गिनती नहीं। डोंगियों को खेने और ढोने के कारण हमारे कन्धे फोड़े की तरह दुःख रहे थे। इसी दशा में हम उस पुल तक पहुंचे, जहां नीचे हमने ब्रैसेल्टन की कार छोड़ रखी थी। दूसरी कार को भी वहां लाकर और गियर को साथ कर हम धूप में जा बैठे। यहां हमने जैसे-तैसे जुटाये गये 'समुद्री भोजन'—

सार्डिन मछलियों, अखरोट, नमकीन मटर और डिब्बों में से लिये गये पेप्सी कोला, आदि—का रुचिपूर्वक भोग लगाया। तत्पश्चात्, हम लेविस किंग के निवास-स्थान पर आ गये।

जोन किंग ने उस रात एक भोज देने की योजना बनायी थी और वह नहीं चाहती थीं कि उनके भूखे-प्यासे पुरुष अतिथि नहा-धोकर कपड़े बदले बिना ही मदिरा की आलमारी के इर्द-गिर्द मंडराते फिरें। डिकी आह-कराह भरने लगे। उन्होंने इतनी अदा के साथ चिरौरी की कि आखिर जोन किंग का दिल पसीज ही गया। जब हम रसोईघर के नजदीक खड़े-खड़े शराब में सोडा मिला रहे थे, तब डिकी एक मिनट के लिए हम लोगों को छोड़ कर कहीं चले गये और अपनी कविताओं की एक खुली चयनिका को हाथ में लिये हुए लौट आये। फिर, उन्होंने सधी, धीमी, आवाज में पढ़ना शुरू किया :

"एक है और चट्टान
आप्लावित श्वेत जलावर्त से
वहीं, जहां ब्रैसेल्टन और मैं
लटके हुए लीन थे घोर संघर्ष में
अपनी ही तरणी से,
जिसने था फेंक दिया हमको
उद्वेलित सरिता तरंगों में
रौंद कर आये थे, जिन्हें हम।
"नैया वह अपनी, खाती पछाड़ें
अब-तब थी हो रही उलटने को,
मन भर पानी निज पेटे में भरने को;
पर्वतीय धारा के झूले पर मदमाती,
भरती हुई पेंगें, झाग के मेघ बीच तिरती
बिजली सी, टकरा कर उग्र शिला-खण्ड से
हमको धर वैसे ही, वहीं, दबोच देने को।
"और हम, उसी चट्टान के सहारे,
पीठ टिका, चीख-चीख,
लथपथ थे हो रहे उसे ठेल
दूर हटा देने के भारी प्रयत्न में।
ऐसे में, असमय ही, टूट गयीं
दोनों डांड़ें डोंगी की।
"फिर, हमने टूटी हुई डांड़ों के ठूंठों को
शिला और डोंगी के बीच टिका रखा,
अन्त में, जिससे
डोंगी का पेटा ही गया फट;
उछली वह, तड़प कर, खाकर पछाड़ें,
लुप्त हुई सरिता के क्रोड़ में।
"और, हम बांध कर जीवन-रक्षक पेटियां
लहरों में, भंवरों में, डूबते-उतराते
वह चले दूर, बहुत दूर,
निरुद्देश्य तिरते शान्त जलधारा में,
जैसे दो वस्तुएं हों।"

आवास-कक्ष में मदिरा-पान करने के बाद हम लोग कुर्सियों और सोफाओं पर बैठ गये। उस दिन उषःकाल के बाद आराम से बैठने का यही मौका मिला था। मित्र आपस में गपशप करने लगे। बीच-बीच में थकान मिटाने के लिए स्काच की चुस्की भी चल रही थी। बातचीत का विषय वह नदी, जिसमें डोंगी खेकर हम लौटे थे, तथा दूसरी नदियां थीं। लग रहा था, मानो हम अपने कल्पना-लोक में उन नदियों में अपनी डोंगियां फिर से खे रहे हैं। हम एक-एक घटना की स्मृति को बार-बार ताजा कर रहे थे। श्रोताओं की उत्सुकता और उत्तेजना को बनाये रखने के लिए हम इन विवरणों में थोड़ा-बहुत नमक-मिर्च भी मिला रहे थे, या विनोद की बातों को इतना विस्तार दे रहे थे कि वे पक्की और निरीह जान पड़ें। उन्होंने कवियों पर भी चर्चाएं कीं। अल ब्रैसेल्टन ने किसी डिलन टामस की कविता का पाठ किया—उन्होंने उस कवि के कविता-पाठ की शैली की लगभग पूरी-पूरी नकल कर दी। डिकी ने बताया कि दस साल पहले, जब उन्होंने कालेजों का सफर शुरू किया था, उन्होंने टामस की कुछ कविताएं पढ़ी थीं, लेकिन बाद में उन्हें पढ़ना छोड़ दिया, क्योंकि "आप उस क्रिया को मात नहीं दे सकते।" इसके बाद, उन लोगों ने **'डेलिवरेन्स'** के फिल्मांकन के बारे में बातें कीं। किस भूमिका में कौन-सा अभिनेता फबेगा; कहां-कहां के दृश्य फिल्माये जायेंगे, आदि की भी चर्चाएं हुईं। घूम-फिर कर बात उस दिन की यात्रा पर आ टिकी। और, दूसरी ढेर सारी बातें होती रहीं।

स्पष्ट ही, डिकी अपने प्रियजनों के बीच, जिनके वह प्रशंसक थे, बैठ कर, उस दिन अपनी पूरी उमंग में थे। इन लोगों के साथ उन्होंने अपने जीवन का काफी समय बिताया था। अतः, उनके साथ बैठ कर उनका मदिरा-पान करना और पुरानी यादों को दुहराना उचित ही था। डोंगी खेते समय वह नाइलोन का फ्लाइट-सूट पहना करते हैं—अपनी इस पोशाक को ऐसे समय उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। उनका कहना है कि नाइलोन का सूट "बहुत जल्दी सूख जाता है।" जब अतिथियों का आगमन होने लगा, तब उन्होंने उस दिन के नौका-विहार की कहानी लोगों को फिर से सुनायी—जहां जरूरत पड़ती, वह **'डेलिवरेन्स'** से कुछ विस्तार की बातें भी जोड़ते जाते थे—ऐसा वह खास कर महिलाओं को चिढ़ाने के लिए कर रहे थे। उन्होंने **'टाइम'** पत्रिका के एटलाण्टा स्थित ब्यूरो के भूतपूर्व अध्यक्ष, रोजर विलियम्स, के साथ गिटार बजाया। रोजर नौकरी से छुट्टी लेकर उन दिनों स्वतन्त्र लेखक के रूप में पत्रकारिता कर रहा था। इस समय वह जूलियन वाण्ड के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिख रहा था। वे 'वाइल्डवुड फ्लावर' गीत की धुनें बजाने में एक-दूसरे से बाजी मार ले जाना चाहते थे—दोनों प्रतियोगिता की भावना से गिटार बजाते हैं। लेकिन उनकी यह जुगलबन्दी सहानुभूतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण ही थी। ब्रैसेल्टन ने बारहतारा बजाया और 'टाकिंग लिबरल ब्ल्यूज़' से एक या दो गीतों की धुनें भी बजायीं। 'टाकिंग लिबरल ब्ल्यूज़' उनकी एक व्यंग्य रचना थी। भोजनोपरान्त, थके-मांदे डिकी अपने होटल लौट गये। तब तक उन्होंने नाइलोन का फ्लाइट-सूट ही पहन रखा था। वह अगले दिन ही एटलाण्टा से जा रहे थे। हमने उनके कमरे के दरवाजे के बाहर उनसे विदा ली।

अगर जिम डिकी अब भी विज्ञापन-आलेख ही लिख रहे होते, तो भी वह एक असाधारण व्यक्ति होते। वह एक भूतपूर्व लड़ाकू विमान-चालक हैं, जो धनुष-बाण से हिरनों का शिकार करता है; डोंगी में बैठ कर नदियों के तूफानी प्रवाह को चुनौती देता है; इतनी फुर्ती से भारोत्तोलन करता है, जैसे वह २० साल का नौजवान हो; स्पोर्ट्स कार चलाता है और पांच भाषाओं में लिख-पढ़ सकता है। वह दिलचस्प आदमी हैं; उनके साथ रह कर कोई ऊब नहीं सकता; वह अपनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण सफलता का भी ऐसे जिक्र करते हैं, मानो वह कोई साधारण दिनचर्या की बात हो। **'डेलिवरेन्स'** के विषय में वह कहेंगे: "उन गद्य-प्रेमियों के प्रति मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है।" वह सीधे-सादे पहाड़ी आदमी अथवा अनिच्छुक, अन्यमनस्क, बुद्धिजीवी की, जिसे इस तरह की ऊंची बौद्धिक चीज से कोई सरोकार नहीं, भूमिका निभा सकते हैं, और साथ ही, **'सेवानी रिव्यू'** के लिए पुस्तकों की समीक्षा भी लिख सकते हैं। ये सारी बातें पुस्तकों के मुखपृष्ठों पर नोट की जा सकती हैं, फिर से दुहरायी जा सकती हैं और नाटकीय ढंग से प्रकाशित की जा सकती हैं। लेकिन, इस सबसे उस व्यक्ति की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो रहस्यमय कहानियां लिखने के तुच्छ लोभ में नहीं पड़ता, जो हेमिंग्वे के साथ अपनी सस्ती तुलनाओं को सुनकर फूल नहीं उठता, या अपने बारे में की गयी सहज मनोवैज्ञानिक व्याख्या से भ्रमित नहीं होता। और, यह सब होता है तब, जब वह अपने कार्यालय में आता है, और लिखने की मेज के सामने, आंग्ल भाषा की वाग्देवी के समक्ष, आराधक की भांति एकाकी बैठा होता है। ■■

असहमति के विषय में

"........हमें अमेरिका में शान्ति और व्यवस्था बनाये रखनी चाहिये—ऐसी व्यवस्था नहीं, जो 'असहमति' का दमन और परिवर्तन को हतोत्साहित करती हो, बल्कि ऐसी व्यवस्था, जो असहमत होने के अधिकार की प्रतीति कराने के साथ-साथ, शान्तिपूर्ण परिवर्तन का आधार भी प्रदान करती हो।"

—राष्ट्रपति रिचर्ड एम० निक्सन

अभी हाल में, अमेरिका के महान्यायवादी, श्री जान एन. मिचेल, ने राजनीतिक असहमति के विषय में विचार प्रकट करते हुए, असहमति के उन मुखर रूपों की भी चर्चा की थी, जो कई वर्षों से अमेरिका के सामाजिक जीवन की विशिष्टता बन गये हैं।

देश में कानून को लागू करने वाले सर्वोच्च अधिकारी के रूप में, श्री मिचेल ने सभी सरकारी अधिकारियों से अनुरोध किया है कि वे शान्तिपूर्ण असहमति के प्रति सहिष्णु ही न रहें, अपितु उसको प्रोत्साहन भी दें।

उन्होंने कहा : "वे (असहमत लोग) गाते हुए कूच करते हैं, मोमबत्तियां लेकर व्हाइट हाउस के सामने मौन जुलूस निकालते हैं, गीत रचते हैं, पुस्तकें लिखते हैं, फिल्मों और कला की नवीन शैलियों का सृजन करते हैं—यहां तक कि उनके वस्त्र और उनकी बोल-चाल की भाषा में भी निरालापन होता है।

"अधैर्य बढ़ने के साथ-साथ, उनके उद्गारों में उग्रता आती जाती है। जुलूसों का आकार बढ़ता जाता है और उनके घोषणापत्र का स्वरूप अधिकाधिक क्रान्तिकारी होता जाता है। उनके अनुयायियों में सभी वय के लोग हैं। वे एक नई संस्कृति के प्रतिनिधि हैं : सड़कों पर जुलूस निकालते हैं, स्कूलों में हड़ताल कराते हैं, कांग्रेस भवन में घुस जाते हैं और राजनीतिक आन्दोलन का संगठन करते हैं।

"आन्दोलनकारी होते हुए भी, वे, सामान्यतः, ऐसे शान्तिप्रिय युवा नर-नारी हैं, जो—अमेरिका की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप—वर्तमान व्यवस्था की सीमाओं के अन्दर रहते हुए, उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं।"

महान्यायवादी ने कहा : "हमारे युग को देखते हुए, यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि राजनीतिक प्रदर्शन प्रार्थना-सभा जैसे शान्तिपूर्ण होंगे।"

श्री मिचेल द्वारा निर्दिष्ट 'हमारा युग' उद्विग्नता का युग है। अमेरिका में इस समय भारी उथल-पुथल हो रही है। यह व्यापक समायोजन उन परिवर्तनों का अग्रदूत है, जो समस्त विश्व को अपनी लपेट में ले रहे हैं। बहुतों की राय है कि हम एक संक्रान्ति से गुजर रहे हैं। यह संक्रान्ति १८वीं सदी की उस संक्रान्ति जितनी ही महत्वपूर्ण है, जिसमें सामन्तवादी और कृषि-प्रधान समाजों ने उद्योग-प्रधान समाज का रूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया था। हमारा पिछला कदम औद्योगिक युग में है, परन्तु अगला कदम प्रौद्योगिक युग में प्रवेश कर चुका है। एक नई भाषा गढ़ी जा चुकी है। औद्योगिक युग में प्रयुक्त सफलता के सभी मापदण्ड पुराने पड़ गये हैं। नया मापदण्ड खनिज उत्पादन का परिमाण नहीं, बल्कि संगणक-प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक सूक्ष्मीकरण है।

इन नये युगों की मांग है कि सामाजिक चेतना, दृष्टिकोण और संघटन में व्यापक एवं दूरगामी परिवर्तन हों। आज, अमेरिका में इस प्रकार के परिवर्तन हो भी रहे हैं। इसका एक प्रमाण यह है कि केवल ५ वर्षों की संक्षिप्त अवधि में—१९६५ से १९७० तक—कालेजों में छात्रों की संख्या ४६ लाख से बढ़ कर ७८ लाख हो गई। इसी अवधि में, जातीय सम्बन्धों में भी परिवर्तन हुए। परिवर्तन का प्रमाण यह है कि अश्वेत कालेजों में अध्ययनरत छात्रों की संख्या २,३४,००० से बढ़ कर ५,२२,०००—दुगनी से भी अधिक—हो गई है। ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के पारस्परिक सम्बन्धों में, कारखानों से निकल कर कार्यालयों की ओर जाने की प्रवृत्ति में और महिलाओं की भूमिका में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। और, इन परिवर्तनों की गति निरन्तर तेज होती जा रही है।

इन द्रुत परिवर्तनों के प्रभाव इतने दूरगामी होंगे, जिसकी हम, सम्भवतः, कल्पना भी नहीं कर सकते। और, उन राष्ट्रों पर ये प्रभाव तत्काल दृष्टिगोचर होंगे, जहां परिवर्तन बहुत ही त्वरित गति से हो रहे हैं। लेकिन, बिना दबाव, बिना तनाव और बिना गहन आत्म-निरीक्षण के इतने दूरगामी और व्यापक परिवर्तनों की कल्पना उसी देश में की जा सकती है, जो अकर्मण्य और दीन-हीन हो। समकालीन अमेरिका जैसे स्फूर्ति से ओतप्रोत देश में ऐसा कभी सम्भव नहीं हो सकता। अमेरिकी समाज में दृष्टिगोचर हलचल इस समय हो रही महान् उथल-पुथल का ही प्रतिफल है।

विक्षोभ की परिधि में न केवल विचारों का मतभेद, बल्कि कृत्यों की पराकाष्ठाएं भी आ जाती हैं। महान्यायवादी श्री मिचेल ने कहा कि असहमति 'सामान्यतः' 'व्यवस्था' की परिधि के 'भीतर' ही प्रकट होती है। यह असहमति उस 'व्यवस्था' के मूलाधार को भी चुनौती दे सकती है। विचारों के रूप में प्रस्तुत चुनौती शक्ति और स्फूर्ति का सृजन करती है, परन्तु हिंसात्मक और अवैध कृत्यों के रूप में प्रस्तुत वही चुनौती अन्य लोगों के अधिकारों का हनन करती है। अमेरिका में आज विवाद का मुख्य विषय यह है कि वैध असहमति और अवैध असहमति के बीच की लक्ष्मण-रेखा कहां है?

श्री टामस पेन ने अमेरिकी क्रान्ति के समय कहा था : "यह मनुष्य की अग्नि-परीक्षा का समय है।" यदि इसका आधुनिक भावानुवाद करें, तो हम कह सकते हैं : "यह मनुष्य द्वारा विकसित संस्थाओं की अग्नि-परीक्षा का समय है।" क्या ये संस्थाएं दबाव को झेलने और परिवर्तन एवं असहमति को सहन करने में समर्थ हैं?

अमेरिका का उत्तर है कि परिवर्तनशील विश्व में कोई समाज अपने अस्तित्व की रक्षा करने में कितना सक्षम है, इसकी कसौटी उन लोगों के प्रति समाज का रुख है, जो प्रचलित विवेक को चुनौती देते हैं? प्रचलित विवेक परिवर्तन को बहुत विलम्ब से स्वीकार करता है, जबकि अस्तित्व-रक्षा के लिए अनिवार्य लोचशीलता विचारों और उद्देश्यों के स्वतन्त्र समर्थन में निहित है। श्री नार्मन टामस ने, जिन्होंने ६ बार अमेरिका के समाजवादी दल के उम्मीदवार के रूप में राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा था, १९६८ में, अपनी मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व, कहा था कि अमेरिका में समाजवादी दल का काम घट गया है, क्योंकि विगत वर्षों में राष्ट्र के दोनों प्रमुख राजनीतिक दलों के विधायकों के प्रयास से समाजवादी दल के कार्यक्रम में प्रस्तावित अधिकांश सुधारों को कानून का रूप प्राप्त हो चुका है।

अमेरिका की संस्थाओं में 'असहमति' को सहन करने, आत्म-निरीक्षण के साधन के रूप में उसका उपयोग करने एवं उसकी अच्छाइयों को ग्रहण करने की क्षमता है। परन्तु, यह क्षमता उन्हें अनायास प्राप्त नहीं हुई है।

अमेरिकी संविधान के प्रथम संशोधन में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा गया है : "कांग्रेस ऐसा कोई कानून नहीं बनायेगी....जिससे भाषण और समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता को क्षति पहुंचती हो, अथवा लोगों के शान्तिपूर्ण सभा करने तथा सरकार के समक्ष शिकायतें मिटाने के लिए याचिका प्रस्तुत करने विषयक अधिकार पर किसी प्रकार से आंच आती हो।"

अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश, ओलिवर वेण्डेल होम्स, ने कहा था कि प्रथम संशोधन इस मान्यता पर आधारित है कि "सत्य की श्रेष्ठतम कसौटी विचारधारा की वह शक्ति है, जिसका परिचय वह बाजार की प्रतिस्पर्धा में अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने में देती है।"

विचारों की प्रतिस्पर्धा का बाजार गरम है। संचार के आधुनिक साधन प्रतिस्पर्धी विचारों और उनके द्वारा उत्पन्न तनाव की ओर जनता का पर्याप्त ध्यान आकृष्ट कर लेते हैं। केवल उन मामलों को छोड़ कर, जिनमें असहमति व्यक्त करने वाले दूसरों के अधिकारों का हनन कर कानून की अवहेलना कर बैठते हैं, अमेरिका की जनता इस मत का पुरजोर समर्थन करती है कि विचारों का संघर्ष द्रुतगति से परिवर्तनशील विश्व के स्वास्थ्य और स्थिति के अनुरूप ढालने की उसकी क्षमता का श्रेष्ठतम प्रमाण है।

इस लेख में जो वृत्तान्त प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उनमें आप कुछ ऐसे अमेरिकी नागरिकों का परिचय प्राप्त करेंगे, जिन्होंने सरकार अथवा बहुमत के निर्देशों का विरोध किया है, या विरोध करने के लिए तत्पर रहे हैं।.......इनसे आपको यह भी पता चलेगा कि अमेरिकी लोग किस प्रकार अपनी जानकारी में वृद्धि करते हैं, और अपनी राय को पुरअसर बनाने तथा अन्य लोगों को उससे प्रभावित करने के लिए किस प्रकार अपने को संगठित करते हैं।..... इनमें आपको अमेरिका के जन-मानस को उद्वेलित करने वाले कुछ विचारों की भी झलक मिलेगी।

डा० बेन्जामिन स्पाक

प्रसिद्ध शिशु-चिकित्सक जो युद्ध-विरोधी बन गये

अमेरिका के प्रसिद्ध शिशु-चिकित्सक डा० बेन्जामिन स्पाक, की गणना उन प्रमुख अमेरिकियों में की जाती है, जिन्होंने वियतनाम युद्ध में अमेरिका की अन्तर्ग्रस्तता का विरोध किया है। अमेरिका में उनकी पुस्तक, **'बेबी ऐण्ड चाइल्ड केयर'**, इतनी अधिक लोकप्रिय है कि बाइबिल के बाद उसकी ही बिक्री सबसे अधिक है। अमेरिका की दो पीढ़ियों के माता-पिता डा० स्पाक को शिशुओं के पालन-पोषण के विषय में श्रेष्ठतम परामर्शदाता मानते हैं। डा० स्पाक हृदय से युद्ध-विरोधी हैं और अपने इस विश्वास के कारण उन्होंने कई बार कानून की खुली अवहेलना की है। १९६९ में, उन पर सैनिक भर्ती के विरोध में आन्दोलन छेड़ने का अभियोग लगाया गया था। अदालत ने उन्हें अपराधी ठहराया, परन्तु अगले ही वर्ष अपील अदालत ने मातहत अदालत के फैसले को रद्द कर दिया। स्पाक ने पुनः निर्भीकता के साथ यही कहा : "मैं युद्ध के विरोध में निरन्तर आन्दोलन करता रहूंगा।"

डच वंशी, श्री स्पाक, का जन्म १९०३ में

हुआ था। वह अपने माता-पिता की ६ सन्तानों में सबसे बड़े थे। पहले उन्होंने वास्तुशिल्पी बनने के इरादे से येल विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था। परन्तु, अपंग बालकों के शिविर में एक ग्रीष्मावकाश व्यतीत करने के बाद, उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। उन्होंने डाक्टर बनने का निश्चय किया और पहले येल और तदुपरान्त कोलम्बिया में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। शीघ्र ही, उनकी गणना न्यूयार्क नगर के अत्यधिक लोकप्रिय चिकित्सकों में होने लगी।

द्वितीय महायुद्ध के समय, अमेरिकी नौसेना में मानसिक चिकित्सक के रूप में कार्य करते हुए, डा० स्पाक ने शिशुओं की देखरेख के बारे में एक गुटका लिखने का निश्चय किया। इस गुटके के कारण वह समस्त अमेरिका में प्रसिद्ध हो गये। उन्होंने शाम का समय इस कार्य में लगाना शुरू किया। पाण्डुलिपि को टाइप करने का कार्य स्वयं उनकी पत्नी करती थीं। उन्होंने इसमें माता-पिताओं के समक्ष आने वाली सैकड़ों समस्याओं के बारे में अत्यन्त सरल, सुबोध और अनौपचारिक भाषा में उपयोगी परामर्श दिये हैं। उनका यह गुटका सर्वप्रथम १९४६ में प्रकाशित हुआ था। अब तक अकेले अमेरिका में इस गुटके की २ करोड़ ३० लाख प्रतियां बिक चुकी हैं। यह गुटका हिन्दी, उर्दू, तमिल, मलयालम समेत विश्व की २९ भाषाओं में, अनूदित हो चुका है।

अमेरिका का यह प्रसिद्ध और सफल चिकित्सक १९६२ में सहसा ही राजनीति की ओर आकृष्ट हो गया। आणविक परीक्षणों के फलस्वरूप, पृथ्वी का वायुमण्डल अधिकाधिक विषाक्त हो रहा था। इस भयंकर खतरे की गम्भीरता को अनुभव कर, डा० स्पाक ने सार्वजनिक रूप से निःशस्त्रीकरण के पक्ष में आवाज उठायी। बाद में, उन्होंने वियतनाम युद्ध में अमेरिका की अन्तर्ग्रस्तता का विरोध भी प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि प्रदर्शन करते समय उन्हें बहुत ही अधिक असमंजस तथा परेशानी अनुभव होती थी, परन्तु युद्ध-विरोधी धरना देने वाले व्यक्तियों के रूप में उनका नाम शीघ्र ही देश भर में विख्यात हो गया। ऊंचे कद (१.९ मीटर), प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा पुराने ढंग की पोशाक के कारण उनकी ओर लोगों का ध्यान सहज ही आकृष्ट हो जाता था।

डा० स्पाक ने बहुत सी युद्ध-विरोधी सभाओं और प्रदर्शनों में भाषण किये हैं। उनके राजनीतिक क्रियाकलापों से बहुत से अमेरिकी कुपित हैं। ये अमेरिकी उन्हें मूर्ख, पथभ्रष्ट एवं राष्ट्र के श्रेष्ठ हितों के विरुद्ध कार्यरत व्यक्ति मानते हैं। लेकिन, अन्य बहुत से अमेरिकी उनके निर्भीक भाषणों की सराहना करते हैं तथा निस्संकोच स्वीकार करते हैं कि अमेरिका की लोकतान्त्रिक प्रणाली को आज ऐसे निर्भीक आलोचकों की परम आवश्यकता है।

डा० स्पाक ने एक बार स्वयं एक भेंटकर्ता से कहा था कि अन्तरात्मा की अत्यन्त सशक्त पुकार के कारण अवकाश लेकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने की उनकी सारी आशाएं चूर-चूर हो गई हैं। उन्होंने कहा कि अन्तरात्मा की यह पुकार उन युवा अमेरिकियों के लिए संसार को अधिक सुरक्षित और श्रेष्ठ बनाने की भावना से प्रेरित है, जिनका लालन-पालन उनके सुविख्यात 'गुटके' के अनुसार हुआ है।

जोन बाएज

जिनका स्वर संगीत और विरोध में मुखरित होता है

श्यामकेशी तथा श्यामवर्ण पुतलियों वाली युवती, जोन बाएज़, मधुर गीत गाती हैं और युद्ध के विरोध में रूक्ष नारे भी लगाती हैं। यद्यपि इस कोकिलकण्ठी युवा गायिका का लोक संगीत सुनने के लिए श्रोता भारी संख्या में उमड़ पड़ते हैं, परन्तु वह स्वयं यह अनुभव करती हैं कि उनके जीवन का मुख्य ध्येय (उनके ही शब्दों में) 'अहिंसक सैनिक' के रूप में मानवता की सेवा करना है। युद्धरहित संसार तथा भ्रातृत्व की भावना से भरपूर मानव-समाज के लिए वह इसी 'शब्द' का प्रयोग करती हैं।

जोन बाएज़, जिनकी आयु इस समय ३० वर्ष है, एक दशाब्द से भी अधिक समय से अमेरिकी लोक संगीत की 'सम्राज्ञी' तथा एक श्रेष्ठ तारिका के रूप में विख्यात हैं। उनके संगीत-रिकार्ड हजारों की संख्या में बिकते हैं तथा उनके संगीत-कार्यक्रमों के टिकट पहले से ही बिक जाते हैं। इधर कुछ वर्षों से वह एक सत्याग्रही के रूप में भी सक्रिय हैं—ऐसे सत्याग्रही के रूप में, जो अहिंसा एवं शान्तिपूर्ण क्रान्ति के सिद्धान्त में निष्ठा रखता है, नागरिक अधिकारों का समर्थक है तथा वियतनाम में अमेरिकी अन्तर्ग्रस्तता और अनिवार्य सैनिक-भर्ती का विरोधी है। बाएज़ ने अमेरिका के सैनिक बजट के लिए कर देने से इन्कार कर दिया है। ओक्लाहोमा (कैलिफोर्निया) स्थित अनिवार्य सैनिक भर्ती केन्द्र पर धरना देने के अपराध में उन्हें एक बार जेल भी जाना पड़ा है। उनके पति, २५-वर्षीय डेविड हैरिस, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के छात्र-संगठन के प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं तथा अनिवार्य सैनिक-भर्ती विरोधी आन्दोलन के एक प्रमुख नेता हैं। श्री हैरिस अनिवार्य सैनिक-भर्ती के लिए स्वयं को प्रस्तुत न करने के अपराध में, संघीय जेल में २० माह की सजा भी काट चुके हैं।

गायिका के रूप में जोन बाएज़ वर्ष में केवल ३० या ४० संगीत-कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। उनके संगीत-कार्यक्रमों की टिकट-दरें कम होती हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग उनके संगीत-कार्यक्रमों का रसास्वादन कर सकें। इसके साथ ही, वह आन्दोलन के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से आयोजित संगीत-कार्यक्रमों में भी उपस्थित होती रहती हैं। उनके संगीत-कार्यक्रमों में बहुधा 'डेविड का गीत' और 'कैरी इट आन' नामक गीत भी शामिल होते हैं। पहला गीत अपने पति के प्रति उनकी श्रद्धांजलि है। ये तथा अन्य गीत श्रोताओं के मन में सुधारों के प्रति उत्साह जगाते हैं।

वह कहती हैं: "अब डेविड जेल से मुक्त हो गये हैं। अतः, हम दोनों मिल कर जनता को अपने विचारों से अवगत कराने का प्रयास जारी रखेंगे। लेकिन, इस कार्य में हम किसी प्रकार की हिंसा का आश्रय नहीं लेंगे, क्योंकि हिंसा विनाशक होती है।"

ह्वे न्यूटन

युवा, अश्वेत, युयुत्सु —और क्रान्ति के पोषक

अमेरिका में असहमति को उसकी चरम सीमा तक पहुंचाने वालों में ह्वे न्यूटन भी एक हैं। वह एक जोशीले युवक, ब्लैक पैंथर पार्टी के सह-संस्थापक तथा उसको गतिशील रखने वाली एक शक्ति हैं। यह पार्टी अपने सदस्यों से अपेक्षा रखती है कि वे आग्नेयास्त्र चलाना सीखेंगे। पार्टी समस्त अश्वेतों का आह्वान करती है कि वे पुलिस के कथित अत्याचारों से अपनी रक्षा स्वयं करें और प्रगतिशील गोरों के साथ मिल कर माओ के उपदेशों से प्रेरित मार्क्सवादी क्रान्ति के लिए सचेष्ट हों।

पैंथर बंदूक के प्रयोग और हिंसात्मक प्रचार पर विशेष जोर देते हैं। इसीलिए, यह अमेरिका का सबसे विवादास्पद आन्दोलन बन गया है तथा पुलिस, कानून और न्यायालयों से इसका संघर्ष शुरू हो गया है। पैंथर दल के नेता भारी संख्या में गिरफ्तार किये गये हैं और सशस्त्र डकैती से लेकर हत्या तक के आरोपों में उन्हें सजाएं दी गयी हैं। एक पुलिसमैन को गोली मार देने के कारण न्यूटन पर भी जानबूझ कर हत्या करने के आरोप में मुकदमा चलाया गया और दण्डित किया गया। यह लेख लिखने के समय वह जमानत पर रिहा थे। अपील अदालत द्वारा उनकी सजा इस आधार पर रद्द कर दिये जाने के बाद, कि जूरी को अनुचित ढंग से निर्देश दिये गये थे, वह फिर मुकदमा चलाये जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

ह्वे न्यूटन एक बैपटिस्ट पादरी के पुत्र हैं

उनका जन्म न्यू ग्रोलियन्स, लुइज़ियाना, में हुआ था। परन्तु, उनका परिवार ग्रोकलैण्ड, कैलिफोर्निया, चला गया, जहां न्यूटन एक नीग्रो गंदी वस्ती में गुण्डे और आवारा लड़के के रूप में पले और बड़े हुए। एक पार्टी में उपस्थित मेहमानों में से एक के साथ उनका झगड़ा हो गया और उन्होंने उस पर घातक हथियार से प्रहार कर दिया। इस जुर्म में उन्हें जेल जाना पड़ा। १९६६ में वौवी सील (जिनके साथ उनकी मुलाकात ग्रोकलैण्ड के मैरिट कालेज में हुई थी) के साथ मिल कर उन्होंने ब्लैक पैंथर पार्टी स्थापित की। यह पार्टी उन अश्वेत युवकों की पार्टी है, जिन्होंने तथाकथित 'पुलिस के दमन' से अश्वेतों की रक्षा करने के उद्देश्य से वंदूकों से सज्जित हो शहर के भीतरी भागों में गश्त लगाना प्रारम्भ कर दिया।

अगले वर्ष, पैंथर पार्टी के सदस्यों का एक दल शस्त्रास्त्र सज्जित हो कैलिफोर्निया के विधान-सभा भवन में घुस गया। उस समय विधान-सभा में वंदूक-नियन्त्रण विधेयक पर वहस हो रही थी। पैंथर इसी विधेयक का विरोध करने के लिए विधानसभा-भवन में घुसे थे। उनकी इस कार्यवाही को देश भर के समाचारपत्रों ने मोटे शीर्षकों के साथ प्रकाशित किया। शीघ्र ही, देश भर में फैले नीग्रो समाजों में पैंथर पार्टी की शाखाएं खोली जाने लगीं। पार्टी ऐसे घोषणापत्र जारी कर रही थी, जिनमें नागरिक अधिकार, रोज़गार, आवास और शिक्षा के अधिकारों के अलावा, यह मांग भी की जा रही थी कि संयुक्तराष्ट्र-संघ की देखरेख में एक जनमत-गणना करायी जाय, ताकि यह पता चल सके कि काले लोग अपनी 'राष्ट्रीय नियति' का निर्धारण किस तरह करना चाहते हैं। पार्टी ने निम्न-वेतनभोगी अश्वेत लोगों के लिए चिकित्सा-सुविधा और मुफ्त जलपान के कार्यक्रम आरम्भ किये। कई चुनावों में, उसने 'कैलि-फोर्निया पीस ऐण्ड फ्रीडम' पार्टी का साथ दिया और 'क्रान्तिकारी लोगों' के लिए एक तथाकथित संविधान तैयार करने का भी प्रयास किया।

पैंथर पार्टी ने अपनी राजनीतिक समर-नीति में हिंसा को जिस तरह स्थान दिया है, उसका बहुत कम अमेरिकियों ने, चाहे वे गोरे हों या अश्वेत, समर्थन किया है। पांच वर्ष बाद भी, पार्टी कुछ लोगों की एक छोटी जमात मात्र ही रही—इसकी सदस्य-संख्या केवल कुछ हजार ही वतायी जाती है (पैंथर की सदस्यता गुप्त रखी जाती है)। न्यूटन को, जिनकी उम्र इस समय २९ वर्ष है, इसकी तनिक भी चिंता नहीं। वह व्याख्यान और कोष-संग्रह सम्बन्धी दौरों में व्यस्त हैं। वह पैंथर की शक्ति में वृद्धि करने के साथ-साथ उसके कार्यक्षेत्र को विस्तृत करना चाहते हैं।

लाइनस पौलिंग

नोबेल पुरस्कार-विजेता वैज्ञानिक और राजनीतिक सत्याग्रही

विश्व के पुरस्कार-विजेताओं में डा० लाइनस कार्ल पौलिंग का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अमेरिका का यह विवादास्पद वैज्ञानिक, जो राजनीतिक क्रिया-कलाप में विशेष रुचि लेता है, इतिहास में एकमात्र ऐसा व्यक्ति है, जिसको दो वार पूर्ण नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुए—पहली वार १९५४ में, उसकी रासायनिक खोज पर,

और दुवारा १९६२ में, उसके शान्ति-कार्यो के लिए। अपने देश और विदेश के पुरस्कार और उपाधियां उन पर बराबर बरसती रहीं—१९७० में लेनिन शान्ति-पुरस्कार, पोलैण्ड के जगीलोनियन विश्वविद्यालय की 'डिप्लोमा ऑव् डाक्टर' की मानद उपाधि, गांधी शान्ति-पुरस्कार, राष्ट्रपति का विशेष योग्यता पदक तथा अन्य अनेक उपाधियां और पदक।

उनको प्राप्त यह सम्मान पदार्थ-रसायन के शोधकर्ता वैज्ञानिक तथा प्रमुख नागरिक कार्य-कर्ता के रूप में, श्री पौलिंग के असाधारण क्रिया-कलाप को ही उजागर करता है। वैज्ञानिक के रूप में, उनकी प्रसिद्धि इसलिए है कि उन्होंने परमाणु-रचना का एक नया सिद्धान्त प्रति-पादित किया और अपने साथियों के साथ मिल कर प्रथम कृत्रिम प्रति-जीवाणु और प्रोटीन कण का प्रथम आणविक नमूना तैयार किया। राजनीतिक सत्याग्रही (अधिकांश वैज्ञानिक ऐसी भूमिका निभाने से घबराते हैं) के रूप में, उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद परमाणु-बम के परीक्षणों के विरुद्ध बड़े उत्साह के साथ व्यक्तिगत आन्दोलन चलाया। रेडियोसक्रियता से मानव-जाति का कितना घोर अनिष्ट हो सकता है, यह सोच कर उन्हें अत्यन्त व्याकुलता हुई। उन्होंने दुनिया भर के ११,०२१ वैज्ञानिकों के हस्ताक्षरों से युक्त एक आवेदन-पत्र संयुक्त-राष्ट्र-संघ को भेज कर यह अनुरोध किया कि परमाणु-परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। **'नो मोर वार'** शीर्षक से उन्होंने एक पुस्तक लिखी, परमाणु परीक्षण रुकवाने के लिए अपने ही देश की सरकार के विरुद्ध मुकदमा दायर किया और सोवियत संघ से अपील की कि वह भी परमाणु-परीक्षणों पर रोक लगाये। १९६२ में, एक दिन वह युद्ध-विरोधी प्रदर्शनकारियों के साथ ह्वाइट हाउस के सामने धरना देने पहुंचे, और उससे अगले दिन ही, वह राष्ट्रपति की ओर से ४९ नोबेल पुरस्कार-विजेताओं तथा अन्य सम्मानित अमेरिकियों के सम्मान में ह्वाइट हाउस में आयोजित एक रात्रि भोज में उपस्थित हुए। १९६३ में, जब अमेरिका, सोवियत संघ और ग्रेट ब्रिटेन ने जमीन के ऊपर, आकाश में और समुद्र के गर्भ में परमाणु-परीक्षण न करने की ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किये, डा० पौलिंग अपने जीवन काल में ही भविष्य-द्रष्टा के रूप में सराहना के पात्र बन गये।

अब, डा० पौलिंग पुनः स्टैनफोर्ड विश्व-विद्यालय में अपनी प्रयोगशाला में पहुंच गये हैं, जहां वह मानसिक रोगों की जीव-रासायनिक प्रक्रिया पर अनुसंधान कर रहे हैं। वह राष्ट्रीय नीतियों का प्रायः सक्रिय विरोध करते रहे हैं। इस सिलसिले में, उन्होंने उन आलोचकों की कटु आलोचना की तनिक भी चिन्ता नहीं की, जो यह कहते हैं कि वैज्ञानिकों को राजनीतिक आन्दोलनों से दूर रहना चाहिये। इस तर्क को अस्वीकार करते हुए, डा० पौलिंग कहते हैं: "मैंने शान्ति के ऐसे प्रत्येक आन्दोलन का समर्थन किया है, जिसका मुझे पता चला।" उनके ही शब्दों में, "परमाणु-युद्ध की समस्या को पूंजीवाद बनाम साम्यवाद जैसी मामूली समस्याओं के साथ नहीं उलझाया जाना चाहिये।"

पौलिंग अपने दोनों नोबेल पुरस्कारों में से शान्ति के लिए प्राप्त नोबेल पुरस्कार को अधिक उल्लेखनीय मानते हैं। वह कहते हैं: "शान्ति की आवश्यकता और युद्धजनित मानवीय पीड़ाओं की समाप्ति के बारे में मेरे विचार अडिग हैं।"

आएन रेण्ड

अनुदारवाद की कट्टर समर्थक उपन्यास-लेखिका

आएन रेण्ड ऐसी महिला हैं, जो अपने विचारों को बिना किसी संकोच या पश्चात्ताप की भावना से प्रकट करती हैं। उन्होंने अपने दो उपन्यासों में, जिनकी बिक्री बहुत हुई है, अपनी मान्यताओं और उग्र अनुदारवादी दर्शन को अत्यन्त साहस तथा दृढ़ता के साथ मुखरित किया है। उनकी और उनके अन्य सहयोगियों की यह दृढ़ मान्यता है कि इस अनुदारवादी दर्शन का आश्रय लेकर ही विश्व की समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकता है। आएन रेण्ड का उपन्यास, **'दि फाउण्टेन हेड'**, १९४३ में प्रकाशित हुआ था। उसके प्रकाशन के साथ ही, उनकी ख्याति फैलने लगी। यह कर्म-प्रधान उपन्यास एक दृढ़-निश्चयी और प्रतिभा-शाली वास्तुशिल्पी की कहानी है, जो अपनी आवास-परियोजना में किसी प्रकार का परिवर्तन करने के लिए सहमत होने के बजाय, उस समूची परियोजना को ही नष्ट कर देता है। आलोचकों ने इस उपन्यास की अत्यन्त कटु आलोचना की, जिससे पाठकों का ध्यान इसकी ओर आकृष्ट हुआ और इसकी बिक्री में तेजी से वृद्धि हुई। उनका दूसरा उपन्यास, **'एटलस श्रग्ड'** (१९५७), पहले उपन्यास से बड़ा और काफी सफल रहा। इसमें उस अव्यवस्था का चित्रण किया गया है, जो उस समय उत्पन्न होती है, जब अमेरिका में प्रमुख वैज्ञानिक और व्यवसाय-प्रबन्धक यह कह कर शेष समाज के नेतृत्व का बोझ उठाने से इन्कार कर देते हैं कि इतना बड़ा भार वहन करने पर भी उन्हें समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता।

आएन रेण्ड के पाठक, जो आज भी उनके दोनों उपन्यासों की वर्ष में एक लाख प्रतियां खरीदते हैं, न केवल उनके कथानक के नाटकीय पक्ष की सराहना करते हैं, बल्कि उनके उस दर्शन की ऊष्मा के भी प्रशंसक हैं, जिसकी उनके काल्पनिक नायकों और नायिकाओं ने विस्तृत रूप से व्याख्या की है। पाठकों ने उनके विचारों के प्रति जैसी दिलचस्पी दिखायी, उससे प्रेरित होकर लेखिका ने अपने विचारों को 'वस्तुवाद' नाम से एक सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया है।

आएन रेण्ड ने 'वस्तुवाद' की व्याख्या करते हुए, उसे "एक विचार" बताया है, जो मानव को "एक ऐसे नायक के रूप में स्थापित करता है, जो अपने सुख को जीवन का नैतिक उद्देश्य तथा उत्पादन की उपलब्धियों को अपना श्रेष्ठतम कार्य मानता है और केवल तर्क में निष्ठा रखता है।" इस तथ्य को अपने चिन्तन का केन्द्र मान कर, उन्होंने अमेरिकी जीवन के कई प्रतिष्ठित सिद्धान्तों, जैसे सरकार द्वारा निजी उद्यमों का नियमन, आयकर और जनकल्याण, पर प्रबल प्रहार किया है। उनका कहना है: "दान के सम्बन्ध में मेरे विचार बिल्कुल सीधे-सादे हैं। मैं इसे कोई बड़ा गुण अथवा कोई नैतिक कर्तव्य नहीं मानती।"

आएन रेण्ड का कहना है: "जहां तक मुझे स्मरण है, मैंने अपनी आधारभूत मान्यताओं में कभी कोई परिवर्तन नहीं किया।" अपने उपन्यास के नायकों की तरह, उन्हें स्वयं भी जीवन के प्रारम्भ से ही पता था कि वह क्या चाहती हैं। उनका जन्म १९०५ में रूस के सेण्ट पीटर्सबर्ग नामक नगर में हुआ था। नौ वर्ष की आयु में उन्होंने निश्चय किया कि यह लेखिका बनेंगी। १९२६ में वह अमेरिका आ गयीं और फिल्म उद्योग में, जो बराबर विकसित हो रहा था, शामिल होने हालीवुड पहुंचीं। उन्होंने शुरू में चलचित्र की अतिरिक्त अभिनेत्री, और फिर, लेखिका के रूप में कार्य किया। वह बताती हैं: "मैंने अपनी पहली पटकथा, पहले नाटक और पहले उपन्यास को बेच दिया।" लेकिन, **'फाउण्टेन हेड'** के प्रकाशन से पूर्व, उन्हें शायद ही कोई जानता था। इस उपन्यास की रूपरेखा उन्होंने उस समय तैयार की थी, जब वह न्यूयार्क में एक वास्तुशिल्पी के कार्यालय में अवैतनिक टाइपिस्ट के रूप में काम कर रही थीं।

कार्ल हेस

नये दक्षिणपंथी, नये वामपंथी, या मात्र नये हेस ?

कार्ल हेस के सम्बन्ध में कहा गया है कि उनकी अत्यन्त दृढ़ मान्यता यह है कि "व्यक्ति स्वयं अपना जीवन संचालित कर सकता है।" इस मान्यता को क्रियान्वित करने के लिए व्यक्तिगत और बौद्धिक दृष्टि से उनमें इतना परिवर्तन हुआ है कि उनसे परिचित सभी लोग आश्चर्य-चकित रह गये हैं। विचारधारा के क्षेत्र में, वह रिपब्लिकन पार्टी के कट्टर अनुदार पक्ष का, जिसका मत यह रहा है कि "सरकारी व्यवस्था जितनी ही कम हो, उतना ही अच्छा है", परित्याग कर उन उग्र स्वतन्त्रतावादियों के समर्थक बन गये हैं, जो यह मानते हैं कि सरकार का पूरी तरह उन्मूलन कर दिया जाना चाहिये। जीवन-शैली में, वह उपनगर-निवासी, वेतनभोगी, अमेरिकी बाबुओं की श्रेणी से निकल कर उन

प्रगतिशील श्रमजीवियों के समाज में जा मिले हैं, जो अपने हाथों से काम करते हैं।

हेस के एक मित्र का कहना है कि वह एक ऐसे युवक के ज्वलन्त उदाहरण हैं, "जिसका अनुकरण करके वृद्ध व्यक्ति भी अपनी जीवन-शैली को विवेकपूर्ण ढंग पर बदल सकते हैं।" ४८ वर्ष पूर्व, वाशिंगटन, डी. सी., में एक करोड़पति परिवार में उनका जन्म हुआ। लेकिन, जब मां ने उनके पिता को छोड़ दिया और उन्हें कोई आर्थिक सहायता देने से भी इन्कार कर दिया, तब उन्हें घोर दरिद्रता का मुंह देखना पड़ा। उन पर असमय में ही वयस्कों जैसी जिम्मेदारी आ पड़ी। १४ वर्ष की उम्र में, उन्हें हाईस्कूल छोड़ कर एक रेडियो-समाचार लेखक के सहायक के रूप में नौकरी करनी पड़ी। १७ वर्ष की उम्र में, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, कुछ समय के लिए वह सेना में भी रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से उन्हें सेना से सेवामुक्त कर दिया गया और १९ वर्ष की उम्र में वह वाशिंगटन के एक समाचारपत्र में सहायक समाचार-सम्पादक के रूप में कार्य करने लगे। उन्होंने उड्डयन में रुचि लेना आरम्भ किया और 'एविएशन वीक' नामक पत्रिका के सम्पादक बन गये।

राजनीति सम्बन्धी चर्चाओं में अपनी रुचि के कारण हेस रिपब्लिकन पार्टी की गति-विधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे और अनुदार विचारों वाली पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्तम्भ लिखने लगे। टैक्सास के एक धनी तेल व्यवसायी, एच. एल. हण्ट, के लिए वह दक्षिण-पंथी विचारों से ओतप्रोत समाचार-समीक्षाएं तैयार करने लगे। १९६४ में, रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार, बैरी गोल्डवाटर, के व्याख्यान भी उन्होंने ही लिखे। 'नैशनल रिव्यू' नामक एक प्रमुख दक्षिणपंथी पत्रिका की स्थापना में भी उन्होंने योग दिया। फिर, श्रमिक संघवाद के विरुद्ध एक कार्यक्रम का निर्देशन करने के लिए वह चैम्पियन पेपर कम्पनी में शामिल हो गये। हेस बताते हैं: "मैं देश के मध्य-पश्चिमी क्षेत्र का एक मान्य अनुदार नेता बन गया। मैं संतुष्ट था और अच्छा वेतन पाता था।"

सहसा, हेस ने तय किया कि उनकी आकांक्षा यह नहीं थी—और वह एक नये जीवन की खोज में निकल पड़े। उनका तलाक हो गया और उन्होंने पुनर्विवाह किया। अब उन्होंने दाढ़ी रख ली है, श्रमिकों जैसे कपड़े पहनते हैं और वेल्डर के रूप में अपनी जीविका अर्जित करते हैं। स्वतन्त्रतावाद के वह एक प्रमुख दार्शनिक माने जाते हैं। यह नया दर्शन अराजकतावाद जैसा है और पुराने दक्षिण-पंथियों तथा नये वामपंथियों में से कुछ थोड़े से लोग उनके विचारों का समर्थन करते हैं। हेस और उनके साथी स्वतन्त्रतावादियों का विश्वास है कि स्वतन्त्रता एक नैसर्गिक अधिकार है और मनुष्य को चाहिये कि वह अत्यधिक सरकारी उत्पीड़न का सक्रिय विरोध करे।

पत्रिकाओं में प्रकाशित ढेरों लेखों और व्याख्यानों के माध्यम से, जिनमें से अधिकांश उन्होंने कालेजों में दिये हैं, हेस अमेरिकियों से यही आग्रह करते हैं कि वे कर अदा न करें, सेना में अनिवार्य भर्ती का विरोध करें और सरकार जब आवास की नयी परियोजनाएं आरम्भ करने के नाम पर उनके घरों को गिराये, तब वे अपने घर छोड़ने से साफ इन्कार कर दें। उनका कहना है: "क्रान्ति तब होती है, जब पीड़ित लोग सहयोग करना बन्द कर देते हैं।"

जान डब्ल्यू० गार्डनर

नागरिक असहमति आन्दोलन के मौलिक संगठनकर्ता

जान डब्ल्यू० गार्डनर के विचार सीधे-सादे, किन्तु दूरगामी, हैं: अमेरिका में निर्वाचित प्रत्येक राजनीतिक नेता के आसपास सीधे-सादे और सामान्य जैसे प्रतीत होने वाले ऐसे नागरिक होने चाहियें, जो हमेशा झांक कर यह देखते रहें कि वह क्या कर रहा है। इस बात का निश्चित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि ऐसा सचमुच हो रहा है, उन्होंने 'कामन काज' नामक एक नया और निर्भीक राजनीतिक संगठन बनाया है। संगठन यह प्रयास करता है कि देश भर में नागरिकों के ऐसे दल तैयार हों, जो अपने निर्वाचित प्रतिनिधि पर सामूहिक दबाव डाल सकें, और इस प्रकार, नगर, राज्य तथा राष्ट्र से सम्बद्ध महत्वपूर्ण विषयों के बारे में किये जाने वाले राजनीतिक फैसलों को प्रभावित कर सकें।

'कामन काज़' नामक यह संगठन १९७० में स्थापित हुआ। प्रथम महीने में ही इसके सदस्यों की संख्या १ लाख से अधिक हो गयी और अभी भी बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। प्रत्येक सदस्य को सदस्यता-शुल्क के रूप में १५ डालर वार्षिक चन्दा देना पड़ता है। गार्डनर ने कहा है कि इस संगठन के आयोजन का विचार उनके मस्तिष्क में उस समय अंकुरित हुआ, जब देश के विभिन्न भागों में अपनी यात्राओं के दौरान उन्हें अमेरिकियों में व्यापक रूप से व्याप्त इस भावना का पता चला कि उनकी राजनीतिक प्रक्रिया पर उनका कोई नियन्त्रण नहीं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे कुछ करना तो चाहते हैं, किन्तु आधुनिक समाज इतना जटिल हो गया है कि वे समझ नहीं पा रहे हैं कि कहां से आरम्भ किया जाय। उन्हें कार्य करने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से गार्डनर ने दान-दाताओं और व्यापारियों से प्रारम्भिक वित्तीय सहायता ली और 'कामन काज़' की स्थापना की। उन्हें आशा है कि इससे नागरिकों को अपनी राजनीतिक संस्थाओं पर नये सिरे से नियन्त्रण लागू कर सकना सम्भव हो जायेगा।

५९-वर्षीय श्री गार्डनर ने जिस अद्भुत चुनौती का सामना करने का संकल्प किया है, उसके लिए वह सर्वथा योग्य हैं। वह एक सफल अध्यापक के रूप में कार्य कर चुके हैं। 'कार्नेगी फाउण्डेशन फौर द ऐडवांसमेण्ट औव् टीचिंग' नामक संस्था का अध्यक्ष रहने के अतिरिक्त, उन्होंने राष्ट्रपति लिण्डन बी. जौनसन के मन्त्रिमण्डल में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जनकल्याण विभाग के मन्त्री के रूप में अपने दायित्व को बड़े शानदार ढंग से निभाया है।

उनका कहना है कि 'कामन काज़' संस्था किसी राजनीतिक उम्मीदवार का समर्थन नहीं करती। वह एक निष्पक्ष एवं निर्दलीय संस्था है। उसका घोषित लक्ष्य यह है कि वह नागरिकों की गोष्ठी के रूप में, सार्वजनिक हित में काम करेगी और राजनीतिक नेताओं को प्रभावित करने के लिए युगों से प्रसिद्ध उसी तरीके को अपनायेगी, जिसे विशेष हितों की रक्षा करने वाली गोष्ठियाँ परम्परा से अपनाती आ रही हैं। 'कामन काज़' की आरम्भिक गतिविधियों में से एक, कांग्रेस में वरीयता की व्यवस्था को बदलने के लिए आन्दोलन करना (इस व्यवस्था के अनुसार, समितियों के अध्यक्षों को व्यापक अधिकार प्राप्त होते हैं), और अतिस्वन परिवहन विभाग परियोजना को (इस परियोजना को धन की बर्बादी बताया गया था) रद्द कराना था।

गार्डनर कहते हैं: "स्वतन्त्र समाज के आलोचकों का कहना है कि यह प्रणाली हमारी आशाओं को पूरा नहीं कर सकी है।" लेकिन, स्वयं इसका उत्तर देते हुए, वह कहते हैं: "उपलब्ध प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि हम स्वयं इस प्रणाली के अनुरूप साबित नहीं हुए हैं।" उनको आशा है कि 'कामन काज़' की स्थापना से नागरिकों में अभिरुचि और क्रियाशक्ति का पुनर्जन्म होगा और संस्थाओं में नयी चेतना आने के साथ-साथ अमेरिका की राजनीति में भी स्फूर्ति आयेगी।

केट मिलेट

नारी स्वातन्त्र्य की मुखर वक्ता

सन् १९७० की बहु-विक्रय वाली अपनी पुस्तक, **'सेक्सुअल पालिटिक्स : ए सर्पराइज़िंग एग्ज़ामिनेशन औव् सोसाइटीज़ मोस्ट आर्बिट्रेरी फौली'**, में, नारी की ओर से पुरुष के नाम आवश्यक संदेश प्रस्तुत करते हुए, केट मिलेट ने लिखा है : "मैं केवल यही कहने की कोशिश करती रही हूं कि देखो, भाई, मैं भी इन्सान हूं।" इस पुस्तक में, एक विवादास्पद विषय के एक पक्ष को विद्वत्तापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक को अमेरिका में उभरते हुए नारी अधिकार-आन्दोलन की बाइबिल और उसकी लेखिका को प्रगतिशील महिला आन्दोलन की प्रमुख सैद्धान्तिक प्रणेता कहा गया है।

इसमें तर्कों की ऐसी बौछार है, जिससे लेखिका की युयुत्सु बहनें तो बड़ी खुश होती हैं, किन्तु उसके आलोचकों को यह शिकायत करने का मौका मिलता है कि उसने अपने पक्ष को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। मिलेट ने अपनी पुस्तक में यह प्रतिपादित किया है कि नारी के साथ पुरुष के सम्बन्ध बुनियादी तौर पर राजनीतिक हैं और पुरुष नारी का अमानवीय ढंग से शोषण कर रहा है। उन्होंने पितृप्रधान समाज को एक राजनीतिक व्यवस्था का सिद्धान्त बताया है, यौन क्रांति के इतिहास का वर्णन किया है, साहित्य और संस्कृति के अन्य पहलुओं में व्याप्त यौनवाद को बेनकाब किया है और इस बात पर जोर दिया है कि जब तक समाज नारी और पुरुष को जन्म से ही समान नहीं समझता, तब तक कोई यह निश्चित नहीं कर सकता कि नारी और पुरुष में कितना अन्तर है।

उन्होंने एक जापानी मूर्त्तिकार से शादी की है। इस व्यक्ति से उनकी मुलाकात उस समय हुई थी, जब वह टोकियो विश्वविद्यालय में कला की छात्रा थीं। उन्होंने यह पुस्तक अपने पति को ही समर्पित की है। मिलेट आजकल अपनी दूसरी पुस्तक लिखने, महिलाओं की दुर्दशा पर एक वृत्तचित्र बनाने (इसमें सब कलाकार और सहयोगी महिलाएं हैं और उनकी बहन मुख्य नायिका है), महिला-अधिकार के बारे में व्याख्यान देने, प्रदर्शन करने और ब्रायन मावर कालेज में समाजशास्त्र पढ़ाने में व्यस्त हैं।

सैम ब्राउन

युद्ध-विरोधी युवकों के प्रतिभाशाली तरुण संगठनकर्ता

२८-वर्षीय सैमुअल विनफील्ड ब्राउन दुबले-पतले, मूछों वाले, ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें वियतनाम युद्ध में अमेरिका की अन्तर्ग्रस्तता के विरुद्ध युवा अमेरिकियों को संगठित करने वाला नेता माना जाता है। १९६८ में, जब सेनेटर यूजीन मैकार्थी युद्ध-विरोधी नेता के रूप में राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रैटिक दल का टिकट प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे, उनके चुनाव-आन्दोलन के युवा समन्वयकर्ता के रूप में श्री सैम ब्राउन ने स्वयंसेवकों की एक सेना खड़ी कर दी थी। इन स्वयंसेवकों के प्रयासों से सेनेटर मैकार्थी के पक्ष में प्राइमरी चुनावों में इतने अधिक वोट पड़े कि राष्ट्रपति लिण्डन बी० जौनसन को विश्वास हो गया कि उन्हें पुनः चुनाव में नहीं खड़ा होना चाहिए। 'वियतनाम युद्ध-विराम समिति' के चार राष्ट्रीय संयोजकों में सबसे प्रमुख व्यक्ति के रूप में, उन्होंने १९६९ के अन्तिम चरण में शांति-प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए इतना काम किया, जितना कोई अकेला व्यक्ति नहीं कर सका। उनके इन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप, इतने विशाल और व्यापक शान्ति-प्रदर्शनों का आयोजन हुआ, जितने बड़े प्रदर्शन इस देश के इतिहास में शायद ही पहले कभी हुए हों।

संगठन की अपूर्व क्षमता के अतिरिक्त, ब्राउन की एक अद्भुत विशेषता यह है कि स्थिति बदलने के साथ ही वह अपना रास्ता भी पूरी तरह बदल देते हैं। वह और उनके साथियों ने १९७० में वियतनाम युद्ध-विराम समिति को समाप्त कर दिया, क्योंकि उन्हें विश्वास हो चुका था कि युवकों द्वारा विशाल प्रदर्शन करने मात्र से राष्ट्रीय नीतियों को प्रभावित नहीं किया जा सकता। ब्राउन ने कहा कि आवश्यकता इस बात की थी कि कांग्रेस के भीतर, मजदूर यूनियनों में, चर्च में और अन्यत्र राष्ट्र का प्रौढ़ नेतृत्व आगे आता और छात्रों के साथ मिल कर, उनके निदेशक के रूप में नहीं, बल्कि सहायक के रूप में, इस काम को आगे बढ़ाता। ब्राउन ने कहा : "शान्तिपूर्ण व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा व्यापक आधार पर स्थानीय कार्यवाही करके ही इस युद्ध को रोका जा सकेगा।"

ब्राउन देश के पश्चिमी क्षेत्र की देन हैं। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातक की उपाधि हासिल की, और फिर, जैसा कि उन्होंने स्वयं बताया, पादरी बनने के इरादे से नहीं, बल्कि इस बात का अध्ययन करने के लिए कि नीतिशास्त्र को राजनीति से किस प्रकार जोड़ा जा सकता है, हारवर्ड डिविनिटी स्कूल में दाखिल हुए।

युवा सैम ब्राउन का कहना है : "मैं जिस काम को सबसे अच्छे ढंग से कर सकता हूं और जिसे मैं सबसे श्रेष्ठ समझता हूं, वह है संगठन बनाना।" लेकिन, साथ ही, वह यह भी कहते हैं कि हो सकता है कि अन्ततोगत्वा वह स्वयं ही उम्मीदवार बनें। वह 'शान्ति-आन्दोलन' में अब भी सक्रिय हैं और युद्ध के विरुद्ध नियमित रूप से भाषण करते हैं। १९७० में, उन्होंने **'ह्वाई आर वी स्टिल इन वियतनाम'** शीर्षक से एक संकलन का सम्पादन किया। राजनीतिक आन्दोलनों के प्रति अपनी आस्था के कारण को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने बताया : "जनता के राजनीतिक विचारों को महत्व मिलना चाहिए। लोकतन्त्र को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जा सकता है। इस देश में अब भी इतनी सदाशयता है कि लोकतन्त्र प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकता है और यदि विवेकसम्मत विकल्प प्रस्तुत किये जायें, तो अमेरिका के लोग वही रास्ता अपनायेंगे, जो अधिकतम मानवीय है।"
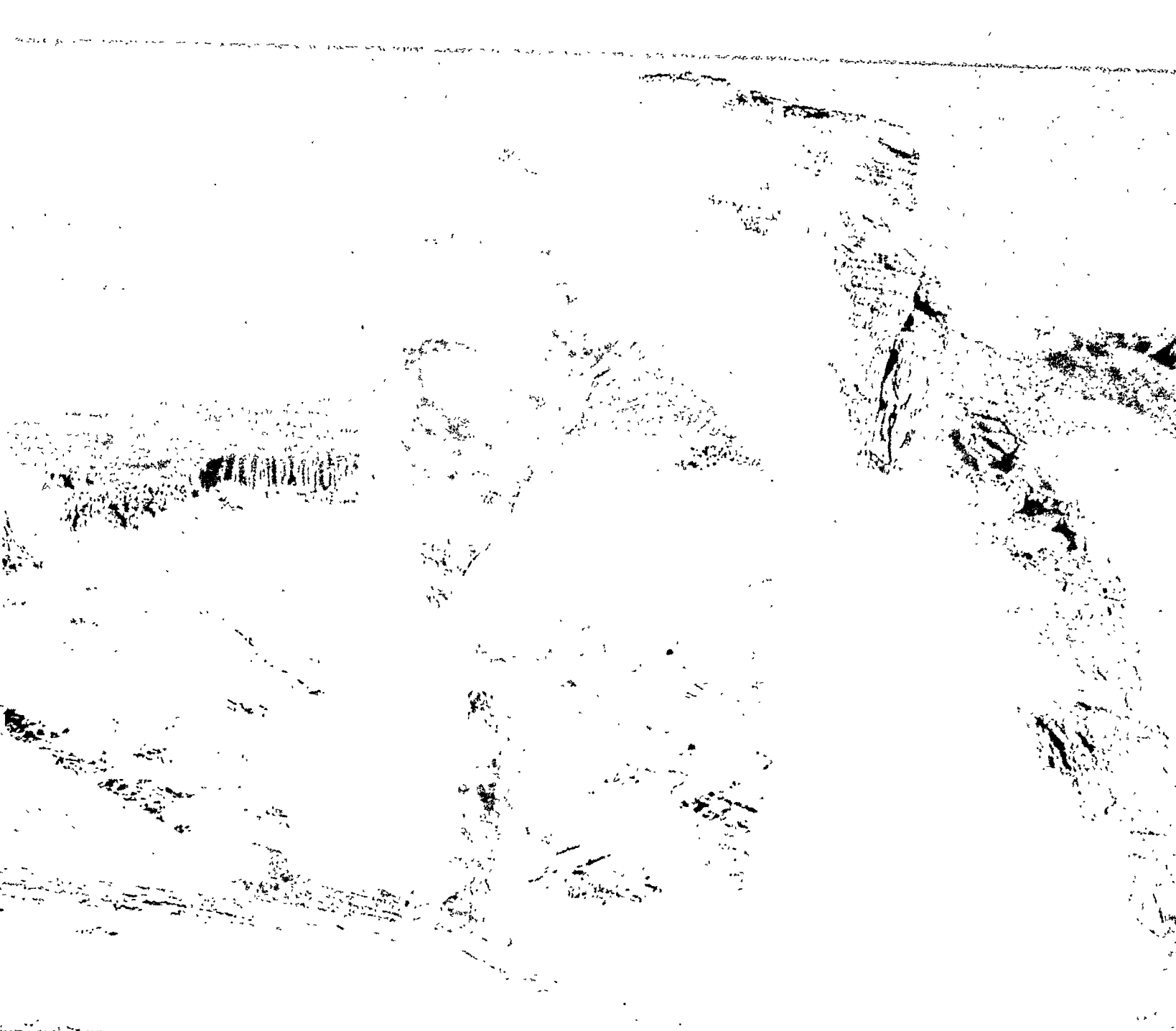
'प्रकृति का मात्र एक स्पर्श अखिल विश्व को आत्मीय बना देता है'

शेक्सपियर की यह पंक्ति, जो राष्ट्रपति निक्सन के पर्यावरण विषयक एक भाषण से उद्धृत है, इस वर्ष मनाये जा रहे अमेरिकी राष्ट्रीय पार्कों के शताब्दी-समारोह में निहित आदर्श की सच्ची प्रतीक है। शताब्दी-समारोह मनाने के लिए, सितम्बर में, भारत सहित सौ राष्ट्रों के प्रकृति संरक्षण-विशेषज्ञ अमेरिका में आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय पार्क विश्व-सम्मेलन में शामिल हुए।

सामने के पृष्ठ पर, ऊटाह के ग्रार्चेज़ नैशनल मानूमेण्ट में संकत शिला की यह प्राकृतिक मेहराब शाम की घूप में नहा उठी है।

नीचे, एवरग्लेड्स नैशनल पार्क में मकड़ी के जाले का यह छायाचित्र मोती की दीप्तिमान लड़ियों का भ्रम उत्पन्न कर रहा है।

दायें, यलोस्टोन प्रपात, जहां गर्जन करती विशाल जलधारा ६४ मीटर नीचे चट्टान पर टकरा कर ग्रद्भुत दृश्य का सृजन करती है। यह यलोस्टोन नैशनल पार्क के प्रमुख ग्राकर्षणों में एक है। सन् १९७२ के सितम्बर में पार्कों सम्बन्धी ग्रन्त-र्राष्ट्रीय सम्मेलन का ग्रायोजन इसी पार्क में हुग्रा। यह पार्क, जो ग्रमेरिका के सबसे पुराने ग्रौर बड़े पार्कों में एक है, कई दृष्टियों से ग्रनूठा है। १८७२ में स्थापित इस पार्क को ग्रमेरिका तथा ग्रन्य देशों में निर्मित राष्ट्रीय पार्कों का ग्रग्रदूत होने का गौरव प्राप्त है।

इस वर्ष मनायी जा रही पार्क शताब्दी एक विशिष्ट 'धारणा के पुष्पित होने' की प्रतीक है, क्योंकि यलोस्टोन राष्ट्रीय पार्क की स्थापना ने एक विश्वव्यापी राष्ट्रीय पार्क आन्दोलन को जन्म दिया।

गांठों से युक्त वृक्ष का यह तना, पूर्वी-मध्य कैलिफोर्निया और दक्षिण-पश्चिमी नेवाडा में स्थित डेथ वैली नैशनल मानूमेण्ट नामक धूप-प्लावित गह्वर में पड़ा है। पनामिण्ट इण्डियन लोग इस घाटी को 'टोमेशा' कहते थे, जिसका अर्थ है, 'प्रज्वलित भूमि'। इसके लिए इससे अधिक उपयुक्त नाम देना सम्भव नहीं, क्योंकि ग्रीष्म में यह घाटी अमेरिका का सबसे तप्त स्थान बन जाती है। यह घाटी पश्चिमी गोलार्द्ध का सबसे नीचा—समुद्र तल से ८५ मीटर नीचा—स्थान भी है।

बात १८१० की है। जान कोल्टर नामक एक व्यक्ति अमेरिका के पश्चिमी प्रदेश से लौट कर आया, तो अपने साथ गरजते प्रपातों, भयावह घाटियों, उबलती नदियों, गर्म पानी के उछलते सोतों और बुलबुलाते दलदलों की कहानियां भी लाया। उसने सरोवरों की कहानी सुनायी, जिनसे गन्धक की गन्ध आती थी और जिनके कारण समूचे वनांचल धवल वैभव से आप्लावित हो उठे थे। और, उसने सुनायी कहानी उत्तुंग पर्वत शिखरों की, जो आकाश का वक्ष बींध रहे थे।

इनमें से अधिकांश कहानियों को गप्प कह कर उड़ा दिया गया, और वर्षों तक लोग इस क्षेत्र को 'कोल्टर का नर्क' कह कर पुकारते रहे। गया तो था कोल्टर सुप्रसिद्ध खोजी दल, लेविस और क्लार्क, के साथ, किन्तु उसका साथ छोड़ कर वह चल पड़ा था अकेले ही यलोस्टोन नदी के ऊपरी निर्जन क्षेत्र की खोज करने। यह वही क्षेत्र था, जिसे आजकल उत्तर-पश्चिमी व्योमिंग कहा जाता है।

आगे चल कर, जब १८७० में, वाशबर्न-लैंगफोर्ड-डोएन नामक खोजी दल के अभियानियों ने 'कोल्टर के नर्क' की पुनः खोज की, तो उन्हें पता चला कि वह क्षेत्र, वस्तुतः, प्रकृति का, और शायद 'पृथ्वी पर अपने ढंग का अकेला', कौतुकालय है। लेफ्टिनेण्ट गुस्टावस डोएन ने अपनी अधिकृत रिपोर्ट में लिखा: "इस भूमण्डल पर सम्भवतः यह प्रकृति की विशालतम प्रयोग-शाला है।" उन्होंने यह भी लिखा कि उनका दल 'पहाड़ी शेरों के अवसाद भरे स्वर' से अभिभूत हो उठा था।

एक मास तक यह दल इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करने और उसके विशिष्ट स्थलों को अंकित करने में व्यस्त रहा। एक रात, दल के सदस्य अपने शिविर में अलाव के किनारे बैठ कर विचार करते रहे कि इस क्षेत्र का किया क्या जाय। यह अमेरिकी भूभाग था और इसे खेती के योग्य बनाया जा सकता था। लेकिन मोण्टाना के एक एटार्नी, कोर्नेलियस हेजेज, ने इस बात पर जोर दिया कि वह भूमि इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसे निजी स्वामित्व में नहीं रखा जा सकता था। उन्होंने अनुरोध किया कि दल के सदस्य व्यक्तिगत लाभ की बात छोड़ कर यह मांग करें कि इस क्षेत्र को संघीय संरक्षण में ले लिया जाय।

दो साल बाद—मार्च, १८७२ में—राष्ट्रपति यूलीसेस एस० ग्राण्ट ने अमेरिकी संसद द्वारा पारित एक विधेयक पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। उसके अनुसार, यलोस्टोन नदी के ऊपरी क्षेत्र की आठ लाख हैक्टेयर भूमि को 'सार्वजनिक पार्क अथवा जनता के आनन्द-मंगल और आमोद-प्रमोद का स्थल' बना दिया गया।

यह अधिनियम प्राकृतिक सौन्दर्य वाले स्थलों के संरक्षण के इतिहास में एक प्रगति-चिन्ह बन गया। यलोस्टोन राष्ट्रीय पार्क की स्थापना से अमेरिका में राष्ट्रीय पार्क प्रणाली का सूत्रपात हुआ, जिसने दुनिया भर के देशों में राष्ट्रीय उद्यानों की इस प्रकार की श्रृंखलाओं के निर्माण के विचार को बढ़ावा दिया।

यलोस्टोन के चमत्कार इतने विलक्षण हैं कि कोल्टर ने जो कुछ कहा था, उसमें कहीं कोई अतिशयोक्ति नहीं थी। नौ हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के इस उद्यान में, दुनिया के कुल गर्म सोतों में से आधे से अधिक सोते, दर्जनों प्रपात, गर्म पानी के निर्झर, जिनमें से कुछ अतीव रंगीन हैं, असंख्य कुण्ड और झीलें पायी जाती हैं, जो इस भूखण्ड की दृश्यावली
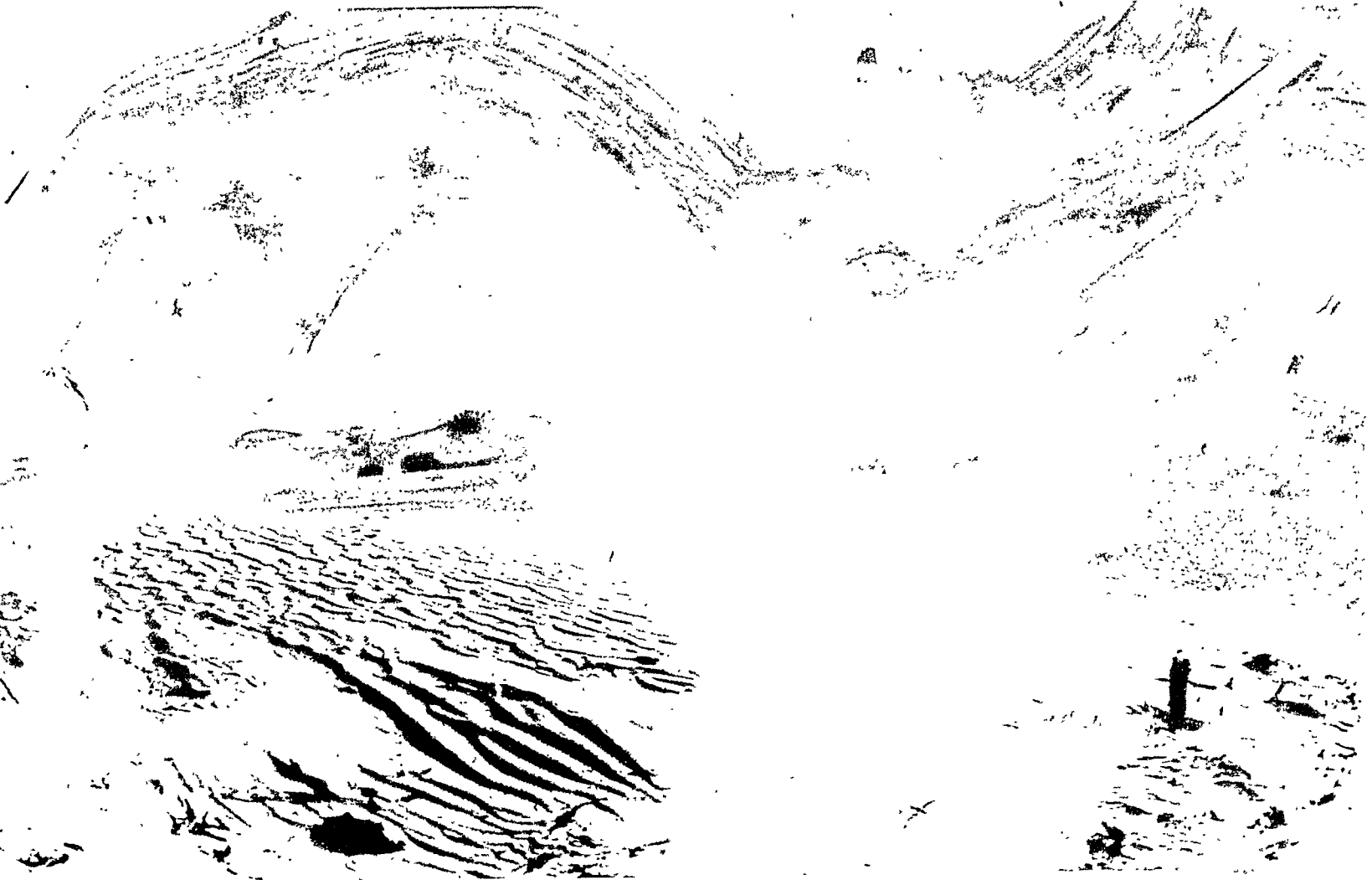
में रत्नों की भांति जड़ी हैं। अमेरिका में पाये जाने वाले वन्य जीव-जन्तुओं में सबसे अधिक इस उद्यान में हैं—हजारों पहाड़ी भेड़ें, हिरण, सांभर, मृग, बारहसिंगे, भालू और भैंसे इस वन में मानव के भय से मुक्त, निर्द्वन्द्व, विचरण करते हैं।

यलोस्टोन के गर्म जल के सोते सबसे अधिक आकर्षक हैं। कभी तो वे सांप की तरह फुफकारते, बुदबुदाते, भयंकर गर्जन करते, और कभी वाष्प उगलते तथा बड़े वेग से पानी उछालते हैं। एक दर्शक ने इनका वर्णन करते हुए, इनकी तुलना 'बन्धन तोड़ कर मुक्त होने के लिए छटपटाती बन्दी आत्माओं' से की है। इनमें भी, 'ओल्ड फेथफुल' नामक गर्म जल का सोता सबसे अधिक विख्यात है। यह सोता हर ६५ मिनट के बाद उबलते हुए पानी का एक स्तम्भाकार पुंज उछालता है, जो ४५ मीटर की ऊंचाई तक जाता है।

फिर, 'रंग-पात्र' हैं, जो गर्म जल के इन सोतों से अत्यन्त निकटता से सम्बद्ध हैं। ये 'रंग-पात्र' वस्तुतः द्रव पंक के उष्ण निर्झर हैं। रासायनिक तत्वों से मिश्रित होने के कारण, इनका पंक रंगीन होता है और खूब चमकता है। इनमें से एक 'सफायर पूल' (नील कुण्ड) है, जो शुरू में तो दर्पण की भांति निश्चल, निर्मल, सघन और नीला दिखलायी देता है, किन्तु कुछ क्षण निश्चल रहने के बाद, इसमें बुलबुले उठने लगते हैं। बुलबुले बढ़ते जाते हैं और थोड़ी ही देर में सारा कुण्ड उबलने और उफनने लगता है। फिर, कुछ क्षण बाद, समूचा कुण्ड शान्त हो जाता है और निर्मल रत्न की भांति चमकने लगता है।

यलोस्टोन के गर्म सोतों के पानी में मिश्रित विभिन्न प्रकार के खनिज संग्रहीत होकर विविध रूप और आकार धारण कर लेते हैं। मैमथ हाट स्प्रिंग में पत्थर के चूने के जमा होने और तह-पर-तह जमते जाने के कारण ऊंचे बेसिन और निसेनीदार छतें बन गयी हैं, जिनके ऊपर बारीक जालीदार पपड़ी पड़ गयी है। नन्हीं-नन्हीं शैवालों ने, जो गर्म पानी में ही जिन्दा रहती हैं, इस रचना को लाल, नीला और लैवेंडर रंग दिया है। और, उन सबके ऊपर जल की एक पतली चादर ऊपर से तैरती हुई इन्द्रधनुष की भांति धीरे-धीरे उतरती है।

यलोस्टोन नदी की तीन सौ मीटर गहरी संकरी घाटी, ग्रैण्ड कैनियन, तो और भी अधिक सुन्दर है। इसके अपूर्व सौन्दर्य के कारण ही इसे 'घाटियों की रानी' कहा जाता है। विशाल भित्तियों का रंग नीबू के रंग से लेकर गहरे नारंगी तक, और हल्के गुलाबी से लेकर गहरे लाल और भूरे तक, भिन्न-भिन्न है। इस सुषमा और चमक-दमक के आधार पर ही इसका नाम यलोस्टोन रखा गया है—'यलोस्टोन' नाम

'ह्वाइट डोम गीजर', जो आकाश में ऊंचाई तक गर्म पानी की श्वेत धारा उछालता है, यलोस्टोन पार्क में फायरहोल नदी के तटवर्ती भाग में पाये जाने वाले गर्म पानी के ७० सोतों में से एक है।

हिममण्डित पर्वत शिखर और प्रदहमान अग्निकुण्ड, नारंजी मरुस्थल और जलगर्भीय उद्यान—ये सभी अमेरिका के राष्ट्रीय पार्कों की अनन्त विविधता के प्रमाण हैं।

'रौक कैसिल' शिला-दुर्ग एक झील में, दायें, से उठ कर ३०० मीटर की ऊंचाई तक जाता है। यहां झील के पानी में सैलानी नौका-विहार करते दिखायी दे रहे हैं। ग्लेन कैनियन राष्ट्रीय मनोरंजन-क्षेत्र में, जो एरिजोना-ऊटाह सीमा पर फैला है, कोलोराडो नदी के आरपार बांध बना कर इस झील का निर्माण किया गया था।

मैकिनले पर्वत की हिमाच्छादित ढलानें, नीचे, पर्वतारोहियों के लिए चुनौती हैं। अलास्का के इस विख्यात पर्वत का ६,१०० मीटर ऊंचा शिखर उत्तर अमेरिकी महाद्वीप का उच्चतम शिखर है। मांउण्ट मैकिनले नैशनल पार्क के अन्य आकर्षणों में, विशाल हिमनद, भालू, भेड़ें, भेड़िये, आदि शामिल हैं। यह अमेरिका का द्वितीय सबसे बड़ा राष्ट्रीय पार्क है।
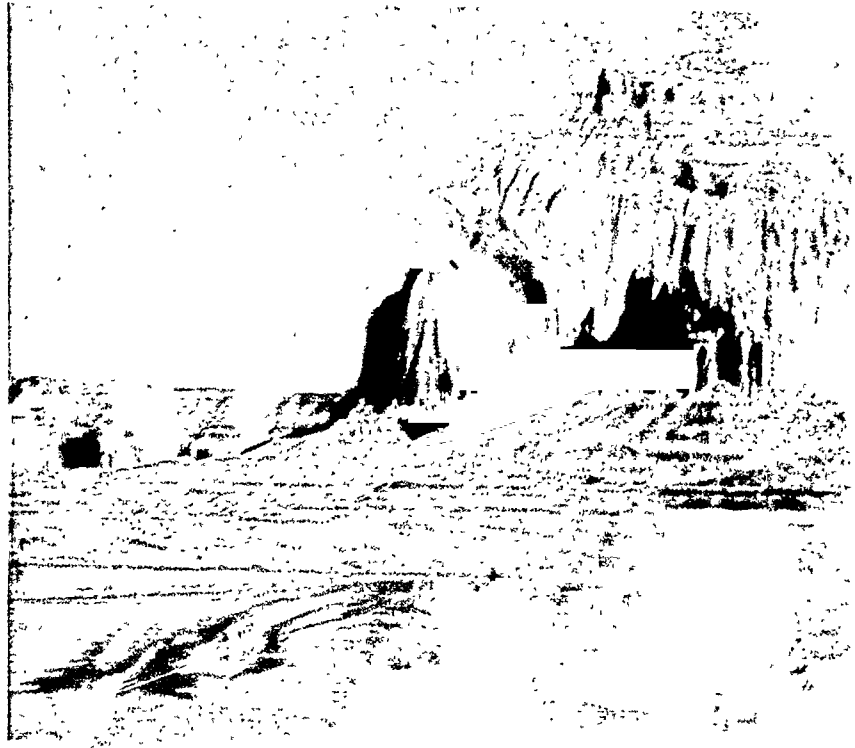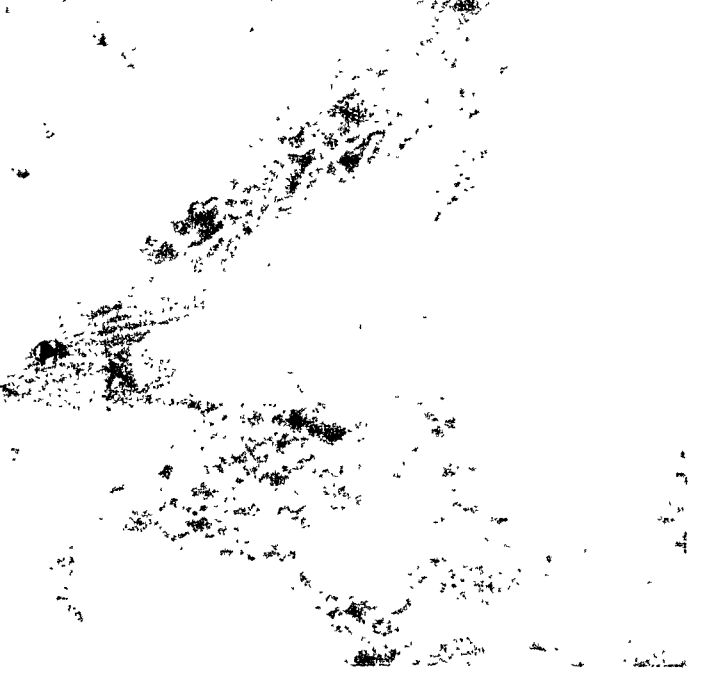
अमेरिकी पार्क प्रणाली में एक जलगर्भीय उद्यान, सबसे ऊपर, भी शामिल है। वर्जिन द्वीपसमूह का 'बक आइलैण्ड रीफ नैशनल मानूमेण्ट' अपनी रंग-बिरंगी कंदराओं और प्रवाल-संरचनाओं के लिए सुविख्यात है।

धधकता अग्नि-तड़ाग, ऊपर, हवाई वोलकैनोज नैशनल पार्क के रोमांचकारी दृश्यों में से एक है। ज्वालामुखी के इस गह्वर की चौड़ाई आधा मील है। कभी तो यह गह्वर बुझे हुए ठण्डे पत्थर की राख का तालाब, और कभी, प्रज्वलित अग्नि का उबलता कुण्ड बन जाता है।

ध्यानावस्थित सारस, बायें, फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स नैशनल पार्क में मेंढक या मछली के शिकार की प्रतीक्षा में है। एवरग्लेड्स पक्षी-विशेषज्ञों का स्वर्ग है। यहां पेलिकन, आदि विविध प्रकार के पक्षी बहुतायत से पाये जाते हैं।

"जो लोग पृथ्वी, सागर और आकाश के रहस्यों के साहचर्य में रहते हैं, वे न तो कभी एकान्तवासी होते हैं और न ही जीवन से ऊबते हैं।"

—रैचेल कार्सन

अमेरिकी इण्डियनों द्वारा अपनी बोली में रखे गये इस स्थान के नाम का अंग्रेजी अनुवाद है।

यलोस्टोन राष्ट्रीय पार्क अमेरिका के राष्ट्रीय पार्कों में सबसे बड़ा और सबसे अधिक प्रसिद्ध है। फिर भी, इसका क्षेत्रफल अमेरिका की राष्ट्रीय पार्क शृंखला के कुल क्षेत्रफल के कुछ थोड़े प्रतिशत के ही बराबर है। यलोस्टोन के कुछ वर्ष बाद ही, कैलिफोर्निया में योसेमाइट राष्ट्रीय पार्क की स्थापना हुई। उसके बाद, सिकोया, जनरल ग्राण्ड और माउण्ट रेनियर नामक राष्ट्रीय पार्कों का निर्माण हुआ। राष्ट्रीय पार्कों के निर्माण का यह क्रम बराबर जारी रहा और थोड़े-थोड़े कालान्तर से बहुत से दूसरे पार्कों का निर्माण हुआ। आज अमेरिका के २८३ क्षेत्रों में राष्ट्रीय पार्क हैं और इनका क्षेत्रफल कुल मिला कर १ करोड़ २० लाख हैक्टेयर है।

प्रारम्भिक वर्षों में, पार्कों का प्रबन्ध अमेरिका के सैन्य, कृषि और आन्तरिक विभाग के बीच बटा था। किन्तु मोटरगाड़ियों का युग प्रारम्भ हो जाने पर इन पार्कों का महत्व बहुत बढ़ गया, और १९१७ में, अमेरिका के आन्तरिक विभाग के अधीन अमेरिकी राष्ट्रीय पार्क सेवा की स्थापना की गयी।

मेन के चट्टानी समुद्रतट से लेकर प्रशान्त के उष्णकटिबंधीय द्वीपों तक, और पूर्व की तटवर्ती उपत्यकाओं से लेकर अलास्का की हिममण्डित चोटियों तक, फैले नैसर्गिक सौन्दर्य और चमत्कार को आज राष्ट्रीय पार्क शृंखला की मणियों के रूप में गूंथ दिया गया है। ये सब, अपने समवेत रूप में, अमेरिका के प्राकृतिक सौन्दर्य की अनन्त विविधता का प्रदर्शन करते हैं।

प्रत्येक पार्क की अपनी विशिष्टता है। उदाहरण के लिए, फ्लोरिडा का एवरग्लेड्स पार्क अमेरिका का सबसे बड़ा उप-उष्णकटिबंधीय निर्जन प्रदेश है। इसकी दूर-दूर तक विस्तृत झीलों और जलाशयों में कितनी ही किस्म के दुर्लभ एवं रंगीन पक्षी बसेरा लेते हैं। ऊटाह के ब्राइस कैनियन पार्क में मिट्टी के क्षरण के फलस्वरूप, इस पृथ्वी पर अपनी किस्म की सबसे असाधारण संरचनाएं देखने को मिलती हैं। यहां विशाल वृत्ताकार प्रांगणों में रंग-बिरंगे और अजीब आकृतियों वाले कंगूरे, भित्तियां और सूच्याकार शिखर खड़े हैं। न्यू मैक्सिको के कार्ल्सबाद कैवर्न्स नामक कन्दराओं में जमीन के नीचे एक विशाल भूलभुलैया या चक्रव्यूह जैसी सुरंग है, जो भूगर्भ के कई विशालतम प्राकृतिक तहखानों को, जिनकी खोज अभी की जानी है, जोड़ती है। हवाई द्वीप के हैलेकाला पार्क में एक निष्क्रिय ज्वालामुखी का विशाल गह्वर है, जिसमें दुर्लभ किस्म का सिलवर-स्वोर्ड नामक पौधा उगता है।

वाशिंगटन का नार्थ कैस्केड पार्क एक वन-प्रदेश है, जिसमें ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी चोटियां, पहाड़ी झीलें और हिमनद हैं। योसेमाइट में अमेरिका के उच्चतम प्रपात हैं; कोलोराडो के मैसा वर्दे में आदिकालीन मानव के प्रागैतिहासिक आवास सुरक्षित हैं। अमेरिका के राष्ट्रीय पार्कों के कुछ अद्भुत चमत्कार, जैसे सिकोया के विशाल वृक्ष, ग्रैण्ड कैनियन की संकरी घाटी और यलोस्टोन के गर्म जल के सोते, तो विश्व भर में विख्यात हैं।

इस वर्ष का पार्क शताब्दी-समारोह 'एक विचार के पुष्पित होने' के प्रतीक के रूप में मनाया जा रहा है, क्योंकि यलोस्टोन पार्क की स्थापना ने संसार भर में राष्ट्रीय पार्कों के निर्माण की प्रवृत्ति को जन्म दिया।

सन् १८८७ में, कनाडा में बांफ नैशनल पार्क की स्थापना हुई, जो वहां बाद में स्थापित कई पार्कों का अग्रदूत था। न्यूजीलैण्ड ने १८९४ में अपने पहले राष्ट्रीय पार्क, टोंगारीरो, की स्थापना की। आस्ट्रेलिया ने वर्तमान सदी के तीसरे दशाब्द में अपने राष्ट्रीय पार्कों का निर्माण किया। आज यूरोप के जंगलों, अफ्रीका के खुले मैदानों और एशिया तथा दक्षिण अमेरिका के वनों में राष्ट्रीय पार्क हैं।

भारत में पांच राष्ट्रीय पार्क हैं—मध्यप्रदेश में कान्हा, बांधोगढ़ और शिवपुरी; महाराष्ट्र में तारोबा; और उत्तर प्रदेश में कारबेट पार्क। ये सभी पार्क अपने-अपने राज्यों के राष्ट्रीय पार्क अधिनियमों के अधीन स्थापित किये गये हैं। लेकिन, वन्य जीव-जन्तुओं के लिए संरक्षित वन-प्रदेश भी कम महत्वपूर्ण नहीं। ऐसे छोटे-बड़े संरक्षित वन-प्रदेशों की संख्या कुल मिला कर १४० है। इनमें असम का काजीरंगा, जो एक सींग वाले भारतीय गैंडे का आवास है; गुजरात का गिर जंगल, जो एशिया में सिंहों का एकमात्र शेष बचा शरणस्थल है; केरल का पेरियर वन, जहां झुण्ड-के-झुण्ड हाथी घूमते हैं; और राजस्थान में भरतपुर, जो विविध प्रकार के पक्षियों के शरणस्थल के रूप में विख्यात है, शामिल हैं।

प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता और मानव एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को सही बनाने की तीव्र उत्सुकता आज पहले की अपेक्षा कहीं अधिक महसूस की जा रही है। हाल के वर्षों में, इन प्रश्नों पर मानव के दृष्टिकोण में बड़े मौलिक एवं दूरगामी परिवर्तन हुए हैं।

आधुनिक जीवन में बढ़ते हुए तनावों को दूर करने के लिए अधिकाधिक संख्या में लोग जिस तरह प्रकृति की ओर उन्मुख हो रहे हैं, उसमें इस प्रवृत्ति की झलक मिलती है। अमेरिका में गत वर्ष राष्ट्रीय पार्कों में मनोरंजनार्थ जाने वालों की संख्या २० करोड़ से अधिक थी। (पार्क में जाने वाले दर्शकों की गणना 'मानव-दिवसों' के रूप में की जाती है। जो लोग पूरे सप्ताह पार्क में रहते हैं, उनकी गणना एक दिन में सात दर्शकों के आगमन के बराबर मानी जाती है।)

राष्ट्रीय पार्कों में जितनी बड़ी संख्या में लोग जाने लगे हैं, उसको दृष्टिगत रख कर, पार्कों में यातायात की मात्रा कम करने के लिए नयी नीतियां अपनायी गयी हैं। योसेमाइट पार्क में, मध्य की ११ किलोमीटर लम्बी घाटी के अधिकांश भाग में मोटरगाड़ियों का ले जाना वर्जित है। नार्थ कैस्केड्स पार्क में ऊंची पहाड़ी चोटियों से आवृत गहरी घाटी में से होकर यात्रियों को ढोने के लिए एक ट्राम-वे बनायी जा रही है।

राष्ट्रीय पार्क सेवा का काम अब पार्कों की रक्षा तक ही सीमित नहीं है। उसे जीवन का स्वरूप सुधारने के लिए अधिक प्रभावकारी और सक्रिय भूमिका अदा करनी पड़ रही है। यह सेवा अमेरिकियों—खास कर किशोरों—को उनके भूतकालीन इतिहास और संस्कृति से अवगत करने में सहायक सिद्ध हो रही है। नेवादा के पर्वतीय इलाकों से होकर पर्यटन करने की योजनाएं बनायी जाती हैं। ये योजनाएं इस प्रकार तैयार की जाती हैं, जिससे यात्री को महसूस हो कि सौ वर्ष पूर्व लोग किस तरह यात्राएं करते थे। इन यात्राओं में पार्क के अधिकारी अमेरिकी इण्डियनों के लोकगीत, ज्योतिष, भूगर्भ शास्त्र, दस्तकारी, आदि विषयों पर व्याख्यान देते हैं।

तीन वर्ष पूर्व, अमेरिकी कांग्रेस ने 'पार्कों में स्वयंसेवक' नामक एक कार्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की। इस कार्यक्रम के अधीन, लगभग आठ सौ नवयुवक पर्यावरण, परम्परा और संस्कृति के प्रति लोगों में चिन्ता और अनुराग पैदा करने का प्रयत्न करते हैं। एक अन्य कार्यक्रम के अधीन, पार्कों का उपयोग वन्य जन्तुओं और वनस्पतियों के बारे में अध्ययन करने के लिए किया जाता है। एक और भी कार्यक्रम है, जिसके अधीन उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जहां जाकर बच्चे नैसर्गिक वातावरण के सम्बन्ध में स्वयं अनुभव करके जानकारी प्राप्त करते हैं।

शिक्षा और मनोरंजन के लिए पार्कों की उपयोगिता जैसे-जैसे बढ़ती जा रही है, वैसे-ही-वैसे उनकी संख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। विस्तार कार्यक्रम में, १० नये पार्क और दो 'गेटवे' पार्क—सन् फ्रांसिस्को और न्यूयार्क में—बनाने की योजना शामिल है।

इस वर्ष के प्रारम्भ में, यलोस्टोन राष्ट्रीय पार्क का शताब्दी-समारोह मनाने का आह्वान करते हुए, राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने कहा था: "एक शताब्दी आयी और बीत गयी। इस अवधि में, राष्ट्रीय पार्क प्रणाली इतनी व्यापक हो गयी कि इसके अन्तर्गत २८३ क्षेत्र आ गये। ये सब क्षेत्र अमेरिका की नैसर्गिक और ऐतिहासिक थाती के सर्वाधिक गौरवमण्डित नमूने हैं।....इन सबसे इस देश के नागरिकों को असीम लाभ हुआ है। इनसे १०० से भी अधिक राष्ट्रों को प्रेरणा मिली और उन्होंने १,२०० से अधिक राष्ट्रीय पार्कों तथा सुरक्षित वन-प्रदेशों का निर्माण किया। ठीक ही तो है, 'प्रकृति का मात्र एक स्पर्श समूचे विश्व को आत्मीय बना देता है'.....।" ■■

राबर्ट आर्ड्री

१६३२ में, न्यूयार्क जल-जन्तुशाला के निदेशक, चार्ल्स मार्कुस ब्रेडर, जूनियर, ने एक सहयोगी के साथ काम करते हुए, 'गुप्पी' नामक छोटी किस्म की मछलियों पर एक प्रयोग किया। उनके निष्कर्ष एक अल्प-पठित वैज्ञानिक पत्रिका, **'कोपिया'**, में प्रकाशित हुए। आज बहुत कम लोग उनके काम से परिचित हैं। तो भी, जिन ५१ 'गुप्पी' मछलियों ने ब्रेडर के साहसिक प्रयोग में भाग लिया, उनकी स्मृति में किसी दिन कोई जलीय स्मारक बनाया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने एक वैज्ञानिक सिद्धान्त को, जिसको हमारे युग का एक निर्विवाद सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है, खण्डित कर देने की चुनौती दी है।

हममें से शायद ही कुछ लोग उस लघुकाय मछली से अपरिचित हों, जो बच्चों की जल-जन्तुशालाओं में सामान्य रूप से पायी जाती है। 'गुप्पी' मछलियां बहुत तेजी से अपनी संख्या बढ़ाती हैं। वे एक नर पर दो मादा के अनुपात से प्रजनन करती हैं। ब्रेडर ने समान आकार के दो जलाशयों की व्यवस्था की; प्रत्येक जलाशय में खाद्य वस्तुओं की प्रचुरता थी और उसका वायु-प्रवहन इतना पर्याप्त था कि बहुत-सारी मछलियां उसमें सांस ले सकती थीं। एक जलाशय में ब्रेडर ने ५० 'गुप्पी' मछलियां छोड़ीं, जिनमें नर और मादा मछलियों का अनुपात अस्वाभाविक था—अनुमानतः, एक-तिहाई नर, एक-तिहाई मादा और शेष बच्चे थे। दूसरे जलाशय में, उन्होंने केवल एक गर्भवती मादा 'गुप्पी' मछली छोड़ी। इस मछली के गर्भ में पहले से ही उर्वरीकृत अण्डे भरे हुए थे। ब्रेडर को क्या घटित होने की आशा थी, मुझे नहीं मालूम। लेकिन जो कुछ हुआ, उसने तो उस समय तक के सभी पूर्वानुमानों को झुठला दिया, और आज भी उसकी कोई सही व्याख्या नहीं दी जा सकती।

गर्भवती मादा 'गुप्पी' मछली का एक उल्लेखनीय स्वभाव यह है कि एक बार के गर्भाधान में वह पांच अण्डशावक तक दे सकती है, जिनका जन्म हर अट्ठाइसवें दिन होता है। उस लम्बी गर्भवती मछली ने प्रयोग के साथ भली प्रकार सहयोग किया, और २५ अण्डशावक तक पैदा किये। परन्तु, छः महीने के अन्त में, उसके जलाशय में केवल नौ मछलियां शेष रह गयी थीं। उसने अतिरिक्त बच्चों को चट कर डाला था। इस बीच, जिस जलाशय में शुरू-शुरू में ५० 'गुप्पी' मछलियां रखी गयी थीं, उसमें तेजी से और तुरन्त मौतें होने लगी थीं। कोई भी नवजात मछली जिन्दा नहीं बची। बच्चों का स्वजाति-भक्षण इतना सक्रिय रहा कि उसकी घटना विरली ही देखी जा सकी। पांच महीने के बाद जो मछलियां जीवित बच रहीं, वे सब मूल आबादी की थीं। यहां भी उनकी संख्या नौ ही थी। और, दोनों जलाशयों में तीन नर तथा छः मादाएं थीं; गुप्पियों में यही विहित अनुपात भी होता है।

विज्ञान के इतिहास को एक व्यंग्यात्मक मोड़ उस समय मिला, जब चार्ल्स डार्विन और अल्फ्रेड रसेल वैलेस ने प्राकृतिक चयन के लिए अपनी प्रेरणा माल्थस के सिद्धान्त से, जिसका देर-सवेर, कभी-न-कभी, अधिक अंश तक मिथ्या स्वीकार कर लिया जाना प्रायः निश्चित है, प्राप्त की। टामस माल्थस एक अंग्रेज अर्थशास्त्री था, जिसने १७९८ में अपना निबन्ध, **'एस्से आन पापुलेशन'**, प्रकाशित किया था। इस निबन्ध में, उसने प्रदर्शित किया था कि मनुष्य की संख्या जहां गुणात्मक रूप से—दूसरे शब्दों में, ज्यामितिक गति से—वृद्धिमान होती है, वहां खाद्य-पूर्ति केवल योगात्मक क्रम से ही बढ़ सकती है। अतः, जनसंख्या बढ़ते-बढ़ते किसी दिन उस बिन्दु पर निश्चय ही पहुंच जायेगी, जहां खाद्य-पूर्ति उसके लिए कम पड़ जायेगी—खाद्य-पूर्ति की वृद्धि जनसंख्या की वृद्धि से अनुपाततः पिछड़ जायेगी। माल्थस के कथनानुसार, उसी बिन्दु पर जनसंख्या अपनी वृद्धि की चरम सीमा को छू लेगी।

डार्विन और वैलेस को माल्थस के सिद्धान्त में एक ऐसे प्राकृतिक नियम के दर्शन हुए, जो प्राणियों की समस्त जातियों पर लागू होने के योग्य था। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सीमित साधन, अर्थात् खाद्य, के लिए जो प्रतियोगिता होगी, उसके द्वारा सक्षम और अक्षम प्राणियों के बीच चुनाव हो जायेगा—जो सक्षम होंगे, वे ही बच रहेंगे। माल्थस का तर्क निर्विवाद जान पड़ता था। फिर भी, जीव-विज्ञान में हाल के वर्षों में जो क्रान्ति हुई है, उसकी कोई भी प्रस्थापना उतनी स्पष्ट एवं प्रदर्शनीय नहीं है, जितनी प्राणियों की संख्या पर प्राकृतिक नियन्त्रण की प्रस्थापना है। प्राणि-जगत में ऐसी कोई जाति विरली ही होगी, जो जलवायु सम्बन्धी विनाश से अपीड़ित रह कर, अपनी संख्या को अपनी खाद्य-पूर्ति की सीमा तक बराबर बढ़ाती चली गयी हो। ऐसी व्यक्तिगत इकाइयां भी विरली ही हैं, जो खाद्य के लिए प्रत्यक्षतः प्रतियोगिता करती हों। शारीरिक और व्यवहार सम्बन्धी स्वतः-नियमनकारी व्यवस्थाओं की किस्में अनगिनत हैं, जिनके कारण प्राणियों की संख्याएं वातावरण की सहनशील क्षमता को कभी चुनौती नहीं दे सकेंगी—जलवायु सम्बन्धी विनाश इसके अपवाद अवश्य होंगे। जातियों या नस्लों का नियम ही जीवसंख्या को नियंत्रित करना है।

इक्यावन 'गुप्पी' मछलियां, जो शिशु-हत्या तथा जाति-भक्षण की मिश्रित प्रक्रिया द्वारा अपनी संख्या पर नियन्त्रण कर सकीं, माल्थस के सिद्धान्त-स्तम्भ को डगमगाने के लिए पर्याप्त प्रमाण शायद ही प्रस्तुत कर सकती हैं। परन्तु, जैसे-जैसे हम जन्तु-जगत की अनेक जातियों को लेकर अपनी जांच आगे बढ़ाते जायेंगे, वैसे-ही-वैसे हमारी यह धारणा अधिक बलवती होती जायेगी कि संख्याओं का स्व-नियमन प्रकृति के नियम को ही व्यक्त करता है। शावकों के लिटर के आकार में कटौती, स्वतः प्रेरित गर्भपात, माता-पिता द्वारा उपेक्षा, वंशगत विकार, यहां तक कि, यदि अन्य उपाय असफल हो जायं, तो दबाव और तनाव द्वारा मृत्यु—ये सब उपाय हैं, जिनके द्वारा बढ़ती हुई जीवसंख्या को नियन्त्रित किया जा सकता है। इनमें से एक या दूसरे उपाय को यथा आवश्यकता प्रयोग में लाया जा सकता है। हम देखेंगे कि यह नियम जैसे पशु-समूहों को शासित करता है, वैसे ही आदिम मानव-समाजों को भी करता है। यदि सभ्य मनुष्य इस पर ध्यान दे सकें, तो उनका कल्याण ही होगा।

जीवसंख्या को सीमित करने के जितने भी तरीके हैं, उनमें प्रजनन-क्षेत्र की आवश्यकता एक सबसे आम तरीका है। यदि पृथ्वी तल का एक भाग अकेले आपका अपना हो, तो उसके स्वामी के रूप में आपको कई भौतिक लाभ पहुंच सकते हैं। आप अपने इलाके को अपने शत्रुओं की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानते हैं, इसलिए आप अपने को सुरक्षित अनुभव करते हैं—अपनी गली में कुत्ता भी शेर
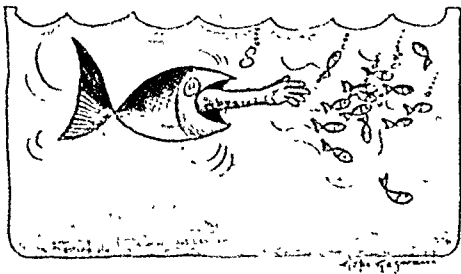
होता है, यह कहावत आपने सुनी ही होगी। स्वामित्व की अनुभूति एक विचित्र प्रकार से आपकी कर्मशक्ति को बढ़ा देती है, और इस तरह, पशु-न्याय की प्रक्रिया द्वारा, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली बात ही सही नहीं होती। अपने घर की जमीन पर आप अपने से अधिक बलवान घुसपैठिए के भी दांत खट्टे कर देते हैं। कोई भूखण्ड आपका अपना हो, तो वह आपको तथा आपके परिजनों को खाद्य-पूर्ति के विषय में निश्चिन्त कर सकता है। ये लाभ तो भू-स्वामी को होते हैं, परन्तु दो अन्य प्रबल लाभ जनसंख्या और प्रजातियों को भी होते हैं। व्यक्तियों या उनके समूहों के भौतिक पार्थक्य द्वारा भयावह आक्रामक शक्तियां सामान्य क्षेत्रीय सीमाओं पर ही गाली-गलौज और अपमानजनक चीख-पुकार करके अपनी खीझ मिटा लेती हैं। प्रजननकारी युगलों या समूहों के मध्य प्राप्य स्थान के वितरण का अर्थ यह है कि सन्ततियों की संख्या वातावरण की सहनशील क्षमता से कम ही रहेगी।

वस्तुतः, पिछले कुछ वर्षों से ही लोग यह मानने लगे हैं कि क्षेत्र या प्रदेश का आबादी की संख्या से सीधा सम्बन्ध है। यहां तक कि १९५६ में, कैम्ब्रिज के प्रख्यात मानव-प्रकृति विज्ञानी, राबर्ट हिण्डे, ने इस प्रस्थापना को अप्रमाणित घोषित किया था।

हिण्डे की आपत्ति के कुछ वास्तविक कारण थे: यह तो ठीक है कि किसी क्षेत्र या प्रदेश का अनिवार्य स्वामित्व स्पष्टतः प्रजननकारी युगलों को एक सारे वातावरण में वितरित कर देता है, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि क्षेत्र इस प्रकार के युगलों की संख्या को सीमित कर देता है। जगहें विरली ही इतनी सीमित हुआ करती हैं। इस आक्षेप का उत्तर देने के लिए, एबरडीन विश्वविद्यालय के ऐडम वाटसन ने स्काटलैण्ड के बंजर इलाके में लाल तीतरों के ऊपर एक प्रयोग किया।

समस्या यह प्रदर्शित करने की थी कि क्षेत्रीय आवश्यकता के कारण स्वस्थ वयस्क पक्षी प्रजननकारी आबादी से वस्तुतः बहिष्कृत हो

एक सुविज्ञ प्रकृति-वैज्ञानिक का दावा है कि मनुष्य को प्रकृति एक शिक्षा देती है: जनसंख्या-नियन्त्रण जातियों का प्राकृतिक नियम है।

जाते हैं। नर लाल तीतर पतझड़ के मौसम में अपने क्षेत्र स्थापित कर लेते हैं और आगामी ग्रीष्म ऋतु तक उन पर अपना कब्जा जमाये रखते हैं। प्रजनन के लिए बंजर इलाके में असीमित स्थान होता है, फिर भी, कुछ खास-खास इलाकों में इन क्षेत्रों के लिए प्रतियोगिता होती है। वाटसन ने एक अध्ययन-क्षेत्र चुन कर और पास-पड़ोस के सभी पक्षियों को चिन्हित करके अपना काम शुरू किया। फिर, उसने क्षेत्र-स्वामी पक्षियों को पकड़ कर या मार कर ११९ क्षेत्रों को साफ कर लिया। एक सप्ताह के अन्दर ही, ११९ क्षेत्रों में से १११ क्षेत्र नये नर पक्षियों से भर गये; उनमें से केवल एक दर्जन पक्षी ही अज्ञात मूल के थे। शेष सभी पास-पड़ोस के चिन्हित पक्षियों में से आये थे, जिनको अप्रजननकारी आरक्षित पक्षियों की श्रेणी में रख दिया गया था। आगामी बसन्त ऋतु में, उन क्षेत्रों के सभी नर तीतरों ने सफलतापूर्वक प्रजनन किया। जो पक्षी फिर भी आरक्षित बच गये थे और जिनके पास अपने क्षेत्र न थे, उन्होंने प्रजनन नहीं किया। वाटसन ने अपने इस प्रयोग से यह प्रदर्शित कर दिया था कि कम-से-कम लाल तीतरों में तो प्रजनन सम्बन्धी क्षेत्रों की कमी ही प्रजननकारी आबादी को परिसीमित करती है।

अभी तक हमारे पास इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं है कि प्रादेशिक आचरण और यौन-संवेग के बीच कोई दैहिक सम्बन्ध भी है या नहीं। परन्तु क्षेत्रीय शोध में जो अभूतपूर्व प्रगति हुई है, उससे इस चीज की वास्तविकता के विषय में कोई सन्देह नहीं रह जाता। १९६६ में, जब मैंने पहले-पहल 'क्षेत्रीय अनिवार्यता' के बारे में लिखा था, तब पक्षियों सम्बन्धी उपर्युक्त क्रिया-कलाप से मिलता-जुलता उदाहरण केवल एक पशु-जाति में मिला था, और वह जाति थी अफ्रीकी कृष्णसार मृगों की। यूगाण्डा के 'कौब' हिरनों की यह नस्ल ऐसी है, जिसके नर प्रादेशिक प्रतियोगिता का अखाड़ा हथिया लेते हैं और मादाएं ऐसे ही नरों से मैथुन करने के लिए आकर्षित होती हैं। मादाएं केवल उन्हीं नरों को अपनाती हैं, जो इस प्रतियोगिता में जीतते हैं और सफलतापूर्वक अपने क्षेत्रों की रक्षा करते हैं; बाकी सारे नर हिरन अपने कुमार-यूथों में मौज करते-फिरते हैं। जब मैंने अपनी समीक्षा प्रकाशित की, उसके बाद के कुछ ही वर्षों में, प्रजनन की क्षेत्रीय पद्धतियां जल-मृगों, ग्रांट और टामसन के छोटे हिरनों, दक्षिण अफ्रीकी लघु मृगों, 'हार्ट बीस्ट' नामक अफ्रीकी हिरनों, 'टोपी', 'पुकू' और उनमें से लघुतम 'ओरिबी', 'डिक-डिक' तथा 'स्टीनबौक' नामक हिरन जातियों में प्रजनन की क्षेत्रीय पद्धतियों के पाये जाने के उल्लेख सामने आये। अलग-अलग नस्ल के हिरनों में पद्धतियां भी भिन्न-भिन्न मिलती हैं—'वाइल्ड-बीस्ट' और 'पुकू' की संशोधित अखाड़ा-प्रतियोगिता से लेकर, 'स्टीनबौक' जाति के हिरनों के पक्षियों जैसे पारिवारिक क्षेत्रों तक। परन्तु, सभी प्रमुख प्रस्थापनाएं सही प्रमाणित हुई हैं: मादा केवल स्वामी नर के प्रति ही आकर्षित होगी; जो नर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में असफल हो गया है, उसकी छुट्टी हो जाती है और वह अन्य नर-यूथों के साथ मिल कर अपने दिन काटता है, बलात् कौमार्य झेलता है और लापरवाह जिन्दगी जीता है।

निस्सन्देह, कई प्रजातियों में क्षेत्रीय अनिवार्यता नहीं मिलती, या अपने-आप में इतनी अधिक असफल होती है कि प्रजनन को घटा नहीं पाती। संततियों की उपेक्षा भी एक शक्ति है, जिसका उपयोग किया जा सकता है। किसी मानव-पर्यवेक्षक को माता-पिता द्वारा संततियों की की जाने वाली उपेक्षा आबादी को बढ़ने न देने का एक अप्रीतिकर साधन प्रतीत हो सकती है, परन्तु यदि हम अफ्रीकी सिंह के स्वभाव का निरीक्षण करें, तो हम उसको प्राकृतिक पशु-संतुलन की दिशा में एक विधिवत् योगदान करता पायेंगे।

आबादी पर पहला नियंत्रण क्षेत्रीय ही होता है। केवल वही मादाएं सफलतापूर्वक प्रजनन करती हैं, जो एक स्थायी अधिवासीपन के गर्व की भागी होती हैं। दूसरे प्रकार का नियंत्रण है कतिपय अन्य प्रजातियों की भांति एक प्रबल अनुक्रम। अनुक्रम यह है कि बच्चे सबसे बाद में खायें। खतरनाक जानवरों के हमारे एक सबसे अग्रणी अध्येता, जार्ज शैलर, के साथ मैंने एक जेबरा शिकार को देखा था। आपस में गुर्राती-गरजती नौ सिंहिनियां ज्वालामुखी-जैसी सामूहिक तर्जना के साथ शिकार की लाश को एक सिरे से दूसरे सिरे तक घेरे हुए मुंह मार रही थीं। तभी, एक अकेला सिंह-शावक उस घेरे के बाहरी छोर पर जेबरा की पूंछ को,

कोई गर्भवती घरेलू चुहिया अपने प्रणयी चूहे के अतिरिक्त किसी अन्य नर चूहे की गन्ध भी सूंघ ले, तो उसका गर्भपात हो सकता है।

जिसको उसने जैसे-तैसे पा लिया था, झिझोड़ रहा था। अगर कहीं उसने सिहिनियों की क्षुधा शान्त होने से पहले लाश पर एक वार भी मुंह मारने का दुस्साहस किया होता, तो बहुत सम्भव था कि उसको अपने प्राणों से हाथ धोने पड़ते।

बहुत सी पशु-जातियां, चाहे क्षेत्रीय अन्तराल या यौन कुण्ठा द्वारा, चाहे शिशु-हत्या या विधिवत् उपेक्षा द्वारा, वर्ष-प्रति-वर्ष अपनी आबादी को स्थिर बनाये रखने में सफल हो जाती हैं। लेकिन ऐसी भी जातियां हैं, जो इस प्रयास में असफल रहती हैं; उनके सामने अपनी संख्या को व्यवस्थित रखने के लिए चक्रीय या सावधिक जीवसंख्या-विध्वंस के कठोर समाधान की पीड़ा भोगने के अलावा और कोई चारा नहीं रहता।

'लेमिंग' (उत्तरी ध्रुव प्रदेश का चूहे की जाति का एक जीव) की विकृत और अप्रिय क्रियाएं शताब्दियों से मानवीय कल्पना को स्तम्भित करती रही हैं। किसी रहस्यपूर्ण विवशता के वशीभूत, यह जीव लगभग हर तीन से लेकर पांच वर्ष के बीच सामूहिक आत्महत्या कर लेता है।

जीवशास्त्रियों की अनेक पीढ़ियों ने 'लेमिंग' के इस मृत्यु-विनाश की व्याख्या माल्थस के सिद्धान्त के अनुसार करने की चेष्टा की—अर्थात्, जीवसंख्याएं तब तक बढ़ती रहीं, जब तक खाद्य-पूर्ति की सीमाओं ने उनका रास्ता रोक न लिया, और फिर वे एकदम तबाह हो गयीं। लेकिन पर्यवेक्षणों से पता चला कि प्राचुर्य के दिनों में, जब खाद्य-सामग्रियों की कोई कमी नहीं रही, आबादियों का स्थानान्तरण नहीं के बराबर हुआ। इस रहस्य की खोजबीन का दायरा सरकते-सरकते १९३० के आसपास उत्तरी अमेरिका के बर्फखुरी खरगोश तक जा पहुंचा। खरगोश की यह नस्ल १०-वर्षीय चक्र के अंतर्गत इसी आत्म-विनाश की भागी होती है। मिनेसोटा प्रदेश के लेक अलेक्जेण्डर क्षेत्र में, आर. जी. ग्रीन नामक एक व्यक्ति ने अपने विभिन्न सहकर्मियों के साथ अनगिनत शवों से नमूने इकट्ठे करने शुरू किये। इन शवों की जांच करने से पता चला कि उनमें से कोई भी कुपोषण का शिकार न था; संक्रामक रोग से आक्रान्त भी शायद ही कोई लगा।

फिर भी, उनके मरने का तरीका विचित्र था। कुछ तो सामान्य ढंग से आचरण कर रहे होते थे, कुछ संज्ञा-शून्यता की स्थिति में होते थे, तभी अचानक उनके शरीर में मरोड़ उठने लगती और वे दम तोड़ देते थे। कुछ खरगोशों को प्रत्यक्षतः स्वस्थावस्था में पकड़ा गया और उन्हें पिंजड़ों में बन्द करके रख छोड़ा गया। ऐसे खरगोशों में एक अन्य विचित्र लक्षण दिखायी दिया। सामान्य बर्फखुरी खरगोश प्रयोग के अनुभव को अन्यमनस्कता से सह जाता है, परन्तु जब आबादी के विनाश की बहार आयी होती, तब बन्दी खरगोश लगभग तुरन्त मर जाते थे। शव-परीक्षा से पता चलता था कि कुछ तो उनका जिगर खराब हो गया था, कुछ रक्त शर्करा की न्यूनता हो गयी थी और मामूली सा आन्तरिक रक्तस्राव हो गया था। ग्रीन ने इसको सदमे की बीमारी बताया था।

इस व्याख्या से किसी को संतोष नहीं हुआ। परन्तु, लगभग उन्हीं दिनों उत्तरी न्यूयार्क के चरागाहों में पाये जाने वाले 'वोल' (चूहे की तरह का एक जानवर) का पर्यवेक्षण करने पर, लगभग इसी से मिलते-जुलते आचरण उनमें भी मिले। इतने भिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं की एक-जैसी मौत होने के पीछे कोई-न-कोई खास वजह जरूर होनी चाहिए और उसकी व्याख्या भी अवश्य प्रस्तुत की जा सकती है। फिर, ये मौतें बसन्त ऋतु में ही क्यों हुई? इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गयीं। सबसे अधिक बुद्धिग्राह्य परिकल्पना जे. जे. क्रिश्चियन ने, जो आज के सर्वाधिक निष्ठावान् अन्वेषकों में माने जाते हैं, प्रस्तुत की। उन्होंने देखा कि आबादी जितनी बढ़ती जाती है, दबाव और तनाव भी उतना ही बढ़ता जाता है। बच्चों की संख्या में क्रमशः वृद्धि, युवकों के बीच बढ़ती हुई प्रतियोगिता, तथा एक भारी और अधिकाधिक असंगठित आबादी में अजनबियों की संख्या में वृद्धि अंततः मनोवैज्ञानिक और दैहिक थकान की स्थिति उत्पन्न कर देती हैं। यह सब ऐसा लगता है, मानो अपनी सामान्य कठिनाइयों सहित आवधिक चक्र का अंतिम शरद अंतिम तिनके के प्रवेश के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर देता है। और, वह अंतिम तिनका आता है बसन्त की यौनेच्छाओं के साथ। हर कोई निष्प्राण होकर ध्वस्त हो जाता है।

क्रिश्चियन की परिकल्पना सही है या नहीं, यह अभी प्रमाणित नहीं हो सका है। परन्तु इससे एक बात यह अवश्य हुई कि पुराने खाद्य-पूर्त्ति सिद्धान्त से हट कर शोध का जोर बहुत कुछ घनी आबादी के सामाजिक दबाव और तनाव के दैहिक परिणामों के विषय में नयी छानबीन पर चला गया।

क्षेत्रीय प्रयोग की सामग्रियों का अब कोई अभाव नहीं रहा। इसलिए विज्ञान ने प्रयोगशाला की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया है। एक भी प्रेरणा-प्रसूत प्रयोग, जिसकी पुष्टि और पुनर्पुष्टि हो गयी हो, हमारे ध्यान देने योग्य अवश्य है।

घरेलू चूहा 'क्षेत्रीय' होता है, और उसकी मादा आबादी के सामान्य घनत्व की स्थितियों में केवल अपने नर से ही संभोग करती है। जिस प्रयोग से ऐसा निष्कर्ष निकला और जो बाद में 'ब्रूस-निष्कर्ष' (दि ब्रूस इफेक्ट) के नाम से प्रसिद्ध हुआ, वह पहले-पहल ब्रिटेन में आयोजित हुआ था। प्रयोग यह था: एक मादा चुहिया एक नर चूहे से गर्भाधान करा लेती थी। अगर चार दिन के भीतर कोई दूसरा अजनबी चूहा उस पर चढ़ जाता था, तो वह गर्भपात कर देती थी। इससे यह पता चला कि चूहों में भी एक नैतिकता होती है; पहले उनके बारे में ऐसी किसी चीज की कल्पना नहीं की गयी थी। छानबीन और आगे बढ़ी। अगर गर्भवती मादा चुहिया गर्भाधान के चार दिन के भीतर किसी अजनबी चूहे को देख भर लेती थी, तो उसके द्वारा गर्भपात की सम्भावना लगभग ५०-५० प्रतिशत हो जाती थी। अंतिम प्रयोग के द्वारा यह प्रदर्शित हुआ कि अगर मादा चुहिया किसी ऐसे पिंजड़े में रख दी जाती, जिसमें कोई अजनबी नर चूहा रह चुका हो और वह उसकी हाल की उपस्थिति को सूंघ भर लेती, तो गर्भपात हो जाने का अन्देशा पूरा-पूरा रहता था।

यह प्रयोग अत्यन्त परिष्कृत परिस्थितियों में किया गया था—प्रयोग में भाग लेने वाले नर और मादा चूहों और नियन्त्रणों की व्यवस्था पर्याप्त थी। वे सूंघ कर ही जान लेते थे कि कोई अजनबी नर वहां मौजूद नहीं है, फिर वे अपनी सामान्य गर्भाधान-क्रिया में रत हो जाते थे। इतना होने पर भी, अन्य जीव-वैज्ञानिकों को यह सन्देह हुआ कि कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ी जरूर हुई होगी। इसलिए, उन्होंने नये प्रयोग आयोजित किये। ब्रूस ने प्रयोगशाला वाले भूरे चूहे की नस्ल को प्रयोग के लिए चुना था, परन्तु प्रयोगशाला के भीतर उत्पन्न इस तरह के जन्तु बहुधा अविश्वसनीय निष्कर्षों पर पहुंचाते हैं। एक अन्य अन्वेषक ने ऐसा ही प्रयोग जंगली हिरन-चूहों के ऊपर किया। परिणाम यहां भी वही निकले। शारीरिक क्रिया सम्बन्धी वैज्ञानिकों ने इसका कारण यह बताया: सभी परिस्थितियों में अजनबी नर चूहे की गन्ध ही गर्भपात का कारण है। अजनबी चूहे की गन्ध उर्वरीकृत अण्डे को गर्भाशय से मुक्त कर देती है।

'ब्रूस-निष्कर्ष' प्राकृतिक जन्म-नियन्त्रण का एक रूप है। बहुत सम्भव है कि इसी तरह के दूसरे निष्कर्षों द्वारा, जिनके विषय में हम अभी अनजान हैं, दूसरे पशुओं की नस्लों में भ्रूणों की संख्या में ह्रास का कारण ज्ञात हो सके। लेकिन घनी आबादी के कारण प्राणी पर जो दबाव और तनाव पड़ते हैं, केवल उन्हीं को प्राणियों की संख्या पर नियंत्रण करने वाला नहीं माना जा सकता।

प्रायः देखा गया है कि आबादी की बढ़ती

हुई सघनता की प्रतिक्रिया एक ही नस्ल के जन्तुओं के भिन्न-भिन्न समूहों पर, जो बिलकुल एक-समान परिस्थितियों में रह रहे हों, अलग-अलग तरह से होती है। यह निश्चित है कि सभी जन्तुओं को किसी-न-किसी बिन्दु पर प्रजनन-क्षमता के क्षरण की स्थिति में पहुंचना होता है। फिर भी, सहनशीलता के स्तर एक से दूसरे जन्तु में, अथवा उनके विभिन्न समूहों में, भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। यह भिन्नता कदाचित् एक बहुत शक्तिशाली नेता के उपस्थित होने या न होने के कारण होती है।

'अल्फा' शब्द बहुधा पशु-आचरण के अध्ययन में प्रयुक्त होता है। यह किसी ऐसे पशु के लिए प्रयुक्त होता है, जो असाधारण सामर्थ्य से सम्पन्न होता है और किसी सामाजिक समूह पर अपना वर्चस्व स्थापित किये रहता है। वह पशु या व्यक्ति शक्ति और बुद्धि में, या कदाचित् आश्वासन प्रदान करने में, दूसरों से बढ़-चढ़ कर होता है। किसी परिस्थिति पर काबू पाने की उसकी क्षमता, या अपने साथियों को अपने नियंत्रण में रखने की उसकी योग्यता, के कारण ही अक्सर उसके समाज या समूह में एकता, सामंजस्य और स्थिरता बनी रहती है। सम्भवतः, ऐसा ही सामाजिक समूह घनी आबादी के दबाव और तनाव का अधिकतम प्रतिरोध कर पाता है।

परन्तु, समूह के साधारण सदस्य दबाव तथा तनाव को किस हद तक झेल सकते हैं—यह बात और है, और इसका एक विकट पक्ष भी है। जिस पशु को अत्यधिक नियंत्रण और आतंक में रहना पड़ता है, वह मामूली सा बखेड़ा करके ही धहरा पड़ेगा और दम तोड़ देगा। जिन चूहों को अपने साथी चूहों के सुस्थित समूहों में प्रविष्ट कराया जाता है, उन्हें अपने साथियों का अत्याचार सहन करना पड़ता है और कुछ ही दिनों में उनके मर जाने की आशंका हो सकती है। ग्लासगो की एक प्रयोगशाला में एक ऐसा ही चूहा ९० मिनट में मर गया। उसको कोई खास घाव नहीं लगा था और न कोई भीतरी चोट ही आयी थी। वह दबाव और तनाव की वजह से मर गया।

'अल्फा' की सापेक्ष प्रतिरोधकता और 'ओमेगा', अथवा किसी सामाजिक व्यवस्था के निम्नतम श्रेणी के सदस्य, की दुर्बलता का संकेत हमें १९६८ में कुछ मनुष्यों के सम्बन्ध में किये गये एक अध्ययन-अनुसन्धान से मिलता है। उसी वर्ष, **'साइन्स'** नामक पत्रिका ने एक बड़े अमेरिकी निगम के २,७०,००० पुरुष कर्मचारियों के बारे में किये गये मेडिकल अध्ययंन को प्रकाशित किया। विशाल पैमाने पर जो जांच-पड़ताल हुई थी, उसमें शैक्षिक पृष्ठभूमि, रोजगार सम्बन्धी उपलब्धि और 'कारोनरी' (मस्तिष्कीय स्नायु सम्बन्धी) हृदय-रोग की घटना को परस्पर सम्बद्ध करके देखा गया।

निगम ने, एक पूर्णतः व्यवस्थित प्रयोगशाला की परिस्थिति की तरह, एक-जैसा नियंत्रित वातावरण प्रस्तुत करके, इस जांच में अपना पूरा सहयोग दिया। इस निगम के चालू कारखाने चाहे ज्यौजिया में रहे हों, या न्यूयार्क राज्य में, उनकी इमारतें एक-जैसी थीं, उनमें एक-जैसा काम होता था, और उनमें रोजगार का स्वरूप भी एक-जैसा ही था। इन सभी कारखानों का संचालक-मण्डल एक था, जिसकी उच्चतम व्यवस्था-नीति सभी कारखानों के लिए एक-सी थी; कर्मचारियों की पेंशनें, सुरक्षा, बीमा और चिकित्सा-सुविधाएं, एक-सी थीं; और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके रेकार्ड रखने का तरीका भी एक-जैसा ही था। २,७०,००० कर्मचारियों के प्रकरणों से इतने विशाल पैमाने पर नमूने उपलब्ध हो गये कि जिन लोगों के रोगग्रस्त होने की सम्भावना थी, उनके बीच का छोटे-से-छोटा अन्तर भी आंकड़ों की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होता। और, अंतर कुछ छोटे भी नहीं थे।

कम्पनी के नीचे से ऊपर तक के कर्मचारियों का अध्ययन करने पर पता चला कि मजदूरों को प्रति वर्ष, प्रति सहस्र ४.३३ की दर से 'कारोनरी' हृदय-रोग होता है। उनसे तुरन्त ऊपर के कर्मचारियों, अर्थात् फोरमैनों, में यह रोग कुछ अधिक पाया गया; उनका अनुपात प्रति सहस्र ४.५२ था। लेकिन सुपरवाइज़र और स्थानीय क्षेत्रीय मैनेजरों में यह रोग कुछ कम था—प्रति वर्ष, प्रति सहस्र ३.९१। इसके बाद एक उठान आता है। जनरल एरिया-मैनेजरों में इस रोग से ग्रस्त लोगों का अनुपात प्रति वर्ष, प्रति सहस्र २.८५ था। इसके अनन्तर, हम आते हैं उच्च प्रतियोगियों, उच्च निष्पादकों और उच्च पदाधिकारियों पर। इन लोगों में 'कारोनरी' हृदय-रोग १.८५ की दर से होता है, जो मजदूरों के स्तर का ४० प्रतिशत ही है। हम कहना चाहें, तो कह सकते हैं कि 'अल्फा' श्रेणी तक पहुंचने से पहले ही 'कारोनरी' हृदय-रोग के कई सम्भावित रोगियों को रोग का शिकार होने से बचाया जा सकता था, परन्तु हम को यह भी ध्यान में रखना होगा कि उच्च पदस्थ अधिकारी आयु में काफी बड़े होते हैं।

जो लोग पशु-समूहों की आबादी की परिवर्तन-प्रक्रिया का प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए हैं, वे इसका मतलब अच्छी तरह समझ सकेंगे। निस्सन्देह, कतिपय वातावरण सम्बन्धी प्रभावों का भी योगदान रहता है। अध्ययन से पता चला कि कालेजों में शिक्षित लोग कालेजों में शिक्षा प्राप्त न करने वाले लोगों से कहीं ज्यादा अंश तक इस खतरे के करीब होते हैं। श्रेष्ठतर सामाजिक पृष्ठभूमियों का प्रभाव कितना-क्या हो सकता है, इस विषय में भी अनुमान लगाना कठिन नहीं है। लेकिन अन्वेषकों ने इस तथ्य की ओर इंगित किया कि सबसे बुरा रेकार्ड तो कालेज में शिक्षित उन लोगों का मिला, जो फोरमैन से ऊंचे किसी पद पर पहुंच नहीं पाये; लेकिन कालेज में शिक्षा न प्राप्त किये हुए जो लोग उच्च पदों पर पहुंच गये, उनमें 'कारोनरी' हृदय-रोग के प्रति अपने साथी प्रशासकों की भांति ही सापेक्ष प्रतिरोधात्मकता मिली। अस्तु, रिपोर्ट किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पायी। वह विभ्रान्त होकर रह गयी। परन्तु उसमें यह स्वीकार किया गया था कि कोई-न-कोई जैविकीय प्रक्रिया अवश्य चल रही होगी।

समग्र पशु-जगत में स्वतः-नियमनकारी व्यवस्था की विद्यमानता यह सूचित करती है कि आबादी की संख्या भौतिक वातावरण की सामान्य सहनशील क्षमता को कभी चुनौती नहीं दे पायेगी। उस सांस्कृतिक पशु, अर्थात् मनुष्य, में गर्भ-निरोध ही पशुओं के स्वाभाविक एवं अन्तर्जात व्यवहारात्मक या दैहिक प्रतिमानों का स्थान ले सकने वाला एक सांस्कृतिक विकल्प है।

मनुष्यों में इस तरह की अन्तर्जात व्यवस्थाओं की क्षति को हम चाहे जैसा समझें, परन्तु मानव-मस्तिष्क के मध्य-नूतनतम विस्तार की अवस्था को ही हम उस क्षति के लिए पूरी दृढ़ता से दोषी नहीं मान सकते। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मस्तिष्क के बाह्य आवरण में जिस तेजी से विस्तार हुआ, उससे अनिवार्य आचरण के पुराने रूपों पर अधिकाधिक रोकथाम लगती गयी। यहां तक कि अपने आदिम काल में भी हमने पहले की स्वाभाविक रूप से प्रादुर्भूत प्रक्रियाओं के स्थान पर सामाजिक परम्पराओं की स्थापना की थी।

लगभग आधी शताब्दी पूर्व, सर अलेक्जैण्डर कार-सौण्डर्स ने आदिम जातियों द्वारा प्रदर्शित स्वतः-नियमनकारी सिद्धान्त का अध्ययन-अनुसन्धान किया था। उस दिन तक, वह निस्सन्देह पशु-जातियों के लम्बे इतिहास से अपरिचित थे। उन्होंने मान लिया कि पाषाण-युग में जनसंख्या-नियंत्रण आरम्भ हो गया था। आदिम कबीलों के बारे में उस समय तक जितना कुछ ज्ञात था, उसका विस्तृत पर्यवेक्षण करने के बाद उन्होंने 'अनुकूलतम संख्याओं' का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। हर समूह के भीतर एक संख्या होती है, जिसके आसपास आबादी में केवल हल्का-सा उतार-चढ़ाव आता है। यह संख्या इतनी होती है कि भुखमरी से इसको खतरा पहुंचने की पूरी-पूरी आशंका रहती है, तो भी यह अपने वातावरण से अधिकतम लाभ उठाने में पूर्ण समर्थ होती है। आबादी की संख्या को विभिन्न परम्पराओं—बालहत्या, अनिवार्य गर्भपात, जातिभक्षण, शिरच्छेदन, नरबलि, आनुष्ठानिक हत्या, सगोत्र-सम्भोग या शिशु के दुग्धपान काल में सम्भोग के विरुद्ध वर्जनाओं—द्वारा संभाले रखा जाता है। वातावरण को या तो नितान्त क्षेत्रीय सुरक्षा-व्यवस्था द्वारा, या किसी परिचित क्षेत्र के प्रति परम्परागत मोह द्वारा, निरन्तर सन्तुलित बनाये रखने की चेष्टा होती है।

एक तरह से, प्राचीन सांस्कृतिक संस्थाओं को अठारहवीं शताब्दी की औद्योगिक क्रान्ति ने नहीं, बल्कि उसके साथ-ही-साथ घटित होने वाली मानववाद की सांस्कृतिक विजय ने ही अत्यन्त प्रभावी ढंग से विनष्ट किया। मानव की गरिमा के प्रति मानववाद का समादर, और प्रत्येक मानव-जीवन को पवित्र मानने की इसकी भावना, भले ही कुछ मोर्चों पर मनुष्य का कल्याण करने में सर्वाधिक प्रवल रही हो, परन्तु दूसरों पर इसका प्रभाव अस्पष्ट ही पड़ा।

संसार के काफी बड़े हिस्से में पायी जाने वाली आदिम जातियों में नरमांस-भक्षण, शिरच्छेदन और नरबलि जैसी परम्पराएं एवं अंध-विश्वास

मानवीय जनसंख्या-नियन्त्रण प्राकृतिक जगत में व्याप्त जैविकीय व्यवस्थाओं का एक सांस्कृतिक विकल्प है।
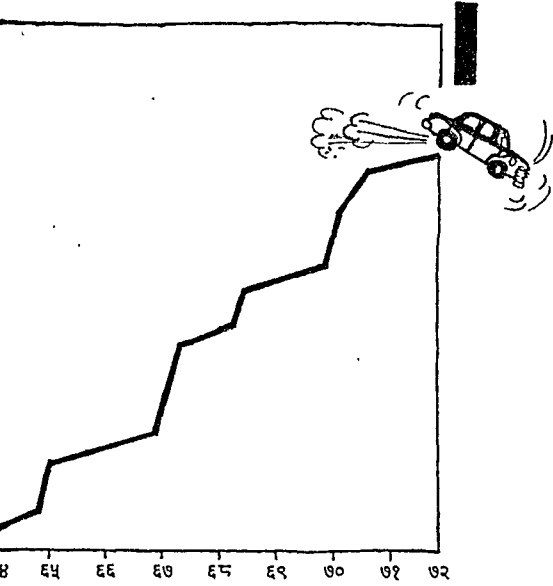
मौजूद हैं। इन आदिम समाजों में सेवा-कार्य करने वाली मिशनरियों और इन पर शासन करने वाली औपनिवेशिक सरकारों ने उक्त कुप्रथाओं के प्रति अपनी जुगुप्सा ही प्रकट की है। फलतः, खास कर अफ्रीका में, कबायली लड़ाइयां खत्म हो गयीं। बालहत्याओं को भी निरुत्साहित किया गया।

तदनन्तर, आधुनिक औषधियों और जीव-रसायन विज्ञान का भी उन्नत देशों में आगमन हुआ। शिशु-मृत्यु की दर ऐसे गिर गयी, जैसे किसी कुएं में कोई चट्टान धमाके से गिरे। आयु-सीमा इतनी लम्बी हो गयी कि वरिष्ठ नागरिकों का एक नया वर्ग ही अस्तित्व में आ गया। अब प्रसव के समय युवती माता की मृत्यु इतनी कम हो गयी कि उसके कारण प्रजननकारी आबादी के घटने की सम्भावना ही जाती रही। आश्चर्य की बात है कि उन्हीं देशों में, आधुनिक पुष्टिकर आहार के फलस्वरूप, एक शताब्दी के भीतर ही, लड़कियों में ऋतुस्राव और प्रजननशीलता की आयु दो वर्ष गिर गयी, अर्थात् पहले की अपेक्षा लड़कियां शारीरिक दृष्टि से इनके लिए दो वर्ष पहले ही समर्थ होने लगीं। बड़े पैमाने पर उत्पादित औषधियां और जीवाणु-नाशक दवाओं द्वारा हमने उन्नत या अनुन्नत, सभी प्रकार के लोगों को नवीन प्रजनन-शक्ति से सम्पन्न कर दिया।

हमें अभी यह देखना है कि क्या, जैसा कि कई जीवशास्त्रियों को भय है, मानव-प्राणियों की अतिरक्षा, सेंट पाल द्वीप में पाये जाने वाले रेण्डीयर यूथ की अतिनिश्चिंतता की तरह ही, अधिकांश संवेदनशील जनसंख्या में प्रजनन सम्बन्धी क्षय उत्पन्न कर देगी? यदि ऐसा हुआ, तो यह एक मूल्यवान्, किन्तु पथभ्रष्ट, दर्शन का एक उचित जैविक उपसंहार होगा। फिर भी, मुझे यह अत्यधिक साफ-सुथरा और सादा उपसंहार जान पड़ता है।

आइये, हम अन्य सम्भावनाओं पर भी विचार करें। सम्भवतः, मानव-जनसंख्या इतनी अधिक कभी नहीं हो पायेगी कि उसे खाद्य-पूर्ति की कमियों का सामना करना पड़े। जनसंख्या इस विन्दु तक पहुंचे-पहुंचे, तब तक अन्य शक्तियां हमारी संख्या को प्रभावित कर चुकेंगी। अगर हम प्रकृति को नमूने के तौर पर लें, तो दो तरह की सम्भावनाएं हैं। पहली सम्भावना है जन-संख्या-नियंत्रण के संयत, स्वस्थ और मानवोचित कार्यक्रम को अपना लेने की, और दूसरी सम्भावना है दबाव और तनाव में फँस कर दम तोड़ देने की।

जनसंख्या-नियंत्रण, चाहे वह जो भी रूप धारण करे, प्राकृतिक जगत में प्रचलित जैविकीय व्यवस्थाओं का एक सांस्कृतिक विकल्प सिद्ध हो सकता है। चूंकि हमारी जनसंख्या सम्बन्धी समस्या का एक सांस्कृतिक पक्ष भी है, इसलिए हमें एक सांस्कृतिक समाधान भी उपलब्ध है। परन्तु वह समाधान अनिवार्य और आदेशात्मक होना चाहिए। हम यह देख चुके हैं कि पशु-जातियों में बच्चों की संख्याएं माता-पिता की इच्छा के अनुसार नहीं निश्चित होतीं। जन-संख्या सम्बन्धी विशेषज्ञों ने मानव-जाति के लिए भी गम्भीरतापूर्वक अनेक प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं। हमें बलात् गर्भ-निरोध लागू करने पर विचार करना चाहिए। उसका रूप कुछ भी हो सकता है; चाहे हम अतिरिक्त बच्चों पर टैक्स लगायें, या उससे भी कठोर उपाय, जैसे विवाह अनुमति-पत्र के बदले, या उसके पूरक के रूप में, गर्भाधान अनुमति-पत्र लेने का नियम, काम में लायें। ऐसी महिलाओं को, जो गर्भाधान करना नहीं चाहतीं, पर उन्हें गर्भ रह गया हो, और उसके बाद भी वे गर्भ-धारण करने के लिए अनिच्छुक हों, गर्भपात कराने की पूरी सुविधा और छूट मिलनी चाहिए।

इस तरह का कार्यक्रम जितना दुर्द्धर्ष जान पड़ता है, व्यवहारतः वह कदाचित् वैसा प्रमाणित न हो। हममें से अधिकांश लोग यातायात के विनियमों और प्रतिबंधों को आक्रोश जताये बिना स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि हम उनकी आवश्य-कता से परिचित हैं। हमारी अन्तरात्मा भी बाहरी दबाव से शुरू होने वाली चीजों को एक प्रकार से आन्तरिकता प्रदान कर दिया करती है; जो चीज कभी अनिवार्य थी, उसे वह कालान्तर से स्वैच्छिक बना लेती है। इसमें रीति-रिवाज भी अपना हाथ बंटाते हैं; जो चीज सामाजिक दृष्टि से अस्वीकार्य होती है, वह कुछ ऐसी हो जाती है कि लोग उससे डरते तो नहीं, पर करते भी नहीं। इनमें सबसे अधिक आशाप्रद है यह प्रदर्शनीय प्रस्थापना, कि जो सांस्कृतिक संस्था प्रकृति के नियमों के अनुकूल होती है, वह विरले ही कभी निष्फल होती है। ऐसी ही एक प्रस्थापना है संतति-निरोध की।

संतति-निरोध एक ऐसा समाधान है, जो सौम्य और मानवोचित, दोनों है। निस्सन्देह, इसका विकल्प भी है। लेकिन विकल्प, यदि घनी जनसंख्या के दबाव एवं तनाव से मृत्यु है, तो वास्तव में वह गड़बड़ है। यदि हम मान लें कि प्राणिसंख्या को सीमित करने वाला मुख्य तत्व आबादी की सघनता है, खाद्य-पूर्ति नहीं, और यदि हम यह भी स्वीकार कर लें कि कोई भी आबादी अनिश्चित काल तक बढ़ती ही नहीं रहती, तो संतति-निरोध का विकल्प चाहे जितना अनाकर्षक या अनुचित जान पड़े, हमें उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा।

आबादी जब घनी हो जाती है, तब गणितीय ढंग से उस पर नियंत्रण कैसे होता है—इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है मोटरगाड़ियों से आये दिन होने वाली दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि। यदि हम एक सुष्ठु और सौम्य समाधान का तिरस्कार करके उसकी जगह एक विक्षिप्त समाधान को स्वीकार करने को तैयार हों, तो हमें यह मान लेना चाहिए कि जो मोटरगाड़ी बच्चों और युवकों को बुरी तरह कुचल डालती है, वह प्रजननकारी जनसंख्या को कम करने का वस्तुतः एक प्रभावशाली साधन है।

परन्तु, निस्सन्देह, ऐसा दिन शायद कभी नहीं आयेगा, जब हम जनसंख्या-नियंत्रण के लिए ऐसे भयंकर एवं तनावपूर्ण नियंत्रणों पर भरोसा करने लगेंगे। समाधान खोजने की इस प्रक्रिया में हम कदाचित अनिवार्य गर्भ-निरोध को चुन लें। लेकिन कोई भी सौ फीसदी पक्की भविष्य-वाणी नहीं कर सकता। मनुष्य एक ऐसा जीव है, जो सनकी से सनकी खरगोशों से भी अधिक उद्भ्रान्त-चित्त है; जो सभी 'लेमिंग' चूहों से भी ज्यादा खब्ती और पागल है; यह जन्तु केवल मन की इस झक को मिटाने के लिए कि देखें वहां क्या है, सड़क के आखिरी सिरे तक दौड़ता चला जायेगा। पहाड़ कितना ऊंचा है, और नदी कितनी गहरी है? अंत में, हार मान कर घुटने कौन टेकेगा, हम या हमारी दुनिया? क्या हम सीमित जनसंख्या के तर्क को गले लगा लेंगे, जिसको चूहे तक स्वीकार कर चुके हैं, या हम पर्वत-शिखर पर चढ़ कर आंधियों की अवहेलना करेंगे?

कोई कुछ नहीं कह सकता। मानव की दारुण दशा और उसकी महिमा, दोनों इसी धुंधले सत्य से उद्भूत हैं कि प्राणि-जाति में हम ही अकेले ऐसे हैं जो प्राकृतिक नियम को मानने से इंकार करते हैं। ■■

लेखक के विषय में : राबर्ट आर्ड्रे एक ऐसे लेखक हैं, जिन्हें कहीं भी विवाद का अवसर मिलने पर उसे छेड़ने में संकोच नहीं। वह 'अफ्रीकन जेनेसिस' (१९६१) और 'टेरिटोरियल इम्परेटिव' (१९६६), (देखिये, स्पैन, सितम्बर, १९७१), नामक पुस्तकों के लेखक हैं। उनकी नवीनतम पुस्तक, 'दि सोशल कान्ट्रैक्ट', से उद्धृत इस प्रसंग में वह कहते हैं कि खाद्य-पूर्ति के चिन्ताजनक होने के पूर्व से ही पशु-जाति और आदिम मानव-समाज जनसंख्या पर रोकथाम के कई उपाय करते आ रहे हैं। आर्ड्रे का कथन है कि माल्थस का यह सिद्धान्त कि जनसंख्या अपरिहार्य रूप से खाद्य-पूर्ति से नियन्त्रित-सीमित होती है, एक ऐसा दावा है, जिसे "देर-सबेर, अधिकांशतः, मिथ्या मान लिया जाना प्रायः निश्चित है।"

जिस प्रकार, अमेरिका की द्विदलीय प्रणाली अमेरिकी राजनीति का प्रमाणांक बन गयी है, उसी प्रकार, उदार और अनुदार चिन्तन-वृत्तियां अमेरिकी राजनीतिक विचारधारा के प्रमाणांक बन गयी हैं। फिर भी, 'उदार' और 'अनुदार' ऐसे शब्द हैं, जिनकी कोई सरल परिभाषा सम्भव नहीं। सम्भवतः, ये शब्द अंग्रेजों के अनुभव से लिये गये हैं, किन्तु अमेरिका में उन्होंने नयी जड़ें पकड़ ली हैं और उनमें से विकास के नये-नये अंकुर फूट निकले हैं। इसके अतिरिक्त, ये शब्द, विशेष रूप से आधुनिक युग में, प्रमुख राजनीतिक दलों की विचारधारा में भी प्रवेश

अमेरिका में उदारवादी परम्परा

मार्क्विस चाइल्ड्स

अमेरिकी जीवन में उदारवाद की परम्परा बहुत पुरानी है। केवल कुछ सिद्धान्तवादियों ने ही इसे अठारहवीं सदी की यथेच्छाकारिता नीति द्वारा प्रतिपादित शास्त्रीय उदारवाद से जोड़ने की कोशिश की। यह तथ्य कि उदारवादी राजनीतिज्ञों ने समय-समय पर विकल्प के रूप में इसके लिए 'प्रगतिवाद' नाम का प्रयोग किया, अमेरिकी उदारवाद के यथार्थवादी एवं व्यवहार-संगत स्वरूप का द्योतक है।

अमेरिका में, प्रारम्भ में आकर बसने वाले अग्रगामियों में दो भिन्न विचारधाराएं स्पष्ट दृष्टिगोचर थीं। एक विचारधारा रुक्ष व्यक्ति-वाद की थी, जिसे अनुदारवादियों ने अपनाया। इस विचारधारा के अन्तर्गत, इस बात पर बल दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही पैरों पर खड़ा होना चाहिए। अग्रगामी अमेरिकियों की दूसरी परम्परा 'संगच्छध्वं' की—मिलजुल कर खेती करने, खेती के साधनों एवं उपकरणों का मिलजुल कर उपयोग करने की—थी। इसी परम्परा ने शक्तिशाली सहकारी संगठनों को जन्म दिया, जो देश के कृषि-प्रधान पश्चिमी क्षेत्र के जीवन के महत्वपूर्ण अंग बन गये हैं।

अब्राहम् लिंकन ने उच्चतर शिक्षा के लिए सरकारी भूमि के अनुदान का एक कानून द्वारा, जो बाद में लैण्ड ग्राण्ट कालेज अधिनियम के नाम से प्रसिद्ध हुआ, समर्थन करके अमेरिकी जीवन में सरकार की सशक्त भूमिका का मार्ग प्रशस्त किया। और, यह प्रगति विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी, क्योंकि शिक्षा प्रारम्भ से ही उदारवादी दर्शन की आधार-शिला रही है। न्यू इंग्लैण्ड की संस्था, नगर-परिषद, की बैठक में भाग लेने वाले पढ़े-लिखे नर-नारी ही, जो प्रायः स्वाध्याय द्वारा साक्षर बने थे, घटनाक्रम को ऐसी दिशा प्रदान करने वाले थे, जो समस्त जनता की प्रगति और कल्याण के लक्ष्य तक पहुंचाती थी।

सन् १८६५ के गृहयुद्ध के बाद, अभिवृद्धि का जो महान् युग आया, उसमें यह लक्ष्य आंखों से लगभग ओझल-सा हो गया। यही वह समय था, जब उन अमेरिकियों ने विशाल धन-सम्पत्ति अर्जित की, जिन्हें बाद के आलोचकों ने 'लुटेरे सामन्त' के नाम से सम्बोधित किया है। सरकार की भूमिका केवल इतनी थी कि वह व्यक्तिगत धन-सम्पत्ति बटोरने में जुटे हुए लोगों की सहायक बनी रहे, और वे ही सरकार का उपयोग अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक अस्त्र के रूप में करें। लेकिन, इन 'लुटेरों' की सर्वभक्षी प्रवृत्ति को उन्नीसवीं सदी की समाप्ति पर, उन प्रथम अमेरिकियों में से एक ने खुली एवं जोरदार चुनौती दी, जो उदारवादी परम्परा में ही आस्था रख कर राष्ट्रपति पद पर पहुंचे थे। सूक्तियों के महान् रचयिता, थियोडोर रूज़वेल्ट, ने धन के इन अहेरियों को 'अतुल सम्पत्ति बटोरने वाले पापी' कहते हुए, उन पर प्रहार किया। उन्होंने अर्थपूर्ण और प्रभावशाली न्यास-विरोधी कानून बनाने और पूरी शक्ति एवं प्रभावशाली ढंग से उन्हें क्रियान्वित करने पर बल दिया। उदारवादी सिद्धान्त की एक महत्वपूर्ण मान्यता थी : बाजार में न्यायोचित प्रतिस्पर्धा जारी रखने के लिए सरकार द्वारा हस्तक्षेप। न्यास-विध्वंसक के रूप में, थियोडोर रूज़वेल्ट धन-संग्रह में जुटे उद्योगपतियों और विनियोजकों पर सिंह की तरह गरजे। उन्होंने उसी उच्च वर्ग की तीव्र भर्त्सना की, जिसमें स्वयं उनका लालन-पालन हुआ था। वह हालैण्ड से आये एक प्राचीनतम समृद्ध परिवार के वंशज थे।

उस उदारवादी परम्परा का, जिसकी संरचना और विकास में थियोडोर रूज़वेल्ट ने महत्वपूर्ण योग प्रदान किया था—और, जिसके, जहां तक बहुसंख्यक जनता का सम्बन्ध था, प्रणेता भी एक प्रकार से वही थे—एक महत्वपूर्ण घटक 'संरक्षण' था। भूमि को हथियाने और कृषि के हेतु उसका विकास करने वाले लोग अमेरिका के नैसर्गिक सौन्दर्य को बड़ी तेजी से नष्ट कर रहे थे। थियोडोर रूज़वेल्ट अमेरिका की इस प्राकृतिक विरासत को बचाना चाहते थे। इस कार्य के लिए गिफोर्ड पिनचौट के रूप में उन्हें एक सशक्त सहयोगी और समर्थक भी मिल गया था। श्री पिनचौट स्वयं संरक्षण के प्रबल समर्थक थे। वह संरक्षण-कार्य से सम्बद्ध विभिन्न विभागों में नियुक्त किये गये। लेकिन, राष्ट्रपति के घनिष्ट मित्र और सलाहकार के रूप में उन्होंने और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। साथ ही, पेन्सिल्वैनिया के उदारपंथी रिपब्लिकन गवर्नर के रूप में उन्होंने राज्य-सरकार में कई सुधार किये।

१६१२ में, थियोडोर रूज़वेल्ट रिपब्लिकन पार्टी के अनुदारवादियों से अलग हो गये। बात यह थी कि उन्होंने विलियम होवर्ड टैफ्ट पर, जिन्हें स्वयं उन्होंने ही राष्ट्रपति पद के लिए अपना उत्तराधिकारी नामजद किया था, यह आरोप लगाया कि टैफ्ट यदि प्रतिक्रियावादी नहीं, तो अनुदारवादी रास्ते पर अवश्य चल रहे हैं। दल के विरुद्ध खुले आम विद्रोह करके थियोडोर रूज़वेल्ट ने अपने उदारवादी विचारों के अनुरूप 'बुल मूज पार्टी' की स्थापना की, और एक बार फिर, राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा। टैफ्ट को दुबारा निर्वाचित होने से रोकने का मुख्य श्रेय उन्हें ही मिला, क्योंकि उनके मैदान में उतर आने के कारण उनके उत्तरा-धिकारी वुडरो विल्सन चुनाव में विजयी रहे।

कर गये हैं। उदाहरण के लिए, डेमोक्रैटिक दल में, जिसे सामान्यतः रिपब्लिकन दल की अपेक्षा अधिक उदार माना जाता है, ऐसे सदस्य भी हैं, जिन्होंने उसके 'अनुदार पक्ष' का निर्माण किया है। इसी प्रकार, रिपब्लिकन दल का अपना एक 'उदार पक्ष' भी है। प्रस्तुत लेखों में, दो विख्यात पत्रकारों ने अमेरिकी लोकतन्त्र के प्रारम्भ से लेकर सन् १९७२ तक अमेरिकी राजनीतिक परिवेश पर उदार और अनुदार विचारधाराओं के प्रभावों का मूल्यांकन किया है।

अमेरिका में अनुदारवाद परम्परा

जेम्स जैक्सन किलपैट्रिक

१९७३ के वसंत में, एक ऐसे वर्जीनियावासी—रोनोक के जॉन रैण्डोल्फ—की २००वीं जयंती और १४०वीं निधन-तिथि पड़ रही है, जिनके बारे में प्रोफेसर रसेल किर्क ने एक बार कहा था कि हमारे विशिष्ट अमेरिकियों की कोटि में होते हुए भी, वह सबसे अधिक उपेक्षित रहे हैं। अतएव, यह आसन्न घटना १९७२ के अमेरिका में अनुदारवादी विचारधारा की स्थिति के बारे में अपने अनगढ़ विचार सामने रखने का सहज ही एक उपयुक्त अवसर प्रस्तुत करती है।

पश्चिमी संसार के अनुदार लोग एडमण्ड बर्क को ही सदा अपनी आस्था का बौद्धिक प्रेरणा-स्रोत मानते रहे हैं। यह महान् ह्विग तत्कालीन इंग्लैण्ड के लिए ही नहीं, वरन् अपने उन दार्शनिक उत्तराधिकारियों के लिए भी प्रेरणादायक सिद्ध हुआ, जो अन्य स्थानों पर फले-फूले। यदि यह मान लिया जाय कि अमेरिका के अनुदारों का भी कोई स्थानीय संरक्षक सन्त था, जो उनकी श्रद्धा का पात्र और उनके अध्ययन-विश्लेषण का अधिकारी बन सकता था, तो वह था मेधावी और व्यथित रैण्डोल्फ, जो अमेरिकी लोकतन्त्र के शैशव काल में धूमकेतु की तरह चमका और अपने पीछे प्रचण्ड ज्योति-रेखा छोड़ गया।

इस लेख का उद्देश्य रैण्डोल्फ की जीवन-कथा का वर्णन करना नहीं है। अतः, यहां इतना बता देना ही काफी होगा कि उनका जन्म वर्जिनिया के वेस्टर्न पीडमोण्ट में २ जून, १७७३ को हुआ था। विलक्षण प्रतिभा के धनी रैण्डोल्फ ने विविध विषय पढ़े, १६ वर्ष की अवस्था में कोलम्बिया कालेज से स्कूल की पढ़ाई पूरी की, कानून का अध्ययन किया, खेती कराने लगे और दिसम्बर, १७९९ में कांग्रेस की सदस्यता प्राप्त कर ली। बीच में, एक अल्पकालिक व्यवधान को छोड़ कर, वह २५ वर्ष तक लगातार कांग्रेस और सेनेट के सदस्य रहे। उनका देहान्त २४ मई, १८३३ को फिलाडेल्फिया में हुआ।

रैण्डोल्फ की तुलना में, टामस जेफर्सन अधिक प्रभावकारी कूटनीतिज्ञ, डैनियल वेब्स्टर भाषण कला में अधिक कुशल, और जान सी० काल्हन अधिक गहन विचारक थे। रैण्डोल्फ के लगभग सभी उल्लेखनीय समसामयिक व्यक्तियों का जीवन उनकी अपेक्षा अधिक सुखी रहा। सम्भवतः, किशोरावस्था में नील ज्वर के प्रकोप के कारण रैण्डोल्फ नपुंसकता से अभिशप्त थे, किन्तु उनका चेहरा प्रौढ़ावस्था में भी किशोरों जैसा और आवाज़ गायनमण्डली के छोकरों जैसी थी। वह बहुत अधिक शराब पीते थे। उन्हें अफीम का भी शौक था। उन्हें प्रायः उन्माद के दौरे पड़ते रहते थे। वह क्रूर, प्रतिशोधप्रिय, रूखे और खब्ती स्वभाव के थे। उनके एक जीवनी-लेखक, जेराल्ड जौनसन, ने लिखा है कि अमेरिकी कांग्रेस के किसी भी सदस्य की जबान इतनी जहरीली नहीं रही होगी, जितनी रैण्डोल्फ की थी। फिर भी, रैण्डोल्फ ने, जो अमेरिका के राजनीतिक जीवन में एक सीमा तक अभी भी बेजोड़ हैं, अनुदारवादियों के दार्शनिक सिद्धान्तों को स्पष्ट और सशक्त रूप में अभिव्यक्त किया और आजीवन उनका अनुसरण किया। यदि आज किसी को अमेरिकी अनुदारवाद की स्थिति का मूल्यांकन करना हो, तो उसके लिए इस कृशकाय, आक्रोशपूर्ण, व्यक्ति की दीर्घ छाया से श्रेष्ठतर पैमाना खोजना कठिन हो जायेगा।

अमेरिकी अनुदारवाद की स्थिति आज कैसी है? बहुत कुछ जर्जर। फिर भी, आदर्श कुम्हलाये नहीं हैं; अनुयायियों के पांव नहीं उखड़े हैं। जब-तब हम एकाध लड़ाइयां जीत लेते हैं। विस्तारशील राज्यवाद के विपण्ण धुंधलके में, कभी-कदाचित्, आशा की दीप्ति चमक उठती है: तब हम यह मान लेते हैं कि यदि हम थोड़ा और जमे रहे—बस, थोड़ा और—तो उदारवादी युद्धपोत का वजनदार मस्तूल अपने असंतुलित भार के कारण अपने-आप ढह जायेगा। लेकिन अधिकतर होता यह है कि हम मोर्चा लेते हैं, और फिर, पीछे हट जाते हैं; प्रतिरोध करते हैं, और फिर, रास्ता छोड़ देते हैं। १९६८ में, रिचर्ड निक्सन ने अमेरिका के अनुदारवादी नेताओं के उत्साहपूर्ण सहयोग के बूते पर राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। स्पष्टतः, श्री निक्सन अपने डेमोक्रैटिक प्रतिद्वन्द्वी की तुलना में अधिक अनुदार थे; कम-से-कम लगता तो ऐसा ही था। लेकिन, अनुदारवादी प्रवक्ताओं की दृष्टि में, रिपब्लिकन उम्मीदवार न केवल 'कम बुरा', बल्कि 'हम में से ही एक' था।

किन्तु, इसके बाद से दक्षिणपंथियों का अनुभव यह रहा है कि राष्ट्रपति जिन सिद्धान्तों का अनुशीलन कर रहे हैं, वे जॉन रैण्डोल्फ के सिद्धान्त नहीं हैं। एक सिद्धान्तवादी की तरह, उनका उद्देश्य राज्य के पोत को केवल पूर्वनिश्चित मार्ग पर ले जाना ही नहीं है। व्यवहारवादी होने के नाते, उनका लक्ष्य राज्य के पोत को प्रवहमान बनाये रखना भी है। यदि मजबूरी में उनके द्वारा अपनाये गये उपायों ने अनुदारवादियों को व्यथित किया है—एक उदाहरण है मूल्य और मजदूरी पर नियन्त्रण; दूसरा है घाटे का बजट—तो, दूसरी ओर, अपने प्रयासों के लिए उन्हें वाहवाही भी मिली है। अनुदारवाद लड़खड़ा गया है, पर लोकतन्त्र जीवित है।

श्री निक्सन अनुदारवादी सिद्धान्तों से प्रतिबद्ध नहीं हैं; और यह अनुदारवादियों की जर्जर हालत का केवल एक कारण है। कारण कई और भी हैं। राष्ट्रपति निक्सन रैण्डोल्फ के

उदारवाद

वुडरो विल्सन प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रह चुके थे। न्यूजर्सी राज्य का गवर्नर बनने के लिए उन्होंने अध्यक्ष पद का त्याग किया था। वह भी उदारवादी परम्परा के पोषक थे। अपने चुनाव-भाषणों में, उन्होंने आदर्शवाद को पुनरुज्जीवित करने का आह्वान किया तथा तटकर सम्बन्धी नियमों को 'न्याय एवं औचित्य' पर आधारित करने, न्यासों को नियन्त्रित करने, मुद्रा-प्रणाली में सुधार करने तथा श्रमिक हितों की रक्षा करने की मांग की। अपने प्रशासन के आरम्भ में, वुडरो विल्सन को कई महत्वपूर्ण सुधार करने में बड़ी सफलता मिली, क्योंकि उदारवादी, विशेष रूप से डमोक्रैट, काफी अर्से से इनकी मांग कर रहे थे। एक तटकर कानून द्वारा न केवल अमेरिका में आयातित माल पर शुल्क बहुत घटा दिया गया, बल्कि आयातित माल पर शुल्क घटा देने से राजस्व में होने वाले घाटे की पूर्ति के लिए संघीय आयकर की व्यवस्था भी की गई। इन आरोपों और नारों के बावजूद, कि सरकार समाजवाद लाना चाहती है और लोगों की सम्पत्ति जब्त करना चाहती है, उच्चतम न्यायालय ने आयकर को वैध घोषित कर दिया।

प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने पर, देश में आन्तरिक या घरेलू सुधारों की आवश्यकता धीरे-धीरे लोगों के ध्यान से ओझल होने लगी। अप्रैल, १९१७ में अमेरिका विश्वयुद्ध में कूदा, और उसके बाद ही, वुडरो विल्सन का आदर्शवाद—जिसे उस समय बहुत से लोग कोरा सैद्धान्तिक आदर्शवाद कहते थे—उभर कर सामने आ गया। उनका आदर्शवाद राष्ट्रसंघ की धारणा के रूप में अभिव्यक्त हुआ—विश्व में शान्ति बनाये रखने वाली एक ऐसी संस्था के रूप में, जो युद्ध का उन्मूलन कर सके। इस आदर्शवाद में लोचशीलता का अभाव था और राष्ट्रपति भी सिद्धान्तों के बारे में कोई समझौता करने के लिए प्रस्तुत नहीं थे। अतः, सेनेट ने राष्ट्रसंघ की स्थापना सम्बन्धी सन्धि को नामंजूर कर दिया। राष्ट्रपति को इससे गहरी निराशा हुई। फिर भी, उदारवादी सिद्धान्तों के क्षेत्र में वह इस धारणा को प्रतिष्ठित करने में सफल रहे कि एक ऐसी विश्व-संस्था की स्थापना की अतीव आवश्यकता है, जो राष्ट्रों की प्रभुसत्ता की सीमा से ऊपर हो।

२०वीं सदी के तृतीय दशाब्द की विपुल आर्थिक अभिवृद्धि का अन्त एक ऐसी मन्दी में हुआ, जो अमेरिका के इतिहास में अश्रुतपूर्व थी। इस मन्दी के दौर में लाखों लोग बेरोज़गार हो चुके थे। ऐसे ही समय, राष्ट्रपति पद पर एक प्रमुख उदारवादी नेता आसीन हुए। ये थे फ्रैंकलिन डिलानो रूज़वेल्ट, जो पूर्ववर्ती राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट के दूर के रिश्ते से चचेरे भाई होते थे। वह इस अर्थ में उदारवाद के पोषक थे कि दैनिक जीवन में न्याय और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक है। यद्यपि अपने चुनाव-प्रचार में उन्होंने संतुलित बजट और वित्तीय दायित्व पर विशेष बल दिया था, किन्तु जिस समय वह राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए, उस समय तक अमेरिका के प्रायः सभी बैंक बंद हो चुके थे, और प्रत्येक नगर में रोज़ी-रोटी मांगने वालों की लम्बी कतारें नजर आती थीं। ऐसी स्थिति में, तत्काल दूरगामी प्रभाव वाले सुधार करना आवश्यक हो गया। बेरोज़गारों के लिए रोजगार परियोजनाएं कार्यान्वित करने और खेती में विस्थापित बटाईदारों की सहायता करने के साथ-साथ, सामाजिक सुरक्षा और अमेरिकी कृषि का स्थायित्व बनाये रखने के लिए दीर्घकालीन उपाय अपनाये गये। यहां, यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अमेरिकी जीवन में फैली बेरोज़गारी और दूसरी बुराइयों को दूर करने के लिए आरम्भ किये गये सुधार-कार्यक्रमों का प्रभाव दृष्टिगोचर होने से पूर्व ही, एक बार फिर विश्वयुद्ध छिड़ गया। फिर भी, फ्रैंकलिन डिलानो रूज़वेल्ट के अधिकांश कार्यक्रम अमेरिकी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत हो चुके थे, तथा अदालतों ने उनकी वैधता की पुष्टि कर दी थी। ये ही कार्यक्रम आगे चल कर उदारवादी नीति के आधार बने।

राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन, जॉन एफ. कैनेडी और लिण्डन बी. जौनसन के कार्यकाल में, जब देश में युद्धोत्तरकालीन समृद्धि आने से बेरोजगारी में इतनी कमी आ गयी कि उसे आसानी से संभाला जा सकता था, तब उन बातों में परिवर्तन स्पष्ट दिखलायी पड़ने लगा, जिन पर उदारवादी बल देते थे। इस काल में जातीय एकता पर, और गृह-युद्ध के समय से—जबकि अश्वेतों को दासता से मुक्त कराया गया था—चली आ रही बुराइयों की समाप्ति के लिए कानून बनाने पर, अधिकाधिक बल दिया जाने लगा। उदारवादी इस बात पर बल दे रहे थे कि अमेरिकी जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में अश्वेतों को प्राप्त पद-प्रतिष्ठा अभी भी श्वेत नागरिकों से नीची थी। उच्चतम न्यायालय ने अपने १९५४ के ऐतिहासिक निर्णय में यह निर्णय दिया कि स्कूलों के बारे में 'पृथक् किन्तु समान' की धारणा पर आधारित उस समय तक मान्य कानूनी सिद्धान्त को रद्द समझा जाय, और उसके स्थान पर, सरकारी सहायता से चलने वाले स्कूलों में जातीय एकीकरण के सिद्धान्त पर अमल हो। फिर, राष्ट्रपति जौनसन के नेतृत्व में कई और नागरिक अधिकार कानून स्वीकृत हुए।

जातीय एकीकरण आज उदारवादी मान्यता का मर्म-बिन्दु है; फिर भी, साध्य और साधन को लेकर उठे मतभेदों के कारण इस मान्यता को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बड़े-बड़े नगरों के चारों ओर जैसे-जैसे श्वेत उपनगर बसते गये और वहां अश्वेतों की गन्दी बस्तियों के मुकाबले श्रेष्ठतर स्कूल खुलते गये, वैसे-ही-वैसे यह अनुभव किया जाने लगा कि इस समस्या को 'स्कूली बस-व्यवस्था' द्वारा हल किया जा सकता है। अन्य शब्दों में, व्यवस्था यह है कि पूर्णतया, अथवा लगभग

जॉन रैण्डोल्फ

अमेरिकी अनुदारवाद के संस्थापक

वुडरो विल्सन

अटूट आदर्शवादी

विलियम होवार्ड टैफ्ट

एक अविचलित अनुदार

अनुदारवाद

अवतार बन सकते थे, लेकिन वह प्रतिनिधि सभा और सेनेट के सामने मजबूर थे। अनुदार गठजोड़, जो किसी समय कांग्रेस पर हावी था, अब टूट चुका है। ये प्रकट राजनीतिक कठिनाइयां ऐसी शक्तिशाली आर्थिक प्रवृत्तियों के कारण और भी दुर्गम बन गयी हैं, जिनकी श्री निक्सन एक उम्मीदवार के रूप में कल्पना भी नहीं कर सके थे। सर्वोच्च न्यायालय के कुछ फैसले, जो मुख्य न्यायाधीश अर्ल वारेन के युग में सुनाये गये थे, अभी तक अपना असर डाल रहे हैं। इस कारण जातीय तनाव बढ़े हैं और सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखने में अधिक कठिनाई हो रही है।

जॉन रैण्डोल्फ के कुछ सिद्धान्तों को परखना और वर्तमान के संदर्भ में उनको लागू करना उपयोगी होगा। समाज, सरकार और कानून की प्रकृति के सम्बन्ध में उनके कुछ अपने दृढ़ विचार थे।

"मैं एक कुलीन और रईस हूं", रैण्डोल्फ ने एक बार घोषणा की थी। "मैं स्वाधीनताप्रेमी हूं; मैं समानता से घृणा करता हूं।" रैण्डोल्फ आजीवन दासप्रथा के विरोधी के रूप में प्रसिद्ध रहे, हालांकि वर्जिनिया में एक बागान-स्वामी के नाते वह दासप्रथा से जुड़े हुए थे। वह अपनी वसीयत में यह लिख कर मरे थे कि उनकी मृत्यु के बाद उनके दासों को मुक्त कर दिया जाये। लेकिन, सत्याभासी अथवा ऊपरी तौर पर युक्तिसंगत लगने वाले तर्कों से उन्हें उतनी ही घृणा थी, जितनी दासप्रथा से। १८२७ के आरम्भ में, दासप्रथा पर बहस के समय इस तर्क के बारे में, कि दासप्रथा 'स्वाधीनता के घोषणा-पत्र' के सिद्धान्तों का साफ-साफ उल्लंघन करती है, रैण्डोल्फ ने कहा था :

"श्रीमन्, मेरी आपत्ति केवल इतनी है कि यदि इन सिद्धान्तों को उनकी तार्किक परिणति तक पहुंचा दिया जाये—कि व्यक्ति स्वाधीन और समान जन्मता है—तो मैं उनसे कभी सहमत नहीं हो सकूंगा, क्योंकि यह बात सच नहीं है। . . . .ये सब ऊंची-ऊंची बातें, कि सब लोग जन्म से ही समान रूप से स्वतन्त्र हैं, उस विशेष अर्थ में, जो अधिसंख्य लोगों की समझ में मुश्किल से आता है, सच हैं, लेकिन दूसरे अर्थ में, जिसे २० में से १९ व्यक्ति अवश्य ही ग्रहण करते हैं, गलत और हानिकर हैं।

"जहां तक इस सिद्धान्त की बात है कि सब लोग जन्म से स्वतन्त्र और समान हैं, यदि इस पृथ्वी पर कोई प्राणी ऐसा है, जिस पर यह लागू नहीं होता—जो स्वतन्त्र नहीं पैदा होता—तो वह मनुष्य ही है। वह घोर अभाव की स्थिति में, पूर्ण विवशता और अज्ञान की स्थिति में, जन्म लेता है। . . . .कौन कहेगा कि दुनिया भर की सारी जमीन एक-सी उपजाऊ है—केन्टकी की प्रथम श्रेणी की भूमि और स्काटलैण्ड की पठारी भूमि को केवल ऊपरी समानता—एक एकड़ में दोनों जगह भूमि बराबर ही होगी—के आधार पर एक जैसी मानना उतना ही सतही होगा, जितना मनुष्य को जन्म से पूर्णरूपेण समान मान लेना सतही है।"

निस्सन्देह, रैण्डोल्फ मानते थे कि कानून के सामने सब व्यक्ति समान हैं; उनका विश्वास था कि उनके नागरिक अधिकारों में भी समानता होनी चाहिए। किन्तु, वह कभी भी इन सीमाओं से बहुत आगे जाने के लिए तैयार नहीं हुए। उनकी दृष्टि में, यह उचित नहीं था कि राज्य स्वाभाविक अन्तरों को आर्थिक सहायता या कराधान द्वारा मिटाकर समानता लाने की कोशिश करे। उनकी दृष्टि में, यह काम स्वस्थ जानवर का रक्त निकाल कर बीमार जानवर की प्राणरक्षा में सहायक बनने जैसा ही था।

यद्यपि रैण्डोल्फ 'प्राकृतिक अधिकार' की अमूर्त अवधारणा से घृणा करते थे, तथापि वह परोक्ष रूप से व्यक्ति को काम करने का अधिकार देने के पक्ष में थे। उनकी दृष्टि में, अकर्मण्यता असहनीय थी : "मनुष्य के सुख के लिए सक्रिय रोजगार अनिवार्य है।" आराम के जीवन को वह लोकतन्त्रीय सिद्धान्तों के लिए सर्वथा घातक मानते थे :

"यदि हम चाहते हैं कि हमारी संस्थाएं आने वाली पीढ़ियों को अक्षुण्ण रूप में प्राप्त हों; यदि उनमें से कुछ लोग, जो आज जीवित हैं, उन्हीं संस्थाओं से आगे भी शासित होते रहना चाहते हैं, जिनसे वे आज शासित हैं, तो—और, मेरा मत है, तथा शायद ही कोई इस मत से असहमत होगा, कि अपनी सभी काल्पनिक अथवा वास्तविक बुराइयों के बावजूद, अमेरिकी सरकार दुनिया की सबसे सुविधाजनक सरकार है—हमें उस भावना पर अंकुश लगाना होगा, जो ईमानदारी से उद्यम करने और ईमानदारी से यश कमाने के सीधे-सरल रास्ते को छोड़ कर अन्य सभी मार्गों से धन-संचय पर बल देती है।"

अपने द्वारा पोषित अनाथ बच्चों के प्रति अपने व्यवहार में, और अपने दासों की देखभाल के मामले में, रैण्डोल्फ बहुत उदार और सहृदय थे; लेकिन उनकी मान्यता थी कि इन विशेषताओं का सरोकार व्यक्ति और समाज से है, न कि सरकार से : "जब से मैंने राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया है, तब से अनेक विचित्र विचार प्रस्तुत किये गये हैं। इन्हीं में एक विचार, जो इधर हाल में लोगों के मन को मथ रहा है, यह है कि सरकार को चाहिये कि वही उनके लिए सारे काम करे; उन्हें खुद अपने लिए कुछ नहीं करना है : सरकार न केवल उन बड़े कामों को करे, जो उसके कार्यक्षेत्र में आते हैं, बल्कि ऐसे काम भी करे, जिनसे व्यक्ति अपनी प्राकृतिक और नैतिक जिम्मेदारियों से मुक्त होकर अधिक निश्चिन्त हो जायें।"

रैण्डोल्फ के सिद्धान्तों में से क्या-कुछ आज भी बचा हुआ है? कुछ अधिक नहीं। श्री निक्सन हमेशा 'कार्य की नैतिकता' का पक्ष लेते हैं; वह कल्याण-कार्य के बजाय, आजीविका-कार्य की आवाज बुलंद करते हैं; राष्ट्रपति के सभी भाषणों में ईमानदारी से किये गये श्रम की श्रेष्ठता पर बल दिया जाता है। हम मान सकते हैं कि वह जो कहते हैं, उसमें विश्वास भी करते हैं। फिर भी, राष्ट्रपति की 'परिवार-सहायता कार्यक्रम' के नाम से विख्यात जनकल्याण-सुधार योजना के फलस्वरूप, सार्वजनिक कोश से सहायता पाने वालों की संख्या अब दुगनी से भी अधिक हो जायेगी। यह योजना इस तरह रची गयी है कि काम करने की भावना को बढ़ावा देने के बजाय, यह कार्यक्रम उन्हें मजदूरी कमाने के लिए निरुत्साहित ही करेगा। अनुदारवादियों की दृष्टि में, एक आपत्तिजनक बात यह भी है कि इससे राज्यों और स्थानीय सरकारों की सत्ता और घट जायेगी, और समानता के पवित्र नाम पर संघीय शासन की धारणा को अधिक बल प्राप्त होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि उदारवादी प्रवक्ताओं द्वारा प्रस्तुत योजना की तुलना में, श्री निक्सन का परिवार-सहायता कार्यक्रम एक विनम्र प्रस्ताव है। इस सीमा तक, लेकिन केवल इसी सीमा तक, उनका कार्यक्रम दूसरों के कार्यक्रमों की तुलना में अधिक अनुदार, अथवा कम क्रान्तिकारी है। छोटी हों या बड़ी, ये विभिन्न योजनाएं एक ही विषाणु—सरकारी आदेश द्वारा समतावाद के विषाणु—से पीड़ित हैं।

'शिशु-विकास' के सम्बद्ध क्षेत्र में भी अनुदारवाद के आदर्श की स्थिति उसके निराशावादी प्रवक्ताओं के अनुमान की अपेक्षा श्रेष्ठतर है। अनुदारवाद की जड़ें परम्परा, दैवी आस्था, व्यक्तिगत दायित्व की धारणा और सीमित प्रशासन सम्बन्धी विवेक में जमी हुई हैं। अनुदारवादी व्यक्ति मनुष्य को ईश्वर की संतान के रूप में देखता है—राज्य द्वारा पोषित या संरक्षित नहीं। यद्यपि १९७१ के शिशु-विकास विधेयक को अनेक निष्ठावान, पर दिग्भ्रमित, लोगों का समर्थन मिला, तथापि वह विपरीत दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। विधेयक ने परिवार की परम्परा और माता-पिता की भूमिका को सिर्फ ऊपरी तौर पर ही स्वीकार किया। विधेयक का उद्देश्य छोटे से लेकर बड़े कस्बों तक, सभी जगह, बड़े पैमाने पर संघीय सहायता से शिशु-केन्द्र संचालित करना है, जहां तीन वर्ष की अवस्था से बच्चों को 'व्यापक' सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। कामकाजी माताओं की संतानों को कार्यावधि के दौरान 'दिन में देखभाल' के स्थानों पर जितनी सुविधाएं मिलती हैं, उनकी अपेक्षा इन केन्द्रों पर उन्हें अधिक सुविधाएं मिलेंगी। इस विधेयक की रूपरेखा तैयार करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं की लगभग-पारदर्शक शब्दावली के पीछे निहित एक अनिष्टकारी लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट था : विधेयक का उद्देश्य इस प्रकार पलने वाले बच्चों के मन को एक खास रंग में पूरी तरह रंग देना था। अनुदारवादियों की दृष्टि में, यह एक बहुत अच्छी बात हुई कि श्री निक्सन इन बुराइयों को ताड़ गये और उनकी निन्दा की : दिसम्बर, १९७१ में, उन्होंने इस विधेयक को अपने विशेषाधिकार द्वारा रद्द कर दिया, जिससे अनुदारवादियों का दिल बाग-बाग हो गया।

जनवरी, १९७२ में, जब राष्ट्रपति ने १९७३ के वित्तीय वर्ष का बजट प्रस्तुत किया, तो ये खुशियां मुरझा गयीं। १५० साल से भी कुछ पहले, एक विधेयक में आन्तरिक सुधार की व्यवस्था का विरोध करते हुए, जॉन रैण्डोल्फ ने रिपब्लिकनों के पुराने सुर में सुर मिलाया था : "श्रम का लाभ लोगों की जेबों में ही पड़ा रहने

पूर्णतया, अश्वेत स्कूलों के बच्चों को स्कूल-बसों द्वारा पूर्णतया, अथवा लगभग पूर्णतया, श्वेत स्कूलों में, और इसी प्रकार, श्वेत बच्चों को अश्वेतों के स्कूलों में, पहुंचाया जाय। यद्यपि संघीय न्यायालय ने कई मामलों में इस प्रकार की बस-व्यवस्था को विधिसम्मत घोषित करके उसका समर्थन किया, फिर भी राजनीतिक क्षेत्रों में इस पर रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी। रिपब्लिकनों और कई डेमोक्रैटों ने भी इस प्रकार की 'बस-व्यवस्था' की कटु आलोचना की। उदारवादियों के लिए इसका समर्थन करना बहुत कठिन हो रहा था, क्योंकि एक ओर, जहां इसने लोगों की भावनाओं को बहुत अधिक भड़का दिया था, वहीं दूसरी ओर, वह मुख्य नगर, जहां अश्वेतों का अनुपात निरन्तर बढ़ता जा रहा था, तथा श्वेत-बहुल उपनगरों के बीच खड़ी जातीय भेदभाव की दीवार को नष्ट करने में कुछ विशेष कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही थी।

राष्ट्रपति निक्सन ने 'बस-व्यवस्था' के विरोधियों का समर्थन किया। इससे सामाजिक दोषों को दूर करने के लिए बड़े पैमाने पर सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन करने वालों—उपयुक्त शब्द के अभाव में ये लोग स्वयं को उदारवादी ही कहते हैं—तथा इस प्रकार के हस्तक्षेप का विरोध करने वालों के बीच एक मौलिक विवाद उठ खड़ा हुआ। यदि 'बस-व्यवस्था' लोक भावनाओं के इतना विरुद्ध है और यदि यह प्रयास 'ऊंट के मुंह में जीरा' के समान है, तो अश्वेत-बहुल मुख्य नगरों और उनके चारों तरफ फैले श्वेत उपनगरों के बीच कटु विरोध से ग्रस्त समाज को विखण्डित होने से बचाने का उपयुक्त समाधान क्या है? उदारवादियों का कहना है कि जीर्ण हो रहे केन्द्रस्थ नगरों के पुनर्निर्माण पर विशाल धनराशि खर्च की जाये, शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाया जाये, सबको रोजगार दिया जाये और स्थायी एवं समृद्ध समाज की रचना के लिए जो भी अन्य कदम आवश्यक हों, वे सब उठाये जायं।

मिनेसोटा के सेनेटर वाल्टर एफ. मौनडेल द्वारा प्रस्तावित एक विधेयक को लेकर दोनों विचारधाराओं का अन्तर स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आया है। उनके प्रस्ताव का मूलभूत आधार यह था कि काम करने वाली माताओं के बच्चों की दिन में देखभाल करने वाले केन्द्रों का भारी संख्या में विस्तार किया जाय। विचार यह था कि कैनेडी प्रशासन में 'हेड स्टार्ट' नामक जिस कार्यक्रम को अपनाया गया था, उसी को आधार बना कर आगे बढ़ना आरम्भ किया जाय। यह कार्यक्रम कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा मान्य इस विचार पर आधारित था कि बच्चे के जीवन में आरम्भ के पांच वर्ष ही उसके भविष्य का निर्धारण करते हैं। विस्तृत सुनवाइयों और साक्ष्यों से यह तथ्य सार्वजनिक रूप से सामने आया कि जहां परिवार का एकमात्र सहारा श्रमजीवी मां है, या जहां माता और पिता, दोनों, रोजगार के सिलसिले में घर से बाहर जाते हैं, वहां घरों में बच्चे घोर उपेक्षित अवस्था में रहते हैं। आंकड़े प्रस्तुत किये गये कि दिन में बच्चों की देखभाल करने वाले लाइसेंसशुदा केन्द्रों की संख्या देश भर में सिर्फ ७ लाख है, जबकि आवश्यकता वस्तुतः इस प्रकार के ४० लाख से भी अधिक केन्द्रों की है। कांग्रेस के दोनों सदनों में उभयपक्षीय समर्थन से एक विधेयक पारित हुआ। सेनेट में, इसके पक्ष में ६३ और विपक्ष में १७, तथा प्रतिनिधि सभा में, पक्ष में २१० और विपक्ष में १८६ मत पड़े। राष्ट्रपति निक्सन ने इस विधेयक के बारे में अनुदारवादियों की विचारधारा को महत्व देते हुए, उस पर अपने निषेधाधिकार का प्रयोग कर दिया। उनकी दृष्टि में ९२वीं कांग्रेस ने जितने भी विधेयक पारित किए थे, उनमें यह सबसे अधिक पराकाष्ठावादी विधेयक था। कांग्रेस द्वारा इस विधेयक के पारित होते ही, देश भर में अनुदारवादियों ने इसके सम्बन्ध में अपना विरोध बहुत अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया था। राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा कि शिशु-रक्षा विधेयक को स्वीकार करने का अर्थ यह होगा कि "परिवार की भावना और रुचि के अनुरूप बच्चे की देखभाल होने के बजाय, राष्ट्रीय सरकार की विशाल नैतिक सत्ता बच्चों के लालन-पालन से सम्बद्ध साम्प्रदायिक दृष्टिकोणों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हो जायगी।" राष्ट्रपति के निषेधाधिकार-संदेश पर कांग्रेस में आक्रोशपूर्ण प्रतिक्रिया हुई, परन्तु राष्ट्रपति के निषेधाधिकार की उपेक्षा करके दुबारा विधेयक पारित करने के लिए सेनेट में जिस दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता थी, उसमें सात वोट की कमी रह गयी। यद्यपि राष्ट्रपति का निषेधाधिकार-संदेश अतीत से चले आ रहे अनुदार मूल्यों के दृढ़ समर्थन में आया, तथापि अनुदारवादी और उदारवादी दृष्टिकोणों का विभाजन इससे पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सका, क्योंकि श्री निक्सन ने स्वयं कई कल्याणकारी कार्यक्रमों का समर्थन किया था। इनमें से एक वह था, जिसके द्वारा गरीबी की मान्य सीमा से नीचे के स्तर में आने वाले लोगों के लिए एक न्यूनतम वार्षिक आय की गारण्टी दी गयी थी। यह कार्यवाही जनकल्याण में सुधार सम्बन्धी एक कार्यक्रम का अंग थी, जिसका स्वयं राष्ट्रपति के दल के कई अनुदारवादियों ने विरोध किया था।

शिशु-पोषण सम्बन्धी विधेयक में पहले वर्ष १० करोड़ डालर और दूसरे वर्ष २ अरब डालर की राशि खर्च करने की बात कही गयी थी। राष्ट्रपति ने अपने निषेधाधिकार-संदेश में आरोप लगाया कि यह वित्तीय अनुत्तरदायित्व है, क्योंकि इस खर्च को पूरा करने के लिए कोई नया कर प्रस्तावित नहीं किया गया है। उदारवादियों के सामने एक व्ययसाध्य कार्यक्रम का समर्थन करने की उलझन ऐसे समय आयी, जब सरकारी व्यय पहले से ही काफी बढ़ा-चढ़ा था और जनता द्वारा करों में वृद्धि का कड़ा विरोध हो रहा था। प्रतिनिधि सभा में एक प्रमुख उदारवादी सदस्य, विस्कौन्सिन के श्री हेनरी रीयस, ने इस उलझन को सुलझाने के लिए संघीय कर-व्यवस्था में व्यापक सुधार का सुझाव रखा। उस सुधार के अन्तर्गत, ऐसे उपाय सुझाये गये, जिनसे उच्च आयवर्ग के व्यक्तियों द्वारा कर की चोरी रोकी जा सके। कर-व्यवस्था में इस सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुए रीयस ने उदारवाद का एक अन्य सिद्धान्त प्रतिपादित किया। यह था राष्ट्रीय आय के कुवितरण का विरोध। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के करदाताओं में चोटी के २० प्रतिशत को राष्ट्रीय आय का ४५.८ प्रतिशत भाग मिलता है, जबकि सबसे नीचे के २० प्रतिशत को सिर्फ ३.२ प्रतिशत भाग ही उपलब्ध होता है। उन्होंने जोर दिया कि एक कांग्रेस के बाद दूसरी कांग्रेस ने उच्च आयवर्ग वालों को कर से राहत देने के लिए जैसे-जैसे कानून पास किये, वैसे-वैसे यह अन्तर भी बढ़ता गया।

यह बात संयोग मात्र नहीं थी कि रीयस विस्कौन्सिन राज्य से प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने गये। यह राज्य बहुत समय से उदारवाद का प्रमुख गढ़ रहा है। सेनेटर राबर्ट एम. लैफोलेट के नेतृत्व में विस्कौन्सिन राज्य ने इस सदी के आरम्भ में सामाजिक कानूनों के निर्माण में समस्त राष्ट्र का मार्गदर्शन किया, और इस प्रकार, यह राज्य अन्य राज्यों तथा सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक प्रयोगशाला बन गया। लैफोलेट अपनी प्रोग्रेसिव पार्टी के उम्मीदवार के रूप में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ने के उद्देश्य से रिपब्लिकन पार्टी से अलग हो गये। लेकिन इस चुनाव में वह हार गये। हाल के वर्षों में, विस्कौन्सिन के सेनेटर विलियम प्रौक्समायर उदारवादियों द्वारा पोषित इस उद्देश्य के लिए सतत संघर्ष करते रहे कि भारी प्रतिरक्षा बजट में कटौती की जाय। उन्होंने सैनिक-औद्योगिक क्षेत्र पर ध्यान दिया और बताया कि ठेकेदारों को सैनिक कार्यों के बड़े-बड़े ठेके देने से खर्च बढ़ता है। विस्कौन्सिन के एक अन्य सेनेटर, गेलार्ड नेल्सन, संरक्षण और प्रदूषण के क्षेत्र में विशेषज्ञ माने जाते हैं तथा खाद्य और औषधि के क्षेत्र में उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

उदारवादी विचारधारा और उसके क्रियान्वयन में राज्यों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। न्यूयार्क राज्य में, गवर्नर अल्फ्रेड ई. स्मिथ के नेतृत्व में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए अग्रणी कदम उठाये गये, जिनमें से कुछ का अनुकरण बाद में संघ सरकार ने भी किया। कैलिफोर्निया राज्य में, गैर-सरकारी बिजली कम्पनियों की दरों को नियमित करने के लिए गवर्नर हिरम जौनसन ने सार्वजनिक क्षेत्र में विद्युत्शक्ति का विकास किया। अर्ल वारेन ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। अमेरिका के मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किये जाने से पूर्व, वह तीन बार कैलिफोर्निया के गवर्नर निर्वाचित हुए। संघ-न्यायालय में मौलिक नागरिक अधिकारों के बारे में कई महत्वपूर्ण

दीजिये, ताकि वे व्यक्तिगत आकुलता से, जिसके वे व्यापक रूप से शिकार हैं, मुक्त हो सकें; और आय का प्रत्येक पैसा, जो सरकार की तीव्र आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए अनिवार्य नहीं है, ईमानदारी से सार्वजनिक ऋण उतारने पर व्यय कीजिये।" एक अन्य अवसर पर, रैण्डोल्फ ने एक और सिद्धान्त प्रतिपादित किया, जिसे एक शताब्दी बाद, एक दूसरे महान् वर्जिनियावासी, हैरी फ्लड बायर्ड, ने उद्घोषित किया : "अध्यक्ष महोदय!" रैण्डोल्फ ने चीख कर कहा था, "मुझे पारस पत्थर मिल गया है! वह यह है श्रीमन्—चलते-चलते भुगतान करते जाइये; चलते-चलते भुगतान करते जाइये!"

१९६८ में, चुनाव-प्रचार के दौरान, श्री निक्सन के अनेक समर्थकों ने मान लिया था कि रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार आमतौर से इन्हीं सिद्धान्तों से प्रतिबद्ध है। निश्चय ही, राष्ट्रपति महोदय ने 'हर साल बजट को यन्त्रवत सन्तुलित करने' के किसी भी प्रयास से अपने को मुक्त रखने की सावधानी बरती, लेकिन वह 'उत्तरदायी वित्तीय नीति' में बार-बार अपनी निष्ठा व्यक्त करने से भी नहीं चूके। आर्थिक मामलों पर अपने भाषणों में, श्री निक्सन राष्ट्रपति लिण्डन जौनसन के प्रशासन की मुद्रा-स्फीतिक गल्तियों की बराबर निन्दा करते रहे। श्री निक्सन ने समझदारी और संयम बरतने की मांग की। उन्होंने घोषणा की कि "घाटे की व्यय-व्यवस्था में कटौती" करना राष्ट्रपति का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि इस तरह के घाटे के बजट ही "हमारी कठिनाइयों के मुख्य कारण हैं।" उनकी भर्त्सना करते हुए, उन्होंने कहा : "जौनसन के शासन-काल में बजट सम्बन्धी घाटों की कुल मात्रा ५५ अरब डालर से भी अधिक बैठेगी। इस भारी घाटे ने अर्थ-व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया है; इस भारी घाटे ने स्वतन्त्र विश्व की मुद्रा-प्रणाली को विश्वसनीयता के संकट के गहरे भंवर-जाल में फंसा दिया है।" श्री निक्सन का कहना था कि अमेरिका के विशाल आर्थिक यन्त्र को चलाने के लिए "एक विवेकशील, गम्भीर और संयमी इन्जिनियर की आवश्यकता है।"

१९७०-७१ में, श्री निक्सन के बजट में २३ अरब डालर का घाटा रहा। एक प्रारम्भिक अनुमान के अनुसार, १९७१-७२ में भी यह घाटा २३ अरब डालर ही था। १९७२-७३ में, २७ अरब डालर के घाटे की सम्भावना है। यानी तीन वर्ष में बजटों का घाटा ७३ अरब डालर होगा। श्री निक्सन की गणना के अनुसार, ३० जून, १९७३ तक सकल राष्ट्रीय ऋण ४६० अरब डालर हो जायेगा।

गड़बड़ी कहां हुई? जौनसन के समय में खूंटा तुड़ा कर भाग खड़ा हुआ मुद्रास्फीति का चपल अश्व मीठी बोली और कोमल हाथों से वश में नहीं आ सका। और, आखिर में, जब निक्सन ने कड़ा कदम उठाया और १५ अगस्त, १९७१ को लगाम कसी, तो उन्हें सिद्धान्तों और अपने परोक्ष वायदों को ताक पर रख देना पड़ा। अपने चुनाव-अभियान के दौरान, उन्होंने कहा था : "मजदूरियों और मूल्यों को नियन्त्रित करने के लिए एक ऐसा रास्ता अपनाना ही पड़ेगा, जिस पर न चलने का अर्थ होगा, सबकी आजादी को गम्भीर रूप से क्षति पहुंचाना। मैं इस बात में विश्वास नहीं करता कि अमेरिकी जनता को बेरोजगारी और गैर-अमेरिकी नियन्त्रणों में से किसी एक का चुनाव करने के लिए बाध्य किया जाये। एक और विकल्प है। वह है : अमेरिकी ढंग पर उत्तरदायी राजकोषीय नीति अपनायी जाये, जो अमेरिकी जनता को समृद्ध करे और स्वाधीन भी रखे। अगर मैं चुन लिया गया, तो वायदा करता हूं कि यही रवैया अपनाऊंगा—मैं बेरोजगारी या नियन्त्रणों में वृद्धि किये बिना, वर्तमान असन्तुलनों को दुरुस्त करूंगा।"

यह स्वीकार करना होगा कि मूल्य और मजदूरी पर नियन्त्रण लगाते समय, राष्ट्रपति ने आर्थिक नियन्त्रणों के प्रति अपनी अरुचि का उल्लेख किया था; उन्होंने स्वाधीनता की अपरिहार्य हानि पर खेद व्यक्त करते हुए, आशा प्रकट की कि यह अल्पकालिक सिद्ध होगी, क्योंकि आर्थिक नीति के मामलों में, स्थायी नियन्त्रणों की नीति से अधिक बुरी कोई और नीति नहीं है। राष्ट्रपति के कार्यक्रम के द्वितीय चरण में, मूल्य और मजदूरी से सम्बद्ध गति-विधियां संघीय नियन्त्रण से सचमुच मुक्त कर दी गयीं।

अमेरिका के अनुदारवादी, मोटे तौर पर, राष्ट्रपति के मूल्य और मजदूरी कार्यक्रम के उग्र आलोचक नहीं रहे हैं। उनके दर्शन में यह बात शामिल है कि परिस्थितियों का सामना उनके वर्तमान वास्तविक रूप में ही करना उचित है; उस रूप में नहीं, जिसमें उन्हें सिद्धान्ततः होना चाहिए। १९७१ के ग्रीष्मकाल के मध्य में, दुनिया के मुद्रा-बाजारों में डालर पर दबाव बढ़ता जा रहा था, व्यापार-संतुलन में भारी घाटे की सम्भावना दीख रही थी और देश के भीतर मजदूरियों सम्बन्धी समझौते मुद्रास्फीति के अनियन्त्रित अश्व को चाबुक लगाते जा रहे थे। तब, यहां तक कि सबसे कट्टर सिद्धान्तवादी अनुदार भी, व्यवस्था कायम करने की कीमत के रूप में स्वाधीनता में कटौती के लिए तैयार हो गये थे। वे अभी भी चुपचाप यही प्रार्थना करते हैं कि वह दिन शीघ्र आये, जब शेष नियन्त्रण भी समाप्त किये जा सकेंगे।

जान रैण्डोल्फ के समसामयिक उत्तराधिकारी संघीय सरकार के कार्यक्रमों की विविधता और विकास को अशुभ मानते हैं और इन कार्यक्रमों का विरोध दर्शन और कानून, दोनों, के आधार पर करते हैं। वे अनेक कार्यक्रमों और प्रस्तावों को सिद्धान्ततः तो गलत मानते ही हैं, उन्हें संविधान के खिलाफ भी समझते हैं।

दलगत विशेषताओं को पहचानने की सामान्य कसौटी के रूप में, एक समझदारी की बात यह कही गयी है कि जहां अनुदारवादी, किसी निश्चित परिवर्तन की मात्रा पर विचार करते हुए, परिवर्तन के विरोध और यथास्थिति के पक्षपोषण के लिए प्रवृत्त होगा, वहां उदारवादी, उसी स्थिति पर विचार करते हुए, परिवर्तन के पक्षपोषण और यथास्थिति के विरोध के लिए प्रवृत्त होगा। जॉन रैण्डोल्फ में इस तरह का पूर्वाग्रह सहज प्रवृत्ति के रूप में मौजूद था। उनका आग्रह था कि परिवर्तन आवश्यक रूप से प्रगति का पर्याय नहीं है। वह आजीवन 'नवीकरण के उन्माद' का विरोध करते रहे, जो हमेशा विधायी संस्थाओं का सिरदर्द बना रहता है। मई, १८२४ में उन्होंने वह विधि बतायी, जिसके अनुसार, लाभकारी परिवर्तन सर्वश्रेष्ठ ढंग पर लाये जा सकते हैं। इसका एक उदाहरण भी उन्होंने दिया : "जिस तरह शिशु लक्षित न होने वाली अदृश्य गति से बढ़ कर युवावस्था में, और युवावस्था से वृद्धावस्था में, पदार्पण करता है।"

रैण्डोल्फ ने कहा है : "आप अलक्षित परिवर्तन का अनुभव कर सकते हैं। आपको वस्तु में गति नहीं दिखायी देती, लेकिन यदि थोड़ी देर के लिए अपनी आंखें वस्तु पर से हटा लें, तो आप पायेंगे कि वह घड़ी की सुई की तरह आगे बढ़ चुकी है। एक पुरानी कहावत है : ईश्वर भला करता है, मगर बहुत धीरे-धीरे। इसके विपरीत, शैतान शरारत के लिए हमेशा कमर कसे रहता है और जल्दबाज़ी करता है।"

रैण्डोल्फ को अगर डर लगता था, तो केवल अनियन्त्रित आवेश से। उनका कहना था कि यदि अमेरिकी लोगों ने कभी अपनी स्वाधीनता खोयी, तो "उसका कारण केवल यह होगा कि वे स्वाधीन सरकार के कुछ महान् सिद्धान्तों को अस्थायी आवेश की वेदी पर चढ़ा चुके होंगे।" इस तरह, वह प्रतिरोध-और-संतुलन की व्यवस्थाओं की—जो "राज्यों के अधिकार" और "सत्ता के पृथक्करण" की सुरक्षा के आधार हैं—वकालत करते थे, क्योंकि ये अमेरिकी राज्य रूपी पोत के अपरिहार्य अंग हैं। बहुमतीय शासन की निरंकुशता से उन्हें बहुत डर लगता था; उन्हें संविधान की ऐसी प्रत्येक व्यवस्था हर्षित करती थी, जो सत्ता के प्रयोग पर अंकुश लगाती हो : "यह शंका-संदेह पर आधारित सरकार है, विश्वास पर आधारित नहीं।"

यही दृष्टिकोण जेफर्सन का भी था, जिन्होंने अपने केण्टकी-प्रस्ताव में यह मांग की थी कि हमें अब मनुष्यों में विश्वास की बात नहीं सुननी चाहिए, बल्कि "शरारत की सम्भावना मिटाने के लिए उन्हें संविधान की जंजीर से बांध देना चाहिये।" रैण्डोल्फ की विचारधारा के प्रथम प्रेरणा-स्रोत जेफर्सन ही थे, जिन्होंने स्फूर्त सरकारों के खिलाफ चेतावनी देते हुए, कहा था : "वे हमेशा दमनकारी ही होती हैं।"

रैण्डोल्फ इस संशयवादी दृष्टिकोण से बराबर चिपके रहे। एक बार उन्होंने कहा था कि जब भी कभी विधानमण्डलों की बैठक होती है, "विधायन की सनक अपना काम शुरू कर देती है, और नये कानून बनाने और पुराने कानून रद्द करने का जुनून पैदा हो जाता है।" वह व्यर्थ ही सही, किन्तु सदैव हृदय में वह दिन देखने की आशा संजोये रहे, जब कांग्रेस की बैठक हो, मगर कोई कानून पास किए बगैर ही, उसका सत्र पूरा हो जाये। उनका कहना था कि यदि विधायकों को केवल बहस करने

निर्णय उन्हीं के नेतृत्व में किये गये।

रिचर्ड निक्सन के क्रिया-कलापों को यदि उदारवादी तुला पर तोला जाय, तो पलड़ा कभी हलका और कभी भारी पड़ता नजर आता है। उन्होंने ऐसे कदमों का समर्थन किया, जिनका कोई रिपब्लिकन अथवा अनुदारवादी कभी समर्थन नहीं कर सकता। इसका श्रेय कुछ हद तक हारवर्ड के डैनियल पैट्रिक मोयनिहन को दिया जा सकता है, जो प्रारम्भिक दो वर्ष तक घरेलू मामलों में श्री निक्सन के प्रभावशाली सलाहकार रहे। फिर भी, कुछ अंशों में, उदारवादी लोग श्री निक्सन के कट्टर विरोधी हैं। वे आरोप लगाते हैं कि श्री निक्सन उदारवादी कदमों का केवल मौखिक समर्थन करते हैं।

सन् १९७२ में, उदारवाद का भविष्य सुखद और समन्वित नजर नहीं आता। प्रगति के लिए अतीत में जो नुस्खे तैयार किये गये, क्या वे आज भी उपयोगी हैं? यह प्रश्न गहरी परेशानी पैदा करने वाला है। वामपंथी लोग सांकेतिकता का आरोप लगा रहे हैं। ये लोग धीरे-धीरे परिवर्तन लाने की बात को उन तत्वों को रियायत देने जैसा कार्य मानते हैं, जो व्यवस्था को अतीत की जंज़ीरों में जकड़े रखना चाहते हैं। उदारवादियों का यह कह कर उपहास किया जाता है कि वे आज भी 'ऊंट के मुंह में जीरा' डालने की कोशिश कर रहे हैं और उनके प्रयोगों से सुविधाओं से वंचित दीन-हीन व्यक्तियों के कल्याण को कोई बढ़ावा नहीं मिला है। उग्र वामपंथी लोग धीरे-धीरे विकास करने की प्रक्रिया के विरुद्ध क्रांति का आग्रह कर रहे हैं। यद्यपि युवा पीढ़ी अधीर है, तथापि उदारवादियों की दृष्टि में यह बात एक उत्साहवर्द्धक संकेत है कि वे व्यवस्था के भीतर रह कर ही उसको बदलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बहुत से उदारवादी इस बात से चिन्तित हैं कि उग्र वामपंथियों के खिलाफ दक्षिणपंथियों की ओर से प्रतिक्रिया का होना स्वाभाविक है। राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धी मामलों के सलाहकार, हेनरी ए. किसिंगर, ऐसी चिन्ता व्यक्त भी कर चुके हैं। स्थिति के प्रति चिन्ता प्रकट करने वाले जो उदारवादी लोग वर्तमान प्रवृत्तियों को 'फासिस्तवाद' की संज्ञा देते हैं, वे सदी के तीसरे और चौथे दशक में जर्मन लोकतन्त्र के इतिहास को दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

किन्तु, बहुत से उदारवादी राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति निराश और स्तम्भित हैं। उनके सामने उपस्थित एक प्रमुख प्रश्न यह है कि बहुसंख्यक मतदाताओं द्वारा प्रैसिडेण्ट पद के लिए किसी उदारवादी को चुन लिये जाने से क्या अमेरिका में वे परिवर्तन लाये जा सकते हैं, जो आने वाले वर्षों में प्रगति को जन्म दे सकने वाली स्थिरता और जनकल्याण की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं? वे ठण्डी आहें भरते हुए, उदारवादी विचारधारा एवं उदारवादी उपलब्धियों के एक आदर्श के रूप में फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट की याद करते हैं। जॉन एफ. कैनेडी के तीन वर्ष की अल्प अवधि की भी उन्हें याद आती है, जब 'पीस कोर', 'हेड स्टार्ट' तथा अन्य प्रयोग आरम्भ किये गये, जो प्रगतिशील परिवर्तन के सूचक थे। अतीत की यह पीड़ाप्रद स्मृति नेतृत्व के लिए उत्कण्ठा से द्विगुणित हो गयी है। उन्हें ऐसे नेता की चाह है, जो पुनः उन लक्ष्यों और आदर्शों को स्पष्ट करे, जो उदारवादियों के अनुसार, जनता के किसी एक वर्ग को नहीं, बल्कि समस्त अमेरिकियों को प्रभावित कर सकें। स्वप्न, आशाएं और न केवल अमेरिकियों के लिए, बल्कि समस्त मानव जाति के लिए, अधिक सुन्दर तथा सुखी संसार—ये हैं वे लक्ष्य, जिनसे उदारवादी आज भी इस विश्वास के साथ चिपके हुए हैं कि ऐसे नेता का उदय अवश्य होगा, जो इन स्वप्नों और आशाओं को मूर्तिमान करने के हेतु आवश्यक नैतिक तथा बौद्धिक नेतृत्व और मार्गदर्शन प्रदान करेगा। ◘ ◘

लेखक के विषय में: मार्क्विस चाइल्ड्स एक पुलित्ज़र पुरस्कार-विजेता पत्रकार और राजनीतिक समीक्षक हैं। चालीस वर्ष से भी अधिक समय से वह विश्व भर की महत्वपूर्ण घटनाओं के विषय में समाचार देते रहे हैं। १९३४ में, वह **'सेंट लुई पोस्ट-डिस्पैच'** के वाशिंगटन स्थित सम्वाददाता नियुक्त हुए थे। उस समय से अमेरिका की राजधानी ही उनका घर बनी रही। १९४० में, उन्होंने 'वाशिंगटन कालिंग' नाम से एक स्तम्भ लिखना आरम्भ किया, जो आज भी उत्तरी अमेरिका के १४० समाचारपत्रों में बराबर प्रकाशित होता है। वह टेलिविजन-प्रेस गोष्ठियों के सदस्य के रूप में भी अक्सर दर्शक-श्रोताओं के समक्ष उपस्थित होते रहते हैं।

फ्रैंकलिन डी॰ रूज़वेल्ट

'उदारवादी विचारधारा के प्रतीक'

सेनेटर हैरी बायर्ड

अनुदार राजकोषीय नीतियों के संरक्षक

जॉन एफ॰ कैनेडी

एक यथार्थवादी उदार

अनुदारवाद

की अनुमति हो, या इससे भी अच्छा हो कि उन्हें सो जाने के लिए उत्साहित किया जाये, तब लोगों की स्वाधीनताएं अधिक सुरक्षित रहेंगी।

इस वर्जिनियावासी को अकेले विधायकों द्वारा ही नहीं, बल्कि न्यायाधीशों द्वारा भी सताये जाने का भय लगा रहता था। १८२९ के वर्जिनिया-सम्मेलन में, अपने एक भाषण में, जो आज भी उनकी तर्कपूर्ण वाग्मिता का दमकता हुआ नमूना है, रैण्डोल्फ ने संशोधनवादियों की खबर ली थी, जो सार्वजनिक कार्यों के निपटारे के लिए अधिक कारगर उपाय अपनाने की मांग कर रहे थे।

विधायकों और न्यायाधीशों के हाथों से होने वाली जिन बुराइयों की रैण्डोल्फ ने सबसे अधिक निन्दा की, वे थीं अस्पष्ट व्याख्या से पैदा होने वाली बुराइयां। जिस सिद्धान्त में अनुदारवादियों की अनन्य आस्था है, वह यह है कि अमेरिका की संघ सरकार सीमित और परिगणित अधिकारों वाली सरकार है—और, इस सिद्धान्त का जितना उग्र समर्थन रैण्डोल्फ ने किया है, उतना किसी और ने कभी नहीं किया। 'लूज़ियाना क्रय' के मामले में, रैण्डोल्फ को कोपभाजन बनना पड़ा; जेफर्सन के सम्मोहन से प्रभावित होकर, उन्होंने केन्द्रीय सरकार की एक ऐसी कारंवाई का अनुमोदन कर दिया, जिसका अधिकार, संविधान के अनुसार, केन्द्र को नहीं था। शीघ्र ही, रैण्डोल्फ ने इस गल्ती पर खेद व्यक्त किया, और उसके बाद वह अपने सिद्धान्त से कभी भी विचलित नहीं हुए। उनका कानूनी प्रशिक्षण अपूर्ण था, किन्तु फिर भी, आधारभूत अमेरिकी कानूनों द्वारा जानबूझ कर निर्धारित सीमाओं की पकड़ जितनी उन्हें थी, उतनी बहुत कम अध्येताओं को थी। अनुदारवादियों की दृष्टि में, जनकल्याण सम्बन्धी धारा के फलस्वरूप, केन्द्र सरकार को पर्याप्त रूप से अनियन्त्रित अधिकार नहीं प्राप्त होता। इसी तरह, सेना और नौसेना बनाये रखने के अधिकार को राष्ट्रीय प्रतिरक्षा से असम्बद्ध कार्यक्रमों का औचित्य सिद्ध करने के लिए सुविधाजनक आधार नहीं बनाया जा सकता।

१९७२ के चुनाव-अभियान वर्ष में, बहुत से अमेरिकी अनुदारवादियों की हताशा में ये सारी बातें भी शामिल हैं। श्री निक्सन ने संविधान की 'नपी-तुली व्याख्या' (शाब्दिक व्याख्या) के प्रति सार्वजनिक और प्रत्यक्ष रूप में जितना आगे बढ़ कर अपनी आस्था प्रकट की है, उतना, जहां तक याद पड़ता है, किसी भी राष्ट्रपति ने नहीं की है। अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय में, वारेन बर्गर, हैरी ब्लैकमन, लेविस पावेल और विलियम रेनक्विस्ट की नामजदगी के पीछे राष्ट्रपति की यही निष्ठा काम कर रही थी—अनुदारवादी समुदाय ने इन नामजदगियों की मुक्त कण्ठ अनुशंसा की थी।

फिर भी, यह वही राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने कलाओं और सामाजिक विज्ञानों पर व्यय करने के लिए सरकार द्वारा निर्धारित राशियां दुगनी कर देने का अनुरोध किया है। इसका संवैधानिक आधार क्या है? यह वही राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने कैंसर के खिलाफ जेहाद बोलने के लिए सार्वजनिक कोष से विपुल धनराशि की मांग की है। क्या सेना को कायम रखने के लिए आवश्यक व्यय के नाम पर इसका औचित्य सिद्ध किया जा सकता है? राष्ट्रपति प्रदूषण-नियन्त्रण, सार्वजनिक शिक्षा, समुद्री अनुसन्धान और मंगल ग्रह की यात्रा के लिए संघीय ख़ज़ाने से धनराशि देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। क्या सामान्य जनकल्याण के नाम पर इन कार्यक्रमों को युक्तियुक्त ठहराया जा सकता है?

यदि हम यह मान लें कि आज के अनुदारवादियों का आग्रह यह नहीं है कि रैण्डोल्फ के सिद्धान्त १९७२ के अमेरिका में शब्दशः और यन्त्रवत् लागू किये जायें, तो अनुचित नहीं होगा। उनका आग्रह, निस्सन्देह, ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए, इस अभिजात्य वर्जिनियावासी के देहान्त के बाद से संविधान में बारह बार संशोधन हो चुके हैं; और इनमें से कई संशोधन अमेरिकी जनता की इस चेतना और संकल्पशक्ति को प्रतिबिम्बित करते हैं कि राज्यों की शक्ति घटा कर संघीय सरकार के अधिकारों में वृद्धि हो। रैण्डोल्फ के अधिकांश विचारों का मूलाधार उस समय का कृषि-प्रधान समाज था, जो अब लुप्त हो चुका है। सम्भव है कि टामस जेफर्सन और हेनरी क्ले ने, जिनकी दृष्टि अधिक व्यापक थी, संविधान को कसी हुई बनयान की शक्ल में देखने की आवश्यकता न समझी हो, बल्कि ऐसे चुस्त वस्त्र के रूप में देखने की पूर्वकल्पना की हो, जिसमें शरीर के जोड़ों को कुछ इधर-उधर हिला-डुला सकने की गुंजाइश रहे। प्रोफेसर रसेल किर्क रैण्डोल्फ को 'अमेरिकी बर्क' की संज्ञा देते हैं, और यह उपाधि सारमय भी है। लेकिन रैण्डोल्फ का उदारवाद अपनी दुर्भेद्य सैद्धान्तिकता के कारण आलोचना का विषय बन गया है, जो उचित ही है। न तो काला हमेशा उतना काला होता है, और न श्वेत हमेशा उतना श्वेत, जितना रैण्डोल्फ उसे साबित किया करते थे।

इन सब सीमाओं को स्वीकार करके भी, अमेरिका के अनुदारवाद को रैण्डोल्फ की २००वीं जयन्ती के पैमाने से नापा जा सकता है। उनकी विचारधारा में निहित विवेक आज भी जीवित है, लेकिन अमेरिकियों ने उसका उतना पालन नहीं किया है। रैण्डोल्फ ने कहा था कि राज्यतन्त्र का पहला सिद्धान्त यह है कि जब तक अतीव आवश्यकता न हो, यथास्थिति को परिवर्तित नहीं करना चाहिये; लेकिन हमारी अधीर पीढ़ी, आवश्यकता के सतही दावों के आधार पर, नवीकरणों के पीछे भागने में नहीं हिचकती। नवीकरण के नाम पर जो कुछ हुआ है, उसमें से अधिकांश कारगर नहीं रहा है: एक उदाहरण है आश्रित संतानों वाले परिवारों को सहायता देने का कार्यक्रम; दूसरा है सार्वजनिक भवन-निर्माण कार्यक्रम; और तीसरा है जातीय संतुलन के लिए स्कूली बसों की व्यवस्था।

इस तरह के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। परम्परागत उदारवाद खोखला है; और यह खोखलापन रैण्डोल्फ द्वारा निर्दिष्ट कारणों से ही उत्पन्न हुआ है। उदाहरण के लिए, वह परम्परा का निषेध करता है; परिवर्तन को प्रगति समझने की भूल करता है; और निर्बाध अनुमति की पूजा करने में वास्तविक स्वाधीनता का परित्याग कर देता है। उदारवाद इस सत्य की ओर से आंखें मूंद लेता है कि स्वाधीनता की सुरक्षा की पहली शर्त है शान्ति एवं व्यवस्था का कायम रहना। रैण्डोल्फ, जो स्वाधीनता के प्रेमी थे, इस सत्य को पूरी तरह समझते थे।

आइये, अब हम आरम्भ में निर्दिष्ट विषय पर लौटें; अमेरिकी अनुदारवाद का भविष्य, अपने प्राचीन लोकतन्त्रीय अर्थ में, सुखद नहीं है। वह समाज, जिसने अपने शैशव में ही विशेष उत्साह से स्वाधीनता की घोषणा की थी, आज बहुत बदल चुका है। उसमें बहुत बड़ी संख्या में लोग परस्पर-निर्भरता की धारणा में विश्वास करने लगे हैं। पुराने प्रतिबन्ध—राज्यों के अधिकार, सत्ता और अधिकारों का पृथक्करण, शाब्दिक व्याख्या—पुराने ध्वजों के रंगों की तरह फीके पड़ गये हैं। 'परिवर्तन का उन्माद', जिसे रैण्डोल्फ ने लोकतन्त्रों की मृत्यु का प्रतीक माना है, विधानसभाओं में अब भी गहरी सरगर्मी उत्पन्न करता रहता है। हम अनुदारवादी लोग लड़ेंगे और पीछे हटेंगे; लड़ेंगे और पीछे हटेंगे।

फिर भी, बहुत कम अनुदारवादी हताश हैं। आज का परम्परागत विवेक सब नौजवानों को, विशेष कर कालेज में पढ़ने वाले छात्रों को, उग्र उदारवादी मानने को प्रस्तुत है, जो एक स्वर्णयुगीन लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं। यह परम्परागत विवेक की चूक है। सत्ता के शक्तिशाली केन्द्रों को तोड़ने की उत्सुकता 'नव वामपंथ' को 'पुरातन दक्षिणपंथ' के समीप ला देती है। छात्रों की एक बहुश्रुत आपत्ति, जिसकी गूंज अनुदारवादी सिद्धान्तों में सुनायी देती है, संगणक की तरह यान्त्रिक और केन्द्रित सत्ता की मूलतः अमानवीय विशेषताओं से सम्बद्ध है। युवा व्यक्ति सरकार को शंका की दृष्टि से देखते हैं; अनुदारवादी भी इन्हीं की तरह सरकार पर अविश्वास करते हैं। यह पूर्णतः सम्भव है कि अनुदारवादियों की एक ऐसी नयी पीढ़ी तैयार हो रही हो, जो जनसमूह को अनुशासित करने की प्रवृत्ति के विरुद्ध अपनी घृणा को उसी प्रकार विद्रोह में बदल दे, जिस प्रकार जान रैण्डोल्फ ने किया था। ■ ■

लेखक के विषय में : श्री जेम्स जे० किल्पैट्रिक आज अमेरिका में अनुदारवादी दृष्टिकोण के अधिकतम सुविज्ञ और प्रभावशाली पक्षपोषक पत्रकार हैं। इस रूप में, उन्हें अपने सहयोगियों और जनसाधारण से व्यापक मान्यता प्राप्त है। वह एक राजनीतिक विश्लेषक और भूतपूर्व सम्पादक हैं। सम्प्रति वह राष्ट्र भर में प्रकाशित स्तम्भ, 'एक अनुदारवादी दृष्टिकोण', के लेखक, 'नेशनल रिव्यू' पत्रिका के लेखक-सम्पादक और कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम के टेलिविजन-समीक्षक हैं।

तेल से बसबाल से नूडल तक:

अमेरिका पर विदेशी फर्मों का धावा

विदेशी फर्में अमेरिका में पूंजी का इतना अधिक विनियोजन कर रही हैं, जितना पहले कभी नहीं हुआ था। कुछ क्षेत्रों में तो वे अमेरिकी फर्मों को भी मात दे रही हैं।

अमेरिकी फर्में विदेशों के व्यावसायिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में पूंजी का अधिकाधिक विनियोजन कर रही हैं। साथ ही, यह भी हो रहा है:

विदेशी कम्पनियां अमेरिका में व्यवसायों पर अपना स्वामित्व उत्तरोत्तर विस्तृत करती जा रही हैं।

परिणामतः, अमेरिकी उपभोक्ता विदेशी स्वामित्व वाली फर्मों द्वारा अमेरिका में उत्पादित वस्तुओं पर हर साल करोड़ों डालर खर्च कर रहे हैं। इन वस्तुओं में, इतालवी खाद्य पदार्थ, विद्युदाणविक सामान, तेल और गैसोलीन, चाकलेट, बियर तथा विभिन्न प्रकार के औद्योगिक उत्पादन शामिल हैं। और, सूची निरन्तर बढ़ती जा रही है:

लोडी, कैलिफोर्निया, में प्रथम श्रेणी की पेशेवर बेसबाल टीम का गठन जापानी स्वामित्व के अधीन हुआ है।

मोटरगाड़ी वाले अपनी गाड़ियों की टंकियों में शेल गैसोलीन भरा रहे हैं, जिस पर हालैण्ड-वासियों का नियन्त्रण है।

नेसले चाकलेटों का उत्पादन करने वाली फर्म स्विट्ज़रलैण्ड की है।

अमेरिका में निर्मित दफ्तरी कामकाज की 'ओलिवेत्ती' मार्का मशीनों के लाभ इतालवी हितों को प्राप्त होते हैं।

कनाडा की कार्लिंग बियर का उत्पादन करने के लिए अमेरिका के कई भागों में भट्टियां स्थापित हैं।

अमेरिकावासियों की दृष्टि से, अतिरिक्त विदेशी उद्यमों की स्थापना का अर्थ होता है: रोजगार के हजारों-लाखों नये अवसरों का प्रादुर्भाव, अधिकाधिक प्रतियोगिता, अधिक किस्म की चीजों में से चुनाव करने की सहूलियत और विदेशों से अमेरिका में नयी पूंजी के आगमन से अर्थ-व्यवस्था के स्वास्थ्य में सुधार।

विदेशों से अरबों डालर का आगमन: इस समय अमेरिकी संयंत्रों और उनसे सम्बद्ध फर्मों में, विदेशी फर्मों की लगभग १३.५ अरब डालर पूंजी लगी हुई है। यद्यपि यह राशि अमेरिकी कम्पनियों द्वारा विदेशों में इसी प्रकार के उद्यमों में लगायी गयी ८२ अरब डालर की राशि से बहुत कम है, फिर भी यह इस बात की सूचक है कि पिछले कई वर्षों से क्रमशः बढ़ कर ही यह इस स्तर तक पहुंची है।

विश्व-व्यापार के अनेक विशेषज्ञों ने भविष्य-वाणी की है कि आने वाले वर्षों में, विदेशों में
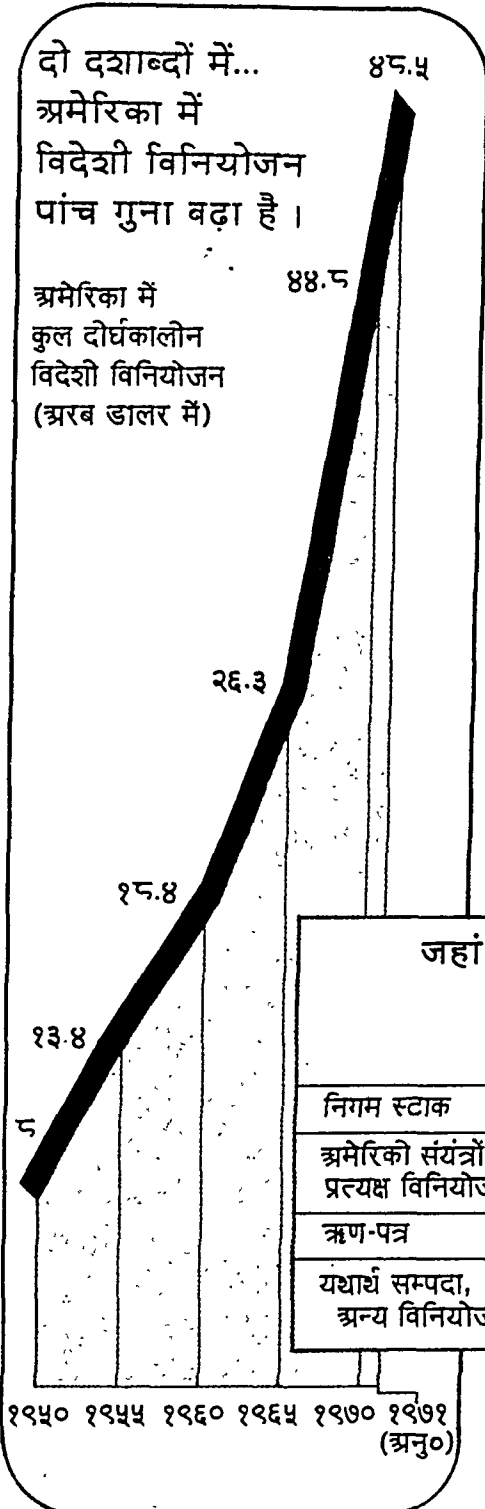
अमेरिकी पूंजी के विनियोजन की गति की तुलना में, देश के आन्तरिक बाजारों पर 'विदेशी अतिक्रमणों' की गति अधिक तेज हो जायेगी।

देश में सर्वत्र, अमेरिकी फर्मों की प्रतियोगिता में यूरोपीय और जापानी फर्मों के नाम उभर कर सामने आने लगे हैं।

लगभग ८५ विदेशी कम्पनियां अपने व्यवसाय न्यू इंग्लैण्ड क्षेत्र के राज्यों में चला रही हैं।

पश्चिमी जर्मनी की कम-से-कम १७ कम्पनियां साउथ कैरोलाइना में अपने संयंत्र और अपनी वितरण-प्रणालियां स्थापित कर चुकी हैं।

कुल मिला कर, ७०० से अधिक फर्में, जिनका स्वामित्व विदेशियों के हाथ में है, इस समय अमेरिकी बाजार में कार्यरत हैं। अमेरिका में पूंजी लगाने वाले प्रमुख देशों में, ग्रेट ब्रिटेन सबसे आगे है। उसके द्वारा यहां पर विनियोजित पूंजी की मात्रा लगभग ४.१ अरब डालर है। द्वितीय स्थान पर कनाडा है, जिसकी पूंजी की मात्रा ३.१ अरब डालर है। तीसरे और चौथे स्थान पर हालैण्ड और स्विटज़रलैण्ड आते हैं, जिनकी अमेरिका में विनियोजित पूंजी की मात्रा क्रमशः २.१ और १.५ अरब डालर है।

बाजारों को प्रोत्साहन? विदेशियों के इस प्रत्यक्ष पूंजी-विनियोजन के अलावा, विदेशी व्यक्तियों, बैंकों, साझा निधियों तथा अन्य संस्थाओं ने अमेरिकी फर्मों की प्रतिभूतियों और सरकारी बाण्डों में इस समय लगभग ३० अरब डालर की पूंजी लगा रखी है।

वास्तव में, शेयर-बाजार के कुछ विश्लेषक यह उम्मीद लगाये बैठे हैं कि इस वर्ष बड़े पैमाने पर विदेशी पूंजी के आगमन से अमेरिका में शेयरों के भाव चढ़ जायेंगे। उनका कहना है कि दो वर्ष पूर्व, जब शेयर बाजार में मंदी आयी थी, तब विदेशियों द्वारा अमेरिकी शेयरों की अधिक बिक्री के फलस्वरूप, मंदी की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला था।

इस वर्ष के प्रथम तीन महीनों में, विदेशियों द्वारा खरीदे गये अमेरिकी शेयरों का मूल्य उनके द्वारा बेचे गये अमेरिकी शेयरों के मूल्य से

जहां पूंजी-विनियोजन हुआ है

	१९५०	१९७१ (अनु०)	परिवर्तन
	अरब डालर में		प्रतिशत
निगम स्टाक	२.९	२२	वृद्धि ६५९
अमेरिकी संयंत्रों में प्रत्यक्ष विनियोजन	३.४	१३.५	वृद्धि २९७
ऋण-पत्र	०.१८१	८	वृद्धि ४,३२०
यथार्थ सम्पदा, अन्य विनियोजन	१.५	५	वृद्धि २३३

७५ करोड़ डालर अधिक रहा। न्यूयार्क शेयर-बाजार के उपाध्यक्ष और प्रमुख अर्थशास्त्री, विलियम सी. फ्रायण्ड, का कहना है कि शेयरों की यह खरीदारी शेयर-बाजार में विदेशियों की अधिकतम साझेदारी वाले वर्ष के बारे में उनके द्वारा की गयी भविष्यवाणी में निर्दिष्ट 'लक्ष्य के सर्वथा अनुरूप' है।
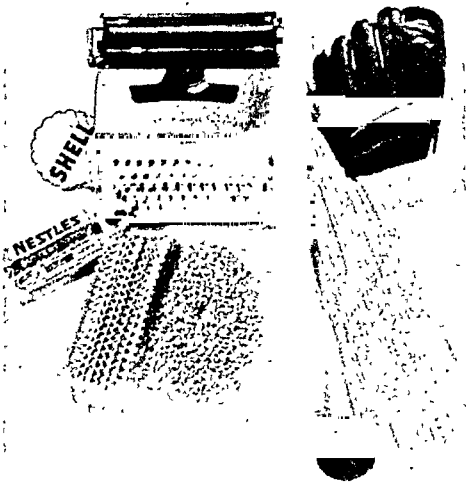
अमेरिका में तीव्र आर्थिक अभिवृद्धि की पूर्व-कल्पना करते हुए, श्री फ्रायण्ड ने अनुमान लगाया है कि "इस वर्ष अमेरिकी प्रतिभूतियों में लगभग ३ अरब डालर की पूंजी विनियोजित होगी, और इस तरह विनियोजित कुल पूंजी की मात्रा ३० अरब डालर से अधिक हो जायेगी।"

विदेशों में यह विश्वास उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है कि अमेरिका में उद्योगों को संरक्षण देने की नीति का भविष्य में अधिकाधिक अनुसरण किया जायेगा, जिससे अमेरिकी बाजारों में अपना माल खपाने की इच्छुक अनेक विदेशी कम्पनियों के लिए गम्भीर कठिनाइयां उत्पन्न हो जायेंगी।

कुछ व्यवसाय-प्रबन्धकों का ख्याल है कि इस तरह की नीति से बचाव का सर्वोत्तम उपाय अमेरिका में अपने प्रतिष्ठान खोलना ही हो सकता है।

जैसे-जैसे विदेशी फर्मों का आकार बड़ा होता जा रहा है, वैसे-ही-वैसे उनमें यह विश्वास और भी बल पकड़ता जा रहा है कि वे विशाल अमेरिकी बाजार में भागीदारी के लिए प्रतियोगिता करने में समर्थ हैं।

यह धारणा भी ज़ोर पकड़ती जा रही है कि बहुचर्चित अमेरिकी जानकारी और प्रौद्योगिकी से लोहा लेने में उन्हें फायदा ही है, नुकसान नहीं।

कहा जाता है कि विदेशी फर्मों को अमेरिका में अपने कारखाने खोलने के लिए वहां कच्चे माल और भूमि की प्रचुरता के कारण भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

इतने पर भी, अनेक विदेशियों को अमेरिकी बाजार में बड़े पैमाने पर पांव जमाना निरापद नहीं मालूम होता।

कुछ चिन्ताएं : विदेशी व्यवसाय-प्रबन्धकों को, अमेरिका के जटिल न्यास-विरोधी कानूनों से विशेष घबराहट होती है।

अमेरिका में उद्योगों के लिए जिस ढंग से वित्त की व्यवस्था की जाती है, वह उनके लिए चिन्ता का प्रमुख विषय है। जब कोई अमेरिकी फर्म सार्वजनिक रूप से शेयरों की बिक्री द्वारा धन एकत्र करती है, तो उसे अपने कारोबार के बारे में बहुत सारी जानकारी अनिवार्य रूप से प्रकाशित करनी पड़ती है। अधिकांश अन्य देशों में ऐसा करना अनिवार्य नहीं है।

अन्त में, बहुत-से विदेशी उद्यमियों को अब भी डर लगता है कि उनकी फर्में अमेरिका की विशाल फर्मों, जैसे जनरल मोटर्स, जनरल इलेक्ट्रिक, इण्टर्नेशनल बिजिनेस मशीन्स, आदि के सामने टिक नहीं सकेंगी।

अमेरिका में व्यवसाय चलाने के बारे में व्याप्त भय को दूर करने के लिए अमेरिकी वाणिज्य विभाग एक प्रचार-अभियान चला रहा है, जिसका उद्देश्य यह बताना है कि अमेरिका में कारोबार जमाने से विदेशी फर्मों को क्या लाभ हो सकते हैं। वाणिज्य विभाग के 'अमेरिका में पूंजी लगाओ' कार्यक्रम के अध्यक्ष, फ्रैंक डब्ल्यू शैफर, का कहना है :

"बहुत से विदेशियों को यह जान कर आश्चर्य होता है कि अमेरिका की सभी कम्पनियां जनरल मोटर्स की तरह ही बड़े आकार की नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि हमारे यहां की ९६ प्रतिशत कम्पनियों में काम करने वालों की संख्या २५० या इससे भी कम है। अधिकतर मामलों में, हमारे न्यास-विरोधी कानूनों के बारे में उनकी आशंका निराधार है।"

अमेरिका के ३५ से अधिक राज्य भी इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि वे नये उद्यमों को अमेरिका में आने के लिए आकृष्ट करें।

हाल में, इस तरह के प्रयास साउथ कैरोलाइना के एक छोटे से नगर, स्पार्टनबर्ग, के लिए कितने लाभकारी सिद्ध हुए हैं, और वहां कौन-कौन सी फर्में स्थापित हुई हैं, इसका विवरण एक संलग्न लेख में प्रस्तुत है।

चेतावनी की अभिव्यक्तियां : अमेरिका में पूंजी-विनियोजन की सम्भावनाओं के बारे में विदेशी लोग क्या सोचते हैं, इसकी जानकारी के लिए कुछ अमेरिकी पत्रकारों ने प्रमुख उद्योग-प्रधान देशों के व्यावसायिक नेताओं से बातचीत की। उन्हें मालूम हुआ कि डालर के अवमूल्यन के बाद, यूरोप की अनेक फर्में अमेरिका में पूंजी लगाने की सम्भावनाओं पर नये सिरे से विचार कर रही हैं।

और, कुछ वित्तीय विशेषज्ञों को आशा है कि अब अमेरिकी उद्यमों और व्यवसायों में प्रत्यक्ष पूंजी-विनियोजन बढ़ेगा।

अमेरिकी बाजार में विदेशियों के प्रवेश के बारे में, स्विस क्रेडिट बैंक के निदेशक और मुख्य अर्थशास्त्री, हैंस मास्ट, का कथन है : "यूरोप के मुकाबले अमेरिका में विफलता के खतरे अधिक हैं।"

इस तरह सोचने वालों में पश्चिम जर्मनी भी एक है। इस देश के अधिकारी कहते हैं कि पश्चिमी जर्मनी के उद्योगपति अमेरिका में बड़े पैमाने पर पूंजी लगाने में हिचकते हैं।

बोन के अधिकारियों को आशा है कि जब न्यूयार्क में जर्मन बैंकों की और अधिक शाखाएं खुल जाएंगी, तब अमेरिका में जर्मन कम्पनियों द्वारा पूंजी-विनियोजन की गति तीव्रतर हो जायेगी।

ब्रिटेन के लोग, जिनकी अमेरिकी उद्यमों में सबसे अधिक पूंजी लगी है, फिलहाल नये उद्यमों की ओर से उदासीन हैं।

फ्रांसीसियों के लिए आकर्षण : दूसरी ओर, उद्योगपतियों का कहना है कि अमेरिका में फ्रांसीसी पूंजी की दिलचस्पी बढ़ रही है। किन्तु, विकास की गति धीमी रहेगी, क्योंकि इस तरह के पूंजी-विनियोजनों के लिए साझा बाजार की ही प्राथमिकता मिल रही है। फिर भी, अमेरिका में लाभ की ऊंची दर को फ्रांसीसी पूंजी-विनियोजनों के लिए आकर्षण का स्रोत माना जा रहा है।

इटली के उद्योगपति आम तौर से यह मान कर चल रहे हैं कि निकट भविष्य में अमेरिका में पूंजी-विनियोजन की मात्रा अकस्मात् ही बहुत नहीं बढ़ जायेगी। इटली के लोग आमतौर पर अमेरिका में इटली-निर्मित माल बेचने की फिराक में रहते हैं।

किन्तु, आशा की जा रही है कि अमेरिका में हर प्रकार का जापानी पूंजी-विनियोजन तेजी से बढ़ेगा, क्योंकि जापानियों के पास अब विनियोजन के लिए पर्याप्त पूंजी हो गयी है और सरकार भी पूंजी के अपवाह या निस्सरण को प्रोत्साहन दे रही है।

जापान के उद्योगपतियों के सबसे शक्तिशाली संगठन, 'कीडनरेन', का कहना है कि उससे अमेरिका में पांव जमाने की सर्वोत्तम विधि की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत पूछताछ की जा रही है। इसके अलावा, अमेरिका के कई राज्य करों की छूट, सर्वोत्तम औद्योगिक बस्तियों में स्थान और क्रमिक सुविधाओं का आश्वासन दे कर जापानी पूंजी-विनियोजकों को आकृष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

यद्यपि सरकार ने पिछले दो वर्षों में, प्रतिभूतियों में पूंजी-विनियोजन पर लगे अधिकांश प्रतिबन्ध हटा दिये हैं, फिर भी अनुमान है कि अमेरिकी प्रतिभूतियों में जापानियों का केवल ४० से ५० अरब डालर ही लगा हुआ है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस उदासीनता का एक कारण इस समय फैली इस भ्रान्ति में निहित है कि जापानी मुद्रा, येन, की विनिमय-दर पुनः बढ़ सकती है, जिससे अमेरिका में डालर के निधिपत्रों का अवमूल्यन हो जायेगा। कुछ जानकारों का विश्वास है कि ज्यों ही ये आशंकाएं दूर हो जायेंगी, त्यों ही अमेरिकी प्रतिभूतियों में जापानी पूंजी का विनियोजन १ अरब डालर तक पहुंच जायेगा।

कनाडा की दिलचस्पी : एक अग्रणी पूंजी-विनियोजन कम्पनी के एक अधिकारी का कहना है कि कनाडा के लोगों को "अमेरिका में कारखाने खोल कर उत्पादन करने में गहरी दिलचस्पी है।" वह आगे कहते हैं : "कनाडा की सब प्रमुख फर्में ऐसा कर रही हैं, अथवा ऐसा करने की राह देख रही हैं।"

पिछले वर्ष, अमेरिकी सरकार ने ११२ ऐसी कनाडी फर्मों की, जिनमें से कुछ दुनिया की बड़ी फर्मों में गिनी जाती हैं, सूची प्रकाशित की थी, जो १७६ अमेरिकी कम्पनियों की या तो मालिक हैं, या उनकी पूंजी में हिस्सेदार हैं। कनाडा के विनियोजन-विशेषज्ञों का कहना है कि उन्हें अमेरिकी फर्मों में धन लगाना बहुत पसन्द है।

यह स्पष्ट है कि एक के बाद एक औद्योगिक देशों में अमेरिकी उद्यमों पर धावा बोलने की पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है, हालांकि इस प्रवृत्ति का पूरा असर अनेक वर्षों बाद ही नज़र आयेगा। ■

यूरोपीय व्यवसायियों को कैरोलाइना से प्रेम है : और यह भावना पारस्परिक है

पांच वर्ष पहले, टामस फौर्स्टर और उसके माता-पिता पश्चिमी जर्मनी से साउथ कैरोलाइना के स्पार्टनबर्ग नगर में आकर बसे थे। उसे अंग्रेजी का एक शब्द भी नहीं आता था। अमेरिकी खेल-कूद उसे रहस्यमय लगते थे। परिवार के लोगों को अपनी पसन्द के खाद्य पदार्थ किराना दूकान की आलमारियों पर नजर नहीं आते थे।

आज, १७-वर्षीय टामस, जिसका कद २.१ मीटर (६ फुट ११ इंच) है, बास्केटबाल खेलता है और स्पार्टनबर्ग हाईस्कूल में बहुत अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होता है। यह स्कूल पढ़ाई-लिखाई और खेलकूद, दोनों के लिए उत्तम माना जाता है। स्थानीय व्यापारी गहरे रंग की रोटियां, जर्मन अचार, मदिरा और अन्य ऐसे पदार्थ बेचते हैं, जो प्रकटतः यूरोप में अधिक प्रयुक्त होते हैं।

नये अमेरिकी : फौर्स्टर-परिवार एक १,५००-सदस्यीय अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का सदस्य है। यह समुदाय यहां ब्ल्यू रिज पर्वतों की तराई से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। श्री फौर्स्टर 'फार्बवर्क होएश्चेट ए० जी०' नामक जर्मन स्वामित्व की फर्म के १५ करोड़ डालर पूंजी से स्थापित पोलिएस्टर रेशा संयंत्र की देखभाल करते हैं।

४५,००० की आबादी वाले इस नगर के आसपास चारों ओर ७ देशों की २० अन्य विदेशी कम्पनियां स्थापित हैं। इनमें २०० मजदूरों को नौकरी देने वाली बुनाई मिल से लेकर, १० व्यक्तियों वाले विक्रय और सेवा केन्द्र तक, सभी आकार की फर्में शामिल हैं।

ये सभी फर्में प्रायः वस्त्रों और मशीनों के निर्माण या उनके विक्रय का काम करती हैं।

वस्त्रों का केन्द्र : ये फर्में साउथ कैरोलाइना के उत्तर-पश्चिमी कोने में, जो बड़े नगरों से काफी दूर पड़ता है, क्यों केन्द्रित हो रही हैं?

वस्त्र-उद्योग से सम्बद्ध एक स्विस कार्याधिकारी का उत्तर है : "यह हमारे क्रिया-कलापों का भौगोलिक केन्द्र है।"

यहां रहने वाले अन्य विदेशी व्यवसाय-प्रबन्धकों का कहना है कि यह नगर अमेरिकी वस्त्र-उद्योग के हृद्-प्रदेश के निकट स्थित है। उसके अधिकांश ग्राहक ३०० किलोमीटर की परिधि में रहते हैं। दो अन्तर्राज्यीय राजमार्ग इस क्षेत्र से होकर गुजरते हैं, जिससे ट्रकों द्वारा माल को गन्तव्य स्थान तक बहुत जल्द पहुंचाया जा सकता है।

स्थानीय समृद्धि बढ़ाने में, वस्त्रों की अभिकल्पना में हाल के वर्षों में हुए परिवर्तनों ने भी योग दिया है। आज दुहरी बुनाई और सिलवटरहित कपड़ों के धागों की मांग बराबर बढ़ती जा रही है।

डियरिंग मिल्लिकेन सर्विस कारपोरेशन नामक एक अमेरिकी फर्म के उपाध्यक्ष और उसके विक्रय-विभाग के निदेशक, श्री हाल सी० बायर्ड, का कहना है :

"दुहरी बुनाई के वस्त्रों का उत्पादन यूरोप में शुरू हुआ। उन्हें उसका अधिक अनुभव है। उनकी मशीनों में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जो यहां की मशीनों में हैं ही नहीं।"

स्थानीय सहयोग : इस क्षेत्र के लिए, और विशेष रूप से समस्त साउथ कैरोलाइना के प्रति, विदेशी व्यवसाय-प्रबन्धकों में जो उत्साह है, उसका एक अन्य कारण यह भी है कि यहां बसने वालों को विशेष सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। ये सुविधाएं हैं : तकनीकी स्कूलों की व्यवस्था, जिससे कम्पनियों को बिना कुछ खर्च किये ही प्रशिक्षित श्रमिकों का जखीरा उपलब्ध हो जाता है; श्रमिक संघों का न्यूनतम प्रभाव; कार्याधिकार सम्बन्धी कानून; कम कीमत पर बड़े-बड़े भूक्षेत्रों की सुलभता; अन्तिम रूप में निर्मित माल पर इनवेण्टरी करों का अभाव; और अधिकांश सम्पदा-करों से ५ वर्ष तक मुक्ति।

मुख्यतः, विदेशी उद्यमों के कारण रोजगार के अवसरों की बहुतायत हो गयी है। इस क्षेत्र में बेरोजगारी का प्रतिशत अप्रैल में २.७ था, जो राष्ट्रीय औसत के आधे से भी कम है। लगभग ३,००० लोग, जिनकी संख्या श्रमशक्ति के लगभग १० प्रतिशत के बराबर है, समुद्रपारीय स्वामित्व वाली फर्मों में काम कर रहे हैं।

नवागंतुकों पर 'स्थानीय रंग' : विदेशियों के अन्तःप्रवाह के बारे में स्थानीय लोगों की धारणा को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए, **'दि स्पार्टनबर्ग हैराल्ड ऐण्ड जर्नल'** के सह-प्रकाशक, ह्यूबर्ट हेंड्रिक्स, कहते हैं :

"इस क्षेत्र में हमारा अनुभव पूर्णतः सकारात्मक रहा है। विदेशियों के आगमन से वातावरण, निश्चय ही, सार्वभौमिक और सहिष्णु बन गया है।"

जहां तक विदेशी परिवारों का प्रश्न है, वे फौर्स्टर परिवार की तरह ही स्थानीय जन-जीवन में आसानी से घुलमिल गये है।

१९६३ में, नवागंतुकों को नयी जगह के अनुकूल अपने-आपको ढालने में सहायता देने के लिए एक संस्था, 'स्विस-अमेरिकन सोसायटी', बनायी गयी थी, जिसकी बैठकें अब भी होती रहती हैं।

यहां स्विस लोगों की संख्या, वस्तुतः, इतनी अधिक है कि जून, १९७० में एक अवैतनिक स्विस वाणिज्य दूत की नियुक्ति की गयी। ये हैं रासायनिक अन्वेषक, हैंस एच० कुहन, जो १२ वर्ष से यहां रह रहे हैं।

कैरोलाइना पसन्द है : यहां का अन्तर्राष्ट्रीय सामुदायिक जीवन साधारणतः शान्त रहता है। किन्तु, हाल में, इस शान्त जीवन में भी कुछ हलकी-सी हलचल आ गयी।

हुआ यह कि मार्कुस बोलिगर की कम्पनी ने उनकी नियुक्ति स्विट्ज़रलैण्ड में नये पद पर कर दी। लेकिन, बोलिगर ने, जो १० वर्ष से अमेरिका में रह रहे थे, स्वदेश लौटने से इन्कार कर दिया।

उन्होंने त्यागपत्र भेज कर यहीं पर एक दूसरी विदेशी फर्म में नौकरी कर ली। पिछले वर्ष, मई में, वह और उनकी पत्नी, हैडी, ने अमेरिका की नागरिकता स्वीकार कर ली।

बोलिगर-दम्पति ने अमेरिका में ही बसना क्यों पसन्द किया?

बोलिगर का कहना है : "मुझे यहां के लोग, यहां के लोगों का रहन-सहन का तरीका, यहां का व्यावसायिक वातावरण और यहां उपलब्ध रोजगार के अवसर—इसी क्रम से—पसन्द हैं।

"यहां के लोगों का दृष्टिकोण ठोस और सकारात्मक है। वे यह नहीं पूछते कि आपके माता-पिता कौन हैं, और न यही कि आपके पास कोई पदवी है या नहीं? वे आपको उसी रूप में, जैसे कि आप हैं, ग्रहण करते हैं।"

जहां तक स्पार्टनबर्ग का सवाल है, उसका अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अभी और विकसित हो सकता है। नगर के वाणिज्य-मण्डल के कार्य-वाहक उपाध्यक्ष, रिचर्ड ई० टुकी, जो विदेशी फर्मों को आकृष्ट करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते रहे हैं, कहते हैं : "इस समय भी हम कुछ लोगों से बातचीत चला रहे हैं।"

अधिकारियों को आशा है कि यह प्रवृत्ति देश के अन्य भागों में भी फैलेगी। ■■

स्पार्टनबर्ग की उत्कृष्ट राजपथ-परिवहन व्यवस्था विदेशी व्यवसायियों को विशेष रूप से आकृष्ट करती है।

नीचे, जर्मनी से आया फौर्स्टर-परिवार अपने पड़ोसी अमेरिकियों के स्वागत-सत्कार में संलग्न है। सबसे नीचे, स्पार्टनबर्ग में २१ विदेशी फर्में व्यवसाय में संलग्न हैं। जिनमें एक है दक्षिण अफ्रीका की डैन्यूबिया निटिंग मिल्स।

छायाचित्र

- पृ० ३ (नीचे) जार्ज सी० हाइट
- पृ० १७-२१ मैक्डोनेल डगलस के सौजन्य से
- पृ० २२-२३ (ऊपर, वायें) २५, २७ (नीचे) होमी जाल
- पृ० २३ (ऊपर) मित्तर बेदी
- पृ० २४, २६, २७ (वायें, नीचे) वी० वी० दोपी के सौजन्य से
- पृ० २८-३२ अविनाश पसरीचा
- पृ० ४४ जैक ज़ेहर्ट
- पृ० ५२ (वायें) हिरो
- पृ० ६६ 'वाइड वर्ल्ड' के सौजन्य से
- पृ० ६७ राल्फ क्रेन, 'लाइफ'; जेम्स पी० विल्सन
- पृ० ६८ हाल ए० फ्रैंकलिन; फ्रैंक जौन्स्टन, 'दि वाशिंगटन पोस्ट'
- पृ० ६९ कार्नेल कापा, 'मैगनम' के सौजन्य से
- पृ० ७० जान ओल्सन, 'लाइफ'; फ्रेडवार्ड, 'ब्लैक स्टार' के सौजन्य से
- प० ७२ हेनरी ग्रोसमैन, 'लाइफ'; स्टैनली ट्रेटिक, 'लुक'
- पृ० ७३ माइक मौनी, 'लाइफ'; अमेरिकन ब्राडकास्टिंग कम्पनी के सौजन्य से
- पृ० ७५ (नीचे) जेम्स ए० कर्न, सर्वाधिकार © १९६७ नैशनल ज्योग्रैफिक सोसायटी द्वारा सुरक्षित
- पृ० ७५ (दायें), ७९ (सबसे ऊपर) एम० वुडब्रिज विलियम्स, यू० एस० नैशनल पार्क सर्विस
- पृ० ७६, ७९ (ऊपर) सेसिल डब्ल्यू० स्टाउटन, यू० एस० नैशनल पार्क सर्विस
- पृ० ७७ राबर्ट जे० स्मिथ, 'फ्रेण्ड्स मैगजीन' के सौजन्य से
- पृ० ७८ (नीचे) जान कौफमैन, यू० एस० नैशनल पार्क सर्विस
- पृ० ७८ (दायें) वाल्टर मेयर्स एडवर्ड्स, सर्वाधिकार © नैशनल ज्योग्रैफिक सोसायटी द्वारा सुरक्षित
- पृ० ७९ (वायें) विनफील्ड पार्क, सर्वाधिकार © नैशनल ज्योग्रैफिक सोसायटी द्वारा सुरक्षित
- पृ० ८१-८३ रेखाचित्र, गोपी गजवानी
- पृ० ९६ 'यू० एस० न्यूज एण्ड वर्ल्ड रिपोर्ट' के सौजन्य से

पुस्तक-प्रणयन

प्रकाशक ● डोनल्ड वाई० गिलमोर
प्राविधिक सम्पादक ● ओम्बिका गुप्ता
हिन्दी सम्पादक ● वी० पी० सिंह
अम्बिका सिंह
प्रकाशन-सहायक ● बिमान सेनगुप्त
अभिरूपण और सज्जा ● एम० मल्लिक

प्रकाशित ● यूनाइटेड स्टेट्स इन्फार्मेशन सर्विस, बहावलपुर हाउस, १ सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली, द्वारा।

मुद्रित ● श्री सरस्वती प्रेस लिमिटेड, कलकत्ता, में श्री मिहिर के० दास द्वारा।